ISSN No 2347-7075 Impact Factor- 7.328 Volume-2 Issue-15

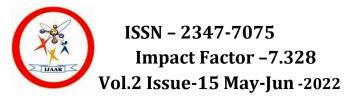
INTERNATIONAL JOURNAL of ADVANCE and APPLIED RESEARCH



Publisher: P. R. Talekar Secretary, Young Researcher Association Kolhapur(M.S), India

Young Researcher Association

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR) Peer Reviewed Bi-Monthly



International Journal of Advance and Applied Research

(IJAAR)

A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal

May-Jun -2022 Volume-2 Issue-15

On

Chief Editor P. R. Talekar

Secretary,

Young Researcher Association, Kolhapur (M.S), India

Editor Prof. Dr. Deepak M. Bharti

Principal

Arts, Commerce and Science College, Kille Dharur, Dist. Beed [M.S.]

Co- Editor Mr. G. D. Bavaskar

Published by- P. R. Talekar, Secretary, Young Researcher Association, Kolhapur (M.S), India

The Editors shall not be responsible for originality and thought expressed in the papers. The author shall be solely held responsible for the originality and thoughts expressed in their papers.

© All rights reserved with the Editors



ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328 Vol.2 Issue.15 May-June-2022

Peer Reviewed Bi-Monthly

CONTENTS

Sr No Pager Title Page No. 1 Domination Of Gender For Pkasurable Carcer Dr Tejas R Sharma 1.4 2 Depiction Of Indian Culture & Society In The Graphic Novels Ork. Arya D. W., Miss Kendre S. A 5.8 3 Chimamanda Ngozi Adichie's Idea Of Feminism & Her Depiction Of Women In Her Literary Works 9-11 4 Gender Asymmetry In India's Foreign Policy Decision Making Vishakha Jha 17-21 5 The Sri Lankan Identity Related With The Concept Of God Skandha Kumara Dr. Amila Damayanthi 17-21 6 Women Empowerment: A Study Of Jaishree Misra's Ancient Promises Mr. Gajanan Telang, Dr. Vaishali Aher 22-24 7 Gender And Education In India Mr. Sushilkumar Sadashiv Raut 25-26 8 Light And Human Rights Nith Changdeo Deshbhratar, Kanchan Babarao Jambhulakr 27-32 9 Aspects Of Gender Negotiation And Feminism In The Works Of Jeanette Winterson Pourin Mallahi 33-34 10 Dr. Origin Mallahi Gender Wise Impact Of Pandemic On Informal Sector Study Among Women Domestic Workers In India 35-38 11 Violation of Dalits Human Rights and Gender Equality in India and its Remedies 43-48 12 Recent Trends		CONTENTS	
1-4	Sr No	Paper Title	Page No.
Dr. Arya D. W. Miss Kendre S. A 9-11	1		1-4
Chimamanda Ngozi Adichie's Idea Of Feminism & Her Depiction Of Women In Her Literary Works Dr. Arya D. W, Miss Kendre S. A	2		5-8
12-16	3	Chimamanda Ngozi Adichie's Idea Of Feminism & Her Depiction Of Women In Her Literary Works	9-11
17-21	4	Gender Asymmetry In India's Foreign Policy Decision Making	12-16
Women Empowerment: A Study Of Jaishree Misra's Ancient Promises Mr. Gajanan Telang, Dr.Vaishali Aher Gender And Education In India Mr. Sushilkumar Sadashiv Raut 25-26	5	The Sri Lankan Identity Related With The Concept Of God Skandha Kumara	17-21
Sender And Education In India 25-26	6	Women Empowerment: A Study Of Jaishree Misra's Ancient Promises	22-24
27-32 27-32 3 3 3 3 4 3 3 3 4 3 3	7	Gender And Education In India	25-26
9 Aspects Of Gender Negotiation And Feminism In The Works Of Jeanette Winterson Pouria Mallahi Gender Wise Impact Of Pandemic On Informal Sector Study Among Women Domestic Workers In Pune 71 Pune 71 Pune 72 Pr. Narshing Giri, Mrs. Umrao Sayyad, Mr. Rushikesh Hiwale 73 Violation of Dalits Human Rights and Gender Equality in India and its Remedies 74 Pr. Narshing Giri, Mrs. Umrao Sayyad, Mr. Rushikesh Hiwale 75 Pr. Chitade Nandkishor Pandurang 76 Pr. Nasiket Govindrao Suryavanshi 77 Pandara Agricultural Labourers Problems And Remedies In India 78 Pr. Nasiket Govindrao Suryavanshi 79 Gender And Health 79 Gender And Health 70 Gender And Health 71 Gender And Health 71 क्षिमभाव विषमता आणि बंजारा समाजातील स्त्रिया 71 कृषीच्या विकासात स्त्रियांची आर्थिक स्थिती 71 कृषीच्या विकासात स्त्रियांची भूमिका 72 कृषीच्या विकासात स्त्रियांची भूमिका 73 कृषीच्या विकासात स्त्रियांची भूमिका 74 किंगभाव आणि समाजीकरण 75 कृषीच्या विकासात स्त्रियांची समाज : एक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य 75 किंगभाव आणि समाजीकरण 76 किंगभाव आणि समाजीकरण 77 किंगभाव आणि समाजीकरण केंग भारतीय समाज : एक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य 76 किंगभाव केंग अर्थांची परिप्रेक्षय 77 किंगभाव अर्थांची क्षांचिक असमानता 76 किंगभाव अर्थांची क्षांचिक असमानता 77 क्षांचिक अर्थांची क्षांचिक स्त्रिक्षयं कृष्ण 77 किंगभाव अर्थांची और लैंगिंक असमानता विषयक दृष्टिकोन 77 -80	8	Lgbt And Human Rights	27-32
Gender Wise Impact Of Pandemic On Informal Sector Study Among Women Domestic Workers In Pune 35-38 35-3	9	Aspects Of Gender Negotiation And Feminism In The Works Of Jeanette Winterson	33-34
11 Violation of Dalits Human Rights and Gender Equality in India and its Remedies Dr Chitade Nandkishor Pandurang 39-42 12 Recent Trends Of Poverty In India 43-48 13 Agricultural Labourers Problems And Remedies In India Dr. Maneesh. B 49-51 14 Gender And Health Gadekar pandurang Chandrakant 52-53 15 लिंगभाव विषमता आणि वंजारा समाजातील हित्रया 54-56 16 लिंगभाव आणि भारतीय महिलांची आर्थिक स्थिती 57-59 17 कृपीच्या विकासात हित्रयांची भूमिका 60-62 18 स्त्री-पुरुष वेतन अंतर 63-64 19 लिंगभाव आणि समाजीकरण 65-67 30 वैंगिक समाजीकरण और भारतीय समाज : एक समाजशास्त्रीय पिरप्रेक्ष्य 68-70 20 वैंगिक समाजीकरण और भारतीय समाज : एक समाजशास्त्रीय पिरप्रेक्ष्य 68-70 21 नैतिकता के दुष्टवक में बेहाल नारी 71-73 22 जागतिक लिंग असमानता 74-76 23 पिरवार मे लिंग और लैंगिक असमानता विषयक दृष्टिकोन 77-80	10	Gender Wise Impact Of Pandemic On Informal Sector Study Among Women Domestic Workers In Pune	35-38
11 12 Recent Trends Of Poverty In India Dr. Nasiket Govindrao Suryavanshi 43-48 13 Agricultural Labourers Problems And Remedies In India Dr. Maneesh. B 49-51 14 Gender And Health Gadekar pandurang Chandrakant 52-53 15 लिंगभाव विषमता आणि बंजारा समाजातील स्त्रिया प्रा. ईश्वर लक्ष्मण राठोड, प्राचार्य डॉ. शिवाजी गायकवाड 54-56 16 लिंगभाव आणि भारतीय महिलांची आर्थिक स्थिती गोविंद द. बावस्कर 57-59 17 कृषीच्या विकासात स्त्रियांची भूमिका 60-62 18 स्त्री-पुरुष वेतन अंतर प्रा. डॉ. दीपक एम. भारती, गोविंद रामराव काळे 63-64 19 लिंगभाव आणि समाजीकरण डॉ. गणेश तुकाराम मोकासरे 65-67 20 लैंगिक समाजीकरण डॉ. गणेश तुकाराम मोकासरे 71-73 21 नैतिकता के दृष्टचक्र में बेहाल नारी 71-73 डॉ. अर्रावेंद अंबादास घोडके 71-73 22 जागतिक लिंग असमानता 74-76 प्रोफेसर दिपक एम. भारती, मैंद आनंद श्रीकृष्ण 77-80			
13 Agricultural Labourers Problems And Remedies In India Dr. Maneesh. B 49-51 14 Gender And Health Gadekar pandurang Chandrakant 52-53 15 लिंगभाव विषमता आणि बंजारा समाजातील स्त्रिया 54-56 16 लिंगभाव आणि भारतीय महिलांची आर्थिक स्थिती 77-59 17 कृपीच्या विकासात स्त्रियांची भूमिका 77-59 18 स्त्री-पुरुष वेतन अंतर प्रोफेसर दीपक एम. भारती, साखरे ज्योती जालिंदर 63-64 19 लिंगभाव आणि समाजीकरण 65-67 20 लेंगिक समाजीकरण और भारतीय समाज : एक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य Dr. Usha Kiran Tiwari 21 वैतिकता के दुष्टचक्र में बेहाल नारी 71-73 22 जागतिक लिंग असमानता विषयक दृष्टिकोन 77-80		Dr Chitade Nandkishor Pandurang	39-42
14 Gender And Health 52-53 15 लिंगभाव विषमता आणि वंजारा समाजातील स्त्रिया 54-56 16 लिंगभाव आणि भारतीय महिलांची आर्थिक स्थिती 57-59 17 कृषीच्या विकासात स्त्रियांची भूमिका 60-62 18 स्त्री-पुरुष वेतन अंतर 71-73 19 लिंगभाव आणि समाजीकरण और भारतीय समाज : एक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य 68-70 20 वैतिकता के दुष्टचक्र में बेहाल नारी 71-73 21 वैतिकता के तुष्टचक्र में बेहाल नारी 71-73 22 जागतिक लिंग असमानता 74-76 प्रित्रेश में लिंग और लैंगिंक असमानता विषयक दृष्टिकोन 77-80		Dr. Nasiket Govindrao Suryavanshi	43-48
Gadekar pandurang Chandrakant 32-33 15		Dr. Maneesh. B	49-51
16	14	Gadekar pandurang Chandrakant	52-53
गोविंद द. बावस्कर 7 कृषीच्या विकासात स्त्रियांची भूमिका	15		54-56
कृषीच्या विकासात स्त्रियांची भूमिका 60-62	16	लिंगभाव आणि भारतीय महिलांची आर्थिक स्थिती	57-59
प्रा.डॉ. दीपक एम. भारती ,गोविंद रामराव काळे हिंदी-पुरुष वेतन अंतर प्रोफेसर दीपक एम. भारती, साखरे ज्योती जाविंदर विक्रिंगभाव आणि समाजीकरण हिंगभाव समाजीकरण हिंगभाव आणि समाजीकरण हिंगभाव आणि समाजीकरण			
श्री-पुरुष वेतन अंतर 63-64	17		60-62
प्रोफेसर दीपक एम. भारती, साखरे ज्योती जालिंदर 19 लिंगभाव आणि समाजीकरण 65-67 हॉ. गणेश तुकाराम मोकासरे 20 लैंगिक समाजीकरण और भारतीय समाज : एक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य 68-70 Dr. Usha Kiran Tiwari 71-73 हॉ. अरविंद अंबादास घोडके 71-73	4.0	Y .	
33-07 33-07 33-07 34-76 35 37-80 38 38 38 38 38 38 38	18		63-64
20 लैंगिक समाजीकरण और भारतीय समाज : एक समाजशास्त्रीय पिरप्रेक्ष्य 68-70 21 नैतिकता के दुष्टचक्र में बेहाल नारी 71-73 22 जागतिक लिंग असमानता 74-76 परिवार मे लिंग और लैगिंक असमानता विषयक दृष्टिकोन 77-80	19		65-67
21 नैतिकता के दुष्टचक्र में बेहाल नारी 71-73 22 जागतिक लिंग असमानता 74-76 23 परिवार मे लिंग और लैगिंक असमानता विषयक दृष्टिकोन 77-80	20	लैंगिक समाजीकरण और भारतीय समाज : एक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य	68-70
डॉ. अरविंद अंबादास घोडके 22 जागतिक लिंग असमानता 74-76 प्रोफेसर दिपक .एम . भारती, मैंद आनंद श्रीकृष्ण 23 परिवार मे लिंग और लैगिंक असमानता विषयक दृष्टिकोन 77-80			
प्रोफेसर दिपक .एम . भारती, मैंद आनंद श्रीकृष्ण 23 परिवार मे लिंग और लैगिंक असमानता विषयक दृष्टिकोन 77-80	21		71-73
23 परिवार मे लिंग और लैगिंक असमानता विषयक दृष्टिकोन 77-80	22		74-76
	23	परिवार मे लिंग और लैगिंक असमानता विषयक दृष्टिकोन	77-80

24	आदिवासी महिलाएं की परिवारिक भूमिका विषयक अध्ययन	81-82
24	डॉ. गजानन खंडू सोनुने ,डॉ.राजू शेषराव पोपळघट	01-02
25	लिंगभेद आणि स्त्रियांची बदलती स्थिती	83-85
	डॉ.सोनटक्के रमेश शंकरराव	05 05
26	लैंगिक असमानता आणि महिलांच्या राजकीय सहभागाची वास्तविकता	86-89
20	दत्तात्रय मधुकर तोंडे	00 07
27	महिलाओं के संदर्भ मे घरेलू हिंसा समता एवं समानताविषयी : समाजशास्त्रीय अध्ययन	90-91
2,	डॉ राजू शेषराव पोपळघट, डॉ गजानन खंडू सोनुने	70 71
28	मानव आबादी में असंतुलित लिंग अनुपात: कारण और परीणाम	92-94
	डॉ. आर्डले एस. डी.	
29	लिंग और घरेलू हिंसा।	95-96
	डॉ. चिताडे एन. पी.	
30	महिला और उद्यमिता	97-99
	डॉ. कार्तिक अरोड़ा	
31	भारत में लैंगिक असमानता	100-101
	डॉ. कार्तिक अरोड़ा	
32	भारत के आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका	102-106
	सुनिल कुमार	
33	एक नए युग की महिला उद्यमिता	107-112
	सुनिल कुमार	
34	लिंगभाव आणि संस्कृती	113- 114
	अविनाश चंद्रकांत फुके	

DAAR C

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Vol.2 Issue.15 May-June-2022

Peer Reviewed Bi-Monthly

DOMINATION OF GENDER FOR PLEASURABLE CAREER

Dr Tejas R Sharma

Director of Physical Education, Late Annasaheb P. S. Wadile Arts College, Thalner, Taluka Shirpur, Dist Dhule (M. S.)

Abstract

Men and Women tend to have different views on the occupation they choose and want to choose. In this regards, gender plays a wide role. Men are always expected to have better jobs and a higher salary as compared to their female counterparts, but these gender roles are stereotypes that dictate the behaviour and actions of a person due to sex. Gender also influences an individual's career experiences. Women face unique barriers in the workplace, which in turn shapes their work and organisational experiences. These barriers were not only found in India but also in some of the most developed countries which have high Human Development Index. Although a number of steps have been taken in this direction, many policies are formed but gender equality is yet to be achieved. The research paper aims at identifying the effect of gender on career choice and to what extent these choices differ among male and female and also the problem faced by both men and women in this direction. It's generally found that women face a number of problems form career choice, career adoption to career experiences. The paper also aims at finding solutions to such problems.

Key words: Gender, Women, Career, Occupation.

Introduction:

Gender always remained a social bar for women's progress. Although considerable gains have been made in this direction there are miles to go. Gender influences a wide range of career-related attitudes, behaviours and outcomes. These can be working environment, working experience, women's health and attitude, family life, etc. women are always considered different from men. They are generally seen as weak, compassionate, sacrificing and family loving whereas men are stronger and protective. Even while selecting career women are expected to choose a field where they can manage their family and work efficiently, which often leads to women sacrificing their jobs for the family. From early age boys and girls are treated differently. They are expected to play their role according to their genders. Where boys are considered to play with the football, basketball, etc girls are supposed to play with dolls. Boys are expected to be more rambunctious and physically active, whereas girls are expected to be more sensitive and sociable.

Gender as a social Identity:

The distinction between sex and gender identity is fundamental for understanding the career attainment of women. While sex is biological determined, gender is a social construction, a product of socialisation and experience (Unger, 1979). Gender applies to those physiological attitudes and behaviours considered characteristics of one's sex, that is term 'gender' and 'gender equality' is used for characteristics or traits that are socio-culturally considered appropriate for males and females (Ridgeway and Smith-Lovin 1999, Unger 1979). The importance of gender identity for career attainment, as distinct from sex, is underscored by Costa, Terraciano, and MacCrae (2001), who noted there is more variance in traits within a sex than across, suggesting the importance of gender identity rather than sex as a determinant of career. Recent studies provide extensive empirical evidence of sex differences in personality traits consistent with an interpersonal circumflex perspective on masculinity and feminity. In a study with over 23,000 respondents from 26 cultures, Costa et. al (2001) reported that women were higher than a man in warmth and agreeableness while men were higher than women in assertiveness and openness to ideas. Similar to the findings for personality, evidence points to sex differences in job preferences and occupational interest consistent with an interpersonal circumflex perspective in masculinity and feminity (OliviaA. O'Neill and et. al)

According to research, there is also evidence for gender bias hiring, promotion, and funding decisions. Female academics are less likely to be hired or promoted than male academics, even with the same job experience and accomplishments (Steinpresis and et. al. 1999). There are a number of studies that prove similar results.

Gender and Pleasurable Career:

There are a number of complex issues that affect one's pleasurable career. One of the most important factors being socialisation. The process of socialisation in one's life begins since infancy. A child comes in contact with family, relatives, friends and is made aware of his/her role as a man or woman.

Although such socialisation experience influences both genders, it is presumed to have a greater negative impact on girls because it tends to limit and restrict their options and achievements more so than boys. A person's vocational interests and pleasurable career are highly affected by these socialization experiences. These experiences are likely to have more impact on adolescents because they want to fit in with their peers. Studies show that both adolescent boys and adult men report greater interest in scientific, technical and mechanical pursuits. Whereas, adolescents girls and adult women indicate greater interest in social and artistic endeavours (M.E. Ward). It becomes difficult for both men and women to pursue decision otherwise (like women pursuing wrestling or auto repair and men pursuing art or nursing) because of societal expectations.

In fact the very basic material of socialization that is the textbooks, which are used from the preprimary level depict gender stereotypical occupations. In most of the books, mothers are shown as working at home, taking care of children and fathers go out for work. But the most important point here which arises is that these socialization experiences affects both men and women. A very simple question can be asked to prove the point is — What if the father wants to stay at home, do the household chores, take care of children while the mother wants to go out and work? It is not surprising that men are generally encouraged to pursue careers in engineering, business, and science, whereas women are encouraged to pursue a career in social and helping occupations. It is also noteworthy that male-typed careers tend to offer higher status and pay than a female-typed career, contributing to the observed gender inequities in pay.

Work encounter and Barriers:

It is very commonly seen that what a person encounters in the workplace is a result of one's gender. Women face distinctive barriers which influence their work and organisational experience. One of the most common barriers is women are often not given tasks that require developmental experiences. There are also instances of sex discrimination in hiring, women are often being overlooked for highvisibility or high skates job assignment and not being targeted for domestic or international relocation opportunities. One of the ways where the work experience between women and men differ is that women are more likely to face the barriers and gaps in employment which slows down their progress. Despite larger work participation by women in the workplace, job segregation continues to persist. Another reason for male-female differences in pleasurable career relates to career related self-efficacy perceptions or beliefs in one's ability to be successful in a wide range of career pursuits. Women have less access to the types of experience necessary for developing strong beliefs in their abilities to master career-related tasks in male-dominated occupations and majors (science and math). Individuals develop career related selfefficacy through various experience (role models), verbal persuasion (encouragement from others) and actual experience (having opportunities to master tasks). Women tend to have less opportunity for these experiences and therefore tend to report lower career related self-efficacy than men (gender and career website). These lower self-expectations can lead to further occupational sex segregation, as individuals less likely to pursue certain jobs and/or careers if they believe that they will not be successful. Interestingly, there are few consistent differences in actual ability between men and women and when differences are found, they tend to be small in magnitude (gender and career website).

Some Other Challenges:

Most of the women who set out with the expectation that they can manage children and career are often forced to modify these expectations and evaluate these priorities that are to cut back on hobbies, friends and time alone. As choosing a career becomes a major life task at a young age, the influence of deeply embedded gender role socialization of men and women is so profound that there are marked differences in their career decision making processes. It is a mindset of most employers that if a woman is married she is economically supported. Thus, most often women are forced to negotiate and settle for lower salaries as compared to their male counterparts. In the US, research revealed that women earn 80 cents to a dollar man. The case was even worse for minority women because they earn 65 cents to a dollar. It was heartbreaking that even in most of the female dominated jobs men earned more than women. Some of the studies even revealed that often high profile assignments were not given to women due to their problem of relocation and less time dedication even if they are capable to produce similar results. Less than 1 % of women of Fortune have listed in top 500 companies are C. E. O's. This clearly shows that women lack mentorship and are not encouraged or selected for leadership positions. This is because family and work are often in conflict for women.

Government Strategy towards Equality:

Equality is enshrined in the constitution and it is the birthright of every human being to be treated the same, but the prevalence of gender differences is generally seen in every field. As gender equality is an international concept, government of all most all countries have taken serious measures in this direction. As we move towards India, the Indian Government have made number of laws, women helpline number and various apps are designed that help woman when in need.

Some laws in this direction are (National Commission for Women Website):-

Maternity Benefit Act, 1961 – This act regulates the employment of women and maternity benefits mandated by law. It states that a woman employee who has worked in an organisation for a period of at least 80 days during the 12 months preceding the date of her expected delivery is entitled to receive maternity benefits, which includes maternity leave, nursing breaks, medical allowance, etc.

Equal remuneration Act, 1976 – This act prevents discrimination in terms of remuneration. It provides for payment of equal recompense to men and women workers. Only if you are aware of your rights you can fight against any injustice meted out to you at home, at the workplace, or in the society.

The Protection of Women for Domestic Violence Act, 2005 – It is an Act to provide for more effective protection of the rights of women guaranteed under the construction who are victims of violence of any kind occurring within the family and formatters connected therewith or incidental thereto.

The Sexual Harassment of Women at Workplace (Prevention, Prohibition and Redressed) Act, 2013 – No woman shall be subjected to sexual harassment at any workplace is the basic essence of this law.

Also, **the National Commission of Woman** was formed under the National Commission of Women Act, 1990. It is a statutory body of the Government of India, established in January 1992. Lalitha Kumaramangalam was appointed its Chairperson in 2014. The NCW repersents the rights of women in India and provides a voice for their issues and concerns. The National Commission for Women Act aims to improve the status of women and worked for their economic empowerment.

Gender Responsive Budgeting an Approach to Women Empowerment:

Gender Responsive Budgeting does not mean creating a separate budget for women nor does it mean spending exclusively on women. It means that government resources are so utilised that they empower women and create an equal environment for them. Although the concept of GBR is new, the first country to adopt this approach was Australia. It adopted the GBR approach in 1980 which was followed by the Beijing Convention in 1995. India adopted much later and as a result, the National Commission for women was formed in 2001. In Eleventh Five Year Plan Gender Budget was adopted for the first time (Mathur 2019). GBR is a holistic approach towards women empowerment which includes health and nutrition, water and sanitation, political participation, education, asset base, skills, etc. The impact of GBR was found to be impressive because according to Government of India the rate of domestic violence has come down. It is also statistically proven that women safety has increased spousal violence came down. The percentage of women in higher education has also increased. Enrolment at primary level has also increased. Women are now found to be participating in diversified fields which earlier were maledominated (Pandey 2019).

Changing Attitudes:

It is important for both men and women to coordinate their work and family life. One possible solution can be that there should be separate timing of job for both spouses so that they can spend quality time with their family and take care of their children. Many employers are now even providing parental leave to both the parents. However, it's still a tedious task for men to get child care leave easily due to existence of gender stereo-typing and it is considered as un-masculine. In one of the recent studies, it was also found out that younger men are now placing more important to family. They are seen to be supporting their working spouses and balance their job and family life well. The relatively new role of househusband has also emerged. Although the number of househusband is few because the person is looked down by family and friends. Also this case arises when the partners are very broad-minded and the female counterpart is earning more than men. Bureau of Labour Statistics mentioned in one of the studies that around 39.3 percent of women were primary breadwinners in their family. The number is continuous increasing, which is heart-warming and if the similar pace continues soon gender stereotyping will be talked as past tense. Jobs that were traditionally exclusively available for men are now open to women as well. National Commission for Women revealed that in 2009, women made up nearly half (44.7 %) of workers in management and professional occupations. Most of the couples were also seen to jointly own business or start-up so that they can manage both business and family.

Suggestions:

Developing talents and skills is every woman's dream which is key to a successful career. Therefore career management along with family life is a must to achieve better results. The government is working in this direction by organising capacity building workshops, although their number and frequency shall be increased. There shall be women's cell in every department and every office whether to be government or private. This cell should look after their women employees and should also help them to manage their time according to their family. Part time jobs can also help a great deal in this direction. They provide time flexibility, thus women can easily tend to home and children and as well as their career. Changing the mindset is the most important solution in this direction. The myth of patriarchal society should be changed because that a women can do men can never.

Reference:

- 1. Costa, P. T., Terracciano, A., and MacCrae, R. R. (2001). Gender Differences in Personality Traits across Cultures: Robust and Surprising Findings, Journal of Personality and Social Psychology, 81(2), 322-331.
- 2. Mathur, S. (2019) Gender Responsive Budgeting: Training and Capacity Building Workshop, National Institute of Financial Management and Kumaun University.
- 3. Pandey B. K., (2019). Gender Responsive Budgeting: Training and Capacity Building Workshop, National Institute of Financial Management and Kumaun University.
- 4. Olivia, A. O'Neill, and Charles A. O. Reilly III (2009). Careers as Tournaments: The Impact of Sex and Gender Organisational Cultural Preferences on MBA's Income Attainment, Journal of Organisational Behaviour, 31(6), 856-876.
- 5. Ridegway, C. L., and Smith-Lovin, L. (1999). The Gender System and Interaction, An Annual Review of Sociology, 25, 191-216.
- 6. Steinpreis R. E., Andres K. A., and Ritzke D. (1999). The Impact of Gender on the Review of the Curricula Vitae of Job Applicant and Tenure Candidates: A National Empirical Study, Sex Roles, 41(7-8).
- 7. Unger R. K. (1979). Towards a Redefinition of Sex and Gender, American Psychologist, 34, 1085-1094.
- 8. Ward M. E. (2001). Gender and Promotion in the Academic Profession, Scot J Polit Econ, 48(3), 288-302.

Websites

- 1. Bureau of Statistics Report, (2010). www.bls.gov/
- 2. Gender and Career, www.career.iresearch.com/career-development/gender-and-career/
- 3. National Commission for Women Report, www.ncw.nic.in (5th April 2019).

DAAR C

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Vol.2 Issue.15 May-June-2022

Peer Reviewed Bi-Monthly

DEPICTION OF INDIAN CULTURE & SOCIETY IN THE GRAPHIC NOVELS

Dr. Arya D. W¹ Miss Kendre S. A²

¹Associate Professor, Head, Dept. Of English Swami Ramanand Teerth Mahavidyalaya, Ambajogai.

²Assistant Professor, Swami Ramanand Teerth Mahavidyalaya, Ambajogai.

Abstract:

Literary works reflect the society in many ways. Two graphic novels, mentioned in the present research paper, 'Munnu: A Boy from Kashmir', by Malik Sajad and 'Pashmina', by Nidhi Chanani, portray Indian society and culture. But their ways of portrayal are completely different. The protagonist of 'Munnu: A Boy from Kashmir', lives in India, that too, in Kashmir, the heaven of the earth, but face a lot of difficulties, especially in education, because of the conflicts and violence in Kashmir. Malik Sajad has depicted Kashmiri's as endangered Hangul deer species. This depiction itself portrays the struggle of Kashmiri people for their survival. While Priyanka, the protagonist of 'Pashmina', was born and lived in America with her single mother, but had a strange attraction towards India. Both the protagonists stayed in India, but their experiences of India and Indian society are different. Priyanka knew that her mother is Indian but she had left India many years ago. So she tried to know the reason behind her mother's decision of leaving India, but failed all the time. Her mother always denied to tell either about India or about her father. But Pri's strange attraction towards India never let her stop the investigation. She wanted to visit India and her Indian relatives. But her mother never allowed her to do so. One day, Priyanka came across a Pashmina shawl that was kept in the old suitcase. Priyanka could not resist herself from wrapping the Pashmina. Once she wrapped that Pashmina, it transferred her to a completely different world. It was an imaginary world. It was India in her imagination! Until now the pictures in the graphic novel 'Pashmina' were black and white. But the entry of Pashmina shawl turned the novel colourful. Kanta and Mayur, the imaginary characters that entered the novel with the entry of Pashmina, introduced Priyanka to the colourful India. They showed Priyanka all the positive aspects of India and Indian society. But they kept her away from a dark shadow that was constantly following her which was an indication towards the darker side of Indian society. And that dark side of Indian society is portrayed by Nidhi Chanani through this magical and interesting Pashmina. Both graphic novels mirror Indian society in different ways. They try to indicate that a beautiful surface never always mean that everything is good at the deepest level, too. They ask readers to peep into the deeper layers of the society, so that the conflicts of the grassroots can be understood and resolved. Thus, the present research paper studies the Indian society and its cultural aspects portrayed in the graphic novels- 'Munnu: A boy from Kashmir' and 'Pashmina'.

Keywords: Society, Culture, Violence, Male-dominance.

Introduction:

The present research work deals with the social and cultural representation of India through two graphic novels, namely, 'Pashmina' and 'Munnu: A Boy from Kashmir'. Graphic novels are now going beyond entertainment. Being a part of literature, they too, are reflecting the society. They reflect social, economical, educational and many other aspects through their themes and stories. In Malik Sajad's graphic novel, there is a boy, named Sajad, who was called by a penname 'Munnu' in the family. He lived in Kashmir with his family. Kashmir, the heaven on the earth, that burns like a hell because of various conflicts. And in this story, how a young boy wishing to live a normal life gets caught between the clutches of military and militant and how it adversely affects his life is well portrayed. So, 'Munnu: A Boy from Kashmir' represents Kashmiri society and Kashmiri culture. The way of representation, too, is quite different. Malik Sajad has portrayed Kashmiri citizen, common Kashmiri people as Hanguls, an endangered species of deer. Though the subject matter is a bit uncomfortable, it makes readers thinks about the life of Kashmiri people and the Kashmiri society than looking at Kashmir only as a tourist spot.

The second graphic novel, 'Pashmina' authored by Nidhi Chanai, also reflects various Indian cultural and social aspects through a completely different story. A teenage girl Priyanka born and living in America, and her strange attraction towards India and Indian culture are the base of the story. She was living in America with her single mother who had left India before Pri's birth. Priyanka knew nothing about her father and had never visited India. She simply knew that her mother is an Indian and all her relatives stayed in India. So, Priyanka tried to reach to her roots many a times, but her mother always resisted. Priyanka wanted to know who her father is, where he lives now, why her mother left him and India, and so many more unanswered questions! And her mother never uttered a single word about any of

these topics. Her mother used to get very much angry when Pri repeatedly used to ask her the same questions. But Pashmina, a very famous Kashmiri shawl changed the entire scenario. Piryanka found a Pashmina in her mother's old suitcase which increased her enthusiasm about India. Now, after the Pashmina incidence, she confirmed her willingness to visit India, and somehow managed to convince her mother for a trip to India. Till she was in America, India was a fantasy for her, a dreamland, and a perfect-place to live. But her fantasy world, the India that 'Mayur' and 'Kanta' made her imagine, proved to be a utopia. It was beautiful, but at the top. When Priyanka dived deep into the Indian society, she came across a different reality of male dominance and exploitation of women. She also finds that her mother never left her father, but her father did. And Priyanka was a burden to him. In few seconds, her misconceptions about her mother vanished, and while returning to America, she was a completely different Priyanka. Thus, both the graphic novels reflect Indian culture and society in different ways.

Objectives:

- 1. To study the depiction of Indian culture in graphic novels.
- 2. To observe the societal reflections in graphic novels.
- 3. To study the societal conflicts portrayed in 'Munnu: A Boy from Kashmir'.
- 4. To study the depiction of Indian culture in 'Pashmina'.
- 5. To study male dominance in Indian society portrayed in 'Pashmina'.
- 6. To understand the aspect of women empowerment discussed by Nidhi Chanani in 'Pashmina'

Literature Review:

Andrew Hock Soon Ng, in his research work Nationalism and the Intangible Effects of Violence in Malik Sajad's Munnu: A Boy from Kashmir, deals with the violence portrayed in the novel by Malik Sajad. It narrates how violence in Kashmir affects the life of a common boy, Sajad, whose family called him Munnu. Munnu's childhood was badly affected by the violence and conflicts going on in Kashmir. But still Munnu chooses Journalism as his profession in young age and decides to stay in Kashmir itself. Andrew Hock has also done close reading of some panels and interpreted violence as one of the main themes of the novel. Endangered (And Endangering) Species: Exploring the Animacy Hierarchy in Malik Sajad's Munnu authored by Amit Baishy discuss about the depiction of Kashmiri people as Hanguls, endangered Kashmiri deer. But only the commoners are depicted as hangul deer. Army and the occupiers of Kashmir are represented as humans through different panels. So, according to A. Baishy, the novel has provided readers with an interesting aspect, that is, depiction of humans as animals. Inside Out: Autobiography, History and the Comic form in Malik Sajad's Munnu: A Boy from Kashmir by Amrita Singh discusses about the problems and issues faced by Kashmiri people as portrayed by Malik Sajad in his graphic novel. Limitations on the festival celebrations, forceful indoor life because of outdoor violence and curfews are some of the aspects that Singh A. deals with. She also discuss about the discovery of 'book cricket'. She also talk about the conscious efforts taken by Sajad that his autobiographic narrative should not be considered as the picture of Kashmir. W Lee and F Mentzer, in their work Identifying Authenticity in Children's Multicultural Books, deal with Pashmina, the graphic novel by Nidhi Chanani. The novel is about Priyanka, a teenage Indian American, who struggles to discover her bicultural identity. Nimisha, Pri's mother, had left India before Pri's birth. So Priyanka didn't know anything about India and her father. And her questions related to these two topics were always ignored by her mother. All these aspects realted to culture and identity are discussed by Lee and Mentzer.

Relevance & Significance:

Many a times, comics and graphic novels are seen simply as a source of entertainment. But they go beyond entertainment a lot of times. They reflect the society; they give messages to the readers through their panels and gutters and try to bring a change in the society. The present research paper deals with this particular aspect of the graphic novels. It studies how Malik Sajad, in his graphic novel 'Munnu: A Boy from Kashmir' deals with various issues and conflicts in Kashmiri society and how people living there, struggle to survive. The research paper also tries to comprehend the reason behind portrayal of common Kashmiri people as Hangul deer species by Malik Sajad. It also analyzes the everyday problems faced by people living there, related to health, education and other basic necessities. 'Pashmina' too, like 'Munnu: A Boy from Kashmir', reflects the Indian society in many different ways. It portrays the poverty in India, the aspect of male dominance, and female exploitation both physically and economically. But, Nidhi Chanani not only points out the problem but also provides an effective solution. She conveys that effective steps should be taken to empower women, to make them strong and independent. All these aspects are explained and narrated by Nidhi Chanani through a teenage girl Priyanka and her mother's old shawl

ISSN - 2347-7075

Pashmina. So, as the present research paper deals with various societal and cultural aspects in the two graphic novels, this is of much relevance and significance.

Discussion:

The graphic novel 'Munnu: A Boy from Kashmir' authored by Malik Sajad deals with various aspects of Kashmir's societal conditions. The story revolves around Muunu, the protagonist of the novel, a young boy living in Kashmir with his family. It can also be said that, Munnu and his family is a representation of common people living in Kashmir. The key point in the graphic novel is that, Malik Sajad has portrayed common Kashmiri people as endangered Hangul deer species while military and militants as human beings. This difference in the portrayal of common people and military describes a lot. The common people living in Kashmir are provided with a standard of endangered species by Malik Sajad. This reflects the struggle of Kashmiri people for their survival. Some of the incidences in the novel are so realistic that the people, who have never visited Kashmir, also feel a deep empathy towards the Kashmiri citizens. For example, Munnu and all his little schoolmates were not allowed to go to school. Their school was closed simply because military had a doubt on their school principle about his devotion to India and India army. They felt that, the school principle has joined to the militants and was helping them against India, which was not true. But Munnu had to face the consequences, who was so small to understand even the difference between military and militants. His education was going out of track. He was kept away from education, which should be his basic necessity as a child. Apart from this, there is an incidence, where Munnu's father was too much ill, but was not allowed to go the hospital because of the curfew in Kashmir. They were getting neither education, nor a good health, simply because of the violence and conflicts going on in the Kashmir.

The second graphic novel, Pashmina, written by Nidhi Chanani, also discusses various cultural aspects related to India. The protagonist of the novel, Priyanka, who was born and living in America, had a lot of attraction towards India. She never visited India; neither had any of the memories of living there. But still she was curious about India and people living in India. The major reason behind Pri's attraction towards India was that her mother was an Indian, and her father, too. But her mother was a single mother. Pri had never ever seen her father. And her mother too, had left India before Priyanka's birth. So there left a single reason behind Pri's consistent wish to visit India was to see her father. But whenever Priyanka tried to know about her father, her mother used to get so very angry. And this was the everyday conflict between Priyanka and her mother. Pri's mother never uttered a single word either about India or about her husband. So Priyanka always felt that it was her mother who left her father. And a time came when Pri's inquisitiveness reached to the peak when Pri found a Pashmina shawl in her mother's old suitcase. Whenever Priyanka wrapped that Pashmina shawl around herself, it transferred her to a completely different world, to an imaginary India, where two imaginary characters 'Kanta' and 'Mayur' accompanied Privanka. The most interesting aspect of the novel is, whenever Privanka wrapped Pashmina around herself, the grey and black characters in the novel turned colourful, and Priyanka was shifted to imaginary India, a beautiful India, where everything was going good and in a calm way. And this imaginary shift from America to India, again forced Privanka to think about India.

Finally, Priyanka somehow managed to convince her mother to allow her to visit India. Priyanka also wanted her mother to come with her. But, her mother denied as usual. Priyanka, then alone went to India, and stayed with her Masi, maternal aunt. The first thing that happened was, Pashmina stopped working its magic. And it really disheartened Priyanka. The second thing was, real India was completely different than the imaginary one. Along with wealth, there was poverty too. Happiness was there, but there was a lot of sadness too. So, till now, Priyanka had only seen the positive side of India in her imagination, but real visit to India, made the see the dark side of India. The most important thing that Pri got to know was about her parents. Both of them were in love. And after some time was spent, Pri's mother got pregnant before marriage. And this is not considered ethically good in India. Pri's mother still hoped that, her beloved will marry her, but he denied. His family didn't allow him to do so. And broken deeply, Pri's mother left India forever. Pri's eyes were opened. All her misconceptions about her mother got vanished. Pri got to know the male dominant and patriarchal Indian society. After this, Pri also came to know that female workers are exploited physically and economically India. Finally, Pri with her Masi decided to do something for encouragement of women in India, and Pri returns to America, back to her mother.

Conclusion:

As studied in the present research paper, both the graphic novels explore the culture and society of India. 'Munnu: A Boy from Kashmir' authored by Malik Sajad deals with the Kashmiri society and the problems faced by people living there. Common people in Kashmir had no connection s either with

military or with the militants, but still they were caught between the clutches of the army and the militants. The consequences of conflicts between military and militants were faced by innocent Kashmiris. They were struggling for the basic things like health and education. And thus, the portrayal of commoners in Kashmir as endangered Hangul deer species is quiet justifying. Nidhi Chanani's 'Pashmina', also plays a crucial role in showing the mirror to the society. The second half of this graphic novel deals with India and its darker sides. It explains how poverty causes women to work hard in factories and mills, and how they are sexually and economically abused there. The novel also tried to give a solution to this issue, which is women empowerment. Nidhi Chanani asks Indian women to be strong and independent through this novel with the help of Pri, her protagonist. And thus, the present research paper dealt with the cultural and societal aspects from two graphic novels mentioned above.

References:

- 1. Sajad, Malik. Munnu: A boy from Kashmir. HarperCollins UK, 2015.
- 2. Chanani, Nidhi. Pashmina. First Second Books, 2017.
- 3. Ng, Andrew Hock Soon. "Nationalism and the Intangible Effects of Violence in Malik Sajad's Munnu: A Boy from Kashmir." *South Asian Review* 39.1-2 (2018): 159-174.
- 4. Baishya, Amit Rahul. "Endangered (and endangering) species: Exploring the animacy hierarchy in Malik Sajad's Munnu." *South Asian Review* 39.1-2 (2018): 50-69.
- 5. Singh, Amrita. "'Inside Out': Autobiography, History, and the Comic Form in Malik Sajad's Munnu: A Boy from Kashmir." *Café Dissensus* (2017).
- 6. Maneksha, Freny. "Storytelling at its most graphic." *Kashmir Lit: An Online Journal of Kashmiri and Diasporic Writing*. 2015. Web. 10 Dec 2016.
- 7. Lee, Wonki, and Fay Mentzer. "Identifying Authenticity in Children's Multicultural Books." (2021): 56-59.

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Vol.2 Issue.15 May-June-2022

Peer Reviewed Bi-Monthly

CHIMAMANDA NGOZI ADICHIE'S IDEA OF FEMINISM & HER DEPICTION OF WOMEN IN HER LITERARY WORKS

Dr. Arya D. W¹ Miss Kendre S. A²

¹Associate Professor, Head, Department of English Swami Ramananad Teerth Mahavidyalaya, Ambajogai.

²Assistant Professor, Dept. of English, Swami Ramanand Teerth Mahavidyalaya,

Ambajogai.

Abstract:

Chimamanda Ngozi Adichie is a critically acclaimed Nigerian writer who has won several awards for her literary works. The novels 'Purple Hibiscus', 'Half of a Yellow Sun' and 'Americanah' are authored by her, of which the first two are full of autobiographical elements. Through her novels, she has dealt with different themes such as domestic violence, family relationships, marriage, women empowerment, and migration. She was so inspired by Chinua Achebe that, her first novel, 'Purple Hibiscus' starts with a quote from Chinua Achebe's 'Things Fall Apart'. She is well known for her feminist ideas, reflected especially through 'We Should All Be Feminists', a speech that she delivered at TEDx and further converted into a full length essay. She had also raised her voice for women through a song titled 'Flawless', in which she says that, a feminist is that person who believes in the social, political, and economic equality of the sexes, which reflects her own idea of Feminism, too. Apart from this, she has presented herself through 'Dear Ijeawele' also known as 'A Feminist Manifesto in Fifteen Suggestions', which is written in the epistolary form. This letter was written to one of her female friends Ijeawele, giving her fifteen suggestions regarding raising her daughter as a feminist. Through this particular manifesto, Amanda N. Adichie also explains that, a mother is much more beyond than what we think about her. The only aim of this manifesto is to attain gender equality. Chimamanda Ngozi Adichie, through all her works talk about gender equality, raising voice for the rights of women and the idea of making world a good place for women. The writer not only points out the problems regarding societal perceptions of women, but also tries to provide solutions through her different literary works. Thus, the present research work deals with the works of Chimamanda Ngozi Adichie, in order to study the depiction of women and their position in the society through literature.

Keywords: gender, feminism, autobiography.

Introduction:

When it comes to feminism, people may talk about male dominance, domestic violence, female suppression, etc. But, either feminism or feminists are not limited only to those concepts. Feminism is also about gender equality, rights of women, women empowerment, and making earth a good place for women to live. Chimamanda Ngozi Adichie explores all these aspects of feminism. She says that, feminist is the one who believes in the social, political, and economic equality of the sexes. The present research work explores all these aspects portrayed by Chimamanda Ngozi Adichie through her novels, speeches and her famous epistolary work 'Dear Ijeawele'. As mentioned earlier, Chimamanda Ngozi Adichie is a critically acclaimed Nigerian writer and is associated with black feminism. She has raised her voice for the rights of black women who were abused for their complexion. Apart from this, the author had made exact use of her literary works to express her thoughts and feelings related to women and their condition in the society. The work 'Purple Hibiscus' mostly deals with the family relations. Through the characters, Chimamanda Ngozi Adichie has rightly portrayed the male domination in the family. How a family can constantly live in silence and under father's pressure is also narrated through the story and themes of 'Purple Hibiscus'. Also, the contradiction between two different families is explained. While on the other hand, Adichie's another work 'Half of a Yellow Sun' talks not only about black women, but also about colonialism. Chimamanda Ngozi Adichie, through her literary works, touches all the societal aspects related to black women, their condition in the society and their struggle for survival.

Objectives:

- 1. To study the depiction of women in English literature through Adichie's works
- 2. To study Chimamanda Ngozi Adichie's idea of Feminism
- 3. To observe the autobiographical elements from Adichie's 'Purple Hibiscus'
- 4. To study Chimamanda Ngozi Adichie's 'Half of a Yellow Sun'
- 5. To observe Adichie's idea of Feminism with the help of 'Purple Hibiscus' and 'Half of a Yellow Sun'.

Literature Review:

In the thesis 'Contesting Single Stories Polyphony and Dialogism in Chimamanda Ngozi Adichie's Fiction', Abdul Rahman T. has studied in the light of Bakhtin and thus treated as dialogic, based on the analyses of the presence of 'dialogism' and 'polyphony' in her novels. Arif Rashid Shah in his doctoral research entitled Voice of the Voiceless: A Study of Chimamanda Ngozi Adichie's Select Works In The Light Of Post-Colonial Theory explained with the help of postcolonial theory. The study simultaneously shows the ill effects of Nigerian Biafran War as represented in Adichie's selected works. K. Sathyapr's doctoral research entitled Integration of the Disintegrated Home and Homeland a Study of Chimamanda Ngozi Adichie's Novels deals with the life of the Nigerians who face many hardships because of family, ethnic and international disintegration. The problem of disintegration exists not only in Nigeria, but also in most of the countries of the world. Another aspect of Adichie's works is Portrayal of Nigerian women in the selected works of Chimanda Ngozi Adichie by Jadeja, Swatiba. It deals with the depiction of Nigerian women and her existence in the society. Meher, Nilima's thesis entitled Narrative Structure And Cultural Identity A Study Of Chimamanda Ngozi Adichie's Fiction deals with the narrative aspects and the cultural identity of Nigerian people. In addition to the above mentioned research works, there are many research articles, reviews and a few dissertations regarding different aspects of the novels of Adichie. However, most of the studies hold Adichie as Nigerian writer and Nigerian Biafran War writer. The Post-colonial perspectives of Adichie's works have been explored along with the other minor themes related to hybridity, Nigerian Igbo culture.

Relevance & Significance of the Study:

Chimamanda Ngozi Adichie, a well known Nigerian writer, has contributed to literature through her novels, letters and speeches. Most of her works have an autobiographical touch. And many research scholars have studied her works and the autobiographical elements. The proposed research work will focus on study of Black Feminism in Adichie's select works such as- *Purple Hibiscus* (2003) and *Half of a Yellow Sun* (2006). Her another works like *The Thing Around Your Neck* (2009) (Collection Of Short Stories) *Americanah* (2013) and *We Should All Be Feminists* (2014) (Non-Fiction) are also her best literary compilations. The proposed research will attempt to study the psychological aspects of black feminism. It will also focus on the in-depth analysis of the women suffering in the select works of Adiche. Themes, Characterization, Plot-construction, Style and Setting in the works of Adiche have been comprehensively analyzed in the present research work. Apart from these, the condition of black women in the society that Adichie has narrated through her characters is also discussed in the present research paper and is of much significance and relevance.

Discussion:

Chimamanda Ngozi Adichie is a critically acclaimed Nigerian writer who has won several awards for her literary works. The novels 'Purple Hibiscus', 'Half of a Yellow Sun' and 'Americanah' are authored by her, of which the first two are full of autobiographical elements. Through her novels, she has dealt with different themes such as domestic violence, family relationships, marriage, women empowerment, and migration. As mentioned above, when it comes to feminism, people may talk about male dominance, domestic violence, female suppression, etc. But, either feminism or feminists are not limited only to those concepts. Feminism is also about gender equality, rights of women, women empowerment, and making earth a good place for women to live. Chimamanda Ngozi Adichie stands with gender equality, rights of women, women empowerment and explores all these aspects of feminism through her literary works. She also says that, feminist is the one who believes in the social, political, and economic equality of the sexes. Apart from this, Black Feminism is known as the women's movement or women's liberation is a series of campaigns on issues such as reproductive right, domestic violence, maternity leave, equal pay, sexual harassment and sexual violence. Black feminism aims to empower Black women with new and on critical ways of thinking that centered how racism and sexism worked together to create black women's social issues and inequalities that arise from mutually constructed system of oppression. The goals of movement vary from country to country. And Chimamanda Ngozi Adichie is concerned with all these aspects of Black Feminism, too.

As mentioned above, the work 'Purple Hibiscus' mostly deals with the family life and the male dominance. In this particular work, Adichie had portrayed two different contradictory families, one living happily and another under constant fear and pressure of male head of the family. One is Kambili's family that includes Papa, Mama, and Jaja. And another is Aunty Ifeoma's family. At the beginning, we come across Kambili's family where all the family members live in silence and fear, following Papa's strict rules and schedules. The atmosphere of Kambili's home was terrific as they were constantly surrounded by Papa's violence for anything he sees as sinful or disobedient. Kambili and Jaja are very close, but still they

didn't talk much to each other because of the terrific home environment. They were not allowed to meet to their grandparents or cousins or aunt. Both of them have observed the ill treatment given to their mother by father. On the other hand, Aunt Ifeoma's family was completely contradictory to that of Kambili's. Ifeoma's family included her three children- Amaka, Obiora and Chima. All of them lived freely, spoke their minds and laughed often. All the three children were encouraged to debate and question. They were also close to their father, Papa Nukuwu which too, is a completely contradictory character than that of Kambili's Papa. Though Kambili and Jaja were not allowed to meet either their aunt or cousins, an occasion comes where these two families overlap. Kambili and Jaja go to stay with Aunty Ifeoma and her children. When Kambili and Jaja observed Aunt Ifeoma's family, they realized how unhealthy the atmosphere of their own family was, that too just because of their father's violent behavior. Kambili and Jaja found real happiness and joy in Ifeoma's family and now, they do not want to leave. Thus, through the family of Ifeoma, Chimamanda Ngozi Adichie has represented her idea of healthy family, the family that creates love and happiness, but also accepts the differences and support individuals as they change and grow. Another work by Chimamanda Ngozi Adichie deals with historical and political events, but the work is also about love between the characters which was deeply personal. Adichie had portrayed romantic relationship between the characters Olanna and Odenigbo, Kainene and Richard, while infatuation between Ugwu and Eberechi. These love stories are at the centre of this novel. Adichie has symbolized the unity in Nigerian siblings by portraying love between two sisters. Ugwu's longing for Nnesinachi and Eberechi are restricted by the war and makes him to commit the sin. He rapes a girl, the ultimate corruption of love. By combining all these aspects, one can understand that, Adichie has portrayed deep aspects of human experience, sex as well as violence; romance as well as cruelty. And at the end, tries to explain that, any type of injustice or pain can be fought against with the help of love.

Conclusion:

Chimamanda Ngozi Adichie, a critically acclaimed Nigerian writer, from her different literary works, has portrayed the condition of women in the society and also her own idea of feminism. Her novels 'Purple Hibiscus', 'Half of a Yellow Sun' and 'Americanah' are authored by her, of which the first two are full of autobiographical elements. Through her novels, she has dealt with different themes such as domestic violence, family relationships, marriage, women empowerment, and migration. The present research work dealt with Adichie's two works- 'Purple Hibiscus' and 'Half of a Yellow Sun'. 'Purple Hibiscus' have an autobiographical thouch and have themes such as colonialism, Nigerian politics, religion, family relationships, freedom and violence. While 'Half of a Yellow Sun' have themes such as colonialism, loyalty and betrayal, war, violence, racism, culture, Nigerian politics and love. The themes such as violence, representation of women, colonialism and Nigerian politics are common in both the works discussed above. Most of these themes are discussed in the present research work.

References:

- 1. Adichie, Chimamanda Ngozi. Dear Ijeawele, or a feminist manifesto in fifteen suggestions. Anchor, 2017.
- 2. Adichie, Chimamanda Ngozi. Purple hibiscus: a novel. Algonquin Books, 2012.
- 3. Adichie, Chimamanda Ngozi. We should all be feminists. Vintage, 2014.
- 4. Adichie, Chimamanda Ngozi. *Half of a yellow sun*. Alfred a Knopf Incorporated, 2006.
- 5. Azuike, Maureen Amaka. "Women's struggles and independence in Adichie's Purple hibiscus and Half of a yellow sun." *African Research Review* 3.4 (2009).
- 6. Andrade, S. Rewriting History, Motherhood, and Rebellion: Naming an African Women's Literary Tradition. Research in African Literatures, 1990
- 7. Dubois, W. E. B. The Souls of Black Folk. In Martin Luther King Day. January, 1976.
- 8. Fanon, F., and C.L. Markmann. Black Skin, White Masks. London: Pluto Press, 2008.
- 9. Freud, Sigmund. A General Introduction to Psychoanalysis. Horace Liveright,
- 10. The Interpretation of Dreams; and On Dreams: (1900-1901). Hogarth Press, 1995.
- 11. Mohanty, Chandra T. Feminism Without Borders: Decolonizing Theory, Practicing Solidarity, Durham: Duke University Press, 2003.
- 12. Showalter, E. Feminist Critical Revolution. Feminist Criticism: Essays on Women Literature Theory. (Ed.) Elaine Showalter. New York: Pantheon, 1995.

DAAR S

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Vol.2 Issue.15 May-June-2022

Peer Reviewed Bi-Monthly

GENDER ASYMMETRY IN INDIA'S FOREIGN POLICY DECISION MAKING

Vishakha Jha

Research Scholar of Political Science, Dept. Sociology and Political Science, Dayalbagh Educational
Institute, Dayalbagh, Agra
Email- Vishakhajha333@gmail.com

Abstract:

Power is the central idea of global politics, for that matter all sovereign states are maximizing power for their survival. It could also see that the symbol of power is often associated with male rather than female in global politics. Thus the gender stereotypes of counties, more specifically like India excluded women from the organization of foreign policy decision making process. Such as according to the famous philosopher Aristotle in his renowned book (politics, 384-322BC) stated that "In the difference between sexes, men are considered better and more in nature, while women are underestimated." This gender stereotypes is properly seen in the world politics, while examining the role and status of women in foreign policy decision making process. Particularly in context of India more critically it could be recognize that only one woman was identified as head of the state, named Indira Gandhi and only two women could be seen as external affairs ministers such as Indira Gandhi and at present Sushma Swaraj out of 28 members. Therefore the patriarchal system is the main problem of the marginalised position of women in India's foreign policy. Thus the gender gap between men and women is still prevailing in India's foreign policy decision making process. Women's voices have been hardly listened. Therefore the study has provided an opportunity to examine the Gender Asymmetry in India's Foreign Policy Decision Making process.

Keywords: Gender, India's foreign policy, Feminism, Patriarchy, Foreign services. **Introduction:**

India cannot claim to be the true democracy without proper women's participation in its politics. Though it has declared itself as world's largest democratic country where each man and woman has equal chance to participate in public sphere but still women's participation in India's Foreign Service is low in comparison to men. According to the "Inter Parliamentary Union" (IPU) 2021 women's total participation in the Indian parliament is 14.0%, particularly in the Lok Sabha it is 14.4% and in the Rajya Sabha it is 11.2%. In the postmodern era women's participation is increasing and it could be identified that women are contributing significantly in India's foreign policy whenever they got the chance such as Indira Gandhi, Vijaya Lakshmi Pandit, Chokila Iyer, Nirupama Menon Rao, Sujatha Singh, Sushma Swaraj so on. Unfortunately Politics, specially the Foreign services is known as men's sphere of work thus highly dominated by men and women hardly got chance to work over there. Like any other walks of life the foreign services of India is dominated by men diplomats under the umbrella of Patriarchy. This research paper has provided numerous insights of gender asymmetry found in the Foreign Services of India. Therefore the paper has been divided into four sections firstly we will understand Feminist Perspective in Foreign Policy Making, secondly we will discuss about Gender Asymmetry in India's Foreign Policy Decision Making and at the end of two sections we will have factors affecting women's representation in India's foreign policy Decision Making along with conclusion.

Feminist Perspective in Foreign Policy Making

Feminists notion have been trace in the ancient civilization of Greece and China. Most famous scholar named Christen De Pisan's Book "The City of God" (1405) was supported the education right and political participation of women in public sphere. The first text of the modern feminist thought was written by Marry Wollstonecraft in famous book "Vindication of the Rights of Women" (1792). But particularly at the end of 1980s the feminist views were entered in global politics. In the post-cold war period all sovereign nation states were started to find out tools to bring peace in the global politics. At that time various new issues have been emerged in the global politics because of the globalization such as Human security, Ethno-national conflict, social movements, non- state actors, climate change, terrorism, women's rights and security etc. And also several women's movements had been took place for an improvement of women's position by feminists in global politics. Therefore feminists are identified that women's voices have been hardly listened in the global politics. The patriarchal society was found as the main cause of the marginalized position of women in global arena. Feminist thinkers are challenged the famous traditional theories of International relations such as Realism which would identify nation state actor is the main element of global politics. Thus states have the responsibility to maximize its power for survival. And state

actors were dominated by male because they are the symbol of power, which will provide security to weak ladies. Such as Fukuyama argued that "Biologically women are weak but state must be strong so masculinity is the symbol of power." Therefore feminist thinker Tickner stated that this gender politics creates patriarchal society which subordinate the position of women in internal politics as well as externally. He further argued that women are kept off from the global politics. Furthermore there are various subparts of feminist theories which will advocated various viewpoints for the enhancement of the role and status of women in global society such as firstly liberal feminists argued that the construction of gender by the patriarchal society is subordinate the position of women in global arena. Women do not get equal rights and opportunities. They further show numerous types of sufferings for instance human rights violations, rape girl trafficking, income inequality, gender gap between male and female in global politics etc. Gender stereotypes have been prevailed in the global politics from the history to till now. Post liberal feminists argued that equality could not achieved in the global politics between male and female, till states do not removed the patriarchal anarchic structure. Liberal feminist thinkers believed that by the removal of legal bindings, equality could be achieved in international politics. By the establishment of legal rules in internal as well as external level will enhance the status of women. States should provide reservation and welfare schemes for the improvement of women's participation in global politics. Secondly critical feminist theorists was explored the notion of gender and material condition of male and female. This theory has been influenced by Marx and Gramcian thought on women's position in capitalist global society. A very famous feminist critical theorist named Sandra Whitworth in famous book "Feminism and International Relations" (1994) argued that women's enjoy marginalized position within families because they are not doing paid work. For money they are depending on the male. Further claim that the notion of gender which is socially created must be changed. She has been suggested that by the international organization the idea of gender can be changed in the global politics. These organizations should be formulated impartial policies, which will provide equal opportunity of women in economics spheres. Another theory of feminism is feminist social constructivism, which argued that global politics is dominated by the idea of gender stenotypes such as Elisabeth Prugl famous book 'The Global Construction of Gender' (1999) claims that most of the home based works have been done by women. But they could not recognize as real work in the patriarchal society. It is unpaid work which is identifying as not a real work but as the so called duty, which must be performed by women at any cost. Thus women are suffering within the four walls of their home. Also they could not get an opportunity to raise their voice.

Recently there are three countries who are adopting the feminist foreign policy for an improvement of women's position in their countries, such as, the initiative taken by Sweden, Canada and France. They are adopting feminist foreign policy in global politics, such as, According to Merriam-Webster, feminist foreign is "The policy of a sovereign state in its interaction with other sovereign states based on the theory of political, economic and social equality of the sexes, delivered to advance women's rights and interests." But it doesn't mean that feminist foreign policy is just goes around the women's development rather it is concerning with the overall development of the world politics. In 2014 Sweden was firstly adopted the feminist foreign policy such as Swedish foreign minister Margot Wallstrom was proclaimed "The world's first explicitly feminist foreign policy is a Swedish feminist foreign policy." The Swedish feminist foreign policy was constituted the 'Three Rs', which stands for Right, Resource and Representation. Here there is equal right to women in foreign policy decision making process. Also states will distribute all the resource equally between men and women. And lastly women will get the equal opportunity to represent their country in the world arena. So feminists seek equal representation of women in all spheres. And it is the duty of states to ensure freedom and security of women in the national as well as international level.

Gender Asymmetry in India's Foreign Policy Decision Making

In the postmodern era women's representations have increased in global politics. Today women are enjoying various rights such as equality, liberty, rule of law, labor rights; right to vote etc in national as well as international levels which were not available earlier. Women's participation is growing day by day in all spheres such as socio-political, economic, cultural, educational, military, etc. In the context of India, women are playing important role in the formulation of its foreign policy. Thus with the triumph of democracy, women got their due but much more is needed. The representation of women is not that sufficient according to their population. Though there are various bold ladies such as Margaret Thatcher, Indira Gandhi, Theresa May, Sheikh Hasina, Angela Markel etc are dominating in global politics but still the representation of women is less, marginalized and an inadequate in the area of global politics. Particularly in context with India, it could be identify that women are contributing significantly in the formulation of India's foreign policy whenever they got the chance to represent themselves, such as the

remarkable contribution of Indira Gandhi, Vijaya Lakshmi Pandit, Chokila Iyer, Nirupama Menon Rao, Sujatha Singh, Sushma Swaraj etc. But more critically it could be recognize that only one woman was identified as head of the state, named Indira Gandhi and only two women could be seen as external affairs ministers such as Indira Gandhi and at present Sushma Swaraj out of 28 members. Therefore the patriarchal system is the main problem of the marginalized position of women in India's foreign policy. Thus the gender gap between men and women is still prevailing in India's foreign policy decision making process. Women's voices have been hardly listened. Therefore the study has provided an opportunity to examine the role and status of women in global politics. Particularly this identifies women's participation in India's foreign policy and lastly analyse the factors affecting women's representation in India's foreign policy. The role and status of women is clearly seen through the lens of feminism in global politics. Feminist scholars argued that women are playing subordinate role in global society. Such as the famous feminist thinker Cynthia Enloe in her renowned book (Bananas, Beaches and Bases, 1990) stated that "Women's position in international politics is just shadow subordinate." She further says that "Women are only identified as diplomats' wives, secretaries' clerical workers, and domestic servants and in prostitute work." In the postmodern era, the representation of women is still less, marginalized and an inadequate in the area of global politics. The reason for the marginalized position of women in world system is the concept of gender that is well defined by the most popular radical feminist thinker Simone De Beauvoir quoted that "Women are made they are not born" (The Second Sex 1949). In the same context J.Ann Tickner has argued that "Gender order/hierarchy creates women in subordinating position" (Gender in World Politics, 1992). Further masculine features have been finding out in the structure of foreign policy decision making process as once pointed by Carol Cohn in his popular book (Sex and Death in the rational world of Defence Intellectuals, 1987) that "Masculinised culture existed in international relation, who explore that state and war projects men." Though India has declared itself as world's largest democratic country where each man and woman has equal chance to participate in public sphere but still women's participation in India's Foreign Service is low in comparison to men. According to the "Inter Parliamentary Union" (IPU) 2021 women's total participation in the Indian parliament is 14.0%, particularly in the Lok Sabha it is 14.4% and in the Rajya Sabha it is 11.2%. In the postmodern era women's participation is increasing and it could be identified that women are contributing significantly in India's foreign policy whenever they got the chance such as Indira Gandhi, Vijaya Lakshmi Pandit, Chokila Iyer, Nirupama Menon Rao, Sujatha Singh, Sushma Swaraj so on. Unfortunately Politics, specially the Foreign services is known as men's sphere of work thus highly dominated by men and women hardly got chance to work over there.

Factors affecting women's representation in India's foreign policy Decision Making

Though women are covering half of the population of worldwide but they are not equally enjoying the position with men in Foreign Service. The reason for less representation of women in foreign policy has been the concept of gender; gender serotypes and gender stigma which are existing in the global politics as well as in India's foreign policy decision making process. Still men are more associated with foreign policy tools like diplomacy, national interest, power, game politics, war, military, grand strategies etc. But also there are other positive factors as well, which give an equal opportunity to women in India's Foreign Policy. Therefore the study will provide an opportunity to examine the factors affecting women's representation in India's foreign policy.

- 1. The socio-cultural factor will include public and private division of labour in which former is associated with male while later one is associated with female only. It is social because, the concept of gender, which has been made by society.
- 2. Religious Factor: Religious factor is one of the parts of cultural factor where women are exploiting in the name of rituals. Patriarchal structure of the society gives all superior position to male only. Its main goal is to marginalize the position of women in all spheres.
- 3. Economic factors: Critical feminist theorists explored the notion of gender and material condition of male and female. This theory has been influenced by Marx and Gramcian thought on women's position in capitalist global society.
- 4. Patriarchal system: -Literally term of the Patriarchy is 'Pater' means 'father' or "Patriarchy is the rule of the father." It can be generally defined as power relationship between men and women. Here men are dominating over the women in all sphere of the life.
- 5. The concept of gender is deferent from the term sex. Sex refers to the biological phenomenon which implies as the difference between men and women biologically. Here, by birth men and women get there reproductive system. Gender is a socio-cultural term.

6. Lack support to women from their family members to join politics as well as higher positions: -Indian women are not free to take part in politics. Women are now coming out form their home. But still, in India women are not enjoying that freedom which they needed.

Conclusion

In concluding lines we can say that in India's foreign policy decision making process, it could be identified that women's role and status is growing. Women are contributing significantly in the construction of India's foreign policy. But still women diplomats are less in comparison with men diplomat in India. The gender gap between men and women is still predominating in India's foreign policy. The main problem is the patriarchal system which marginalized the role of women in India's foreign policy. Women diplomats are capable to handle any difficulties but still their numbers have been less than men in Indian Foreign Services. Thus there is a need to take some strong steps for an enhancement of women's position in India's foreign policy. government should make sure for the proper implementation of all laws related equality of women, such as, articles 14,15,15(3), 39,243(d), 51(a) etc.

References

- 1. Aristotle. (384-322 BC), "Politics",p.32 Retrieved March 6, 2019 from http://www.universityofcalicut.info/SDE/Economic_thought.pdfon February
- 2. World Economic Forum (2021).Global Gender Gap Report, Geneva: World Economic Forum Retrieved March 6, 2019 from https://www.we forum.org/reports/the global gender gap report.
- 3. Tickner, J A. (2008), "Gender in World Politics", (ed.) Baylis, J, Smith (et.al). The Globalization of World Politics: An Introduction to International Relations, USA, Oxford University Press, and pp.90-105
- 4. Kumar, P. (2017), "Participation of Women in Politics: Worldwide Experience", IOSR Journal of Humanities and Social Science (IOSR-JHSS) Volume 22, Issue 12, Ver.6, PP.77-88. Retrieved on February 4, 2019. From https://www.researchgate.net>Publication.
- 5. Enloe, C. (1990), "Bananas, Beaches and Bases: Making Feminist Sense of International Politics", Berkeley University of California Press, Retrieved on February 6, 2019.
- 6. Beauvoir, SD. (1949), "*The Second Sex*", Vintage Books London, Vintage Feminism Short Edition, pp.1-9, retrieved on February 23, 2019.
- 7. Bala, Dr. K. (2015), "Perspectives on Violence against Women", Third Way an International Journal of Ideas, pp.41-46, retrieved on February 4, 2019.
- 8. Hajnal, P. (2015), "Feminism in International Relation Case Study: Indira Gandhi and Margaret Thatcher", Journal of Global Politics and Current Diplomacy, Vol 3(1), pp. 13 -21. Retrieved from PDF jornal.Centruldedic.ro>2016/037Pallu,retrieved on February 23, 2019.
- 9. Grant, R. (1991), "The source of Gender Bias in International relations Theory" In Gender and International Relations, (ed.) Rebecca Grant and Kathleen Newland Bloomington: Indian University Press pp.8-26,accessed on March 6, 2019.
- 10. Krishnaswami, O R and Ranganatham, M. (2015), "Methodology of Research in Social Science", Mumbai, Himalaya Publishing House Pvt.
- 11. Retrieved on April 11, 2019 from http://quotesthefamous people.com/Indiragandhi-47php.
- 12. Retrieved on April 18, 2019 from http://jagranjosh.com>General Knowledge> current GK.
- 13. Linse, C. (2004), "Challenges Facing Women in Overseas Diplomatic Positions", Intercultural Communication and Diplomacy, pp.253-263, Retrieved on April 13, 2019 from http://www.diplomacy.edu/edudefault>files.
- 14. Miranda, R L T. (2005), "Impact of Women's Participation in Decision- making", Prepared for the UN Department of Economic and Social Affairs (DESA), Division for the Advancement of Women (DAW), Expert Group Meeting in Equal participation of women and men in decision –making processes, with particular emphasis on political participation and leadership", Addis Ababa, pp.1-11, retrieved on April 13, 2019 from http://www.un.org>docs>EP.7-rev.pdf.
- 15. Tickner, J A. (2008), "Gender in World Politics", (ed.) Baylis, J, Smith (et.al). The Globalization of World Politics: An Introduction to International Relations, USA, Oxford University Press, and pp.90-105.
- 16. Koyuncu, C A. (2011), "Women's Place in Foreign Policy Decision Making Mechanism", TODAIES Review of Public Administration, Vol.5, No 4, pp.133-161, accessed on February 4, 2019.
- 17. Chenoy, A M. (2012), "Gender in International Relations", (ed.) Chimini, B S and Mallavarapu.S "International relations Perspectives for the global south", Pearson, pp.81 to 93, retrieved on February 4, 2019.

- 18. Agrahari, Dr K S. (2014), "Women's Participation in Indian Politics: Issues and Challenges", South Asian Journal of Socio-Political Studies (SAJOSAS), Volume- 14, No-2, pp.72-75, retrieved on February 23, 2019.
- 19. Domingo and Neil, P T. (2015), "The Power to Decide Women Decision Making and Gender Equality", Overseas Development Institute Report, pp.1-8. https://www.odi.org>files>odiassets. Retrieved on February 6, 2019.
- 20. Chattopadhyay, S. (2015), "Political Participation of Women", Third Way an International Journal of Ideas, pp.32-37, retrieved on February 23, 2019.
- 21. Ketaki, K. (2015), "Women Empowerment a Global Comparison", Third Way an International Journal of Ideas, Vol.29, No 345, pp.32-37,accessed on February 4, 2019.
- 22. Aggestam and Bergman,-R. (2016), 'Swedish Feminist Foreign';
- 23. Kumar, P. (2017), "Participation of Women in Politics: Worldwide Experience",
- 24. Williams, K P. (2017), "Feminism in Foreign Policy", Oxford Research Encyclopaedia of Politics, Oxford University Press, pp.1 to 23 Retrieved from February 4, 2019 fromhttps://www.google.com/url?sa=t.
- 25. McGlen and Sarkees, N.M. (2018), "Women in Foreign Policy", Routledge Library Editions: Women and Politics, pp.1 360, retrieved on April 13, 2019 from http://books.google.co.in/book?isb.
- 26. Rigali, M C. (2019), "ASG Announces Nirupama Rao as Senior Advisor", Albright Stonebridge Group (ASG), retrieved on April 13, 2019 from http://www.albrightstonebridge.com>files.
- 27. Sushama Swaraj retrieved on August, 12 2019 from https://www.edristi.in/sushma-swaraj-passed-away/.

DAAR V

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Vol.2 Issue.15 May-June-2022

Peer Reviewed Bi-Monthly

THE SRI LANKAN IDENTITY RELATED WITH THE CONCEPT OF GOD SKANDHA KUMARA

Dr. Amila Damayanthi

Lecturer, Department of Indian and Asian Dance, Faculty of Dance & Drama, university of the visual & performing Arts, Colombo 07, Sri Lanka

Introduction

The worship of God Skandha Kumara is to be seen in countries of South East Asia influenced by Hinduism; including South India, Malaysia, Indonesia and Bama. According to primary and secondary sources, this worship has been continued for a long period of time since early history. This research intends to explore the concept of God Katharagama, which the name is given to the skandha Kumara worship in Sri Lanka. The research explores the legends and rituals associated with the worship of God Katharagama and the Sri Lankan identity within it. With the above objectives, the Skandha Kumara worship in neighbouring India has been closely inspected. In searching for the reasons of worship of God Skandha Kumara, it was revealed that he is held in higher esteem as the eldest son of God Shiva and he is worshipped as the God of success in achieving Wealth, knowledge and power. The worship of God Katharagama extends further into first century B.C, with the intentions of gaining victory. Researching upon the local legends, it was inquired into whether the contemporary Sri Lanka preserves the Sri Lankan identity within the Skandha Kumara worship and whether the ancient rituals continue with the same values.

Discussion and Analysis

The majority of Sri Lankans are Sinhala Buddhist and God Katharagama who is believed to be lively present in Southern Sri Lanka, is considered as one of the four guardian Gods of Sri Lanka with Gods Saman, Upulvan and Vibheeshana.He is venerated within every social stratum of Sri Lanka. The recent found sources term hi to be God Katharagama, Kada kumaru,skandha kumara and on rare occasions as Mahasena Karthikeya.God Skandha Kumara is celebrated in South India as the eldest son of God Shiva. According to the Sanskrit text Amar Kosha, this God is represented in many names such as Karthikeya,Senani,Shikivahan,Mahasena,Agnibhu,Shakthishwar,Yogeshwar,Sharapthma,Kumara,Shivath maja,Shadaanan,

Bahuleya, Thiruchanadur, Murga, Vishnu, Parvathinandan, Tharakajith, Devadeva, Eshwar, Vishvash, Vishaka, Skandha, Vallivallabha, Maharudra, Parabrahma, Swaminatha, Gnanagamya, Guha, Sarveshvar. Lots of texts mention Devasena and Valli to be his chief consorts and his siblings to be Ganesh, Ashek Sundari, Manasa Devi, Devi Jothi and Aiyappa. God Skandha Kumara is considered as the God of war and victory as well as the Commander of chief of all Gods. The major landmark shrine devoted to God Skandha Kumara is located in the city of Kataragama situated at the Hambantota district in the southern part of Sri Lanka. Hence he is known by most as God Katharagama. There is a legendary folk tale relating that a shrine for God Katharagama was built by King Dutugamunu in between the time periods of 161-137 B.C. In the month of July, there is an annual God veneration procession held on behalf of his name. This celebration highlights the marriage between God Katharagama and Valli. The procession began as a tribute for the God in proving the faith of king Dutugamunu. According to the historical legends related with God Katharagama, King Elara of Soli dynasty had come to Sri Lanka from the Southern parts of India and had ruled the country without well respecting Buddha sasana and creating distress among ethnicities. In such an atmosphere, the son of king Kavanthissa who ruled the southern Sri Lanka: Gamani decided to defeat Elara and unite the country. At that time, God Katharagama resided at the Jeewamaali port of river Manik. In foreseeing the future, God Katharagama understood that one day King Dutugamunu would unite the country and preserve Buddhism. Therefore he had blessed king Dutugamunu with strength to win the war.King Dutugamunu ha promised God Katharagama a palace with golden roofing in return for his favour. The 'diya kapeema' ritual performed at the end of the Esala procession in jeewamaali port today is done in memory of this meeting between king Dutugamunu and God Katharagama. At the end of the war king Dutugamunu had willed God Katharagama to materialize himself at Wadasiti kanda. After God Katharagama had appeared in front of King Dutugamunu, he informed him that he had ended the war and will build the golden roofed palace as promised. God Katharagama had declared to the king that the people of future will be unethical in an age of 'kaliyuga'. Thus, the golden roofed palace will go in to ruin and the God's good name would be tarnished. Hearing this future prediction, king Dutugamunu requested God Katharagama to show a proper place. There, God Katharagama had directed an arrow from Wadasiti kanda

and king Dutugamunu built a shrine where the arrow had landed. This is the folktale which is believed by most from ancient times.

The king had employed skilled architects in constructing this shrine. It includes a fenced garden Maluwa), athu pandalama, Minibadi mandapaya,gotumahana pila,gabada pila,sadun mandapaya, vatamaarama and the palace which stored sacred relics. The shrine was architecturally well planned. Accordingly, the proof of the worship of God Katharagama runs back into 63 A.D.Yet folktales mention that the worship of God Skanda prevailed before that in Katharagama, southern Sri Lanka. According to the devoted prayers dedicated to Skandha kumara, the god was escorted across the sea and landed on the shores of Devinuwara Batakudu Godella. He had sat on the throned seat for a while and departed from Devinuwara (located in Mathara district in Sri Lanka) and travelled pass Thangalla Henekaduwa and landed on Wadigala. Then finally he reached Wadasitikanda, which is considered as the highest mountain in Katharagama mountain range. This shows that God Skunda Kumara arrived in Sri Lanka from a foreign country. Some folk tales depict God Skunda Kumara to be a meditative yogi, practising meditation in Wadasitikanda in hope of attaining supreme Buddha hood in future. However, there are many shrines erected in the name of God Skundha Kumara around the world and within Sri Lanka. Yet the devotees believe the shrine of Katharagama to behold greater power. Katharagama is a holy land for both Hindus and Buddhists. The first settlers in the land of Katharagama were North Indian Aryans who invaded South India and arrived in Sri Lanka. These settlers arrived both from North East and North West of India. The oldest settlers in Sri Lanka first formed settlements in the lower religions of Malwathu Oya and secondly moved to South Eastern parts within the country. At first there were two South Eastern settlements. First was at Katharagama near the Manik river and the second was at Thissamaharama near Kiridi Oya. The Aryans who thus arrived in Sri Lanka brought with them all the features of their civilization with them. Agriculture, irrigation, language and religion are prominent among them. At first the religiosity was based on primal elements such as fire (agni) and air (vayu). It is rather based on Vedic religion than worship of deities. Karthikeva is the eldest son of God Shiya, Karthikeva had destroyed the Asura Tharaka and Hinduism therefore believes him to be the victorious God who defeats evil. The North Indians do not worship Skandha Kumra as the South. The south Indians celebrate the day 'Hashmi' in memory of how he defeated enemies. Remaining vegetarian for days, fasting, offering sesame oil lamps, observing rituals, Reciting Murugan stanzas, shasha thasmi thawasama, Subraanium bhushgam, chanting mantras such as Karthikeya siddhi mantra, modila visheshitaya, offering saman pichcha flowers, offering saffron, sandalwood, scented gifts, grains and milky food are done in veneration of karthikeya. It is done in their own houses and shrines. Not Buddhists, but many Hindus in Sri Lanka follow these kinds

The Katharagama shrine is visited by all Buddhists, Hindus, Muslims and Christians alike. It is a ground of interfaith. The major reasons to build the Buddhist-Hindu solidarity and gain a localized flavour for the Katharagama worship are the location of three historically prominent Buddhist landmarks on the land of Katharagama and those venerated lands used to being under the rule of kshasthriya dynasty. According to Buddhist legends, Lord Buddha had visited Sri Lanka three times and one of them was to the land of Katharagama where the dagoba Kiri vehera is situated. The other is Thissamaharama where Budhha had meditated in Samadhi. The other is Sithulpawwa in the midst of Yala national forest where 12000 Rahat theros were said to have resided. All three of the above sites of veneration are located in Katharagama grounds. Thus katharagama is a holy ground valued by Buddhists as well as individuals of other faith. According to Buddhist faith, people dedicate the merit they gathered through worshipping these sites to God Katharagama so that one day he can arrive at the supreme bliss of Nibbana. In expectance of those merits, the Buddhists believe that God Katharagama protects Buddhists, At first, Buddhists worship Kiri Vehera and afterwards is seen to offer fruits to God Katharagama. Buddhists and all the other individuals of different faith pray in fulfilling their worldly ventures with the blessings of God Katharagama. They believe in the power of God Katharagama in fulfilling their wishes by accepting their variety of offerings. It is purposeful to inquire how the kshasthriya dynasty that lived in katharagama was related with God skandha. Skandha was a God even the Shakyans venerated. According to Lalithavistharaya, prince Siddhartha had gone on a pilgrimage to worship God Skandha. Therefore the kshasthriyas who lived in Katharagama were also Shakyans who worshipped God Katharagama. They must have considered God Skandha Kumara to be their God of provincial protection. Hinduism has many stories regarding the origins of God Skandha. According to one folk tale, he is the son of Prajapathi and Ushas. In another story, Skandha is the son of Indra and Devasena. He is also known as the son of Shiva and Parvathi. In an era where the origins of God Skandha were forgotten, these stories had emerged independently out of many traditions. Yet it cannot be said that there are no true stories among them. Through these stories, God Katharagama has been related to both Aryan and non-Aryan Gods. Not only in India but in south Eastern countries, this God is worshipped in relation to Aryan and non-Aryan entities. One other reason for God Katharagama to become a localized God is one of his spouses being of Sri Lankan origins. Skandha Kumara had fallen in love with beautiful Valli in Sella Katharagama, who was a descendent of aboriginal people of Sri Lanka. Hence, the early weddah or aboriginal people share a special connection with God Skandha. It is said that God Katharagama lived with valli in Sella Katharagama for a while. Contemporary aboriginal descendants have their own legendary tales regarding the meeting between Skandha Kumara and Valli. Among them is the story of the tribal leader 'Gammandila aththo'. Gammandila aththo had 11 sons but no daughters. He pleaded God Vishnu for a daughter. One day as he was walking in the woods he saw a little babe in a pit. She was named as Valli. As she came of age, she became a very beautiful woman. God Skandha had noticed her working in a meneri grain field and had thought of marrying her. Eventually Villi falls in love with Skandha Kumara and both secretively get married. Then they hid from their families. The valli cave, Wadasitikanda and the Tamarind tree in Valli Amma shrine are the places they have hid themselves for others. However, Valli's brothers captures both of them. God Katharagama promises money to Valli's brothers but her brothers aim bows and arrows in attacking Skandha Kumara. In memory of this legend, the aboriginal descendents today act out the incident by aiming bows and arrows at the Deva Karaduwa when it is escorted out of the shrine in the grand procession. This is a major ritual in Katharagama procession. The marriage of Valli and God katharagama had elevated him into a local God.

Even though there are stories as such regarding God Katharagama, there is a lack of written factual evidence of him during the civilization of Rajarata. Mahavamsa only mentions of God Sakra and God Upulvan. From the long period extending from Polonnaruwa kingdom to Kotte, there are no proof of God Katharagama. But in Gampola era in 13th century A.D, the Lankathilaka vihara inscription mentions Skandha Kumara to be among the four guardian Gods of the country. Yet his headquarters is not mentioned to be Katharagama. In the Kotte era, Shri Rahula thero mentions of a Mahasen shrine at Sri Jayawardanapura and that the thero was especially chosen by Skandha kumara to grant his wish. Mahasena is another name used for Skandha Kumara. Even though the worship of Skandha Kumara could be seen from the Gampola era, there is no concrete evidence in proving his relationship to Katharagama or that he is the self-same God mentioned as God Katharagama. In 1561 A.D, the text Jinakaalamaalaniya written in Siam mentions God Kaththagaama to be one of the guardian Gods of Sri Lanka. This proves that the shrine of Katharagama was famous in other countries as far away as Siam. Katharagama has been the headquarters of Skandha worship for a long time. The first historical record regarding Katharagama is found in third century B.C during the reign of King Devanampiyathissa, (247-207 B.C) when female monk Sanghamitta escorted Sri Maha Bodhi into Sri Lanka. According to the 54th Gatha in the first chapter of Mahavamsa, there were invitees of Katharagama Kshasthriya dynasty for the planting ceremony of Sri Maha Bodhi. This proves that there was a kingdom in Katharagama and its rulers belonged to the Kshasthriya dynasty. The 62nd gatha of the same chapter mentions that one of the saplings arisen from the first Bodhi tree was gifted to the people of Katharagama Kshasthriya dynasty. The South eastern areas of Katharagama was inhibited by Kshasthriya rulers. Katharagama was ruled by the Kshasthriya dynasty for more than three hundred years and the Brahmanic religions were well known within that premise. For an example, there are many historical inscriptions regarding donations done by Brahmins. The poetry collection Thiruppugal written by poet Aruna Girinadar before 4500 years mentions the adventures of Skandha Kumara from lines 407 to 416. It mentions how Skandha Kumara destroys Sura Padma or Tharaka Asura. The forces of Tharaka Asura had resided in Hemakuta in Ruhuna. This is also known as Sinhasanakanda, Madumhelaya and Wadasitikanda at present. Hindus of Bharath recognize this as the southern Kailash. In knowing how powerful the Velayuda weapon of Skandha kumara is, the Tharaka asura transforms himself into a tree. Yet he could not escape the twelve eved gaze of Skandha Kumara. Skandha Kumara releases his Velayuda to divide and cut the tree into two halves. Tharaka asura was destroyed with the tree. According to legend, Skandha Kumara converted one half of the tree into a peacock and the other into a rooster. He gifted the rooster to God Dadimunda and he himself chose the peacock. He trampled the sawul flag and destroyed the Hemakuta of Tharaka asura. According to the Thiruppugal poetry collection of Brahmin Aruna Girinadar, God Skhandha Kumara established his authority over Wadasitikanda in the South eastern part of Katharagama after defeating Tharaka asura. The gifting of a rooster to God Dadimunda holds importance since God Dadimunda is a local God.

Wednesdays and Saturdays are Kemmura days at the Kathargama shrine. There are special rituals performed in these two days. This puja offerings contain fish and alcoholic drinks. Both men and women sing erotic songs and dance. There are band instrumentals of sak, ghanta and hewisi. The prayers or yadini consist of both the blessings of the triple gem and divine blessings. This portrays Buddhist religious features. The pyayer vadini has the heroism of the God. There is another highly devoted offering known as Kawadi. There are five types of Kawadi as paravi, bhakthi, gini, kiri and mathsya. Metal hooks are attached to the back and the devotees worship the shrine for an hour. This is paravi kawadi. It is a scary experience for the onlooker but it is believed that no harm is befallen upon the devotee. In here, the body is hanged. There is no visible blood spill. The Asura demolishing ceremony held in November, The day God Katharagaa received the title of commander in chief of Gods, the day God Katharagama was born, the day he arrived valli are the days in which bhakthi kawadi is offered. Gini kawadi is when lighted oil lamps are offered with kawadi. Kiri kawadi is done with the milk received from a black cow. There is another mode of kawadi known as athsya kawadi but it has gone to ruin. Kavadi attam or kawadi is an endemic form of dance in Katharagama shrine. The critics observe that the dancing tradition of kawadi to be inherited from the Murugan shrines in south India and as a result, the Sri Lankan Hindus of North and East worshipping God Katharagama had also embraced the tradition of kawadi dance.

Conclusion

God Skandha Kumara or God Katharagama is a God of victory and power. Primary and secondary sources in South East Asia, Sri Lanka and South India with its historical sources and legends prove thus. Especially it is revealed in Vedas, Mahabharatha and Purana texts. He is the God of heroism and war in Hinduism. There is enough proof to justify that God Katharagama is the God Skandha Kumara of Hindu faith. The priests in ajor Hindu shrines and South Indian Hindu devotees believe that God Skandha Kumara resides in Katharagama. Although the origins of the namesake of God Katharagama is unclear, it could be assumed that Katharagama was home to God Skandha Kumara. Wadasitikanda is where he lived and because of that he might have been known as God Katharagama. Further, the shrine of Katharagama was built on holy grounds of Buddhists. Maybe the Buddhists did not tolerate the name Skandha Kumara and created their own name instead. The name of God Katharagama had made these grounds a place of interfaith. The name has preserved the Sri Lankanness of the shrine. By the intermarriage relationship between God Katharagama and Valli, the bonds between the Hindu culture and endemic Sri Lankan culture have been strengthened. There are an amalgamation of Buddhist rituals as well as Hindu rituals related with the procession of Katharagama. The involvement of Aborigines and a shrine guardian (kapumahattaya) of Sinhalese Govigama cast and the guardianship of Buddhist monks reveal that it has been influenced by a variety of cultures.

According to the proof as gathered from Hindu Purana texts and historical sources, there is no enough factual proof to declare that Skandha Kumara to be God who defeated the South Indian Aryans in order to establish his power. Yet according to legend, Skandha Kumara emigrated from India and defeated the local Asura named Tharaka who lived in Wadasitikanda to capture power. The Hindu literature and legends mention that God Skandha Kumara was conceived in Parvathi without the favour of God Shiva. He is said to be less intelligent than his brother Shankar or God Ganesha. This is again one of the reasons why God Skandha Kumara is well received in Sri Lanka. Even though Skandha Kumara defeats the local asura Tharaka, he helps in king Dutugamunu to defeat the south Indian invader Elara. This has also been one of the reasons why Si Lankans accept God Katharagama as a localized deity.

References:

Sinhala books:

- 1. Palliyaguru Chandrasiri (2014). sanskrutiya,samajaya sha paurushaya, S.Godage publisher Colombo.
- 2. Jayasinha Ranjith (2018). Kadawara sankalpaya, S.Godage puplisher, Colombo.
- 3. Kariyawasam Thissa (1991). Sirilaka Devivaru, S. Godage publisher, Colombo.
- 4. Kulathilaka c de s (1996). *sri lankawe sangitha sambhavaya*, S.Godage publisher, Colombo.
- 5. Darmadhasa K .N.O, Thundeniya H. M. S (1994) .*sinhala dewa puranaya*, Government Printing Corporation, Colombo .
- 6. Wijesooriya .S (1997). *sri lankawe baudda hindu sahajewanaya*, Sahabhageethwa sanwardhana prshad, Kotte.
- 7. Bentharage Layanal (2009). ririyak sankalpaya saha samajaya, Editor publication.
- 8. Jayawardhana Madhurasiri (2009). hela adiwasika sirith wirith, S.Godage publisher, Colombo.
- 9. Wikramage Chandra. (2004). katharagama ha katharagama devidu, Editor Publication.
- 10. Ranasinghe Sumith, (2011). katharagama puwath, central cultural fund sri lanka.

- 11. Katiyapperum W (2018). *srilankika hindunge dewamandalaya havuthsava*, Ministry of cultural Altairs.
- 12. Ariyapala M B (1962). madyakalina lanka samajaya, department of officel language Rajagiriya
- 13. Ranasigha Saman Chandra. (2007). Rama sha bodhi sathwa, Editor Publication.

English Books:

- 1. Geger Wilhelm. (2014) 4th edition, *mahawansam*, Buddhist Cultural Centre Colombo.
- 2. Paranavithana .S (1953). *The shrine of Upulvan at Devundara* Deraniyagala P. E. P (?) *Sinhalese Verse*, Ethonolog volb1 .111
- 3. Bandarkar (1921). Lecturers in Indian numismatic, Calcutta.
- 4. Sing S. S (?) The Early Coins of Ancient India.
- 5. Macfie J. M. (1992). *Myths and legends of India: An introduction to the study of Hinduism*, New Delhi: Aryan Books international.
- 6. Kabade Rahul. (2012). Sri Muruga, sri Muruga publication.
- 7. Deepthi Shanthi. (2018). Load Murugan, The power of veal independently publisher.

Hindi Books:

- 1. Yadhav Sigh Thakoor. (2010). bharathiya sangeeth ka etihaas, university publication Varanasi.
- 2. Dhube Satyanarayan. (2007). bharathiya kala, Sharadha pusthak bhawan Allahabad

DAAR .

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Vol.2 Issue.15 May-June-2022

Peer Reviewed Bi-Monthly

WOMEN EMPOWERMENT: A STUDY OF JAISHREE MISRA'S ANCIENT PROMISES

Mr. Gajanan Telang¹ Dr. Vaishali Aher²

¹Research Scholar

²Research Guide

Abstract

Fiction writing has become a popular form. Fiction especially is not only an aesthetic enjoyment for readers but also acquires power in the hands of competent writers. It generates a scope for change and development. The autobiographical genre evolved in the fiction and took the world by storm. Jaishree Misra is an Indian author whose debut novel Ancient Promises was published and sold worldwide by Penguin UK and became a major bestseller in India. It is now a prescribed text on several University BA English Literature courses. Subsequent books were a comedy of manners called Accidents Like, Love and Marriage and a novel about bereavement called Afterwards. Jaishree Misra has written a semiautobiographical novel, her first novel, Ancient Promises. Misra believes in 'Malay Karma' which in Malayalam means ancient debt or that joy and sorrow follow each other in a cycle. In her very first novel, Jaishree Misra consciously sets out to blur the truth and fictionalize the story because she believes that is the real job of the novelist. The protagonist of Ancient Promises, Janaki bears close resemblance with Misra. They both have gone through the up and down of life. The novelist has attempted to write a semiautobiographical novel where the facts have been interestingly mixed with fiction. The pitiable plight of the women in marriage as wife, daughter-in-law or later widow as seen in Misra's novel makes the novel a realistic, contemporary, social document of the actual status of women in India today. Janu's journey though long and traumatic, makes her stronger and eventually brings her peace. The novel deals with marriage, divorce and motherhood.

Keywords: Love, family, loyalty, Malay Karma, Marriage, Divorce, motherhood etc.

Introduction

Before the discussion of jaishree misra's women's empowerment in her writing we should know what is women's empowerment?

Women's empowerment can be defined to promoting women's sense of self-worth, their ability to determine their own choices, and their right to influence social change for themselves and others. It is closely aligned with female empowerment - a fundamental human right that's also key to achieving a more peaceful, prosperous world. In Western countries, female empowerment is often associated with specific phases of the women's rights movement in history. This movement tends to be split into three waves, the first beginning in the 19th and early 20th century where suffrage was a key feature. The second wave of the 1960s included the sexual revolution and the role of women in society. Third wave feminism is often seen as beginning in the 1990s. Women's empowerment and promoting women's rights have emerged as a part of a major global movement and is continuing to break new ground in recent years. Days like International Women's Empowerment Day are also gaining momentum. But despite a great deal of progress, women and girls continued to face discrimination and violence in every part of the world. This research explored the Indian typical woman who is trying to overcome from her problems in the novel of Jaishree misra's Ancient promises. She is an Indian author whose debut novel Ancient Promises was published and sold worldwide by Penguin UK and became a major bestseller in India. Subsequent books were a comedy of manners called Accidents like Love and Marriage and a novel about bereavement called Afterwards. Her fourth novel, Rani is historical fiction based on the life of Rani Lakshmibai of Jhansi. This was published by Penguin in December 2007 and banned soon after by the Uttar Pradesh state government in India.

Jaishree Misra has an MA in English Literature from Kerala University and two post-graduate diplomas from the University of London, the first in Special Education and the second in Broadcast Journalism. She was awarded a scholarship by the Charles Wallace for India Trust in order to complete her course in Special Education. Jishree Misra worked for several years in the Child Care Department of Social Services in Buckinghamshire and, more recently, as a film classifier at the British Board of Film Classification in London, England. She resigned at the end of 2009 after a seven-year stint when she went to live in New Delhi, India, where she helped to start up a residential project for adults with learning disabilities. The studio she built on Veli beach in Trivandrum, Kerala is being developed into a writers' residency. She currently lives with her family in the UK. Jaishree is a regular on the literary festival circuit,

having taken part in the Jaipur Literature Festival, the Daily Telegraph Hay-on-Wye Festival, The Week Hay Festival in Kerala, the Kovalam Literature Festival, Words on Water in Johannesburg, South Africa, the Odisha literary festival in Bhubaneswar, the Khushwant Singh literary festival in Kasauli, Panchkula festival. Delhi Gymkhana Club litfest, the Dhaka Literature the the Mathrubhoomi International Festival of Letters in Thiruvananthapuram and the inaugural Kerala literature festival in Kozhikode. She has also held events at the Frankfurt Book Fair and the Shariah International Book Festival and been part of a panel discussion at the London Book Fair. She was invited by the Arts House in Singapore to conduct creative writing workshops for adults and schoolchildren. She inaugurated the Keraleeya Samajam Book Fair in Manama, Bahrain, and led the pledge for International Women's Day at Techno park, Trivandrum. She has focused on Indian woman by her book their love and affection. Ancient Promises is a best-selling book it is a means of woman social reformation or realism.

Discussion

A story of love, heartbreaks, family loylty and marriage; Indian author Jaishree Misra has narrated this novel beautifully. It has interesting plot twists that keep the readers gripped. Janaki, the heroine is a representative of the typical Indian woman whose life gets altered and faulted through marriage and family life. The novel, Ancient Promises, makes us think about the difference it would make if women had enough courage and strength to defy conventions and live for themselves instead of conforming to social norms. I was really glad that I came across this book. I actually bought it because it was prescribed in our third-year syllabus. My opinion about Indian English literature changed for the good after reading Ancient Promises. I realized that there are talented English authors in India, different from the cheesy romance books we're presented with more often.

Ancient Promises introduced me to a strong female character, one who can be considered as the representation of a typical Indian married woman. Janu's story from her teenage to adulthood, through her marriage and motherhood, is a very captivating one. It's the story of a woman who didn't give up; who resisted the circumstances she was presented with, who refused to accept the life that was "meant for a married woman". Janu is one of the Indian girls who have grown up with the notion that marriage is the only goal to be attained in life—the only aim of the married women in our country is to lead a life in the path trodden by these (Ahalya, Sita, Draupadi, Tara, and Mandodari) sacred and much revered women in Hindu tradition.

Devaki Jain writes:

"These (Ahalya, Sita, Draupadi, Tara, and Mandodari)...are the Pancha Kanyas. What a colourful variety of examples they represent! They are neither saints nor virgins. None of them is heavenly...and all are wives and mothers. For the ideal of Indian Womanhood is the mother, the one being in creation, lowly or highly—placed, poor or rich that, though rooted on earth, is godlike in her capacity for unbounded love and devotion with no thought of any return or recompense."

Janu makes major decisions that alter her life forever, thereby taking a brave step towards her happiness. Janu impresses us with her extraordinary tolerance and perseverance. She reminds us of the many women we know in our lives. Her child and life's circumstances drive her to find an oasis for herself by defying social conventions; she is in a dilemma of keeping the ancient promises that are set for generations of women. Determined to follow her heart rather than her mind, she gives up many things including her so-called "dignity". What else makes an awesome female character! Janaki has become my most recent favourite heroine from a book. Janu's coming-of-age story is a girl's painful journey to selfdiscovery and freedom. Janaki reminds me of the typical Indian girl born into a middle-class family who starts a marriage life under the influence of her parents. Her opinions on extending marriage to few years later are not accepted and discarded with silly reasons. She anyway accepts it without any grudges because she wants to make her parents happy and make amends for a mistake she did. Her situations are very much relatable. Anu taught me that if you have the strong will to succeed and have a clear vision of the path to take, nothing can stand in your way, no matter how adverse the situations are. Her life also taught me that sometimes, standing up for what the heart desires may result in huge consequences. That is why bravery is a big necessity for our journey to self-realization and success. Life may bring unexpected situations; God may play strange games; the key is to embrace what life brings us and make the most of what we have. The novel describes the ways of Malayalees very accurately and I had the feeling of reading a Malayalam novel translated to English. The author lavishly uses Malayalam words all through the novel. Janu's recounting of her arrival at her marital home on the day of her marriage, on her 18th birthday, is brilliant. This scene must hold true more or less for not only any Malayalee bride from Kerala but also to a vast majority of South Indian, if not all Indian, brides. Though the book may seem as another arranged marriage story, the narrative style and the unique plot is what makes this book a stand out. The novel also touches the topics of specially-abled children and how they do not receive the consideration that they need from the society. I almost like everything about the book including the attractive cover design. An interesting fact about this book is that it's a semi-autobiography, as stated by the author herself. I would recommend this book to fans of the coming-of-age genre and romantic novels. Ancient Promises is a novel which can be prescribed as a sincere effort of Jaishree Misra. It depicts up and down, success and failures in her life as she strives to take the reins of her life into her own hands. The novel holds the reader's attention and the curiosity mounts with every page.

Jaishree Misra's Ancient Promises, a sensitive account of a girl's efforts to find her destination in life, is full of keen psychological observations, and culminates in a sane and balanced view of life. Transplanted from her home and the familiar world of Delhi at the age of eighteen to a highly conventional and aristocratic Nair family in Kerala, suffering from the pangs of separation from her first love, married to a man who is neither good nor bad but simply an 'expert in the art of escape', and surrounded by nasty and sly in-laws who will never let her belong to their world, the problems Janu has to face are numerous. All her efforts to endear herself to the family of her husband, which includes even begetting a child who is supposed to bridge the gap between herself and her new family, are in vain. It comes as a terrible shock to her when her child is declared 'mentally handicapped', but her intense attachment with the baby forms her best protection, and surprisingly, also her means of salvation. She starts rebelling against the snobbish conventions of the family, and slowly there emerges the first faint outline of a plan of escape. She manages a foreign scholarship to go abroad, and it is then, when she is almost ready to get out, that the panicky husband and in-laws try their best to stop her. The last step in this man oeuvre is to take away her daughter Riya. Still she goes to London and completes her course. These are her stolen days of perfect happiness with her lover Arjun. But she must return to Kerala to get her Riya back, because she believes that a life of happiness built on the pain and sufferings of other people cannot last. There is a hole in her soul which only her daughter can fill. Thus her return to Kerala is at the risk of losing even the only other happiness of her life, that is, Arjun. Back in Kerala, things suddenly turn out in her favour, she gets the divorce, Riya is returned to her, and she is ready to start a new life with Arjun. This paper analyses how Janaki, a woman molded according to the dictates of Manusmrithi emerges as a new empowered woman who controls her destiny. Janu disrupts the mould in which she has been created by the patriarchal society. The novel ends optimistically and the author's note in fact reveals the ultimate gift that Janu receives at the end as an ancient promise fulfilled.

Conclusion

In this way Jaishree Misra explained the Indian typical girl Janu. She is one of the Indian girls who have grown up with the notion that marriage is the only goal to be attained in life—the only aim of the married women in our country is to lead a life in the path trodden by these sacred and much revered women in Hindu tradition. Writer explored the love and family loyalty from their novel which is semi-autobiographical. The novel also touches the topics of specially-abled children and how they do not receive the consideration that they need from the society.

Reference:

- 1. Misra, J. (2000). Ancient Promises. New Delhi: Penguin Books.
- 2. https://en.wikipedia.org/wiki/Jaishree Misra
- 3. Jain, Devaki. Ed. Indian Women. (New Delhi: Publications Division, Ministry of I&G, Government of India, 1975) p.56.

DAAR .

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Peer Reviewed Bi-Monthly Vol.2 Issue.15 May-June-2022

GENDER AND EDUCATION IN INDIA

Mr. Sushilkumar Sadashiv Raut Research Scholar

Abstract:-

Education is a vital method to empower individuals socially, economically, politically and culturally. By recognizing this reality, different educational systems and policies have been implemented by the Government of India. The challenges patterns in concentrating on essential to primary, secondary and higher education. Since the pilgrim time frame is clearly visible in the implementations of various approaches, policies and programmes from time to time. India, being democratic country, a great arrangement of consideration and significance have been given to all forms of education for promoting the welfare of the citizens of nations. *The reality of gender inequality of* higher education in India is very complex and diversified, because it exists in every field like education, employment opportunities, income, health, cultural issues, social issues, economic issues. So, this paper highlights the multi-dimensional context of gender inequalities prevalent in Indian education systems. Various international gender inequality indices rank India differently on each of these factors, as well as on a composite basis, and these indices are controversial. Gender inequalities, and its social causes, impact India's sex ratio, women's health over their lifetimes, their educational attainment, and economic conditions.

Introduction:-

The root cause of that view has been traced back to variations in sociology, culture and the environment. As female in many cases excelled men in science and engineering subjects, the amount of times such view has been refuted. Misguided career counselling, teacher indifference, lack of successful teaching and learning styles, and negative self-esteem of girls themselves have deterred girls from engaging in hard sciences and technical careers due to lack of opportunities. Female and girls have been subjected to various types of domestic abuse and violence, educational institutions and organization Bias towards female begins with her birth and continues throughout her whole life. Gender bias impacts social inclusion and personal life adversely. For years, females have faced oppression. There is gender bias in different ways today. As a result, the majority of females do not recognize their own equality and rights. Gender bias will minimize girls' enrolment in educational institutions. When one looks at the educational statistics, it is easy to see that girls' participation and retention rates are lower than boys'. The number of girls who have never been to school is greater than the number of boys. The explanation for girls' low participation in education at school level, and later, is because of well-known variables. In a maledominated society, sexism against female is a well-known fact.

The direct and indirect effect of violence and gender bias against female and girls can often not be calculated, but the resulting economic burden on society is immense. Genet found out that gender is involved not only in ethnic relations, social stratification, legal codes and practice, and academia, but also in religion, family and job, aesthetic and moral values, social and cognitive growth, self-conception, etc. A prevalent occurrence is gender-based abuse, including sexual assault in the workplace and in educational institutions. Gender disparity in education is a worldwide problem. In the cultural heritage of Indian culture, gender basis ingrained. It's a culture that idolizes children. In order to free their souls from the slavery of their bodies, sons are considered ritually and economically desirable, necessary not only to light their parents' funeral pyres, but also to ensure the continuity of the lineage and family name. They have become parents' economic help in their old age. A girl is regarded as something of a burden and a liability from the day of her birth and is likely to be given a meagre share of the love and wealth of the family. This is because the investment made for her brings little return; instead, a large dowry must be offered to her when she gets married, draining the family resources. Girls are thus socialized to embrace their condition and the philosophy of male dominance from the very beginning, which leaves them vulnerable to a whole range of patriarchal practices. Although gender bias exists during early childhood years in the provision of treatment to the girl child in the field of health, nutrition, education and job distribution, this is further increased with the advent of puberty. In Indian culture, gender biases well known. On the basis of family groups, patriarchy is the concept of society, where the father assumes responsibility for the family's wellbeing. For centuries, women in India have been marginalized and represented differently in history, literature, religion, art, education, and culture. In most of the Indian culture, the status of a woman is affected by the Structure for the home. Girls are entrusted with the task of looking after younger siblings in a lower socio-economic community, cooking, cleaning the house, fetching water, and gathering firewood.

While girls are allowed to play in the neighbourhood, boys are allowed to play freely in the neighbourhood. Women are smaller than men in terms of jobs and job participation. Of the total participation of women in jobs, 90% are women in the unorganized market. India is a male dominated society, and because of its inferior status, women in India face bias in terms of various political, social and economic opportunities. Patriarchy may be defined as the 'father's law, but it refers to the structure of male domination in social terms, i.e. where the name of children is traced through the father; where the possession, power, and inheritance of all properties are in the hands of men. Therefore, in different ways, patriarchy describes oppression against women. In every aspect of a gender-discriminated society, parents give preference to children because of patriarchal ideology and socio-cultural practice. Women or girls are regular targets of bias within their households in developing countries such as Bangladesh due to cultural practice; girls have to learn domestic skills and start taking on domestic duties. It is assumed in rural areas that a son should be educated because, unlike a daughter who serves another family after her marriage, a son would need to help his parents. Similarly, Malay women face bias based on their socio-cultural views or customary beliefs in Malaysia. In our country, gender disparity in education is serious. Girls have less access to school or educational achievement. In the economic, political and social arenas, education allows men and women to assert their rights and realize their potential. Gender mainstreaming is a technique that makes the perspective of women and men an important part of policy and program design, execution, tracking and evaluation. The concerted efforts of women's organisations and NGOs in India culminated in a landmark judgment in August 1997 by the Supreme Court of India, which ordered all institutions to set up an independent sexual harassment complaints committee. The court made it impossible for them to legally evade their obligation by pinning the responsibility of maintaining a non-hostile work environment on employers. The judgment provides for the full autonomy of the complaints committee and guarantees that the committee covers all segments of the campus - teachers, students and administrative and maintenance staff. Higher education institutions have formed committees since the landmark judgment.

There is no research-based evidence, however, of the effect of the decision on the safety of women. The principle of gender equality is enshrined in the Indian Constitution in its Preamble, Fundamental Rights, Fundamental Duties, and Directive Values. Not only does the Constitution guarantee equality to women, but it also empowers the state to enact constructive bias initiatives in favour of women. The chapter of "Fundamental Rights" in the Indian Constitution grants different rights. The rights of particular significance to women are Article 14 of the Right to Equality and Article 15 of the Prohibition against Bias. Article 15(1) forbids bias 'on grounds of religion, ethnicity, caste, sex, place of birth or any of them' against any resident of the state (Sharma, 2005). The Preamble to the Constitution speaks of ensuring equality of status and opportunity, as well as social, economic and political justice for all people of India. One of the State Policy Directive Principles prescribes that the state should guide its policy to ensure fair pay for both men and women. While the principles of the Directive are central to the country's governance and are to be applied in the enactment of legislation, they are not judicially enforceable. One of the clauses of the Constitution has particular significance in this sense. After having laid down that the state shall not discriminate against any person on grounds of sex, among other items, it provides that nothing in this article shall prohibit the state from making any special provision for women and children.

Conclusion:- Gender-based exclusion remains a vexing problem in the Indian education system. Drawing on feminist and intersectionality perspectives, this article examines the constraints of Indian education policies in addressing issues pertaining to the education of girls from marginalised communities. The article examines the knowledge transfers from developed countries to developing countries based on notions of ideational power and the 'epistemic imagery' of modernisation. Focusing on a plethora of conditional cash transfers, programmes that were initiated by the Indian state governments to address gender inequalities in the education system, the article concludes that such knowledge transfers are inevitable in the current mode of epistemic governance and emanate from the power imbalance between rich and poor countries. When juxtaposed against the institutional discrimination widely prevalent in the Indian education system, political rhetoric fails on the dual goals of educational policy, to achieve economic efficiency and social justice.

Reference:-

- 1. Gender issues in education- NCERT
- 2. Gender and education in India- Nandini Manjr
- 3. towards gender equality in education- V Ramchandran
- 4. RTE- Gov. of India
- 5.Wikipedia

DAAR S

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Peer Reviewed Bi-Monthly

Vol.2 Issue.15 May-June-2022

LGBT AND HUMAN RIGHTS

Nita Changdeo Deshbhratar¹ Kanchan Babarao Jambhulakr²

¹research Scholar (Dept.Social Work) M.G.A.H.V. Wardha (Maharashtra) ²student (M.A. Sociology) R.T.M. Nagpur University (Maharashtra) **E-Mail** -Nitadeshbratar@Gmail.Com

E-Mail- Drkanchanjambhulkar@Gmail.Com

Abstract

All Humans Are Equal. All Human Beings Have Dignity And So Should Be Treated As Equal. Any Unlawful Action That Undermines The Dignity Is A Violation. This Study Examines The Relationship Between Health And Human Rights Among Lgbt, As Human Right Are Indivisible. This Column Covers Progress That Has Been Made With Regards Is Recognize Gay Rights As Human Right. People Around The Globe Face Violence, Torture Because Of Who They Are, To Whom They Love And How They Look Gender Identity Is An Integral Of Ourselves And Should Never Be Discriminated For Any Individual Denial Of Their Humanity Profoundly Impact On Health For Lgbt People, In Might Result In Discrimination (In Housing, Jobs), Mental Harassment, Stress Isolation Which Leads To Depression, Physical Injuries And Even Death, Human Rights Are Fundamental For Every Human Being Including Lgbt Regardless Of Cultural And Societal Norms. Recognizing Lgbt Human Rights Is About To Ensure Health Services, Understand Lgbt Issues And Aware Of Human Right Violations That Has Been Occurring. So Far The Policies And Laws Of Lgbt Human Rights, Both Country-Specific And Internationally Should Be Recognized. So That Lgbt People Should Be Treated As Normal Human Beings And They (Lgbt) Should Deserve All Human Rights. Freedom From Discrimination (Health Or Human Rights) Is The Primary And Fundamental Rights Which Is Made For The People By The People And To The People As Much The Freedom From Racial, Religious And Gender Discrimination Is Concerned. Here, Last Be Not The Least We Shall Be Discussing Human Right For Lgbt People Across The Globe.

Key Words: Lesbian, Gay, Bisexual, Transgender, Human Rights, Gender Identities, Homosexuality, Section 377, Health.

Introduction

Dealing And Realizing That One Might Be Lesbian, Gay, Bisexual, Transgender (Lgbt) Can Be A Terrific Experience Or Can Be A Real Challenge. I Just Know How It Feels But Lgbt People Aren't Visible One By One We Will Be Discussing The Terminologies.

Lesbian – The Term Used To Describe People Who Identity A Female And Attracted To Other Female Partner In A Romantic, Emotional, Physical And Sexual Way.

Gay – The Terminology Used To Describe People Who Identity As Male And Are Attracted To Other Male In A Romantic, Physical And Sexual Way.

Bisexual – A Bisexual Person Is A Person Of Any Gender Who Has Romantic And Or Sexual Relationships With And Or Is Attracted To People From More Than One Gender. Some People Who Are Fitted In The Mentioned Description Prefers The Term 'Queer' Or 'Pansexual'. Technically Speaking The Word 'Bi' Meaning Two. It Often Used For People Who Are Attracted And Or Having Relationship With More Than One Genders Than Just Men Or Women.

Transgender/Trans – This Labels The People Whose Gender Identity Is Different To Their Assigned Sex/Gender At Birth. A Transgender Person May Also Use Different Terminologies To Describe Their Identity Such As Trans/ Transman, Transwoman Or May Prefer To Use Male, Female Or Other Non-Binary Labels. There Are Culture-Specific Words That Some People May Use To Make Sense To Them Eg. Brotherboy Or Sistergirl.

Furthermore, 'Transsexual' Is A Medical Terminology And Was Used In The Part But Is Now Less Commonly Used By The People Of This Community.

On 6th September 2018 **Section 377 Ipc** British Colonial Penal Code Refers To 'Unnatural Offences' And Says Whoever Voluntarily Has Carnal Intercourse Against The Order Of The Nature With Any Man, Woman Or Animal, Shall Be Punished With Imprisonment For Life.² Now At Present When Section 377 Is Gone, The Homosexuals Consider As Equal Citizens?³ Have We Given Full Equality For Transgenders? Many Research Scholars Are Trying To Study The Battles Of Lgbt, Struggle Against Section 377. This Article, Thus Is Discuss The Legal Right, The Realities What Actually Happening In The Society.⁴

Since Last Two Decades There Has Been Scientific Change Or Say Awareness Of Lgbt Lives And Issues Which Can Be Traced In Social And Uncultural Shifts To Understand The Gender Identity Including The "Gay Rights"

Literature Review

Since The Past Few Decades, Human Rights Of Lgbt Community Have Come Into Focus. Many Journals, Articles, Magazines And Books Have Published To Deal With The Issues And Right Of Lgbt Community. The Principle Of Right To Be Equal Should Not Only Protect People From Violence But Also From Private Entities. However, Those Who Are Discriminated Tends To Suffer From High Level Of Stress And Other Physical Health Issues. All Over The Globe, There Is A Need To Pay Attention Over To The Equality Of Same-Sex Marriages So That Lgbt Community Can Win The Battle. All Amongst Lgbt Community Over 40% Youth Are Homeless And The Reason Behind That Is The Negative Thought And Negative Impact Of Society Towards Their Parents And So Towards Them. The Government Should Pass The Legislation For Marriage Of Lgbt People. Not Only In India, Buy Also All Across The World The Lgbt People Are Engaged In Struggling For Their Rights.

Research Methodology

Primary Research Methods Are Used To Study This Paper. Research Articles, Journals, Magazines And Various Books Have Been Referred For This Paper. The References Are Taken From Authentic Websites. E-Data From Online Access Has Been Collected. The Target Of This Paper Is To Deal With The Current Conditions. Of Lgbt People Living All Over The Globes I.E. Difficulties And Challenges Faced By Lgbt People.

- 1. Legal Battle Against Sec. 377 Ipc.
- 2. International Human Rights Of Lgbt Community.

Battle Against Sec. 377

- 1. 2001 Naz Foundation, Filed The Petition In Delhi High Court Challenging The Law's Constitutional Validity. This Petition Was Rejected In 2004 On The Basis Of Locus Standi. (Locus Standi Means The Person Need To Show His Legal Capacity Before Approaching The Court Or The Right To Bring An Action Before Court. In India, The Concept Of Locus Standi Is Mentioned Under Order 7 Rule 11 Of The Civil Procedure Code, 1908.)
- ^{2.} In 2006, They Appealed Against The Order Of Delhi In The Supreme Court Of India. The Decision Was In Their Favor And The Petition Was Kept On Hold. ¹⁰
- 3. In 2009, The Opinion Was Passed In Delhi High Court In Case Of Naz Foundation V. Government Of Nct Of New Delhi And Others, Where Section 377 Was Read Down And Was Held To Be Unconstitutional.¹¹
- 4. In 2014, A Bench Of Two Judges Of The Supreme Court Of India Passed A Opinion In National Legal Services Authority V. Union Of India ("Nalasa") And Held That Right To Life, Dignity And Sexual Orientation And They Have Right To Express Their Identity. ¹² This Nalasa Opinion Gave A Hope To Rekindle (To Start) The Battle Against Sec. 377.
- In 2017, An Opinion Was Given By The Supreme Court That The Right To Privacy Cannot Be Refused, "Even If A Fraction Of The Population Is Affected". 13
- 6. In 2018, Lgbt Community, Who Has Been Fighting A Battle Since Long For Their Right Whered A Ray Of Hope. Section 377 Was Violative Of Article 14 Of The Constitution Because It Was Of Doubtful Meaning In The Sense That It Did Not Define "Carnal Intercourse Against The Order Of Nature". ¹⁴ The Petitioner Further Contended That:
- 1. Section 377 Infringed (Activity Break The Term Of Law/Agreement) Article Of The Constitution, Sexual Orientation Is A Ground Related To Sex And That Discrimination If Sexual Orientation Is Not Permitted Under Article15.¹⁵
- 2. Section 377 Had A "Chilling Effect" Or Article 19 Since Is Denied The Right To Express One's Sexual Identity And Orientation. 16
- 3. Section 377 Also Violated The Fundamental Rights To Privacy. 17
- 4. On 6th September 2018, 5 Judge Bench Of The Supreme Court Led By The Chief Justice Unanimously Held In Nautej Johar Singh Case (A Dancer From Lgbt Community) That Section 377 Was Unconstitutional To The Extent That Is Criminalizes Consensual Relationship Of Any Kind Between Adults. ¹⁸

Constitutional Rights Of Lgbt People

The Preamble To The Constitution Of India Commands Justice – Social, Economic And Political Equality Of The Status. In (Constitution) Provided Equal Status To Every Person Within The Territory Of India. The Word "Every And Any Person" Here It Means Every Individual Without Discrimination Which

Includes Caste, Sex, Religion Etc. Includes A Transgender Too And Is Given Equal Status". 19 This Community Cannot Be Discriminated On Any Ground And They Should Not Be Guided By Any Rules And Regulations. With Regards To The Protection Of Transgender Is The Word "Sex" Which Includes Lgbt Communities Irrespective Of Then Falling Under The Category Of Male Or Female. The Apex Court Of India Observed That Both Gender Constitute District Components Of Sex. Biologically Speaking It Includes Genitals, Chromosomes, Development Of Secondary Sexual Characters But He Characteristics Of Gender Includes One's Self Image And The Psychological And Emotional Sense. The Discrimination On The Basis Of "Sex" Under Article 15 And 16 Of The Indian Constitution Includes Discrimination Of Gender Identity. The "Sex" Is Not Just Only Limited Biologically To Any Male Or Female But Also Includes People Those Who Consider Themselves Neither To Be Male Or Female. Articles 15(2) And 16(4) Has Also Interpreted To Provide Social Equality To Lgbt Community. 20 The Right To Choose One's Identity Is An Important Or Essential Right Under This Article. It Includes Right To Be A Human, Right To Live Which The Country Or State Is Required To Protect From Violence. The Right To Dignified Life For Lgbt Community Is One Of The Most Important Aspects Of Article 21 Of The Constitution Of India. Gender Identity Recognition Provides The Recognition Of Their Right To Dignity And So They Have Their Full Rights To Express Their Emotions And Live Their Life Without Fear. Various Acts Which Are Inhuman Includes Human Trafficking And Begging Are Declared As Punishable Offences, The Scope Of Article 23 Of The Constitution Of India Includes Within Any Form Of Discrimination Which Are Forbidden.²¹ Prostitution Which Is Considered As Immoral Activity Is Usually Seen In The Society. Transgenders Are The Worst Victims Of Exploitation, Due To Their Law Economic Status. The Target Or Intension Behind This Articles Is To Secure Individual Identity By Preventing Exploitation Of Men By Men. The Transgender Person's (Protection Of Rights) Act. 2019 Or The Murder Of Gender Justice. The Transgender Person's (Protection Of Rights) Bill Was Passed By The Loksabha Without Much Dissent On 5th August 2019. The Same Day Centre Scrapped The Special Status Of Jammu And Kashmir, This Act Provides Power And Equality To Everybody But The Lgbt Community, The Bill Was Passed After Many Efforts But Still It Serves No Good To The Community And Has Several Lacunae (Empty Spaces).²²

Checking The Gender And Giving Them Only Certificate Is Totally Inhuman. This Is Not A Bill For Them But A Bill Against Then. The Act Has No Provision To Apprehend To Those Who Discriminate, Bully Or Harass Them. This Act Deprives The Community Of Some Of The Most Basic And Fundamental Rights A Person Should Have. The Bill That Was Supposed To Protect Their Rights Was Drafted And Passed Without Having A Single Transgender Person And Nobody From The Community Was Asked About Their Problems And Requirements. The Transgender Person's (Protection Of Right) Act, No. 40, Acts Of Parliament, 2019 (India).

International Legal Position Of Lgbt Rights

Till The Twentieth Century, Homosexuality Has Never Been Accepted. It Was Considered To Be A Crime And Sin. But Only In The Late Twentieth Century, There Was A Shift In Considering Homosexuality From A Sin To A Normal Variant. In 1992, World Health Organization (Who) Accepted It As A Normal Human Being And Since Then The Negativity Towards Homosexuality Has Been Destroyed. Also, Lgbt Rights Have Made A Great Impact International Diplomacy Over The Last Decade But The Debate Regarding The Subject Remains As It Is Among All The Nations. International Organizations Such As Un And Human Rights Watch Have Paused Several Measures But Lacks Official Statements Due To Opposition Of Several Members.²³ The Orlando Pulse Nightclub Shooting Incident In 2016 Drew Attention For The First Time. United Nation Security Council Related The Statement Condemning The Attack And Addressed Issues Related To Sexual Orientation. Even Notorious Anti-Lgbt Countries Like Russia And Egypt Condemned Such Act Of Barbarism. As Of Now, Lgbt Rights Are Given Recognition As Human Rights By Several Un Bodies, But Blocs Within The United Nations Have Left No Chance To Hast The Formal Recognition Of Such Rights. "More Than 70 Nations Still Criminalize Same Sex Relationships And Death Penalty May Be Applied In Certain African And Asian Countries"- Said Vitit Munabhorn, The Un Independent Expert An Protection Against Violence And Discrimination Based On Sexual-Orientation And Gender Identity.

Around 66 Nations Extended Their Support By Issuing A Statement For Lgbt Rights In 2008 Before The Un General Assembly. Unfortunately, Russia, China And The Us Opposed These Countries During The Bush Administration. The Same Statement Was Followed In 2011 By Human Rights Council Which Documented The Problems Faced By Lgbt Community And It Was Updated Further In 2015 When Un Human Rights Council Released A Report Which Is Concerned With The Violence Against Lgbt Community Related To Commitment Made Under International Law.²⁴ Ban Kp-Moon, Former Secretary

General Of Un Stated That- "Advocacy For Lgbt Rights Often Puts Him Or Adds With Powerful Member States". On 29th September 2015, 25 Several Un Agencies (Ilo, Orchr, Unaids Secretariat, Undp, Unesco, Unfpa, Unchr, Unicef, Unodc, Un Women, Wfp And Who) Made A Statement Putting Forward Their Intention To End Violence And Discrimination Against The Lgbt Community" The Fact Cannot Be Denied But Due To Non-Complaince From Certain Member In Promoting Support But The Lgbt Core Group Works As An Informal Assembly: Tackle Such Barriers So That Policies Among The Countries Must Be Coordinated.²⁶ In 2016, The Un Human Rights Council Established An Expert To Examine The Global Violation And Discrimination Towards Lgbt Community. But Security Council Members Of China, Russia And All The Islamic Countries Do Not Support The Measure And Voted Either No Or Abstaining.²⁷ The Recognition For Lgbt Rights Has Been Witnessed, Despite Of The Contradiction In Many Countries. In Countries Like India, Kenya, Botswana And Trinidad And Tobago, Efforts To Lift Down The Laws Barring Homosexual Relationship Are Exemplified (To Illustrate With A Typical Example). In 2015, The Constitutional Court Of Taiwan Declared That Same Sex Marriage Is A Legal Rights. Andre'du Plessis, The Executive Director Of The International Lgbti Association Says - "We' Ve Seen A Lot Of Exciting Changes...Progress Has Been Slow But Steady". Reforms, Awareness And Decriminalization Have Been Seen In Africa, Asia, Middle East, Reflecting The Value And Honour Their Right Commitment Within Themselves While Advocating For Change On The International Level. 28 The Policy For Global Development (Pgd) States That Sweden Will Take Every Initiative Regarding The Difficulties Of Lgbt Persons. Orlando Shooting Of 2016, Also Called Pulse Nightclub Shooting, Mass Shooting That Took Place At The Pulse Nightclub In Orlando, Florida, In The Early Morning Hours Of June12, 2016 And Left 49 People Dead And More Than 50 Wounded. It Was The Deadliest Mass Shooting In The History Of Us Up To That Time. Tanya Mohn, The Shifting Global Terrain Of L.G.B.T.Q. Rights, The New York Times, June 21, 2018. Protection Against Violence And Discrimination Based On Sexual Orientation And Gender Identity. Letter Dated 18 December 2008 From The Permanent Representatives Of Argentina, Brazil, Croatia, France, Gabon, Japan, The Netherlands And Norway To The United Nations Addressed To The President Of The General Assembly. Discrimination And Violence Against Individuals Based On Their Sexual Orientation And Gender Identity. Stephano Gennarini, Un Bureaucracy To Push 'Lgbt Rights' Despite Tensions, C-Fam (Blog), October 1, 2015. Mark Leon Goldberg, For The First Time, Lgbt Rights Will Be Formally Institutionalized Into The Human Rights Mechanisms Of The United Nations, Un Dispatch (Blog), July 1, 2016.

What Practical Steps Does International Law Require States To Be Taken In Order To Safeguard The Rights Of Lgbt People

The Laws Should Bind Lgbt People In Following Steps-

- 1. Protect Individual From Violence And Present Torture And Inhuman Acts. Providing Training To Law Officers, Should Monitor Places Of Detention.
- 2. Prohibit Discrimination Based On Sexual Orientation And Gender Identity Should Provide Training And Education To Prevent Violence And Discrimination Of Lgbt Community.
- 3. Safeguard Freedom Of Expression Should Promote Culture Of Equality And Diversity That Encompasses Respect For The Right Of Lgbt People.

The Universal Declaration Of Human Rights

The Following Are Examples Of How The Articles From The Universal Declaration Of Human Rights Can Provide On Basis For Dialogue (The Discussion To Resolve The Problem) On Lgbt Person's Human Rights.

Article 13 And 14 - "Everyone Has The Right To Freedom Of Movement And Residence Within The Borders Of Each State" And "Everyone Has The Right To Seek And To Enjoy In Other Countries Asylum From Persecution". Homosexual Acts Are Outlawed In Over 85 Countries And Territories Which Increases The Need Of Lgbt Persons To Seek Refuge. This May Be The Last Resort For Someone Living Under The Constant Threat Of Being Exposed, Excluded, Imprisoned Or Executed. Likewise, In Many Countries Same-Sex Relationships Are Not Legally Recognized, Which May Also Be A Reason For Migration.

Article 23 - "Everyone Has Right To Work". In Many Countries Lgbt Persons Are Systematically Discriminated Against Within The Labour Market. This Leads To Obstacles In Terms Of Provision And Financial And Social Independence.

Article 25 - "Everyone Has The Right O A Standard Of Living Adequate For Health And Well-Being Of Him-Self And Of His Family". Violation Of The Right Not To Suffer Discrimination Leads To A Negative Cycle Of Restricted Opportunities, Which In Turn May Lead To Poverty. Lgbt Person's Rights To Health

Is Overlooked When The Health-Care System Is Founded On The Assumption That All Patients Are Heterosexual.

Conclusion

Lgbt Is A Part Of Our Society. Lgbt Communities, Over The Past Decades Has Achieved Tolerance And Acceptance Especially In Large Cities. However, Most Lgbt People Are Keeping Something Secret, Especially The Fact Of Being Gay Due To Fear Of Discrimination From Their Friends And Families. Homosexuality Can Be Viewed As Shameful Furthermore, The Violence And Discrimination Is Still Present In The Rural Areas, Where Lgbt People Often Gets Rejected From Families And Forced To Opposite Sex Marriages. Lgbt Community Is Fighting The Battle For Equal Rights And Acceptance Since Long. As The Discrimination Of Lgbt Community People Is Highly Prevalent These People Are Looked Down Upon All The Time. The Common Man Prejudices That Lgbt People Are Odd And Different From The Society. Today, In The Modern Era The Homosexuality May Be Acceptable But Even The Boundaries Of Families, Homes And Schools, Acceptance Still Remains A Constant Struggle For Lgbt People. Being L,G,B,T Is Not A 'Problem', Nor It Is A 'Choice' As Such. These People Have Sexual Preferences That Differ Them From What Would Appear To Be 'Normal'. Because Of This Different Behavior The Perspective Of Everyone Else's Has Changed. If Normal Men And Women Have Right To Live In This Society Then Why Not Lgbt People Have? There Is Nothing Wrong With Them But Its Just A Matter Of Humanity. Last But Not The Least, We Think Everyone Living In This World Whether He/She Being Normal Or Abnormal Has Equal Right To Stay In This Society With Respect.

Suggestions/ Recommendations

Being India A Developing Country, There Is A Need Of Progression Of Laws In Which All The Citizens Must Have Same Rights And Equal Opportunities To Work For The Country. Scholars Needs To Suggest To Strengthen The Transgender Bill And Should Make Some Amendments In Favour Of Lgbt Community.

References

- 1. Kelly Huegel Madrone, Lgbtq, Revised & Updated Third Edition, The Survival Guide For Lesbian, Gay, Bisexual, Transgender And Questioning Teens, Free Spirit Publication Inc. 6325 Sandbarg Road, Suite 100, Minneapais.
- 2. Subs By Act 26 Of 1955, S. 117 And The Sch., For "Transportation Of Life" (W.E.F. 1-1-1956).
- 3. Page No. 732. International Journal Of Law Management & Humanities [Issn 2581-
- 4. 5369], Volume 3/Issue 4, 2020. 731.
- 5. Page No. 732. International Journal Of Law Management & Humanities [Issn 2581-
- 6. 5369], Volume 3/Issue 4, 2020. 731.
- 7. Page No. 732. International Journal Of Law Management & Humanities [Issn 2581-
- 8. 5369], Volume 3/Issue 4, 2020. 731.
- 9. Page No. 732. International Journal Of Law Management & Humanities [Issn 2581-
- 10. 5369], Volume 3/Issue 4, 2020. 731.
- 11. Page No. 733. International Journal Of Law Management & Humanities [Issn 2581-
- 12. 5369], Volume 3/Issue 4; 731.
- 13. Page No. 733. International Journal Of Law Management & Humanities [Issn 2581-
- 14. 5369], Volume 3/Issue 4; 731.
- 15. Page No. 734. International Journal Of Law Management & Humanities [Issn 2581-
- 16. 5369], Volume 3/Issue 4; 731.
- 17. Page No. 734. International Journal Of Law Management & Humanities [Issn 2581-
- 18. 5369], Volume 3/Issue 4; 731.
- 19. Page No. 734. International Journal Of Law Management & Humanities [Issn 2581-
- 20. 5369], Volume 3/Issue 4; 731. (2009) 111 Drj1.
- 21. Page No. 734. International Journal Of Law Management & Humanities [Issn 2581-
- 22. 5369], Volume 3/Issue 4; 731.
- 23. Page No. 735. International Journal Of Law Management & Humanities [Issn 2581-
- 24. 5369], Volume 3/Issue 4; 731.
- 25. Page No. 735. International Journal Of Law Management & Humanities [Issn 2581-
- 26. 5369], Volume 3/Issue 4; 731.
- 27. Page No. 735. International Journal Of Law Management & Humanities [Issn 2581-
- 28. 5369], Volume 3/Issue 4; 731.
- 29. Page No. 735. International Journal Of Law Management & Humanities [Issn 2581-
- 30. 5369], Volume 3/Issue 4; 731.

- 31. Page No. 735. International Journal Of Law Management & Humanities [Issn 2581-
- 32. 5369], Volume 3/Issue 4; 731.
- 33. Page No. 735. International Journal Of Law Management & Humanities [Issn 2581-
- 34. 5369], Volume 3/Issue 4; 731.
- 35. Page No. 4880. International Journal Of Pure & Applied Mathematics. Special Issue.
- 36. Page No. 4881. International Journal Of Pure & Applied Mathematics. Special Issue.
- 37. Page No. 4481. International Journal Of Pure & Applied Mathematics. Special Issue.
- 38. Page No. 737. International Journal Of Law Management & Humanities [Issn 2581-
- 39. 5369], Volume 3/Issue 4; 731.
- 40. Page No. 738. International Journal Of Law Management & Humanities [Issn 2581-
- 41. 5369], Volume 3/Issue 4; 731.
- 42. Page No. 738. International Journal Of Law Management & Humanities [Issn 2581-
- 43. 5369], Volume 3/Issue 4; 731.
- 44. Page No. 739. International Journal Of Law Management & Humanities [Issn 2581-
- 45. 5369], Volume 3/Issue 4; 731.
- 46. Page No. 739. International Journal Of Law Management & Humanities [Issn 2581-
- 47. 5369], Volume 3/Issue 4; 731.
- 48. Page No. 739. International Journal Of Law Management & Humanities [Issn 2581-
- 49. 5369], Volume 3/Issue 4; 731.
- 50. Page No. 739. International Journal Of Law Management & Humanities [Issn 2581-
- 51. 5369], Volume 3/Issue 4; 731.

DAAR .

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Vol.2 Issue.15 May-June-2022

Peer Reviewed Bi-Monthly

ASPECTS OF GENDER NEGOTIATION AND FEMINISM IN THE WORKS OF JEANETTE WINTERSON

Pouria Mallahi

Email- pouria.mallahi@yahoo.com

Abstract:

The world has already successfully overcome many pandemic situation. The pandemics of covid-19 affected people locally and globally. The impact of the pandemic on social, economic and political life of human beings has been seen to be affecting the economy of all the countries of the world. Human resources, corporate sectors, education, transportation, environment, Law, film industry ect. seen to have been affected which has seen the pandemic in a positive light and recognized that we have great potential in it. Uncertainty is seen in all sectors, many have lost their jobs. Consumers have changed their behaviour. Everyone has started staying at home. The effect of adherence to traditional marketing seen to have been to increase the number of contacts that sellers have already had with digital marketing. Today, digital marketing is one of the most emerging technology in information sectors. The paper is made with attempt analysis and understand the impact of covid-19 pandemic on digital marketing. Keywords: Digital Marketing, Covid-19, Pandemic, Technology,

Introduction:

Digital Marketing is a branch of traditional marketing. Connected to the internet and digital technology. As Computer, Mobile Phones, Websites, Social Media, Software, e-mail, Digital Marketing developed in 1900's and 2000's. Digital Marketing makes it easy to focus on a specific segment of the customer. Digital Marketing is interconnected as traditional marketing techniques. It can use Twitter, Facebook, Instagram and Blogs, Yelp, WhatsApp, Linked in, Google+, AI to reach customer an is essential in today's pandemic situation.

Objective of Study:

The Main objective of study are.

- 1. To study the role of Digital Marketing in Indian Scenario.
- 2. To analyse the future role of Digital Marketing Post Covid-19.
- 3. To analyse the impact of Covid-19 on Digital Marketing.
- 4. To Study the various concepts of Digital Marketing

Scope of Study:-

- 1. Understanding the concepts of digital marketing.
- 2. Understanding the impact of covid-19 on digital marketing.
- 3. Understanding the future of digital marketing after covid-19.

Research Methodology:-

The study is based on secondary sources such as Textbook, Journals, Magazine, Blog, Published Articles in Website.

Limitations of Study-

- 1. The information in this study is not disclosed to everyone.
- 2. This data has been collected keeping in view the time limit
- 3. Only secondary data were used in the study.

Tools of Digital Marketing:-

- 1. Influencer Marketing:- Companies use You Tube stars Tik To stars an influential social media company to promote their products
- 2. Mobile Marketing:- To take advantages of the rapidly growing number of Smart phone users in the world, the marketers used Mobile-apps, e-mails, Websites and social media Vig mobile phones
- e-mail marketing:- The marketers communicated directly with the customer through this tools and send promotional messages of the products to the potential customers and there b generates for the goods and services
- 4. Social Media Marketing:- Marketers promotes products and services through social Networking Sites like Twitter's, Facebook, Instagram, Snapchat.
- 5. Video Marketing:- Consumer are rapidly connecting to Social Media Marketing, such as You Tube, Tik To, Vigo Video and marketers have taken advantages of this opportunities to promote their products and services.

Pouria Mallahi

Impact of Covid-19 on Digital Marketing:-

The increasing prevalence of Covid-19 pandemic has created a negative consumer sentiment towards actual marketing and led consumers to turn to digital marketing. The effect of Covid-19 on digital marketing can be explained on the basis of the following points.

Increase demand for Video and Micro Video content-.

Due to the pandemic of Covid-19 the government forced people to stay at home, so people started spending more time on social media like You-Tube, Micro Video content so the demand increased. And marketers see this as an opportunities to promote their products and services.

Increase Product Research among customers-.

The effect of covid-19 was to give consumer time to research goods and services so marketers constantly strive to protect their reputation and responds to consumer requests

Experimental Marketing-

Lockdown allows consumers to spend more time online, so marketers need to focus more on online attractiveness.

Increased Importance of Chat bots-.

The importance of Chat-bots has increased as people have been staying at home for most of the time during lockdown and have started doing office work from home and hence people have started focusing on online work.

Maintaining Online Reputation:-.

As customer spend more and more time online, information about any wrongdoing by companies spreads quickly and responds quickly, making it difficult for companies to maintain their reputation.

Conclusion:-

In the current global covid-19 highway situation, companies have become a digital marketing tools for deciding their marketing strategy. While other areas have been hit hard be pandemic. Digital Marketing has got an opportunity and boost. Companies put digital marketing at the forefront. Also this pandemic is a nutrient for the digital marketing.

Reference-.

- 1. Cendrowski,S(2012)Mike's new Marketing Mojo.(online).
- 2. Annmarie Hanlon, "Digital Marketing: Strategic Planning and Integration," sage publication, (2019).
- 3. http://www.Marketingprofs.com/chirp/2020/43008/covid-19-impact-onbusiness-and-digital-marketing-initiatives-infogrsphic.
- 4. http://blogs.perficient.com/2020/04/08/the-Impact-on-digital-marketing-during-covid-19.
- 5. Economist Intelligent Life, Digital Africa, March 2011.
- 6. http://ncp.support.microsoft.com/

DAAR .

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Peer Reviewed Bi-Monthly Vol.2 Issue.15 May-June-2022

GENDER WISE IMPACT OF PANDEMIC ON INFORMAL SECTOR STUDY AMONG WOMEN DOMESTIC WORKERS IN PUNE

Dr. Narshing Giri¹, Mrs. Umrao Sayyad², Mr. Rushikesh Hiwale³¹assistant Professor, ²research Student ³research Student
Baburaoji Gholap College, Sangvi, Pune-411027

Abstract

Covid 19 Pandemic Has Had A Profound Impact On The Lives, Safety And Health Of The Informal Sector. Workers, Especially Domestic Workers, Most Of Whom Are Women. The Least Organized And Lacking Institutional Support, Domestic Workers Are Very Vulnerable To Exploitation And Human Right Violations, And Pandemics Made The Situation Worse. Telephone Interview 260 Domestic Workers From Pune City Focus On Work Pandemic Situation, Livelihood And Household Dynamics, Health Scenarios, Government Support. The Data Were Substantiated By Qualitative Input From Detailed Interviews Conducted With 12 Domestic Respondents. Urban Workers. Results Report Widespread Unemployment Among Domestic Workers From March To June 2020, Income Decreased Significantly And Workload Increased. About 57% Domestic Workers Reported Stigma And Discrimination In The Workplace, With 40% Working Without Stigma Safety Measure. Occurrence Of Domestic Violence, Increased Workload At Home, Access To Medical Care Etc. Was Reported. The Findings Show That We Need To Do The Following Urgently: National-Level Policies And State Support, Especially For Female Domestic Workers Poverty, Poor Health And Marginalization Will Continue.

Keyword: - Gender & Unemployment, Pandemic, Domestic Workers, Pune City.

Introduction

The Covid 19 Disease, Which Was Declared A Pandemic By The World Health Organization In 2020, Has Led To This. Clear Challenges For The Global Public Health System (World Health Organization [Who], 2020). The World Economy Has Stagnated, And Countries Have Announced Partial Or Complete Blockades, Which Led To This. Unprecedented Social And Economic Difficulties For The World Population. The Public Health Crisis. A Time When India's Gross Domestic Product Growth Has Already Slowed And Unemployment Continued Ascension (Dev & Sengupta, 2020). Although The Pandemic Affected The Lives Of All Social Classes, India, Informal Sector Employment Protection And Social Security, Accounting For 86% The Workforce Is Hit Hardest Because It Struggles To Meet Basic Needs And Threats. Infectious Diseases (International Labor Organization [Ilo] 2020) Different Groups Of Workers Female Domestic Workers Are Experiencing Similar Livelihood And Social Safety Net Restrictions Due To Social Distance And Blockade Restrictions, They Are Facing Complete Or Almost Unemployment And Economic Instability. They Remained Largely Outside The Scope Of The National Rescue Mechanism.

Domestic Worker Situation: Before And During Pandemic:-

The Current Number Of Domestic Workers In India Has Exceeded The Official Estimate Of 4.2 Million And The Informal Estimate Of 50 Million. Two-Thirds Of All Domestic Workers In India Live In Cities The Region And About 75% Of It Are Women (Ghosh, 2013). Women Work Part-Time Or Stay At Home Domestic Workers And Their Household Expenses Are Mainly Covered By The Income They Earn. Of Despite The Large Workforce, Domestic Work Is Not Recognized As A "Work" And Is Always Treated As Such, The Lowest In The Professional Hierarchy. This Unjustified Structural Problem That Society Refuses To Recognize Domestic Workers As "Workers" Has Been Tossed By Their Employers (Chandrumuri, 2018) Domestic Workers Face Harsh Working Conditions And Are Not Covered By Social Security. They Are Not Protected By Labor Law, Except For The Social Security Of Unorganized Workers Law, 2008 (Ghosh, 2013), Profits Workers Tend To Overlook Due To Informal Ignorance Of Contracts And Ignorance Of Social Security Regulations. National Policy For Domestic Workers Drafted By The Government Of India To Formally Secure Workers' Rights And Social Protection Through Legislative Measures, But Not Yet Implemented. In India, Women's Participation In The Domestic Labor Sector Is A Common Feature Of Feminization Of Domestic Work (Augustin & Singh, 2016). Low Wages And Lack Of Legal Protection (Neetha & Palriwala, 2011), Unpaid Overtime And Occupational Health Issues (Paul Et Al., 2018), Inadequate Negotiations. Health Problems Such As Power, Forced Labor, Childcare, Back Pain Skin Allergies (Moghe, 2013), Physical And Sexual Violence (Hamid, 2006; Paul Et Al., 2018), Exploitative Working Conditions And Human Rights Violations (Chandramouli, 2018), Organizations For Domestic Workers Lack Of Framework, Representatives Of Domestic Workers In The Lack Association Exclusion Of Domestic Workers From Legal Qualifications To Minimum Wage (Bhattacharya Et Al., 2010; Chandramouli, 2018) Was Identified As An Issue Affecting The Social Justice Of Female Domestic Workers. Various Studies, Caste, Religion, And Gender Aspects Also Play A Major Role In The Indian Context. Determine The Characteristics Of Domestic Work And The Nature Of Exploitation (Raghuram, 2001). Affects The Bargaining Power Of Domestic Workers. The Social And Economic Distress Faced By Domestic Workers Across The Country Due To The Covid-19 Pandemic, Added To The Existing Inequities And Right Violations Especially In Urban Areas, In Pune Many Domestic Workers From Slum Areas Working In The Upper Middle-Class Houses Of The Neighborhood. It Was Sent Back On Unpaid Leave During The Blockade (Parth, 2020). Domestic Workers Complained About Wage Cuts And Non-Payments From March To April 2020, And Subsequent Unemployment. It Was Not Included In The Distribution Registration Under The 2011 Census And Excluded Migrant Workers. Public Supply (Goel Et Al., 2020; Yaday, 2020) The Majority Of 180,000 Migrant Workers Undocumented Pune Did Not Have Access To The Social Security And Remedies Provided By The Government During The Pandemic, Local Workers In Pune Were Able To Take Advantage Of Free Distribution And Community. Rice Field Government-Established Kitchen Service (Self-Employed Women's Association [Sewa], 2020). Absence Formal Registration With The Social Security Agency Has Been Denied To Female Domestic Workers By All Governments Relief During A Pandemic. 51% Had A Hard Time Buying Essentials And 36% Had A Hard Time. Difficulty In Accessing Healthcare (Social Studies Trust Institute, 2020) Telephone Survey Of 500 People Domestic Workers In Rural Pune Showed That Only 51% Of The Workers Were Paid For Their Work In March, 44% Of Workers Eventually Borrowed Money From Moneylenders At Exorbitant Interest Rates (Bharti, 2020). Deshpande (2020) Emphasizes Gender Differences In Average Time Labor Spending That Boosted Domestic Workers After The Blockade. Due To Lack Of Uniformity The Wage Structure Doubled The Alienation And Vulnerability Of Kathak Domestic Workers During The Pandemic (Nanda, 2016). About 80% Of Large Numbers Of Domestic Workers (10 Or More Jobs) Almost Unemployed (Per Week) And Half Reported That They Did Not Receive Medical Care During This Time (All National Workers' Alliance, 2020). Anandi And Deepa (2020). The City Of Chennai Has Concluded That The Work Is At High Risk Of Lack Of Safety Measures And Lack Of Access. Healthcare Has Made Domestic Workers The Most Vulnerable Of The Informal Sector Workers.

Materials And Methods

The Study Was Undertaken Using Mixed Methods, Through Which Quantitative And Qualitative Dimensions Of The Issues Related To Livelihood And Working Conditions Of The Domestic Workers During Pandemic Scenario In India Were Explored. The Data Was Collected From 260 Women Domestic Workers From Pune City. Preliminary Newspaper Reports About The Plight Of Domestic Workers In These Cities During The Lockdown Period. The Contact Details Of The Women Domestic Workers Were Collected Through Non-Governmental Organizations And Domestic Worker's Collectives Working In Pune City Who Maintain The Data Of Workers Registered With Them. The Survey Focused On Socio-Demographic Details, Working Conditions, Employer-Worker Relationships, Impact Of The Pandemic On Livelihood And Family Conditions, Health Care And State Support Systems For The Workers During The Pandemic Situation. Data Analysis Was Done Using Spss Package And Descriptive Statistics Presented Using Figures And Tables. Qualitative Evidences Were Also Collected Through Telephonic Conversations With 12 Domestic Workers. These 12 Workers Were Selected As They Are The Peer Leaders Who Are Organizing The Workers Under The Ngo's Guidance. The Interviews Were Transcribed And Coded And A Manual Analysis Was Done To Identify The Emerging Themes. The Study Protocol And The Tool Were Submitted To The Internal Human Ethics Subcommittee Of The University And The Necessary Approval Was Sought. Informed Consent Was Taken During Interview And The Confidentiality Of The Collected Data Is Maintained.

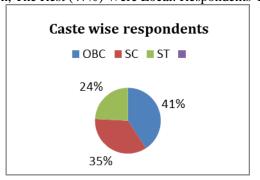
Results And Discussion

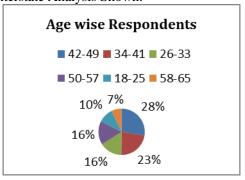
The Data Analyzed Here Include The General Socio-Economic Profile Of Female Domestic Workers. Working Conditions During A Pandemic, Livelihood And Household Dynamics, Health Problems And Access On The Nature Of Health Care And Government Support For Domestic Workers During The Period.

General Profile Of The Respondents

From Pune City 30 Years Old, Longing For Other Rear Class (Obc), 28.5% Overall, 24.6% For Enlisted Caste (Sc) And 16.9% Scheduled Tribes (St) Community. In Age-Based Classification, Respondents Were

42-49 Years Old (26.5%), 34-41 Years Old (21.5%), And 26-33 Years Old (19.2%). Year The Remaining Groups Of Respondents Were 50-57 Years (15.8%), 18-25 Years (10%), And 58-65 Years. Year (6.9%). Of The Domestic Workers Interviewed, 53% Were Immigrants (Mainly From Rural Areas). From Village To Town, The Rest (47%) Were Local. Respondents' Interstate Analysis Shown.





Working Conditions Of The Domestic Workers During The Pandemic

Unexpected Unemployment And Lack Of Income Have Reduced The Livelihoods Of Many Residents Workers Have Become Tougher, Affecting The Ability Of Families To Meet Even Basic Needs. The Situation Is Exacerbated By The Sudden Unemployment Of Other Adult Families And The Closure Of All Sources Of Income. At The Same Time, Some Workers Reported Positive Experience / Support From Their Employers During Difficult Times Of The Pandemic. This Includes Providing Materials Support, Eg B. Food (13.8%), Guarantee Of Maintenance After Lockout Period Of Work (13.1%) And Prepaid Salary (10%). Another 10% Received A Call From Their Employer During The Blockade. They Sought Happiness And 10% Also Received Promises Of Future Salary Increases.

Health Issues And Health Care Access During Pandemic

The Study Probed The Mental And Physical Health Issues Faced By The Domestic Workers And The Access To Health Care Facilities During The Pandemic. It Is Important To Note That, More Than 90% Of The Domestic Workers Reported Anxiety As A Mental Health Condition. Amongst 260 Domestic Workers 45.8% Had Severe Anxiety That Their Sleep Patterns Got Highly Disturbed And Another 28.8% Reported That They Sometimes Feel Anxious. During The Period Of The Pandemic, 42.3% Of The Domestic Workers Had Health Issues For Self/Family Member Which Required Medical Consultation. In This Category 67.3% Had To Discontinue Treatment Of The Illness. The Major Reasons Pointed Out For Discontinuation Of Treatment Are Unaffordability, Lack Of Transportation And Absence Of Outpatient Services In Government Hospitals. Constraints In Access To Health Care Have Affected A Good Number Of Domestic Workers With Both Physical And Mental Health Concerns. Financial Distress, Transportation Constraints And Curtailment Of Medical Services Has Added To The Adversities Faced By The Families. Qualitative Enquiry Also Substantiated That The Medical Treatments Have Taken A Backseat During The Pandemic. Two Workers During Interview Said That Regular Medical Follow Up Of Their Children Were Stopped Due To Financial Constraints.

Conclusion

The General Vulnerabilities Of Female Workers Due To Informal, Invisible, And Unrecognized Domestic Work Are Largely Obvious. Informal Contracts, Irregular Work, Exploitation And Undefined Wages And Working Conditions, As Well As Political And Legal Loopholes, Are Social And Worker's Financial Instability. Global Pandemic Scenarios And The Resulting Vulnerabilities Exacerbated And Amplified The Situation. Social, Cultural, Economic And Political Injustices Affecting Women In Domestic Work Or The Pandemic Has Led To The Emergence Of New Forms Of Infringement And Social Injustice Among Informal Workers, Characterized By Wage / Salary Dismissal / Non-Payment. Work Volume, Health Risks, Debt, Poor Access To Health Care, Violence, Prejudice And Decline, Unmet Family Nutrition / Education / Health Needs, Etc. Ignorance Of Citizenship Workers' Rights, The Digital Divide And Poor Digital Literacy, And The Chaotic Nature Of The Workforce Facilitate This. Open Practices For Infringement Of Domestic Workers That Contribute To The Universality Of Experience And The Whole Body Is Injustice. At The Same Time, It Is Necessary To Understand The Contextual Changes In Social Injustice Caused By Structural Factors And The State Support System. In Order To Ensure Citizenship Rights Inclusive Of Labour Rights To Women Domestic Workers, Their Emotional, Psychological, Social, Economic And Political Well-Being Needs Immediate Attention. In A Futuristic Perspective, The Domestic Work Sector Which Employs Mostly Women Requires A Gender Sensitive, Welfarist, Rights Based As Well As An Intersectionality Approach With Long-Term Goals. The Efforts

Should Be Taken Up Through The Involvement Of Multiple Stakeholders-Central To Local State Agencies, Voluntary Organisations, Local Community, Labour Welfare Activists, Worker's Associations, Researchers, Etc.—Functioning In Different Realms And Capacities. Many Associations Such As The Domestic Workers Rights Union Mumbai, West Bengal Domestic Workers Society And Pune District Domestic Workers Association Had Taken Up Campaigns For Ensuring Labour Rights And Welfare— Paid Leave, Social Security, Health Care, Food/Ration Distribution, Cash Assistance, Retainment In Job, Payment Of Full Wages, Etc.,—Of The Domestic Workers During The Pandemic (Roy, 2020). Government Of India Had Announced Relief Packages During The Pandemic Such As Pradhan Mantri Garib Kalyan Package (Pmgkp) Which Broadly Included Relief Funds For Programmes Pradhan Mantri Kisan Sammann Nidhi (Pm-Kisan) And Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Act (Mnrega) Intending To Help Those In The Informal Sector. The Federal As Well As The State Governments Initiated Various Cash Transfers And Food Ration During The Lockdown Period To Tackle Sudden Unemployment And Income Loss In The Community. Dreze (2020) Has Observed That Strengthening Pds And Doubling Food Grain Rations As Well As Cash Transfers Will Be Of Great Help To The Survival Of The Workers. However, The Plight Of The Workers In The Informal Sector Continued As Non-Food Expenditures Cannot Be Met Easily Through These Temporary Measures Alone. India Needs A Detailed Structural Plan To Overcome The Economic Slowdown And Bigger Relief Packages To Save Life And Livelihood Especially Of The Marginalized Communities.

Bibliography

- 1. Anandi, S., & Deepa, E. (2020, June). Protecting Livelihood, Health, And Decency Of Work Paid Domestic Workers In The Time Of Covid-19 (Mids Occasional Policy Paper 7, Covid19 Series). Retrieved 23 December 2020 From Https://Www.Mids.Ac.In/Assets/Doc/Mids Opp7.Pdf
- 2. Augustine, R., & Singh, R. K. (2016). Condition & Problems Of Female Domestic Workers (With Special Reference To Lda Colony In Lucknow City, India). Journal Of Sociology And Social Work, 4(2), 110–117.
- 3. Bharti, M. (2020, June). Helping The Helpers. The Hindu. Retrieved 25 December 2020 From Https://Www.Thehindu. Com/Opinion/Op-Ed/Helping-The-Helpers/Article31835749.Ece
- 4. Bhattacharya, D., Sukumar, M., & Mani, M. (2016). Living On The Margins: A Study Of Domestic Workers In Chennai, India. Centre For Workers' Management.
- Chakraborty, L., & Emanuel, T. (2020). Covid-19 And Macroeconomic Uncertainty: Fiscal And Monetary Policy Response. Economic & Political Weekly, 55(15). Https://Www.Epw.In/Journal/2020/15/Commentary/Covid19-And-Macroeconomic-Uncertainty.Html
- 6. Chandramouli, K. (2018). Women Domestic Workers In India: An Analysis. International Journal Of Innovative Technology And Exploring Engineering, 8, 1–5.
- 7. Deshpande, A. (2020). The Covid-19 Pandemic And Lockdown: First Effects On Gender Gaps In Employment And Domestic Work In India? (Working Paper 30). Department Of Economics, Ashoka University.
- 8. Dev, M. S., & Sengupta, R. (2020). Covid 19: Impact On The Indian Economy (Working Paper). Indira Gandhi Institute Of Development Research Http://Www.Igidr.Ac.In/Pdf/Publication/Wp-2020-013.Pdf On 2nd May 2020 Dreze, J. (2020, March). View: The Finance Minister's Covid-19 Relief Package Is Helpful, But There Are Gaping Holes In It. The Economic Times. Https://Economictimes.Indiatimes.Com/News/Economy/Policy/ View-The-Finance-Ministers-Covid-19-Relief-Package-Is-Helpful-But-There-Are-Gaping-Holes-In-It/Articleshow/74853103.Cms
- 9. Goel, S., Sen, P., Dev, P., & Vijayalakshmi, A. (2020, June). During Coronavirus Lockdown, Women Domestic Workers Have Struggled To By Essentials Says Surveys. Scroll. Https://Scroll.In/Article/963519/During-Coronaviruslockdown-Women-Domestic-Workers-Have-Struggled-To-Buy-Essentials-Shows-Survey
- 10. Ghosh, J. (2013). The Plight Of Domestic Workers In India. Macroscan Www.Macroscan.Org/Cur/Jan13/Pdf/ Domestic_Workers.Pdf
- 11. Delhi. Working Paper.Https://Www.Isstindia.Org/Publications/1590124768_Pub_Isst__Domestic_Workers_Final_Compressed.Pdf

DAAR C

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Vol.2 Issue.15 May-June-2022

Peer Reviewed Bi-Monthly

VIOLATION OF DALITS HUMAN RIGHTS AND GENDER EQUALITY IN INDIA AND ITS REMEDIES

Dr Chitade Nandkishor Pandurang

Head, Dept. of Economics, Janvikas Mahavidyalaya, Bansarola, Tq. Kaij Dist. Beed

Abstract

The Universal Declaration of Human Rights is a milestone document in the history of human rights. Drafted by representatives with different legal and cultural backgrounds from all regions of the world, the Declaration was proclaimed by the United Nations General Assembly in Paris on 10 December 1948 (General Assembly resolution 217 A) as a common standard of achievements for all peoples and all nations. It sets out, for the first time, fundamental human rights to be universally protected and it has been translated into over 500 languages. Now, Therefore the general assembly proclaims this universal declaration of human rights as a common standard of achievement for all peoples and all nations, to the end that every individual and every organ of society, keeping this Declaration constantly in mind, shall strive by teaching and education to promote respect for these rights and freedoms and by progressive measures, national and international, to secure their universal and effective recognition and observance, both among the peoples of Member States themselves and among the peoples of territories under their jurisdiction.

The present time is an historic moment, not only for Dalits, but for all those committed to basic human rights and principles of justice, equality, liberty, fraternity. India, a rising star and increasingly important player on the world stage, must not be allowed to ignore the injustice and oppression within its own borders any longer. Together, we must unite, nationally and internationally, to force the Indian government to rise above an entrenched caste-mentality and to properly enforce its laws, implement its policies, and fulfill its responsibility to protect the basic human rights of ALL of its citizens. Human rights are rights inherent to all human beings, regardless of race, sex, nationality, ethnicity, language, religion, or any other status. Human rights include the right to life and liberty, freedom from slavery and torture, freedom of opinion and expression, the right to work and education, and many more. Everyone is entitled to these rights, without discrimination. In Indian Constitution, there are some rights as fundamental rights which give guarantees of human rights to the citizens. Without these rights citizens cannot get progress in their life as well as country.

The condition of human rights in India is an issue complicated by the country's large size & population, widespread poverty, lack of proper education & its diverse culture, even though being the world's largest sovereign, secular, democratic republic. The Constitution of India provides for Fundamental rights, which include freedom of religion. Clauses also provide for freedom of speech, as well as separation of executive and judiciary and freedom of movement within the country and abroad. The country also has an independent judiciary and well as bodies to look into issues of human rights. "The 2016 report of Human Rights Watch accepts the above-mentioned faculties but goes to state that India has "serious human rights concerns. Civil society groups face harassment and government critics face intimidation and lawsuits. Free speech has come under attack both from the state and by interest groups. Muslim and Christian minorities accuse authorities of not doing enough to protect their rights. But in the recent years, more emphasis is given to minority rights & freedom of speech. The government is yet to repeal laws that grant public officials and security forces immunity from prosecution for abuses". December 10 is the anniversary of the adoption of the Universal Declaration of Human Rights by the UN General Assembly. As an early supporter of the UN movement and a constant participant in its deliberations, India has, in international fora, constantly endorsed the charter of rights that the declaration unfurled. 'The efficacy of constitutional provisions is entirely dependent on the government machinery entrusted to our elected representatives. An effective protection of individuals, in this case women and minorities, from acts of violence requires the power of the state to weigh in on their side. In too many cases of violence against women, Muslims and Dalits, the Indian state is distinguished by its absence'.

Fundamental Rights and Indian constitution:-

Fundamental rights are the basic rights of the people and the charter of rights contained in Part III(Article 12 to 35) of Constitution of India. It guarantees civil liberties such that all Indians can lead their lives in peace and harmony as citizens of India. These include individual rights common to most liberal

democracies, such as equality before law, freedom of speech and expression, religious and cultural freedom and peaceful assembly, freedom to practice religion, and the right to constitutional remedies for the protection of civil rights by means of writs such as habeas corpus, Mandamus, Prohibition, Certiorari and Quo Warranto. Violation of these rights result in punishments as prescribed in the Indian Penal Code or other special laws, subject to discretion of the judiciary. The Fundamental Rights are defined as basic human freedoms that every Indian citizen has the right to enjoy for a proper and harmonious development of personality. These rights universally apply to all citizens, irrespective of race, place of birth, religion, caste or gender. Though the rights conferred by the constitution other than fundamental rights are equally valid and their enforcement in case of violation shall be secured from the judiciary in a time consuming legal process. However, in case of fundamental rights violation, Supreme court of India can be approached directly for ultimate justice per Article 32. The Rights have their origins in many sources, including England's Bill of Rights, the United States Bill of Rights and France's Declaration of the Rights of Man. "This life of the discrimination gives birth to conflicts and the concept of rights started taking shape. In fact the human rights which we need today are a result of long and arduous struggle"³. When we tries to learn about Constitution of India, then we find that the preamble of India is ensure that the our nation gives guarantee to people of their human rights. " Preamble declare s the the people of India have solemnly resolved to constitute India into a sovereign, socialistic, Democratic Republic and to secure to all its citizens.:

> Justice-Social, Economic and Political, Liberty-of thought, express, belief, faith and worship; Equality- of status and opportunity and to promote among them all;

Fraternity- assuring the dignity of the individual and the unity and integrity of the nation⁴. Universal declaration of human rights:-

Universal declaration of human rights is important for human beings. It gives guarantee of the protection of human rights. It is a milestone document in the history of human rights. Drafted by representatives with different legal and cultural backgrounds from all regions of the world, the Declaration was proclaimed by the United Nations General Assembly in Paris on 10 December 1948 (General Assembly resolution 217 A) as a common standard of achievements for all peoples and all nations. It sets out, for the first time, fundamental human rights to be universally protected and it has been translated into over five hundred languages. In India, there also gives protection of human rights through Indian constitution. The Indian Constitution banned the practice of untouchablity under Article 17 and the Schedule Caste/ Schedule Tribes (Prevention of Atrocities Act), 1989 was introduced to combat persecution and discrimination against Dalits and Adivasi (tribal) people. Despite the existence of these strong legal provisions, Dalit and Adivasi populations have found it virtually impossible to access their rights through the legal system. In this context, the Dalit and Adivasi Rights Initiative provides legal aid and rights-awareness to members of Dalit and Adivasi communities and uses the law to ensure that the violation of Dalit and Adivasi rights are addressed through the legal system. Dalit populations are often forced into manual labour and scavenging (disposing of human excrement, animal carcasses, etc.). A decision passed by the Delhi High Court achieved significant results when the court directed the government to improve the safety conditions of sewer workers in Delhi. This case, however, also created a wider impact in the Dalit community, when the courts also directed that the state should aim towards completely phasing out of the employment of persons to clean sewers, on an emergent basis. Near about 1/6 of the India's population, some 170 million people, live a precarious existence., shunned by much of Indian society because of their rank as 'untouchable' or dalits-literally meaning 'broken' people. "Dalits are discriminated against, denied access to land and basic resources, forced to work in degrading conditions and routinely abused at the hands of police and dominant-caste groups that enjoy the state's protection. The caste system has formed the social and economic framework for the life of the people of India. In its essential form, this caste system involves the division of people into a hierarchy of unequal social groups where basic rights and duties are assigned based on birth and are not subject to change. Dalits are 'outcastes' falling outside the traditional four classes of Brahmin, Kshatriya, Vaishya, & Shudra. Dalits are typically considered low, impure & polluting based on their birth and traditional occupation, thus they face multiple forms of discrimination, violence, and exclusion from the rest of society.

Dalit women face the triple burden of caste, class, and gender. Dalit girls have been forced to become prostitutes for dominant-caste patrons and village priests. Sexual abuse and other forms of violence against women are used by landlords and the police to inflict political "lessons" and crush dissent within the community. Less than 1% of the perpetrators of crimes against Dalit women are ever convicted.

The plight of India's "untouchables" elicits only sporadic attention within the country. Public outrage over large-scale incidents of violence or particularly egregious examples of discrimination fades quickly, and the state is under little pressure to undertake more meaningful reforms. Laws granting Dalits special consideration for government jobs and education reach only a small percentage of those they are meant to benefit. Laws designed to ensure that Dalits enjoy equal rights and protections have seldom been enforced. Instead, police refuse to register complaints about violations of the law and rarely prosecute those responsible for abuses that range from murder and rape to exploitative labor practices and forced displacement from Dalit lands and homes. Laws and government policies on land reform and budget allocations for the economic empowerment of the Dalit community remain largely unimplemented.

UNO gives the protection of human rights to the people, but the terrorism always gives challenges before government. In UDHR, article3 of that gives the rights of personal security and liberty of life'5. Communal conflicts between religious groups (mostly between Hindus and Muslims) have been prevalent in India since around the time of its independence from British Rule. Among the oldest incidences of communal violence in India was the Moplah rebellion, when Militant Islamists massacred Hindus in Kerala. Communal riots took place during the partition of India between Hindus/Sikhs and Muslims where large numbers of people were killed in large-scale violence. The 1984 Anti-Sikh Riots was a four-day period during which Sikhs were massacred by members of the secular-centrist Congress Party of India; some estimates state that more than 2,000 were killed. Other incidents include the 1987 Hashimpura massacre during communal riots in Meerut, 1992 Bombay Riots. The killing was supposedly done at the behest of Congress leaders such as Jagdish Tytler. Congress Party officials provided assailants with voter lists, school registration forms, and ration lists. Nanavati Commission also found out that several Congress leaders were behind this lynching. Former prime minister Manmohan Singh apologized in the Loksabha for the involvement of Congress stalwarts in the Lok Sabha. According to the 2011 WikiLeaks cable leaks, the United States was convinced of Indian National Congress complicity in the riots and called it "opportunism" and "hatred" by the Congress government of Sikhs, Contemporary India, however, has seen the influence of caste start to decline. This is partly due to the spread of education to all castes which has had a democratising effect on the political system. However, this "equalising" of the playing field has not been without controversy. The Mandal Commission and its quotas system has been a particularly sensitive issue. It has been argued by Professor Dipankar Gupta that the role of castes in Indian elections have been overplayed.

More recently there has been a flux in caste politics, mainly caused by economic liberalization in India. This upsurge in lower-caste empowerment was accompanied in some regions by a spike in the level of corruption. This was partly due to lower caste perceiving development programs and rule of law as tools used by the upper caste to subjugate lower castes. Amnesty International says "it is the responsibility of the Indian government to fully enact and apply its legal provisions against discrimination on the basis of caste and descent. Denotified of India, along with many nomadic tribes collectively 60 million in population, continue to face social stigma and economic hardships, despite the fact Criminal Tribes Act 1871, was repealed by the government in 1952 and replaced by Habitual Offenders Act (HOA) (1952), as effectively it only created a new list out of the old list of so-called "criminal tribes. These tribes even today face the consequences of the 'Prevention of Anti-Social Activity Act' (PASA), which only adds to their everyday struggle for existence as most of them live below poverty line. National Human Rights Commission and UN's anti-discrimination body Committee on the Elimination of Racial Discrimination (CERD) have asked the government to repeal this law as well, as these former "criminalised" tribes continue to suffer oppression and social ostracization at large and many have been denied SC, ST or OBC status, denying them access to reservations which would elevated their economic and social status.

Several international agencies and the UN have reported human rights violations in Indian-administered Kashmir. In a press release the OHCHR spokesmen stated "The Office of the High Commissioner for Human Rights is concerned about the recent violent protests in Indian-administered Kashmir that have reportedly led to civilian casualties as well as restrictions to the right to freedom of assembly and expression." A 1996 Human Rights Watch report accuses the Indian military and Indian-government backed paramilitaries of "committing serious and widespread human rights violations in Kashmir." One such alleged massacre occurred on 6 January 1993 in the town of Sopore. The Human Rights Watch also wrote of other regular human rights abuses being committed by the Indian forces including "using rape as a means to punish and humiliate communities". Times Magazine described the incident as such: "In retaliation for the killing of one soldier, paramilitary forces rampaged through Sopore's market setting buildings ablaze and shooting bystanders. The Indian government pronounced the

event 'unfortunate' and claimed that an ammunition dump had been hit by gunfire, setting off fires that killed most of the victims." In addition to this, there have been claims of disappearances by the police or the army in Kashmir by several human rights organisations.

Remedies for Human Rights Violations:-

Every state has the primary responsibility within its territory to ensure human rights are guaranteed to all members. By signing and ratifying human rights conventions, governments at national and local levels must commit to avoiding any actions that would violate or lead to a violation of human rights. In addition, most treaty obligations require the government to take positive steps to adopt affirmative measures, to ensure or protect the enjoyment of human rights. They may also require enacting and enforcing legislation or adopting other appropriate measures to ensure that individuals and other entities respect human rights. Many countries create human rights enforcement systems, which may include a human rights commission to investigate claims and special adjudicative bodies to hear cases. Also, human rights claims may be heard through regular course of a civil or criminal case. Finally, ad hoc or permanent commissions may be established to monitor and write reports on immediate or ongoing issues.

We have to believe on the constitution of India because it gives us the guarantee of rights. "our constitution is not only a pragmatic result of the struggle for freedom, but it also reflects the aspirations and hope of the people. It was a pious wish of our founding fathers to gives a quality of life to their progeny⁶."

Conclusion:-

I thought that in India the idea of human rights is not a contribution of western countries. These rights are a common heritage of glorious past. Of course, the enjoyment of these rights was not open to all segments of the society. There was no uniform application of these freedoms as the society was a casteridden hierarchical one. Throughout the period of liberation movement, Indians fought for the protection of their human rights such as political freedom and right of self-determination. After independence, the constitution of India was formulated with a guarantee of fundamental rights and freedom. Government have to protect the human rights through various agencies.

- 1. https://en.wikipedia.org
- 2. http://www.thehindu.com
- 3. P.C. Singh-Human Rights and Indian Constitution:-Prism Books Pub. Jaipur,p.n.12
- 4. Giriraj Shah- Human Rights, looking back and forging ahead, Himalaya publication Hyderabad2004, p.n.147
- 5. D.P. Singh:- Manvadhikar Aur Dalit, Shakti pub. Delhi-p.n.29
- 6. Dr. Jistice Shavaraj V. Patil:- Huminity, Humanity and human rights, Society for community, 2005, p.n.135

DAAR S

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Vol.2 Issue.15 May-June-2022

Peer Reviewed Bi-Monthly

RECENT TRENDS OF POVERTY IN INDIA

Dr. Nasiket Govindrao Suryavanshi

Dept of economics, Kce,s Moolji Jaitha College, Jalgaon

Introduction:

India is poor compared with the USA, and, within India, Bihar and Orissa are poor compared to Punjab and Haryana. You might be aware about the poor -those who have inadequate income, housing, clothing etc. You also know that the definition and methods of measuring poverty differ from country to country. Poverty is the syndrome of uselessness, landlessness, joblessness, deprivation and helplessness. It is not a pure economic phenomenon. It has social, cultural, political, historical, and geographical dimensions. It is lack of livelihood security and food security. It is hunger, starvation, and vulnerability. Poverty is lack of shelter, and lack of education, and lack of access to health care. Poverty is being sick and not being able to see a doctor. Poverty is not being able to go to school and not knowing how to read. Poverty is not having a job, is fear for the future, living one day at a time. Poverty is losing a child to illness brought about by unclean water. Poverty is powerlessness, lack of representation and freedom. To know what helps to alleviate poverty, what works and what does not, what changes over time, poverty has to be defined, measured, and studied - and even lived. Poverty is a multidimensional phenomenon in which an individual or a group lacks the financial means and necessities for a basic level of living. Poverty also includes poor health and education, a lack of access to safe drinking water and sanitation, a lack of physical security, a lack of voice, and a lack of capacity and chance to improve one's life. According to the Tendulkar Poverty line method, 20.8% of the Indian population was still in poverty in 2020.

Poverty Line in India

The poverty line of India in Rural areas is Rs. 972 and Urban area, it is Rs. 1407

Those who earn above this level is considered as 'Not poor' and come under 'Above the Poverty Line' and those who earn below this level is considered as 'Poor' and they are 'Below the Poverty Line'.

World Bank: The World Bank Poverty Line defines extreme poverty as living on less than \$1.90 a day, measured in 2011 purchasing power parity prices.

Official Release of Poverty Line Estimates

The Planning Commission used to release the estimates of poverty as number of persons below poverty line as a percentage of Indian population. This was followed for the years 1973-74, 1977-78, 1983, 1987-88, 1993-94, 1999-2000, 2004-05, 2009-10 and 2011-12.

For 2011-12, the Planning Commission released poverty data in July 2013, based on the Tendulkar poverty line.

Poverty Percentage in India

- 1. According to Global MPI Reports 2019 and 2020, 21.9% of the population was poor in the country or the number of poor was pegged at 269.8 million
- 2. According to World Poverty Clock in 2021, roughly 6% or 86,799,498 (86.8 million) of the population are living in poverty.

Characteristics of poverty

- 1. Poverty is defined as a state or condition in which an individual or a group lacks the financial means and necessities for a basic level of living.
- 2. Poverty is defined as a situation in which one's earnings from work are insufficient to meet fundamental human requirements.

- 3. Poverty, according to the World Bank, is a severe lack of well-being that has various dimensions. Low earnings and the inability to obtain the essential commodities and services required for a dignified existence are examples of poverty.
- 4. The World Bank defined poverty as individuals living on less than \$1.90 per day which is called the International poverty line.
- 5. In India, the National poverty threshold is given by the Tendulkar Committee.
- 6. Poverty also includes poor health and education, a lack of access to safe drinking water and sanitation, a lack of physical security, a lack of voice, and a lack of capacity and chance to improve one's life.
- 7. In 2011, 21.9 percent of India's population was living below the national poverty threshold.
- 8. In 2018, about 8% of the world's workers and their families were living on less than \$1.90 per day (international poverty line).

Types of poverty

Absolute Poverty: When a household's income falls below the level required to sustain basic living standards (food, shelter and housing). This condition allows comparisons between countries as well as throughout time.

The "dollar a day" poverty line, first proposed in 1990, quantified absolute poverty according to the criteria of the world's poorest countries. The World Bank raised it to \$1.90 per day in October 2015.

Relative Poverty: It is defined from a social perspective as a living standard that is lower than the economic standards of the surrounding population. As a result, it is a measure of income disparity. In most cases, relative poverty is defined as the percentage of the population earning less than a certain percentage of median income.

India poverty according to 2021-22

Total Population	1,392,506,368
People living in extreme poverty	97,697,747
Males	44,806,455
Females	52,891,292

Source- Poverty in India Statistics 2021-2022

According to World Poverty Clock, the number of people who are living in poverty is 97,697,747 (97.7 million) or roughly 6% of the population. There are 44,806,455 males and 52,891,292 females impacted by poverty in India. Females are more affected than males.

Poverty in India – Age Groups

AGE GROUPS	NO. OF PEOPLE	AGE GROUPS	NO. OF PEOPLE	
0-4	11,216,926	40-44	5,045,245	
5-9	12,103,639	45-49	1,785,554	
10-14	13,480,409	50-54	822,463	
15-19	10,182,310	55-59	1,049,636	
20-24	5,211,873	60-64	5,527,405	
25-29	3,800,309	65-69	4,234,187	
30-34	6,986,947	70-74	3,799,953	
35-39	8,220,823	75+	4,230,068	

Source- Poverty in India Statistics 2021-2022

The age group from 0-19 is the most affected by extreme poverty. This can lead the youngsters to malnutrition and illiteracy. We can see a decreasing trend after the age of 40.

Prosperous State of India Below are the Indian states with Low Poverty

- 1. Kerala
- 2. Goa
- 3. Sikkim
- 4. Tamil Nadu

IJAAR

5. Punjab

Kerala has the lowest rate of poverty in India, with only 0.71% of the population classified poor. Kerala is followed by states like Goa (3.76%), Sikkim (3.82%), Tamil Nadu (4.89%) and Punjab (5.59%).

Poorest State in India

Below are the Poorest Indian states with High Poverty.

- 1. Bihar
- 2. Jharkhand
- 3. Uttar Pradesh
- 4. Madhya Pradesh
- 5. Meghalaya

Bihar is the Poorest State in India. As per NITI Aayog Multidimensional Poverty Index report, the states like Bihar, Jharkhand, Uttar Pradesh, Madhya Pradesh and Meghalaya have turn out to be the 'poorest states' in India. 51.91% of the population in Bihar classified as poor, followed by Jharkhand (42.16%), Uttar Pradesh (37.79%), Madhya Pradesh (36.65%) and both Meghalaya & Assam (32.67%)

Poverty in India State wise

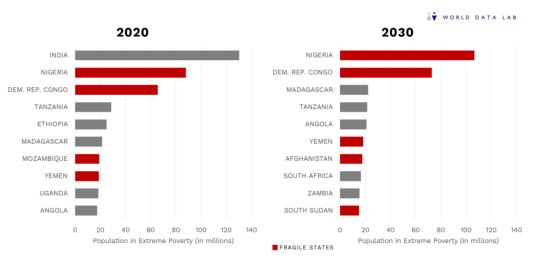
1 overty in India State wise							
Area	Multi Dimensional Poverty Index Score	Area	Multidimensional Poverty Index Score				
Andaman & Nicobar Islands	4.30	Lakshadweep	1.82				
Andhra Pradesh	12.31	Madhya Pradesh	36.6				
Arunachal Pradesh	24.27	Maharashtra	14.85				
Assam	32.67	Manipur	17.89				
Bihar	51.91	Meghalaya	32.67				
Chandigarh	21.81	Mizoram	9.80				
Dadra and Nagar Haveli	27.36	Nagaland	25.23				
Daman and Diu	6.82	Odisha	29.35				
Delhi	Delhi		1.72				
Goa	Goa 3.76		5.59				
Gujarat	18.60	Rajasthan	29.46				
Haryana	Haryana 12.28		3.82				
Himachal Pradesh	7.62	Tamil Nadu	4.89				
Jammu & Kashmir and Ladakh	Kashmir and 12.58		13.74				
Jharkhand	42.16	Tripura	16.65				
Karnataka	13.16	Uttar Pradesh 37.79					

Kerala	0.79	Uttarakhand	17.72
West Bengal	21.43		

Source- Poverty in India Statistics 2021-2022

Above the table show on Poverty in India State wise.

By 2030, fragile states will make up five of the 10 countries with the highest number of extreme poor



Source- world poverty statistics 2020

Causes of Poverty in India

Population Explosion: India's population has been continuously increasing throughout the years. It has risen at a pace of 2.2 percent per year for the past 45 years, implying that around 17 million people are added to the country's population each year. This has a significant impact on the demand for consumer products.

Low Agricultural Productivity: The agriculture sector's low productivity is a key source of poverty. Low productivity can be caused by a variety of factors. It is primarily due to fragmented and subdivided landholdings, a lack of cash, illiteracy about modern farming technologies, the use of conventional farming practices, wastage during storage, and other factors.

Inefficient Resource Utilization: The country suffers from underemployment and hidden unemployment, notably in the agricultural sector. Low agricultural output and a drop in living standards have resulted as a result of this.

Economic Progress at a Slow Pace: India's economic development has been slow, particularly in the first 40 years of independence before the LPG reforms in 1991.

Price Increases: The country's price increases have been consistent, adding to the burden carried by the poor. Although a few people have profited, the lower-income groups have suffered as a result, and are unable to meet even their most basic needs.

Unemployment: Unemployment is another element that contributes to poverty in India. As the world's population grows, so does the number of people looking for work. However, the expansion of opportunities is insufficient to meet the demand for jobs.

Lack of Capital and Entrepreneurship: In the absence of capital and entrepreneurship, the economy suffers from a lack of investment and employment creation.

Social Issues: In addition to economic factors, social factors obstruct India's poverty eradication efforts. The laws of inheritance, the caste system, and certain customs, to name a few, are all obstacles in this regard.

Colonial Exploitation: For nearly two centuries, the British colonisation and authority over India de-industrialized the country by destroying its traditional handicrafts and textile industries. Colonial policies reduced India to a simple source of raw materials for European businesses.

Climate Factors: Bihar, UP, MP, Chhattisgarh, Odisha, Jharkhand, and other states in India account for the majority of the impoverished. Natural catastrophes like floods, disasters, earthquakes, and cyclones frequently strike these states, wreaking havoc on agriculture.

Poverty Alleviation Programs in India

Integrated Rural Development Programme (IRDP): It was introduced in 1978-79 and universalized from 2nd October, 1980, aimed at providing assistance to the rural poor in the form of subsidy and bank credit for productive employment opportunities through successive plan periods.

Jawahar Rozgar Yojana/Jawahar Gram Samridhi Yojana: The JRY was meant to generate meaningful employment opportunities for the unemployed and underemployed in rural areas through the creation of economic infrastructure and community and social assets.

Rural Housing – Indira Awaas Yojana: The Indira Awaas Yojana (LAY) programme aims at providing free housing to Below Poverty Line (BPL) families in rural areas and main targets would be the households of SC/STs.

Food for Work Programme: It aims at enhancing food security through wage employment. Food grains are supplied to states free of cost, however, the supply of food grains from the Food Corporation of India (FCI) godowns has been slow.

National Old Age Pension Scheme (NOAPS): This pension is given by the central government. The job of implementation of this scheme in states and union territories is given to panchayats and municipalities. The states contribution may vary depending on the state. The amount of old age pension is $\Box 200$ per month for applicants aged 60–79. For applicants aged above 80 years, the amount has been revised to 500 a month according to the 2011–2012 Budget. It is a successful venture.

Annapurna Scheme: This scheme was started by the government in 1999–2000 to provide food to senior citizens who cannot take care of themselves and are not under the National Old Age Pension Scheme (NOAPS), and who have no one to take care of them in their village. This scheme would provide 10 kg of free food grains a month for the eligible senior citizens. They mostly target groups of 'poorest of the poor' and 'indigent senior citizens'.

Sampoorna Gramin Rozgar Yojana (SGRY): The main objective of the scheme continues to be the generation of wage employment, creation of durable economic infrastructure in rural areas and provision of food and nutrition security for the poor.

Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Act (MGNREGA) 2005: The Act provides 100 days assured employment every year to every rural household. One-third of the proposed jobs would be reserved for women. The central government will also establish National Employment Guarantee Funds. Similarly, state governments will establish State Employment Guarantee Funds for implementation of the scheme. Under the programme, if an applicant is not provided employment within 15 days s/he will be entitled to a daily unemployment allowance. 2020-21 employment provided to 11.2 crore persons generating 389.2 crore person days. Funds of `1,11,171 crore released 2021-22 (as on 25.11.2021): employment provided to 8.85 cror persons generating 240.4 crore person days. Funds of `68,233 crore released.

National Rural Livelihood Mission: Aajeevika (2011): It evolves out the need to diversify the needs of the rural poor and provide them jobs with regular income on a monthly basis. Self Help groups are formed at the village level to help the needy. 2020-21: loans worth `

84,143 crores disbursed to SHGs. 2021-22 (till September 2021): 21.6 lakh SHGs credit linked with `43093 crores.

National Urban Livelihood Mission: The NULM focuses on organizing urban poor in Self Help Groups, creating opportunities for skill development leading to market-based employment and helping them to set up self-employment ventures by ensuring easy access to credit.

Pradhan Mantri Kaushal Vikas Yojana: It will focus on fresh entrant to the labour market, especially labour market and class X and XII dropouts. `1.8 lakh crore transferred to more than 10 crore farmer families as on 1.1.2022, since Feb 2019, i.e., 6 instalments since COVID-19

Pradhan Mantri Jan Dhan Yojana: It aimed at direct benefit transfer of subsidy, pension, insurance etc. and attained the target of opening 1.5 crore bank accounts. The scheme particularly targets the unbanked poor. `30,944 crore released to 20.64 crore women beneficiaries in covid -19

Conclusion

The Global Multidimensional Poverty Index-2018 released by the UN noted that 271 million people moved out of poverty between 2005-06 and 2015-16 in India. The poverty rate in the country has nearly halved, falling from 55% to 28% over the ten-year period. Still a big part of the population in India is living Below the Poverty Line. Rapid economic growth and the use of technology for social sector programs have helped make a significant dent in extreme poverty in the country. Despite rapid growth and development, an unacceptably high proportion of our population continues to suffer from severe and multidimensional deprivation. Thus, a more comprehensive and inclusive approach is required to eradicate poverty in India.

References:

- 1. Datt & Sundaram Indian economy
- 2. Mishra & Puri Indian economy
- 3. Desai & Bhalerao Indian economy
- 4. H.L.Ahuja Modern Economics
- 5. Global Multidimensional Poverty Index (MPI)- UNDP,
- 6. International Monetary Fund report 2020
- 7. World Poverty Clock,2022
- 8. Niti Aayog's SDG India Index 2021)
- 9. Poverty in India Statistics 2021-2022
- 10. World poverty statistics- 2020
- 11. India Economic survey 2021-22
- 12. www.indiabudget.com

DAAR .

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Vol.2 Issue.15 May-June-2022

Peer Reviewed Bi-Monthly

AGRICULTURAL LABOURERS PROBLEMS AND REMEDIES IN INDIA

Dr. Maneesh. B

Assistant Professor, Department of Economics, MMNSS College, Kottiyam, Kollam Email- manbpillai@gmail.com

Abstract

Agricultural Labour in India faces various problems. Agricultural labors means one who works on the land and of others on wages. Agricultural works and agricultural workers constitute the most neglected class in Indian rural structure. Often they are not in a position to earn just enough to keep their body and have neither private nor social security. Being unorganized they do not have the most needed muscle to see better living and working condition. This paper includes problems of agricultural labourers, government measures and suggestions for improvement of the agricultural labour conditions.

Key Works: Agricultural labour problems- unorganized sector- Minimum Wages Act.

Introduction:

India is an agricultural country. Agricultural sector is a major contributor to India's GDP. About 58 per cent of the people in India depend on agriculture and allied occupations and 68 per cent people live in rural areas. Agricultural workers constitute the most neglected class in Indian rural structure. Their income is low and employment irregular. Since they possess no skill or training they have no alternative employment opportunities either. Socially and economically, a large number of agricultural workers belong to Scheduled Castes and Scheduled Tribes. Therefore, they are an oppressed class. They are not organized and cannot fight for their rights. Because of all these reasons, their economic lot has failed to improve even after various decades of planning.

Classification of Agricultural Labourers:

Agricultural laborers in India are generally classified into the following four groups:

- (1) Landless agricultural laborers who are attached to some landlords.
- (2) The landless agricultural laborers who are individually independent and who are employed by a landlord's who work on his land.
- (3) Agricultural laborers who have own land but the income from that land is not sufficient for subsistence, so agricultural laborers work on other people's farm.
- (4) A farmer who have economic holdings but whose family has one or more persons working on the farms of large landowners.

Characteristics of Agricultural Laborers in India:

Some special features are found in the case of agricultural laborers in India. It is because of these characteristics that agricultural labor in India differs from industrial labor. The characteristics of agricultural laborers in India are as follows:

- 1) Agricultural Labourers are illiterate: The illiteracy rate among agricultural laborers in India is very high. Agricultural laborers are illiterate and live in villages. As a result, they are not able to take any kind of agricultural training and also their bargaining power is very low.
- 2) Agricultural Labourers are scattered: Agricultural labourers in India is being widely scattered over more than 5.6 lakh villages, of which half have population of less than 500 each. Therefore number of agricultural labourers lies scattered all over India. There has been no successful attempt for long, to build their effective organization.
- 3) Agricultural Labourers are Unskilled: Agricultural labourers from smaller villages away from cities, carrying on agricultural operation in the centuries old traditional wages. Most of them in small isolated villages with around 500 populations, may not have even heard of modernization of agriculture. The agricultural labourers have to do all types of work-farm and domestic at the bidding of the landlord. Because of they are generally unskilled workers.
- 4) Unorganized Sector: Agricultural labourers are unorganized, illiterate, ignorant and live in scattered villages. Hence they could not organize in unions. This is almost difficult in case of farm laboures. So it is difficult for them to bargain with the land owners and secure good wages.
- 5) Low bargaining power: As agricultural labourers in India are uneducated and unorganized, so their bargaining power is low and their economic and social status is very poor. Most of the agricultural laborers are in the hands of village moneylenders, landlords and commission agents. Therefore, agricultural labor is the most exploited class of people in India.

Dr. Maneesh. B

- 6) Low rates of wages: The agricultural laborers have been received low rate of wages. There are several reasons for following. The number of workers seeking employment in the agricultural sector is very large but the employment opportunities available to those agricultural laborers are very limited. As the agricultural laborers work with the hlp of very old tools, their productivity is found to be very low. Another reason is that the bargaining power of agricultural laborers is low.
- 7) Demand and Supply of Labourers: The number of agricultural labourers being very large and there are more than abundant supply of agricultural labourers in relation to demand. It is only during the sowing and harvesting seasons that there appears to be near full employment in the case of agricultural labourers. But once harvesting season is over, majority of agricultural workers will be jobless especially in areas, where there is single cropping pattern.
- 8) Low Social Status: Most agricultural workers belong to the low social classes, which have been neglected for ages. They had never the courage to assert themselves. In some parts of India, agricultural labourers are migration in search of work at the time of farming season. The rural elite classes has powerful holding in the rural economy, so government measures to improve their lot by legislation have proved ineffective.

Problems of Agricultural Laourers in India:

The number of agricultural labourers is increasing day by day and they have to face various problems. They are following:

- 1) Wages and Income: Agricultural labourers' wages and their family incomes are very low in India compared to that of industrial labourers. The average annual income of household was rupees 477 during 1950-51, which decline to rupees 437 in 1955-56 according to the agricultural labourers enquiry report. In recent decade money wage rates started increasing but the real wage rates did not increase. Currently labourers getting around rupees 150/day under the MGNREGA in rural area.
- 2) Employment and Working condition: The agriculture labourers have to face the problem of unemployment. Some part of the year they have to remain unemployment because there is no work on the farms and alternative sources of employment do not exist. Agriculture labourers are not organized, so they cannot fight again for minimum wages. There is no question of any leave as they are employed on daily basis.
- 3) Indebtedness: Agriculture labourers have increasing the indebtedness. Low wages, recurring natural calamities, ancestral debt, high rate of interest and various other social obligations make it imperative for an average agricultural laourers to borrow heavily. The average debt per household was Rs.471 in 1950-51 which was increased to Rs.387 in 1974-75. In 1974-75, more than 75 per cent agriculture labourers households were under the burden of debt.
- 4) The landlord-labourers relationship: The relationship between the landlord and the labourers is not uniform throughout the country. There are substantial differences not only among different states but also different villages of the state. As regards the period of employment made and time period of payment, freedom of movement, bargaining powers vis-à-vis landlords, beggar etc. Broadly speaking the relationship between landlords and agriculture labourers is of two types: In the first category are those labourers who are free (casual labourers) and second category are included those agriculture labourers who are not free to work at any other place (attached labourers)
- 5) Exploitation of Child and Women Labourers: Due to lower income the children and women of agricultural labourers are also forced to work for their livelihood. Many times they have to work harder than body capacity. Children are also deprived of education and women also have to do work during childbirth. Thus, exploitation of child labourers and woman labourers is a major problem in the field of agriculture.
- 6) Excess working hours and housing problem: The working hours of agricultural labourers are not only irregular but also excessive. They have to work since morning to late night. His working hours change with harvest, season and work. When agricultural labourers have to migrate for work, they do not have that place their own home. In such a case they have to live on the landlord's farm and in return they have to do extra work or be paid for it.

Measures Adopted by Government:

Measures adopted by the government to improve the conditions of agricultural labourers can be considered under the following headings:

1) Provision of minimum wage: Provision of Minimum Wages Act of 1948 which was originally passed for industrial workers has been extended to agricultural workers also. All State government are required to fix the minimum wages for agricultural labourers with the provision that they be reviewed

- every five years or even earlier. Currently laourers getting around rupees 150/day under the MGNREGA in rural area.
- 2) Abolition of Bonded labourers: After Independence, attempts have been made to abolish the evil of bonded labourers because it is exploitative, inhuman and violate of all norms of social justice. Bonded labourers were declared illegal under the Bonded labourers system Act of 1976. As a consequence of this Act, 2,35,670 bonded labourers were identified and freed in various part of the country upto March 31, 1988.
- 3) Providing land to landless labourers: The government has distributed land to landless labourers with a view to improving their economic position. In September 1957, the National Development council proposed that land obtained as a result of enforcing ceiling laws and those donated in 'Bhoodan' and 'Gramdan' should be primarily devoted to the settlement of landless labourers. Approximately more than 70 lakh hectares of land has been distributed among landless labourers so far.
- 4) Provision of housing sites: Several states have been passed laws for providing house sites in villages to agricultural labourers. In second five year plan to provide house sites free or on a subsidies and fourth plan states provision of house sites with an area of 91 sq meters to cover. In the seventh plan that a financial assistance of Rs.2500 be given to each family to develop a house site. So far more than 11 million agricultural laboures families have been provided with this facility.
- 5) Special Agencies for Development: The special agencies- Small Farmers Development Agency (SFDA) and Marginal Farmers and Agricultural Labourers Development Agency (MFAL) were created in 1970-71 with an outlay of Rs.115 crores. A total 41 projects were adopted under MFAL in fourth plan. Some important schemes included under the programme were irrigation, land leveling, soil conservation, dairy development, poultry breeding, piggery development etc.

Conclusion:

In order to guarantee sustainable agricultural development in the new millennium, rural workers and their families should have access to adequate working and living conditions, health and welfare. An adequate balance between agricultural growth and the protection of the environment is also crucial for the future of the world's food production and for its sustainability. Occupational health in agriculture must be integrated into a rural development policy with a well-defined strategy. It should place an emphasis on prevention and environmental protection to be consistent with current trends and should be addressed both at national and international levels.

References:

- 1. V.K.R.V.Rao (Ed), Agricultural Labour in India.
- 2. Srivastava, M.K. (1993), Agricultural labour and the Law, Deep and Deep Publications, New Delhi.
- 3. Mishra and Puri (1992), Indian Economy, Himalaya Publishing House, Bombay.
- 4. Datt and Mahajan (2014), Indian Economy, S.Chand Publishing, New Delhi.
- 5. Sawant T.R (2017), Indian Agricultural Labour Problems and Suggestions, Research Front Special Issue no.2, 2017.
- 6. Annual Report 2020-21, Department of Agriculture, Cooperation and Farmer Welfare, Government of India.

DANK TO BE A STATE OF THE STATE

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Vol.2 Issue.15 May-June-2022

Peer Reviewed Bi-Monthly

GENDER AND HEALTH

Gadekar pandurang Chandrakant Librarian S.R. T. College Ambajogai

Abstract:

Research has found differences between women and men in some health indicators. Women's life expectancy is higher than men's, but research on differences in morbidity has proved less consistent than on the differences in mortality. These differences vary in terms of the type of health indicator used, the life cycle period analyzed, and even the country where research is conducted. Generally, men have more life-threatening chronic diseases at younger ages, including coronary heart disease, as well as more externalizing mental health problems and substance use dis orders. Women present higher rates of chronic debilitating conditions such as arthritis, frequent or severre headaches, gallbladder conditions, and also more internalizing mental problems such as affective and anxiety also highlighted the complexity of gender differences in health.

Keywords: objectives, Gender issues ,Gender & Health,Mental Health etc.

Introduction:

`Gender norms,roles and relations, and gender inequality and inequity,affect peoples health all around the world. This Q&A examines the links between gender and health, highlighting WHOs ongoing work to adressgender-related barriers to healthcare, advance gender equality and the empowerment of women and girls in all their diversity, and achieve health for all. Health refers not only to the absence of disease of disability but encompasses a persons state of complete physical ,emotional mental and social well-being. It is therefore important to distinguish between possible biological and and social and cultural factors to the causation ill health women health is not just about their reproductive functions

Objectives:-

- 1. To define terminologies related to gender issues
- 2. To enlist all current vital statistics related to gender issues
- 3. To differentiate between gender in various aspects related to health.

Gender issues in Health. :-

- 1. Gender & Heart Disease
- 2. Gender & stroke
- 3. Gender & blindness
- 4. Gender & Malaria
- 5. Gender & Cancer

Gender & Health:-

Gender- socially/culturally constructed differences between men and women variable. Gender can be seen as the full range of personality traits, attitudes, feelings, society ascribes to the two seses on a differential basis.health as to WHO (1960) is a complete state of physical, mental, & social well being.

Women and Mental Health:-

Women are seen as being more apt to talk about their problems and want to get better the tresses of certain issues are lifted once the lines of communications are opened. Women seek getting help as a solution whether than an admittance of being weak.

conclusions:

Social roles traditionally attributed to women and men are relevant in gender differences as far as health and well-being are concerned. Although there is empirical evidence that women and men are similar in most psychological traits the majority of society consider they are different and should fulfill different roles, so they are socialized differentially. Moreover, gender is a social structure that restricts people, and assigns different iated roles and positions. Besides, women and men show a high intra-group variability, and there exist significant and complex, yet not well-known, intraction between gender and other variables.

References:

1. Lahelma E, Arber S, Martikaine P, Rahkone O, Silventoine k. The Myth of gender differences in health: social sructural determinants across adult ages in Britain and Finland. Current Socialogy. 2001;49:31-54.

- **IJAAR**
- 2. Macyntire S, Hunt K, Sweeting H. Gender Differences in health: are things really as simple as they seem? Social Science & Medicine. 1996;42:617-624.
- 3. Springer KW, Hankivsky O, Bates LM. Gender and health: relationaal, intersectional, and biosocial approaches. Social Science & Medicine. 2012;74:1661-1666.
- 4. Hunt K, Annadale E. Relocating gender and morbidity: examining men's and women's health in contemporary Western societies. Introduction to special issue on Gender and health. Social Science & Medicine. 1999;48:1-5.

DAAR C

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Vol.2 Issue.15 May-June-2022

Peer Reviewed Bi-Monthly

लिंगभाव विषमता आणि बंजारा समाजातील स्त्रिया

प्रा. ईश्वर लक्ष्मण राठोड¹ प्राचार्य डॉ. शिवाजी गायकवाड²
¹शि. म. ज्ञानदेव मोहेकर महाविद्यालय, कळंब, ता. कळंब
²संशोधन मार्गदर्शक व विभागप्रमुख, दयानंद कला महाविद्यालय, लातर

प्रास्ताविक:

समकालीन भारतातील लिंगभाव विषमता आणि विविध जाती जमातीतील महिलांच्या समस्या, लक्षात घेतले असता, बंजारा समाजातील स्त्रियांच्या पारंपारिक ते आधुनिक समाजात देखील समस्या असल्याचे दिसून येते. म्हणून या लेखात लिंगभाव विषमता आणि बंजारा समाजातील स्त्रियांच्या समस्यांकडे लक्ष वेधण्याचा प्रयत्न करण्यात आलेला आहे. लिंगभाव हा शब्दप्रयोग समाजशास्त्रीय अर्थाने िकंवा संकल्पनात्मक वर्गीकरण करण्यासाठी केला जातो. त्याला एक विशिष्ट अर्थ आहे. या नवीन अर्थानुसार लिंग या संज्ञेचा वापर स्त्री आणि पुरुषांची सामाजिक आणि सांस्कृतिक व्याख्या स्पष्ट करण्यसाठी करतात. मराठीत याला लिंगभाव असे म्हटले जाते. स्त्री पुरुषांचे स्थान व भूमिका यात समाजात कसा भेद केला जातो. याचा या संज्ञेमुळे आकलन केले जाते. म्हणजेच स्त्री-पुरुष संबंधीचा सामाजिक वास्तविकतेचे आकलन होण्यासाठी विशेषणाचे एक साधन म्हणून हि संकल्पना वापरली जाते.

लिंगभाव हि एक अशी संकल्पना आहे की, जी जैविक भेदांपेक्षा वेगळी आहे. प्रत्यक्षात स्त्री पुरुषातील जैविक भिन्नत्व दर्शविण्यासाठी लिंग या संकल्पनेचा विचार केला जातो. तर Gender अर्थात लिंगभाव हि संकल्पना स्माजाद्वारे स्त्री-पुरुषामध्ये निर्माण झालेल्या सामाजिक भिन्नत्वाशी संबंधित असल्याचे आढळून येते. जन्म घेतलेले प्रत्येक नवजात अर्भक सुरुवातीला एक जैविक प्राणी असते, पण सामाजिकरणाच्या माध्यमातून त्याच्यावर वेगवेगळे संस्कार करून, हाडामासाच्या त्या जीवाला स्त्री किंवा पुरुषात रुपांतरीत केले जाते. म्हणजेच Gender हि संकल्पना स्त्रीत्व किंवा पुरुषत्व यांच्या समांतर आणि सामाजिक स्वरूपावर आधारित असलेल्या असमान विभाजनाशी संबंधित आहे. जगाच्या इतिहासात कोणत्याच सामाजिक व्यवस्थेने नैसर्गिक लिंगभेदाचा वापर, विस्तार व विकृतीकरण आमच्या भारतीय समजाएवढे कूरपणे इ सुव्यवस्थितपणे केलेले नसेल. या व्यवस्थेने प्रथम नैसर्गिक लिंगभेद कृत्रिमपणे सामाजिक लिंगभावात रुपांतरीत केले. नरातून पुरुषत्व व मादीतून स्त्रीत्व निर्माण केले. खरे म्हणजे पुरुष/नर म्हणजेच मानवजात आणि स्त्री म्हणजे केवळ मादीपण अशीच धारणा तयार करून आता हि व्यवस्था त्यांना नैसर्गिक मानते आणि स्त्रियांचे आर्थिक, सामाजिक, लैंगिक, मानसिक शोषण करण्याची वाट मोकळी करून देते.

संशोधनाची उद्दिष्टे :

- 1. लिंगभाव संकल्पना समजून घेणे.
- 2. बंजारा स्त्रियांचे जीवनमान समजून घेणे.

संशोधन पद्धती :-

लिंगभाव विषमता आणि बंजारा समाजातील स्त्रियांचे जीवनमान या संशोधन लेखाचे उद्दिष्ट अभ्यासात असताना वर्णनात्मक संशोधन आराखड्याचा अवलंब करण्यात आला आहे. एखाद्या सामाजिक घटनेचे शास्त्रीय विश्लेषण करण्यासाठी तथ्ये संकलित करून अध्ययन करणे म्हणजेच सामाजिक घटनांचे वर्णनात्मक अध्ययन होय. प्रस्तुत संशोधन लेखासाठी वर्णनात्मक संशोधन पद्धतीचा अवलंब करण्यात आलेला आहे.

तथ्य संकलन: प्रस्तुत संशोधन लेख अध्ययनाच्या अनुषंगाने तथ्य संकलन करण्यासाठी दुय्यम तथ्य संकलन पद्धतीचा अवलंब करण्यात आला. यासाठी संदर्भग्रंथ, वर्तमानपत्र, संशोधन साहित्य, मासिके, अहवाल, महिलांच्या परिवर्तनासाठी कार्य करणाऱ्या विविध संस्थाचा आढावा व इंटरनेट वरील सबंधित साहित्याचा आधार घेण्यात आला आहे.

प्रा. ईश्वर लक्ष्मण राठोड प्राचार्य डॉ. शिवाजी गायकवाड

लिंगभावाची संकल्पना:-लिंग- लिंग हे नैसर्गिक असते. तसेच ते जीवशास्त्रीय असते. स्त्री-पुरुषांच्या जननेन्द्रीयातील फरकामुळे ते दृश्य स्वरूपाने आहे. लिंगातील भेद हे प्रजनन प्रक्रियेतील कार्यावर अवलंबून असते. लिंग हे शक्यतो सहजासहजी बदलता येत नाहीत. लिंग हे सर्वत्र सारखे असते ते स्थिर स्वरूपाचे असते.

लिंगभाव- लिंगभाव ही संकल्पना सामाजिक व सांस्कृतिक असून ती मानवनिर्मित आहे. ती भूमिका, गुण, वर्तन प्रकार व जबाबदाऱ्या इत्यादीची स्त्रीयोचीत व पुरुषोचीत अशी विभागणी करणे. विचारवान्ताच्या मते, लिंगभाव ही एक सामाजिक व सांस्कृतिक बाब आहे. त्यातून स्त्री ची बाईपणात इ पुरुषांची पुरुषापणात होणारी सामाजिक वर्गवारी सूचित होते. एखादी व्यक्ती स्त्री किंवा पुरुष हे जैविक पुराव्याने ठरते. परंतु व्यक्तीने बाईपण व पुरुषपण मात्र स्थळ काळरूप बदलणाऱ्या सामाजिक व सांस्कृतिक निकषांनी ठरते.

बंजारा समाजातील स्त्रिया आणि लिंगभाव विषमतेचे स्वरूप :-

भारतीय समाजातील बंजारा तथा अन्य कोणत्याही समाजातील स्त्रियांना वेगवेगळ्या समस्यांना नियमितपणे तोंड द्यावे लागते. भारतीय समाजातील स्त्रियांच्या प्रमुख समस्या म्हणून स्त्री-पुरुष विषमता आणि स्त्रियांना दिलेला दुय्यम स्थान, यामुळे आजही स्त्रियांवर होणारे शोषण कमी झालेले अथवा थांबलेले दिसून येत नाही. यामुळे आजच्या समकालीन विकसनशील असलेल्या भारतात स्त्रियांच्या समस्या कमी तर झालेल्या नाहीत परंतु २१ व्या शतकात स्त्रियांवर होणारे अन्याय, अत्याचार मात्र वाढलेले दिसून येतात. बंजारा समाज देखील याला अपवाद नाही. कारण की, वर्षानुवर्ष भटकंती करून आपल्या कुटुंबाचे उदरनिर्वाह करणारे बंजारा लोक स्वतंत्रपूर्व व स्वातंत्रोत्तर काळात हा समाज भारतातील वेगवेगळ्या राज्यात स्थिर होताना दिसून येतो. परंतु या दरम्यान बंजारा समाजातील स्त्रियांना अनेक आव्हानाला सामोरे जावे लागले आहे. प्रभूत्वशाली जाती समूहाच्या लोकांकडून या समाजाचे व विशेषता स्त्रियांचे शोषण झालेले दिसून येते. तसेच पुरुषप्रधान संस्कृतीचे आदर करणारे अशी भारतीय समाजाची ओळख असल्यामुळे यावरून हे लक्षात की, समाजातील लोक देखील स्त्रियांना दुय्यमत्वाचे स्थान दिलेले दिसून येतात. म्हणून असे स्पष्ट होते की, बंजारा समाजात देखील स्त्री-पुरुष विषमता असल्याचे दिसून येते. बंजारा समाजातील स्त्रियांना विविध क्षेत्रात जीवन जगताना शोषणाला, विषमतेला सामोरे जावे लागते. स्त्रियांच्या विषमतेच्या संदर्भातील विविध क्षेत्राविषयी पुढीलप्रमाणे माहिती स्पष्ट करता येईल.

कौटुंबिक व वैवाहिक क्षेत्रातील लिंगभाव विषमता :-

बंजारा समाजातील स्त्रियांना कौटुंबिक व वैवाहिक क्षेत्रात जवळपास बहुतेक स्त्रियांना लिंगभाव विषमतेला बळी पडावे लागते. काही अपवाद वगळता सर्वच कुटुंबे पितृसत्ताक, पुरुषसत्व असल्यामुळे पुरुषांना सर्वच बाबतील उच्च अधिकार प्राप्त झाले आहेत. कुटुंबातील सर्वच कमी मूल्यांचे, महत्वाचे व कठीण कामे स्त्रियांना करावी लागतात. त्यातून कौटुंबिक क्षेत्रात लिंगभाव विषमता दिसून येते. तसेच विवाह करण्याचा, जोडीदार निवडण्याचा, मुलांना जन्म देण्याचा अधिकार पुरुषांनाच दिसून येतो. त्यामुळे विवाह बाबतही स्त्रियांना लिंगभाव विषमतेला सामोरे जावे लागते.

सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक क्षेत्रातील लिंगभाव विषमता :-

सामाजीकरणाच्या माध्यमातून स्त्रियांचे रुपांतर स्त्रीपणात व पुरुषांचे रुपांतर पुरुश्पणात केले जाते. त्यासाठी सामाजिक व सांस्कृतिक घटकांचा खूपच प्रभाव दिसून येतो. सामाजिक व सांस्कृतिक बाबतीत स्त्रियांना दुय्यमत्व प्राप्त झाले आहे. स्त्री कितीही कर्तुत्ववान असली तरी समाजात तिची प्रतिष्टा पुरुषांच्या तुलनेत कमीच असते. धार्मिक कार्य करण्यासाठी सुद्धा समाज व संस्कृतीने पुरुषाला झुकते माप दिले आहे. उदा. विधवा स्त्री, धार्मिक कार्य करू शकत नाही. हे आजही बंजारा समाजात दिसून येते. कारण की, हे चित्र बंजारा समाज व इतर समाजात हि दिसून येते. म्हणून असे म्हणता येते की, आजही बंजारा समाजातील सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक क्षेत्रातील लिंगभाव विषमता संपुष्टात आलेली नाही. परंतु हि विषमता आजही वास्तव रुपात समाजात असल्याचे विविध कार्यातून स्पष्ट दिसून येते.

शैक्षणिक, राजकीय व आर्थिक क्षेत्रातील लिंगभाव विषमता :-

बंजारा समाज हा अनेक वर्ष भटकंती करीत होता. १९ व्या आणि २० व्या शतकात हा समाज वेगवेगळ्या राज्यात स्थिर स्थिरावलेला दिसतो. परंतु पूर्णतः अविकसित अवस्थेत असलेली जीवनशैली तसेच पारंपारिक व्यवसायातून बाहेर पड्ल्यानंतर कुटुंबाच्या उदरिनर्वाहासाठी संघर्ष करण्याची वेळ या समाजावर आलेली होती. समाजातील लोकांना कोणत्याही प्रकारचे शिक्षण व राजिकय संधी मिळालेली नव्हती. अशा अवस्थेत स्त्रियांची तर अत्यंत अवहेलना होत होती. निरक्षरतेचा अभाव फार मोठ्या प्रमाणात असल्यामुळे शोषणाला बळी पडत असत. भारतीय स्त्रियांचे श्रमाच्या आधारावर देखील लिंगभाव होताना दिसून येते. कुटुंबातील कठीण कार्य हे स्त्रियांना दिले जाते तर चांगले, प्रतिष्ठित व आनंददायी कार्य पुरुषांकडे दिले जाते. म्हणजेच श्रमविभाजन हे लिंगभाव यावर आधारित केले जाते. अर्थकारणाशी सबंधित असणाऱ्या विविध क्षेत्रातही स्त्री आणि पुरुष असा भेदभाव केला जातो. स्त्रियांना आर्थिक निर्णयापासून वंचित ठेवणे, शेती, घर व इतर मालमत्ता इत्यादी पासून वंचित ठेवणे यासाठी लिंगभाव विषमतेचा आधार घेतला जातो.

साहित्य, समाज माध्यम आणि आरोग्य या क्षेत्रातील लिंगभाव विषमता :-

मानवी समुहात वेगवेगळ्या माध्यमातून स्त्री विषयक विषमता दिसून येते. शालेय साहित्य असेल, समाजमाध्यमे चित्रपट, लघुचित्रपट व जाहिरातीमध्ये स्त्रियांना पुरुषापेक्षा भिन्न भावनिक, हाळ्ळ्या, शोषित भूमिका देतात. तसेच सौंदर्याचे प्रदर्शन करण्यास भाग पाडले जाते. त्यातून लिंगभाव विषमता दिसून येते. आरोग्याच्या बाबतीत देखील दुजाभाव केल्याचे अनेक स्त्रियांना अनुभव आलेला आहे. स्त्रियांना उपवास, वृत्तवैकल्य करणे, आजारपणात विश्वांती न देणे, गर्भ अवस्थेत श्रमाचे काम करणे, तात्पुरत्या व अघोरी स्वरूपाचे उपचार करणे इत्यादीमुळे स्त्रीयाच्या आरोग्यावर दुष्परिणाम होवून अनेक स्त्रिया मृत्युमुखी पडतात. म्हणजेच लिंगभाव विषमतेला स्त्रियांना सामोरे जावे लागते. अशाच स्वरूपाची परिस्थिती बंजारा समाजात ही आहे. परंतु बंजारा समाजातील स्त्रियांचे शोषणाचे स्वरूप हे वेगवेगळे आणि विविध स्वरूपाचे असल्याचे दिसून येते.

निष्कर्ष :-

देशातील बंजारा समाज असेल किंवा इतर कोणत्याही जाती जमातीत आजही लिंगभाव विषमता असल्याचे दिसून येते. ही लिंगभाव विषमता असल्याचे कारण म्हणजे जात, वंश आणि वर्ग या विषमतेप्रमाणे स्त्री- पुरुषांमधील विषमता सुद्धा पूर्णतः मनुष्यनिर्मित आहे. विशिष्ट ऐतिहासिक कालखंडामध्ये या विषमतेची निर्मिती केली गेली आणि म्हणूनच तिला प्रश्न विचारले जावू शकतात, आव्हान दिले जावू शकते आणि बदलही घडवून आणता येतो. स्त्री मुलांना जन्म देत असेल पण म्हणून ती दुय्यम ठरत नाही. तसेच त्यामुळे तिच्या शिक्षण किंवा नोकरी व्यवसायावर परिणाम होऊ नये. दोन भिन्न प्रकारची शरीरे असली तरी त्यामुळे त्यांच्यात विषमता का निर्माण व्हावी? यासाठी लिंगभाव आधारित सामाजीकरण व सामाजिक व सांकृतिक मानसिकता या सर्वामुळेच स्त्रियांना लिंगभाव विषमतेला सामोरे जावे लागल्याने सिद्ध होते.

संदर्भग्रंथ सूची :-

- १. आगलावे प्रदीप (२००७), सामाजिक संशोधन पद्धती, श्री. साईनाथ प्रकाशन, नागपूर.
- २. कऱ्हाडे बी. एम. (२०१०), भारतीय समाज प्रश्न आणि समस्या, पिपळागुरे अंड कंपनी पुब्लीशर्स, नागपूर.
- ३. तांबे श्रुती, (२०१०), लिंगभाव समजून घेताना, लोकवाङ्मय, मुंबई.
- ४. राठोड अंजली (२०१५), जालना जिल्यातील बंजारा व धनगर समाजातील स्त्रियांचा आर्थिक व सामाजिक अभ्यास, अप्रकाशित शोधप्रबंध.
- ५. चव्हाण व्यंकट (२०१५), बंजारा लोकगीत समाज और संस्कृति, वाण्या पुब्लिकेशन्स, कानपूर.

DAAR .

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Vol.2 Issue.15 May-June-2022

Peer Reviewed Bi-Monthly

लिंगभाव आणि भारतीय महिलांची आर्थिक स्थिती

गोविंद द. बावस्कर

कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, किल्ले-धारुर, जि. बीड . ४३११२४

Email:- gdbavaskar@gmail.com

प्रस्तावना :

स्वातंत्र्यप्राप्तीनंतर शिक्षण, औद्योगीकरण, खासगीकरण, उदारीकरण, जागतीिककरण, आणि नवीन विचारधारेमुळे स्त्रियांची पुरुषांवरील आर्थिक निर्भता कमी होत आहे. "स्वातंत्र्या आगोदर सर्वसामान्य वर्गातील स्त्रियां कौटुंबिक कार्य आणि उद्योगाच्या माध्यमातून आपली उपजीविका भागवत होत्या. तर मध्यम आणि उच्च वर्गातील स्त्रियांचे आर्थिक कार्य अनैतिक समजले जात होते, परंतू दुसऱ्या महायुध्दामुळे निर्माण झालेल्या आर्थिक मंदीचा परिणाम म्हणून जीवन जगण्याचा खर्च वाढला व एका व्यक्तीच्या मिळकतीवर कुटं बाचे भरण-पोषण होणे अवघड होत राहीले. त्याचा परिणाम म्हणून आर्थिक अडचणीचा सामना करत असणाऱ्या महिलांना श्रमबाजारात उतरावे लागले. स्वातंत्र्यप्राप्तीनंतर मात्र मध्यम वर्गातील स्त्रियांनी शिक्षण घेऊन आर्थिक क्षेत्रात प्रवेश करण्यास सुरुवात केली आहे. आज स्त्रिया समाजकारण, राजकारण, शिक्षण, आरोग्य, मनोरंजन, उद्योग आणि खासगी व शासकीय कार्यालयामध्ये सेवक ते उच्चपदस्थ अधिकारी अशा वेगवेगळ्या पदावर कार्यरत असल्याचे पहावयास मिळते. आजच्या जागतीिककरणाच्या युगात स्त्रियांच्या बाबतीत चूल आणि मुल ही परिस्थीती राहीलेली नसून स्त्रियांनी घराबाहेर पडून पुरुषांच्या बरोबरीने अर्थार्जन करणे अपरिहार्य झालेले आहे. परिणामी आजची शिक्षित महिला मुलांचे संगोपन, त्यांचे शिक्षण, पति आणि कुटं बातील सदस्यांची देखभाल करण्याबरोबरच आर्थिक कार्यातही आपली भूमिका साकारत आहे.

उदिष्टे :-

- १. लिंगभाव संकल्पना समजून घेणे.
- २. भारतीय महीलांच्या आर्थिक स्थितीचा अभ्यास करणे.

संशोधन पद्धती:- भारतीय महीलांची आर्थिक स्थिती या संशोधन लेखाचे उद्दिष्ट लक्षात घेता वर्णनात्मक व विश्लेषणात्मक संशोधन आराखड्याचा अवलंब करण्यात आला आहे. "एखाद्या सामाजिक घटनेचे शास्त्रीय विश्लेषन करण्यासाठी तथ्ये संकलीत करुन अध्ययन करणे म्हणजेच सामाजिक घटनांचे वर्णनात्मक अध्ययन होयः" प्रस्तुत संशोधन लेखासाठी वर्णनात्मक संशोधन पद्धतीचा अवलंब करण्यात आलेला आहे.

तथ्य संकलन :- प्रस्तुत संशोधन कार्यात माहितीच्या अनुषंगाने तथ्य संकलनासाठी दुय्यम तथ्य संकलन पद्धतीचा अवलंब करण्यात आला असून संदर्भ ग्रंथ, वर्तमानपत्रे, वेगवेगळया सिमत्यांचे अहवाल, मासिके आणि इंटरोट इ. साधनांचा आधार घेण्यात आला आहे.

लिंगभाव संकल्पनाः

लिंगभाव सामाजीकरण ही एक व्यकतीची शिकण्याची प्रक्रीया आहे, ज्यामध्ये व्यक्ती आपल्या लिंगानुसार समाजाला अपेक्षित असलेले वर्तन करत असतो. लिंगभाव हि संकल्पना स्माजादृद्वारे स्त्री पुरूषामध्ये निर्माण झालेल्या सामाजिक भिन्नत्वाशी संबंधित असल्याचे आढळून येते. जन्म घेतलेले प्रत्येक नवजात अर्भक सुरुवातीला एक जैविक प्राणी असते, पण सामाजिकरणाच्या माध्यमातून त्याच्यावर वेगवेगळे संस्कार करून, हाडामासाच्या त्या जीवाला स्त्री किंवा पुरुषात रुपांतरीत केले जाते. म्हणजेच Gender हि संकल्पना स्त्रीत्व किंवा पुरुषत्व यांच्या समांतर आणि सामाजिक स्वरूपावर आधारित असलेल्या असमान विभाजनाशी संबंधित आहे.

भारतीय स्त्रियांच्या आर्थिक स्थितीचा विचार केल्यास असे दिसून येते की, स्वांतत्र्यपुर्व विविधकाळात पुरुषप्रधान समाजव्यवस्थेत स्त्रियांना कुठलेच अधिकार नव्हते. "स्वातंत्र्य प्राप्तीनंतर मात्र भारतीय राज्यघटना व कायद्याच्या माध्यमातुन स्त्रीपुरुष समानता निर्माण केली गेली. हिंदू उत्तराधिकार कायद्यान्वये (१९५६) हिंदू स्त्रीची मालमत्ता ही तीची अबाधीत मालमत्ता असते हे ठरविन्यात आले. महिलांना संपुर्ण मालक समजून संपत्ती धारण करण्याचा अधिकार देण्यात आला. समान वेतन कायद्यान्वये (१९७६) नोकरदार महिलांना एकाच कामासाठी पुरुषा प्रमाने समान वेतनाचा अधिकार देण्यात आला. तसेच स्वतः कमावलेल्या पैशावर स्त्रीचा पुर्ण अधिकार मान्य करुन तो खर्च करण्याचे स्वातंत्र्य देण्यात आले." असे असले तरी "वास्तवात मात्र अनेक सांस्कृतीक, भाविनक कारणामुळे भारतीय स्त्रियांचे आर्थिक घटकावर नियंत्रन नसल्याचे दिसून येते. त्यामुळे स्त्रियांना कायम परावलंबित्व स्विकारावे लागते. वारसा हक्काच्या कायद्यात आलीकडे झालेल्या बदलांना न जुमानता आजही बहुतांशी मिळकत ही वडीलांकडून मुलांकडे वारसा हक्काने सोपविली जाते. नोकरदार स्त्रिया आर्थिकदृष्ट्या स्वतंत्र असल्या तरी बहुतेक कुटुंबात बायकोचा पगार पुरुषाच्या मिळकतीचा एक भाग समजल्या जातो. महिन्याच्या महिन्याला बायकोने आपला पगार नवऱ्याच्या हातात ठेवावा, असा दंडकही काही घरांमध्ये आढळतो. नव-याला विचारल्या शिवाय बहुसंख्य स्त्रिया कुठलाही खर्च करावयास धजावत नाही. यावरुन बहुसंख्य मिळवत्या स्त्रिया स्वतंत्र नसून घरातील वेढेच्या मजूर आहेत असे दिसते."

गोविंद द. बावस्कर

सारणी क्रमांक १.५ भारतातील राज्य निहाय व केंद्रशासित प्रदेश निहाय स्त्री-प्ररुष कामगारांचा सहभाग दर्शविणारी सारणी:

क्र. केंद्र	शासित प्रदेश	^			शहरी			संयुक्त		
		स्त्री	पुरुष	एकूण	स्त्री	पुरुष	एकूण	स्त्री	पुरुष	एकूण
	भारत	३०.०	५३.०	४१.८	१५.४	५३.७६	३५.३१	२५.५१	५३.२६	३९.७९
१	आंध्रप्रदेश	४४.६	५८.४	५१.५	१९.१	५४.१४	३६.७५	३६.१६	५६.९८	४६.६१
२ अर	नाचस प्रदेश	३ ९.५	४८.५	४४.१	२१.३	५०.९१	३६.९७	३५.४४	४९.०६	४२.४७
3	आसाम	२३.७	५३.१	७.७	१४.९	५६.७९	३६.४१	२२.४६	५३.५९	३८.३६
8	बीहार	२०.२	४६.७	38.0	१०.४	४४.९०	२८.६२	१९.०९	४६.४७	३३.३६
4	छत्तीसगड -	४६.३	५६.४	५१.३	१७.४	५३.०९	३५.६६	३९.७०	५५.५९	४७.६८
६	गोवा	२२.६	५५.५	३९.१	२१.५	५७.४८	३९.८९	२१.९२	५६.७६	३९.५८
9	गुजरात	३२.०	५७.१	४४.९	११.४	५७.१८	३५.७३	२३.३८	५७.१६	४०.९८
۷	हरयाना	२०.८	५०.१	३६.४	१२.१	५१.१५	३२.९५	१७.७९	५०.४४	३५.१७
९ ही।	नाचल प्रदेश	8.08	49.0	५३.३	१९.९	५५.७२	३९.२२	४४.८२	५८.६९	५१.८५
१० जम्मु	आणि कश्मीर	२०.८	४६.३	३४. २	१४.५	५२.६८	३५.२३	१९.११	४८.११	३४.४७
११	झारखंड	३५.०	५०.८	४३.०	१०.१	४६.७	२९.२६	२९.१०	४९.७६	३९.७१
१२	कर्नाटक	३८.८	५९.८	४९.४	२०.८	५७.८१	३९.६६	३१.८७	49.00	४५.६२
१३	केरळ	२०.२	५३.६	३६.३	१६.०	५१.७६	३३.१२	१८.२३	५२.७३	७७.४६
ξ Α 1	नध्य प्रदेश	३९.३	५४.३	86.0	१५.१	५१.६६	३४.१८	३२.६४	५३.५६	४३.४७
१५	महाराष्ट्र	४२.५	५६.७	४९.८	१६.८	५५.१६	३६.९५	३१.०६	५६.००	४३.९९
१६	मणीपुर	४१.२	47.8	४६.९	३३.२	४९.८७	४१.४१	३८.५६	५१.५८	४५.९
१७	मेघालय	३५.०	89.0	४१.०	२३.६	४७.६८	३५.६३	३२.६७	४७.१७	३९.९६
१८	मीझोराम	४१.९	५३.९	۷۷.0	३१.१	५०.८९	४०.९८	३६.१६	५२.३५	४४.३६
१९	नागालँड	५२.३	५५.७	48.0	२५.९	४७.९५	३७.४४	४४.७४	५३.४२	89.78
२०	ओडीसा	२९.७	५६.५	४३.२	१४.१	५४.०८	३४.८१	२७.१६	५६.११	४१.७९
२१	पंजाब	१४.४	५४.९	३५.६	१३.२	५५.५१	રૂપ.૭૫	१३.९१	५५.१५	३५.६७
22	राजस्थान	82.6	५१.७	४७.३	१२.०	५०.७५	३२.३७	३५.१२	५१.४७	४३.६०
२३	सिक्कीम	४४.६	६१.०	५३.३	२४.८	५७.५२	४१.९०	३९.५७	६०.१६	५०.४७
78 7	गमीळनाडु	४१.२	६०.०	40.6	२१.८	५८.५४	४०.१६	३१.८०	५९.३१	४५.५८
२५	त्रीपुरा	२६.३	५५.३	४१.१	१६.०	५६.९७	३६.७६	२३.५७	५५.७७	80.00
२६ :	उत्तरप्रदेश	१८.३	8.68	३३. ४	११.३	४८.९४	३२.१६	१६.७५	४७.७१	३२.९४
२७	उत्तराखंड	३२.९	४९.१	४१.०	११.३	५०.९८	३२.३६	२६.६८	४९.६७	३८.३९
२८ परि	श्चम बंगाल	१९.४	46.2	३८.७	१५.४	५६.८४	३६.६९	१८.०८	46.00	३८.०८
केंद्र	शासित प्रदेश									
२९ अंद	मान/निकोबार	१७.९	49.8	३९.८	१७.७	६०.३५	४०.४७	१७.८१	५९.५९	४०.०८
३०	चंदीगड	१४.२	६ २.२	४२.६	१६.०	५६.३४	३८.१७	१६.००	५६.५१	३८.२९
३१ दाद	रा नगरहवेली	३३.४	५६.८	४५.९	१४.७	६६.५१	४५.४८	२५.२५	६१.५७	४५.७३
३ २	दीव दमन	१५.९	4८.२	३८.६	१४.५	७५.१२	५३.५८	१४.८९	७१.४८	४९.८६
३३	दील्ली	9.9	४९.३	३१.१	१०.६	५३.०८	३३.३४	१०.५८	42.88	३३.२८
38	लक्षद्वीप	१२.६	५२.३	३२.९	१०.५	४४.५६	२८.०१	१०.९६	४६.२५	२९.०९
३५	पाँडीचेरी	२१.१	48.7	३७.४	१६.१	५४.४१	३४.८४	१७.६३	५४.३६	३५.६६

Source: Census 2011, Office of the Registrar General, India. Women Men in India 2016 p.no.61

उपरोक्त आकडेवारी भारत सरकारच्या वुमन मेन इन इंडीया (२०१६) या विभागाने प्रदर्शित केलेली असून या आकडेवारीचे निरीक्षण केले असता असे दिसून येते की, ही आकडेवारी भारतीय जनगनना २०११ नुसार देशातील संघटीत क्षेत्रात काम करणाऱ्या स्त्री-पुरुषांचे एकूण लोकसंखेशी असलेले प्रमाण दर्शिवते. भारतीय जनगनना २०११ नुसार देशातील मिहलांच्या एकुण लोकसंखे पैकी २५.५१ टक्के मिहला संघटीत क्षेत्रात कार्यरत आहेत. भारतातील ग्रामिण व नागरी भगाचा विचार करता हेच प्रमाण अनुक्रमे ३०.०० टक्के आणि १५.४ टक्के इतके असल्याचे दिसून येते. भारतातील राज्यवार मिहलांचा संघटीत क्षेत्रातील सहभाग पाहील्यास असे दिसते की, हीमाचलप्रदेश राज्यातील मिहलांचा संघटीत क्षेत्रातील सहभाग सर्वाधिक असून राज्यातील मिहलांच्या एकुण लोकसंखे पैकी ४४.८२ टक्के मिहला संघटीत क्षेत्रात कार्यरत आहेत. तर पिश्चम बंगाल येथिल मिहलांचा संघटीत क्षेत्रातील सहभाग सर्वाधिक असून राज्यातील मिहलांचा संघटीत क्षेत्रातील सहभाग पाहील्यास असे दिसते की, नागालँड राज्यातील ग्रामिण भागातील मिहलांचा संघटीत क्षेत्रातील सहभाग पाहील्यास असे दिसते की, नागालँड राज्यातील ग्रामिण भागातील मिहलांचा संघटीत क्षेत्रातील सहभाग सर्वाधिक असून राज्यातील मिहलांच्या ग्रामिण भागातील एकुण लोकसंखे पैकी ५२.३ टक्के महिला संघटीत क्षेत्रात कार्यरत आहेत. तर सर्वात कमी १८.३ टक्के सहभाग उत्तरप्रदेश या राज्याचा असल्याचे दिसते. तर नागरी भागात मनीपुर येथे मिहलांचा संघटीत क्षेत्रात कार्यरत आहेत. तर नागरी भागातील नागरी भागातील मिहलांचा संघटीत क्षेत्रात कार्यरत आहेत. तर नागरी भागातील मिहलांचा संघटीत क्षेत्रातील सहभाग सर्वाधिक असून राज्यातील महिलांचा संघटीत क्षेत्रातील सर्वाच प्रकृण लोकसंखे पैकी ४४.८२ टक्के महिला संघटीत क्षेत्रात कार्यरत आहेत. तर नागरी भागातील मिहलांचा संघटीत क्षेत्रातील सहभाग विहार यो राज्याचा असल्याचे दिसून येते.

भारतातील केंद्रशासीत प्रदेशातील महिलांचा संघटीत क्षेत्रातील सहभाग पाहील्यास असे दिसते की, त्या-त्या केंद्रशासीत प्रदेशातील महिलांच्या एकुण लोकसंखेपैकी दादरा नगरहवेली येथिल सर्वाधिक २५.२५ टक्के महिला संघटीत क्षेत्रात कार्यरत आहेत. तर सर्वात कमी १०.५८ टक्के महिला दिल्ली येथे असल्याचे दिसून येते. केंद्रशासीत प्रदेशातील ग्रामिण व नागरी भगाचा विचार करता दादरा नगर हवेली या केंद्रशासीत प्रदेशातील ग्रामिण भागातील महिलांचा संघटीत क्षेत्रातील सहभाग सर्वाधिक असून ग्रामिण भागातील एकुण लोकसंखे पैकी ३३.४ टक्के महिला संघटीत क्षेत्रात कार्यरत आहेत. तर सर्वात कमी ०९.७ टक्के सहभाग दिल्ली या केंद्रशासीत प्रदेशातील असल्याचे दिसते. तर नागरी भागात अंदमान / निकोबार येथिल महिलांचा संघटीत क्षेत्रातील सहभाग सर्वाधिक असून नागरी भागातील महिलांच्या एकुण लोकसंखे पैकी १७.७ टक्के महिला संघटीत क्षेत्रात कार्यरत आहेत. तर केंद्रशासीत प्रदेशातील महिलांचा संघटीत क्षेत्रातील सर्वातकमी १०.५ टक्के सहभाग लक्षद्वीप येथिल महिलांचा असल्याचे असल्याचे दिस्न येते.

निष्कर्ष:-

उपरोक्त तक्त्यातील आकडेवारीचे निरीक्षण केल्यास हे स्पष्ट दिसून येजे की, भारतासारख्या विकसनिशल देशात महिलांचा संघटीत क्षेत्रातील सहभाग कमी असला तरी दिवसागिणक त्यात वाढ होत आहे. असे असले तरी मिहलांच्या वैयक्तीक मालमत्तेत वाढ झाल्याचे दिसत नाही. या संदर्भात महाजन जयश्री असे म्हणतात की, "जगातील श्रमाच्या २/३ श्रम मिहला करत असल्या तरी त्यांना जागतिक ऊत्पनाच्या केवळ १० टक्के वाटा मिळतो आणि जागितक मालमत्तेतील फक्त १ टक्के मालमत्ता स्त्रियांच्या मालकीची आहे." भारताच्या संदर्भात विचार केल्यास पुरुषं ाचा संपत्तीवरील अधिकार निर्ववादपणे मान्य केलेला दिसतो. कायद्याने काही प्रमाणात हे हक्क स्त्रियांना दिले परंतू स्त्रियांना हे हक्क मिळू नये म्हणून अनेक पळवाटा शोधल्या जातात. भारतीय समाजात स्त्रियांकडे पाहण्याच्या दृष्टीकोनात मूलगामी परिवर्तन न झाल्यामुळे आर्थिकदृष्ट्या मिहला वंचित असल्याचे पहावयास मिळते.

संदर्भसूचि:-

- १. आलोनी विवेक सामाजिक संशोधन पद्धती, हिस्लॉप कॉलेज, नागपुर महाराष्ट्र विद्यापीठ, ग्रंथ निर्मिती मंडळ, दत्त सदन प्रकाशन नागपर
- २. साळुंखे आ.ह. हिंदू संस्कृती आणि स्त्री, प्रकाशक राकेश साळुंखे, लोकायत यशवंतनगर गेडामाळ, सातारा,
- ३. माहेश्वरी अविनाश 'महिला अधिकार और विा्मि' प्रिज्मा बुक्स (इण्डिया) जयपूर २०११
- ४. महाजान जयश्री 'स्त्रिया आणि लिंﻄभाव' अथर्व पब्लीकेशन, देवीदास कॉलनी वरखेडी रोड, धुळे,
- ५. नाटाणी शोभा 'भारतीय समाज एंव नारी दिशा एंव दशा' मार्क पब्लीशर्स, वैशालीनगर जयपूर,

JUAR S

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Vol.2 Issue.15 May-June-2022

Peer Reviewed Bi-Monthly

कृषीच्या विकासात स्त्रियांची भूमिका

प्रा .डॉ. दीपक एम .भारती¹ ,गोविंद रामराव काळे²

¹प्र. प्राचार्य, कला,वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, किल्ले धारूर. ²संशोधक विद्यार्थी, डॉ .बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ, औरंगाबाद

गोषवारा

'जिच्या हाती पाळण्याची दोरी ती जगाला उधारी 'हे आपण वारंवार ऐकत वाचत आलो आहे पण आज त्याही पुढे जाऊन स्त्रिया पुरुषांच्या खांद्याला खांदा लावून प्रत्येक क्षेत्रात अग्रेसर ठरत आहेत. विश्व निर्मिती आणि विश्व संचालन ही दोन्ही सूत्रे आधुनिक काळातील स्त्रीयांच्या हातात असलेली दिसून येत आहे. आज आपला वेगळा ठसा विविध क्षेत्रात स्त्री उमटवत आहे .कृषी, उद्योग, व्यापार, सेवा यासारख्या क्षेत्रात स्त्रिया अग्रेसर आहेत. प्रस्तुत शोधनिबंधात कृषीच्या विकासात स्त्रियांची भूमिका अभ्यासली आहे .

के वर्ड्स :कृषीचा विकास ,स्त्रियांची भूमिका

प्रस्तावना:

कृषी क्षेत्रात शेतकरी शेतमजूर आणि उद्योजक अशा वेगवेगळ्या भूमिका आज स्त्रिया बजावतात. कृषी क्षेत्रात पुरुषांच्या बरोबरीने काम स्त्रिया करतात. स्त्रियांच्या कृषी क्षेत्रातील वाढत्या कामाची दखल शासन किंवा धोरणकर्ते पुरेशी प्रमाणात घेत नाहीत. पुरुषांच्या बरोबरीने काम शेतीत करूनही महिलांना पुरुषांइतकेच सन्मान दिला जात नाही. ही एक चिंतेची बाब आहे .भारतीय अर्थव्यवस्थेचा कणा म्हणून शेती क्षेत्राकडे पाहिले जाते. भारताच्या राष्ट्रीय उत्पन्नात कृषी क्षेत्राचा वाटा हा घटत असला तरी आज रोजी 48 टक्के लोकसंख्येस रोजगार पुरवटा करणारे कृषी हे एकमेव क्षेत्र आहे .जागतिक मंदी covid-19 च्या काळातही भारतीय अर्थव्यवस्थेला उभा ठेवण्याचे काम कृषी क्षेत्राने केले आहे. हे विसरून चालणार नाही .आज कृषी क्षेत्रात अनेक समस्या आहेत या समस्या सोडवण्याचे काम शासन स्तरावरून करणे गरजेचे आहे. कृषी भारतीय अर्थव्यवस्थेचा कणा शेती आहे तसेच स्त्रियासुद्धा कृषी क्षेत्राचा कणा आहेत .कारण शेतीतील 50 टक्केपेक्षा जास्त कामे स्त्रियाच करत आहे. स्त्रियांचे कृषी क्षेत्रामध्ये महत्त्वाची भूमिका असून अन्न व कृषी महामंडळाच्या आकडेवारीनुसार महिलांचे शेतीमध्ये 32 टक्के तर कृषिविषयक रोजगारामध्ये 48 टक्के योगदान आहे .म्हणजेच शेती मधील ग्रामीण महिलांचे महत्त्व लक्षात घेणे ही लैंगिक संबंधाची एक महत्त्वाची बाब आहे परंतु आजही भारतामध्ये शेतीमधील स्त्रियांची भूमिका ही केवळ मदत मानली जाते ही बाब लक्षात घेणे महत्त्वाचे आहे.

शोधनिबंधाचे उद्दिष्टे :

- 1. आर्थिक विकास संकल्पना अभ्यासणे.
- 2. भारताच्या आर्थिक विकासात कृषीचे महत्त्व अभ्यासणे.
- 3. कृषीच्या आर्थिक विकासात स्त्रियांची भूमिका अभ्यासणे.

संशोधन पद्धती:

सदरील विषयावर संशोधन करण्यासाठी द्वितीयक साधनांचा वापर करण्यात आला आहे. त्यात प्रकाशित ग्रंथ, मासिके, वर्तमानपत्रे व संबंधित विषयाशी निगडित साहित्याचा वापर करून माहितीचे संकलन केले.

आर्थिक विकास संकल्पना :

आर्थिक विकास ही संकल्पना फक्त वस्तू व सेवांच्या उत्पन्नाशी निगडित नसून समाजाच्या सर्व क्षेत्रांमध्ये विकासात्मक बदल घडून आणणे होय. या समाजाच्या विविध घटकापर्यंत विकासाचे फायदे पोहोचवणे अपेक्षित असते

प्रा .डॉ. दीपक एम .भारती ,गोविंद रामराव काळे

.रोजगाराच्या संधी, दारिद्र्य कमी करणे, आर्थिक विषमता कमी करणे, जीवनमान उंचावणे यालाच आर्थिक विकास म्हणतात. आर्थिक विकास ही संकल्पना खूप व्यापक आहे. 'आर्थिक विकास म्हणजे संख्यात्मक व गुणात्मक बदल घडून आणणे होय'. आर्थिक विकासाचे निर्देशक घटक हे राष्ट्रीय उत्पादन दरडोई उत्पन्न संपत्तीची समानता दारिद्र्याचा स्तर हे आहेत .तर सामाजिक विकासाचे शिक्षण, आरोग्य, लोकसंख्यावाढीचा दर आणि लिंग विषयक विकास हे निर्देशक घटक आहेत. आर्थिक व सामाजिक विकास साध्य करण्यासाठी जागतिक स्तरावर SDGs २०१६-२०३० या कालावधीत एकूण 17 लक्ष साध्य करायची आहेत .यातील प्रमुख लक्ष भारतातील सामाजिक विकासाशी संबंधित आहेत.

भारताच्या आर्थिक विकासात कृषीचे महत्व :

भारतीय अर्थव्यवस्थाही कृषिप्रधान व ग्रामीण अर्थव्यवस्था म्हणून ओळखली जाते. भारताच्या सामाजिक व अर्थिक वाटचालीत कृषी क्षेत्राचे महत्त्वपूर्ण स्थान आहे .प्राचीन काळापासून भारतामध्ये शेती व्यवसाय लोकांचा प्रमुख व्यवसाय आहे .मुख्य व्यवसाय असल्यामुळे कृषी क्षेत्र भारतासारख्या विकसनशील देशाच्या राष्ट्रीय उत्पन्नाचा मुख्य स्रोत आहे, रोजगाराचे मुख्य साधन आहे, औद्योगिक विकास व आंतरराष्ट्रीय व्यापाराचा आधार आहे .कोणत्याही देशाच्या आर्थिक विकासामध्ये जय घटक महत्त्वपूर्ण असतात त्यांना आर्थिक विकासाचे निर्धारक घटक महणतात. भारतीय अर्थव्यवस्थेच्या संदर्भात कृषी क्षेत्र भारताच्या आर्थिक विकासाचा निर्धारक घटक आहे . भारतीय अर्थव्यवस्थेत कृषी क्षेत्र द्वारे अनेक लोकांना रोजगार मिळतो भारतामध्ये जवळपास ५८.२टक्के कार्यशील लोकसंख्याकृषी क्षेत्रामध्ये कार्यरत आहे .हिरत क्रांतीनंतर भारत अन्नधान्याच्या बाबतीत स्वयंपूर्ण राष्ट्र बनले आहे. कृषी क्षेत्रावर औद्योगिक क्षेत्र अवलंबून आहे. औद्योगिक क्षेत्रास कच्च्या मालाचा पुरवठा कृषी क्षेत्रातून होत होतो. भारतात कापड उद्योग, चहा, कॉफी, रबर, वनस्पती तेल तसेच विविध कृषी प्रक्रिया उद्योग हे कच्च्या मालासाठी कृषी क्षेत्रावर अवलंबून आहेत. ग्रामीण उद्योग व कुटीर उद्योग यांचा मुख्य स्रोत कृषी क्षेत्रच आहे. भारतीय अर्थव्यवस्थेत परकीय चलन आंतरराष्ट्रीय व्यापारातून मिळवून देण्याचे कार्य कृषिक्षेत्र करते. चहा-कॉफी, तंबाखू, मसाल्याचे पदार्थ, सुती वस्त्र, फळे-भाजीपाला यांच्या निर्यातीतून बहुमूल्य परकीय चलन भारतीय अर्थव्यवस्थेस प्राप्त होते.

एकंदरीत भारतीय कृषी हेच भारताच्या महाशक्तीच्या वाटचालीत बलस्थान आहे. परंतु भारतीय कृषी अर्थव्यवस्थेसमोर आजही बरेच आव्हाने आहेत .भारतीय कृषी तज्ञ डॉ. स्वामीनाथ यांच्या मते, "कालची शेती पारंपारिक आजची शेती आधुनिक व उद्याची शेती शाश्वत" असे समीकरण असून उद्याची शेती करताना आधुनिक तंत्रज्ञानाचा वापर करून पारंपरिक शेतीला शाश्वत बनविणे काळाची गरज आहे. यासाठी शेतकऱ्यांना योग्य मार्गदर्शन, नियोजन व संभाव्य बदल लक्षात घेऊन धोरणे निश्चित करणे आवश्यक आहे.

कृषीच्या आर्थिक विकासात स्त्रियांची भूमिका :

कृषी क्षेत्राचा भारतात विचार केला असता पुरुष शेतकरी किंवा पुरुष शेतमजूर यांचा विचार केला जातो, परंतु कृषीतील 50 टक्के पेक्षा जास्त कामे करणाऱ्या शेतकरी स्त्रिया किंवा शेतमजूर स्त्रिया यांचा विचार केला जात नाही. शेतीतील तनपुर अपनी रोपे लागवड भाजीपाला लागवड फळे फुले तोडणी पिकांची कापणी यासारखी अनेक कामे स्त्रियाच करतात शेतकामात वर्षभर काबाडकष्ट करणाऱ्या स्त्रियांकडे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष डोळेझाक केली जाते. ग्रामीण भागामध्ये शेतीवर अवलंबून असलेल्या महिलांची टक्केवारी 84 टक्के आहे शेतकरी महिला सुमारे 33 टक्के तर 47 टक्के शेतमजूर आहेत असे असून सुद्धा दुर्दैवाने काळाच्या ओघात महिलांचे योगदान दुर्लक्षित राहिले आहे. ग्रामजीवनातील स्त्रियांना खूप काबाडकष्ट करावे लागतात त्यांच्या कष्टाशिवाय शेती अपूर्णच आहे. घरातील सर्व कामे स्वयंपाक करणे, पाणी भरणे, कपडे धुणे, मुलांची काळजी घेणे या घर कामासह शेतीविषयक कामे स्त्रियाच करतात महिला आघाडीवर आहेत. पुरुषांच्या तुलनेत स्त्रियांच शेतीच्या कामात भूमिका पार पाडतात.

भारतात शेतीतील कर्जबाजारीपणामुळे अनेक शेतकऱ्यांनी आत्महत्या केल्या आहेत. अशा आत्महत्याग्रस्त शेतकऱ्यांच्या कुटुंबातील स्त्रियांनी रणरागिनीचे कार्य केले आहे. त्या खचून न जाता शेती क्षेत्रात आपले योगदान देऊन कुटुंब चालवण्याचे कार्य पार पाडत आहेत. शेतीला जोडधंदा म्हणून अनेक स्त्रियांनी कोंबडी पालन, शेळी पालन, दुग्ध व्यवसाय यात भरारी घेतली आहे. शेती आणि कुटुंबाचा भार त्यांनी एक हाती पेलला आहे. शेती नसलेल्या ठिकाणी अनेक महिलांनी शेतमजुरी करून कुटुंब चालविले आहे. शेतीतील त्यांच्या कष्टाचा मोबदल्यात मात्र भेदभाव केला जातो. त्यांना पुरुषापेक्षा कमी मजुरी दिली जाते. ही दरी नष्ट होणे गरजेचे आहे. शेतीच्या कष्टाच्या कामाची अडचण शासनाने समजून घेणे महत्त्वाचे आहे. 2018 च्या आर्थिक पाहणी अहवालानुसार ग्रामीण. अधिकाधिक पुरुष शहरी भागात स्थलांतरित झाल्यामुळे कृषी क्षेत्र हे आज स्त्रियांचे क्षेत्र बनले आहे. कृषी आणि ग्रामीण अर्थव्यवस्थेला ऊर्जा देण्यासाठी शेती व अन्नधान्य उत्पादनातील स्त्रियांच्या योगदानाकडे दुर्लक्ष करता येणार नाही अशी टिपणी आर्थिक पाहणी अहवालात करण्यात आली आहे. शेतीत महिला सक्रिय होत असल्याने जमीन कर्ज, पाणी तंत्रज्ञान व प्रशिक्षण या सर्व गोष्टी महिलांना उपलब्ध करून देणे गरजेचे आहे. 2011 च्या जनगणनेनुसार एकूण महिला कष्टकऱ्यामध्ये 55 टक्के शेतमजूर स्त्रिया आणि 24 टक्के शेतकरी स्त्रिया आहेत मात्र जमीन मालकी केवळ 12.8 टक्के माहिलाच्या नावे आहे. यातूनच शेतीत कष्टकरी स्त्रियांच्या योणरी उपेक्षा अधोरेखित होते. एकंदरीत भारताच्या कृषी च्या आर्थिक विकासात महिलांची भूमिका फार महत्त्वाची आहे.

निष्कर्ष:

मानवी जीवनाला स्थैर्य प्राप्त करून देण्याचे कार्य शेती शोधाने केले आहे. शेतीचा शोध लागल्यामुळे मानवाची भटकंती जीवन संपले. स्त्रियांच्या निरीक्षण आणि परीक्षण या गुणामुळेच शेतीचा शोध लागला. शेतीचा शोध हा महिलांनीच लावला ही बाब विसरण्या चुकीचे आहे आज कृषी क्षेत्रात अनेक महिलांनी चांगली कामगिरी केली आहे. कृषीच्या आर्थिक विकासात महत्त्वपूर्ण भूमिका पार पाडत आहेत. कृषी क्षेत्राच्या विकासात त्यांचा मोलाचा वाटा आहे त्यामुळे त्यांना दुर्लक्षित ठेवणे चिंताजनक आहे.

संदर्भ ग्रंथ सूची:

- 1. डॉ .विजय कविमंडन -कृषी अर्थशास्त्र, मंगेश प्रकाशन, नागपुर 1998.
- 2. डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन-कृषी क्षेत्रातील गेल्या साठ वर्षातील उत्क्रांती, योजना, जानेवारी 2010 माहिती व प्रसारण मंत्रालय, दिल्ली.
- 3. भारताचे आर्थिक पाहणी भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, नवी दिल्ली.

JJAAR ≤

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Peer Reviewed Bi-Monthly Vol.2 Issue.15 May-June-2022

स्त्री-पुरुष वेतन अंतर

प्रोफेसर दीपक एम. भारती¹, साखरे ज्योती जालिंदर²

¹प्र . प्रचार्य, कला वाणिज्य विज्ञान महाविद्यालय किल्ले धारूर विद्यापीठ,औरंगाबाद ²संशोधक विद्यार्थी, डॉ . बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा

गोषवारा (Abstract):

पुरुष आणि स्त्री यांच्यामधील समान वेतन हा महत्वाचा पण दुर्लक्षित झालेला विषय आहे स्त्रियांना त्यांच्या पुरुष समकक्ष पेक्षा सरासरी आणि समान काम पूर्ण करण्यासाठी कमी मोबदला दिला जातो 1963 मध्ये कामाच्या ठिकाणी लिंगभेद करणे हे बेकायदेशीर करण्यात आले होते तरीही वेतनातील तफावत एक समाजमान्य झालेले दिसून येते ेतनातील तफावत अस्तित्वात नाही असा विश्वास दिला जातो मात्र या विषयावर स्त्रिया म्हणून आवाज उठविल्यास त्यांच्यावर टीका केली जाते.

प्रस्थापनाः

लिंग वेतनातील कथा व तिचा इतिहास: 1918 मध्ये महिला बस कंडक्टर ने पुरुष बस कंडक्टर च्या तुलनेत बऱ्यापैकी कमी वेतन मिळाले म्हणून संप केला होता. पुरुष व चालक त्यांच्या महिला सहकार्यां पेक्षा चार टक्के अधिक वेतन घेतात असे दिसून आले होते. ज्या स्त्रिया पुरुषांची नोकरी मिळवतात त्यांना अजूनही कुशल पुरुषांपेक्षा कमी वेतन मिळते. मेरी आर. कार्थर यांनी त्यांच्या लेखनात असे मत मांडले की, महिलांना पुरुषांपेक्षा कमी वेतन देण्याचे कोणतेही कारण नाही आणि ही प्रथा केवळ योग्यतेच्या आधारावर न्याय ठरवले जाऊ शकते. पुरुषांना मात्र कामाच्या ठिकाणी महिलांना कमी वेतन देणे लिंग वेतन अंतर हे आर्थिक वाढीवर नकारात्मक परिणाम करते. स्त्रियांना जास्त पगारातून वगळल्याने कामगार बाजारात त्यांची अधिक उपसस्थिती आणि अर्थव्यवस्थेतील त्यांचे योगदान कमी होते.

लिंग वेतन अंतराची कारणे:

वेतनातील तफावत दीर्घ काळ राहण्याची अनेक कारणे आहेत. चांगल्या पगाराच्या नोकरीमध्ये महिलांना वगळणे. महिलांपेक्षा पुरुशांकडे 6२ टक्के व्यावसायिक भूमिका असलेल्या दिसून येतात. अशा नोकऱ्यां ज्यामध्ये पुरुष गुणांची आवश्यकता असते अशा नोकऱ्या मध्ये स्त्रिया यशस्वीरित्या व्यवस्थापन करण्यास केवळ त्या स्त्रीलिंगी आहेत असे मानले जाते. म्हणजेच वरिष्ठ पदावरील जबाबदारी साठी सामान्यता जास्त तास आणि समर्पण आवश्यक असते विज्ञान आणि अभियांत्रिकी सह वैज्ञानिक आणि तांत्रिक क्षेत्रांमध्ये महिला अल्पसंख्याक असल्याने काम वेगळे केले जाते. स्त्रियांना सामान्यतः पुरुषी भूमिका शोधण्यापासून रोखणारे रूढीवादी विचार दूर करण्याची गरज आहे याचा परिणाम असा होतो की स्त्रिया कमी वेतनाच्या इिपमनेट नोकर्या स्वीकारतात ज्यांना समाजात कमी मूल्य दिले जाते. जरी समाजाने स्त्रीकरण केलेल्या या भूमिकेकडे महिलांच्या नैसर्गिक रित्या काळ असतो. नर्सिंग, अध्यापन, सौंदर्य इत्यादी नोकर्या करण्याकडे महिलांचा कल असतो. तर पुरुशांचा मर्दांच्या नोकर्या घेण्याकडे कल असतो. जसे बांधकाम, अभियांत्रिकी, व्यापार आधारित नोकऱ्या हे नंतर लैंगिक अंतर वेतनामध्ये प्रतिबिंबित होते.

भारतातील वेतन अंतर:

जगभरात स्त्री आणि पुरुष कर्मचाऱ्यांच्या पगारातील असमान वेतनाबद्दल चर्चा सुरू असतानाच भारतात पगाराच्या बाबतीत 27% लिंगभेद असल्याचे नव्या अहवालातून समोर आले आहे. देशात पुरुषाला दर तासाला सरासरी 288 .68 रुपये पगार मिळतो. तर महिलांना दर तासाला सरासरी २०७ रुपये पगार मिळत असल्याचे या अहवालात म्हटले आहे. मॉन्स्टर इंडिया ऑनलाईन करियर आणि रिक्रुटमेंट सोलुशन कंपनी मॉन्स्टर सॅलरी इंडेक्स प्रकाशित करत असते. कंपनीने नव्याने दिलेल्या माहितीनुसार IT क्षेत्रात दार तासाला सरासरी 337.3 रुपये इतका सर्वाधिक पगार देशात दिला जात आहे. मात्र आयटी क्षेत्रात पगाराच्या बाबतीत 34 टक्के लिंगभेद आहे. या क्षेत्रातील पुरुषांना सरासरी 360.9

प्रोफेसर दीपक एम. भारती, साखरे ज्योती जालिंदर

रुपये दर तासाला मिळतात तर महिलांना दर तासाला 239 . 60 रुपये मिळतात असे हा अहवाल सांगतो. क्षेत्रनिहाय विश्लेषण नुसार उत्पादन क्षेत्रात पगारातील लिंगभेद सर्वाधिक 34 टक्के आहे तर बीएफ ट्रान्सपोर्ट या क्षेत्रामध्ये हा भेद प्रत्येकी १७. ७ टक्के आहे. देशात पहिल्यांदाच टाइम्स यूथ सर्वेनुसार 15 ते 59 वयोगटातील केवळ 20.6 टक्के महिला या मोबदला घेऊन काम करतात. आणि त्याच वयोगटात मोबदला घेऊन काम करणाऱ्या पुरुषांची संख्या 70 टक्के असलेली दिसून येते. हि मोठी दरी स्त्री-पुरुषातील वेतनातील अंतर स्पष्ट करते. विशेषतः विनामोबदला काम करण्याचे प्रमाण महिलांमध्ये जास्त प्रमाणात दिसून येते. 15 ते 59 वयोगटातील महिलांच्या 94 टक्के प्रमाणाच्या तुलनेत केवळ 49 टक्के पुरुष विनामोबदला काम करतात असेही दिसून आले आहे. भारतीय महिला यांच्याकडे उपलब्ध वेळेच्या सरासरी 21 टक्के पेक्षा अधिक वेळ विनामोबदला कामात व्यथित करतात विशेषता देखभालीचे काम आणि साफसफाई स्वयंपाक यासारख्या घरातील कामांमध्ये त्यांचा वेळ जातो. या तुलनेत पुरुष केवळ पाच टक्के वेळ घरातील कामासाठी देतात. म्हणजेच विनामोबदला कामे ही महिलांची जबाबदारी असल्याचे पुरुषसत्ताक समाजाकडून लादण्यात आले असल्याने कुटुंबाकडूनही महिलांना या कामासाठी आर्थिक मोबदला दिला जात नाही. या प्रत्येकाला अदृश्य स्वरूपातील काम असे संबोधले जाते याचा त्यांना मोबदला मिळत नाही.

वेतनातील अंतर कमी करणे:

- 1. एक सर्वात महत्वाचा उपाय म्हणजे शिक्षण हे सर्वांसाठी असले पाहिजे स्त्री पुरुष समानतेचे शिक्षण लहानपणापासूनच होणे गरजेचे आहे.
- 2. महिलांना दर्जेदार नोकऱ्या आणि उच्चपद प्राप्त करण्यासाठी प्रोत्साहन देणे प्रतिभा लिंगावर अवलंबून नसते म्हणून कामगारांना त्यांच्या लिंगासाठी मुल्य दिले जाऊ शकत नाही तर ते त्यांच्या कामासाठी दिले गेले पाहिजे.
- 3. समान काम केल्याबद्दल त्यांना समान वेतन मिळावे कालबाह्य आणि अन्यायकारक अशा समाजात रुजलेल्या पद्धती बंद करणे गरजेचे आहे.

वेतनामध्ये तफावत आहे की नाही हे निश्चित करण्यासाठी समान नोकरी असलेल्या पुरुष स्त्रिया यांच्या यांच्या मोबदल्यामधील फरक आणि तासांची संख्या देखील लक्षात घेतली पाहिजे. यासाठी काही वस्तुनिष्ठ बाबींचा विचार करून सामान्य निर्देशांक काढला पाहिजे.

- 1. वेतन प्राप्त महिलांचे प्रमाण आणि एकूण काम केलेल्या तासांमध्ये त्यांचा वाटा हे दोन्ही विचारात घ्यावे.
- 2. कमी पगाराच्या नोकऱ्या मध्ये महिलांची संख्या विचारात घ्यावी.
- 3. प्रत्येक लिंगासाठी रोजगार दर व वेतन समान असावे.
- 4. वेतन हे वेगवेगळ्या एकान वर आधारित सरासरी काढावी म्हणजे प्रति तास दर आठवडा किंवा दर महिन्याला महिलांच्या वेतनाचे सर्व वेतनाच्या बिरजेश गृणोत्तर.

समारोप:

वेतनातील तफावत ही एक गंभीर समस्या आहे आणि ती दूर करणे आवश्यक आहे यासाठी शिक्षण व्यवसाय जागरुकता आणि सरकार आणि राजकीय पक्ष द्वारे नियामक कारवाई तसेच प्रत्येक कामासाठी न्याय आणि समान वातावरण प्राप्त करण्याचा प्रयत्न करणे गरजेचे आहे.

संदर्भ सूची:

- 1. https://www.yoair.com/blog/https//
- 2. https://www.gob.pe/mef
- 3. https://www.ambitionbox.com/salaries/maharashtra-times-salaries
- 4. https://www.orfonline.org/expert-speak/the-case-of-missing-women-in-indias-formal-economy/
- 5. https://mr.wikipedia.org/wiki

DJAAR -

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Peer Reviewed Bi-Monthly

Vol.2 Issue.15 May-June-2022

लिंगभाव आणि समाजीकरण

डॉ. गणेश तुकाराम मोकासरे

समाजशास्त्र विभाग, सुंदरराव सोळंके महाविद्यालय, माजलगाव

Email- gtmokasare@gmail.com

गोषवारा(Abstract):

लिंगभाव ही एक सामाजिक व सांस्कृतिक संकल्पना आहे. जीच्याव्दारे स्त्री-पुरषातील भेदभाव निर्देशीत होतो. तर समाजीकरण एक शिकण्याची प्रक्रीया आहे. ज्यामध्ये व्यक्ती सामाजिक जीवन जगण्याचे नियमणे व मूल्ये शिकत असतो. मानवी मूल जन्माला येते त्या वेळी ते एक प्राणी म्हणून जन्माला येते. त्याच्या काही गरजा, भावाना असतात. मानव जातीचा सदस्य म्हणून अनुवंशाने प्राप्त झालेली काही जैविक वैशिष्टयेही त्याला लाभलेली असतात. त्यामुळेच त्याचे समाजीकरण घडून येते. समाजीकरणामुळे व्यक्ती जैविक प्राण्यातून सामाजिक प्राण्यात रुपांतरीत होतो.

प्रस्तावना:

पुरषी वर्चस्वामुळे किंवा पुरूषप्रधान संस्कृतीमुळे भारतीय समाजातील व्यक्तीचे समाजिकरण हे पुरषाला अधिक महत्व देणारे तर, मुलीला कमी महत्व देणारे ठरते. लिंगभाव संकल्पनेतही याचाचा अभ्यास होतो की, स्त्री पुरूषात सामाजिक व सांस्कृतीक भेदभाव कसा केला जातो व तो समाजिकरणामुळे कसा दृढ होत जातो. सदरील पेपरमध्ये समाजीकरणामुळे एक व्यक्ती स्त्री किंवा पुरूष कशाप्रकारे बनत जातो याचा अढावा घेण्यात आलेला आहे.

उद्येश:

- 1. सामाजिकरण व लिंगभाव या संकल्पना जाणून घेणे.
- 2. सामाजिकरण व लिंगभाव या संकल्पनेतील परस्पर संबध जाणूण घेणे.

अध्ययन पध्दती:

सदरील पेपर तयार करतांना व्दितीय तथ्य संकलन पध्दितीच्या स्त्रोतांचा वापर करण्यात आला आहे. तसेच वर्णनात्मक स्वरुपात विषयाचे विश्लेषन करण्यात आले आहे. लिंगभाव सामाजीकरण ही एक व्यक्तीची शिकण्याची प्रक्रीया आहे, ज्यामध्ये व्यक्ती आपल्या लिंगानुसार समाजाला अपेक्षित असलेले वर्तन करत असतो. यालाच जेंडर रोल असेही म्हणतात. Simone De Bouvier यांच्यामते, 'One is not born, but rather becomes, a woman' स्त्री ही जन्माना येत नसते तर, तीला स्त्री बनवले जाते. भारतात पुरुष प्रधान संसकृतीमुळे, स्त्रीला दुय्यम वागणुक मिळते. हुंडा पध्दत, वंशाचा दिवा, परक्याचे धन यासर्व नकारात्मक मानसिकतेमुळे सर्वत्र स्त्रीही नकोशी झालेली आहे. त्यामुळे स्त्रीभ्रुण हत्या भारतात मोठया प्रमाणात होतात. म्हणजे स्त्री ही जन्मालाच नको, अशी मानसिकता कुटंबात असते. त्यामुळे कुटूंबातील लहान मुले व मुली याच्यामनावार त्या गोष्टी बिंबवल्या जातात व त्यामुळे त्याचे सामाजिकरण ही त्याच प्रमाणे होत जाते.

जन्मानंतर लगेच कुटूंबाकडून किंवा समाजाकडून मुलांवर लिंगभावात्मक संस्कार बिंबवायला सुरवात होते. भारतासारख्या देशात मुलगा झाला की, आनंद साजरा केला जातो तर, मुलगी झाली की शोक व्यक्त केला जातो. कुटुबात मुलगी जन्माला आली की, तीचे कान टोचले जातात, नाक टोचले जाते, तिला कपडे ही मुलींप्रमाणे घातली जाते. त्यामुळे एक व्यक्ती म्हणून जन्माला आलेली ती मुलगी आपण घरातील मुलापेक्षा काही तरी वेगळे आहोत, असे समजु लागते व त्यानुसार वर्तन करायला लागते. मुलाने शुरवीर, कर्तबगार असावे असे शिकतले जाते. तर मुलींनी प्रेमळे, लाजाळु असावे असे सांगीतले जाते. त्यामुळी मुलीही तशाचा बनत जातात. मुलींच्या शरीरात असे काहीच नसते, ज्यामुळे ती मुलासारखे कपडे घालु शकत नाही किंवा बाईक चालवु शकत नाही. मुलींनी बाहुलीशी खेळावे, तर मुलाने बॅट व बॉल खेळावा असे शिकवले जाते. पण मुलाने जर बाहुलीशी खेळले तर काहीच बिघडत नाही. तेही बाहुलीशी खेळू शकतात. पण तसे केल्यास

मुलाना बायल्या म्हणून हिणवले जाते. त्यामुळे त्याला बाहुली आवडत असली, तरी तो तीच्याशी खेळत नाही. स्वयंपाक करणे अपत्यांना जन्माला घालणे, मुलांचे संगोपन करणे हे मुलींनी किंवा स्त्रीयांनीच करावे, असे काही नैसर्गीक नियम नाहीत. पण कुटूंबात मात्र आजही स्वयंपाक केवळ स्त्रीलाच करावा लागतो. त्यामुळे स्त्री ही सुगरण असली पाहीजे असे शिकवले जाते किबहूना सुगरण हा तीचा एक दागिणाच आहे असे संबोधिले जाते. याउलट आज जर आपण पाहीले तर पुरुषही चांगल्या प्रकारे स्वयंपाक करु शकतात. कारण आज अनेक उच्च दर्जाच्या हॉटेलमध्ये कुक हे पुरुषच आहेत. कुटूंबात मात्र आजही पुरुषाने स्वयंपाक करणे बाईलपणाचे लक्षण मानले जाते. घरात जेवण करतांना पुरषांनी आगोदर जेवायचे नंतर उरलेला व थंड झालेला स्वयंपाक स्त्रीयांनी किंवा मुलींनी खावा असेच नियम आहेत. आत्तापर्यंच्या अभ्यासक्रमाच्या चित्रांमध्येही मुलगीही आईला स्वयंपाक घरात मदत करतांना दाखवली जात होती. तर मुलगा वडीला जवळ पेपर वाचतांना किंवा खेळताना दाखवला जात होता. यासारख्या समाजिकरणामुळे मुलींच्या भूमिका मुलांच्या भूमिका व कार्यक्षेत्र वेगळे होत जाते व त्यांच्यात भेदभाव वाढत जातो.

मुले शाळात जायायला लागली की, तेथेही भेदभाव होतो. श्रिमंत, नोकरदार, साक्षर लोक सुध्दा आपल्या मुलांना इंग्रजी शाळेत शिकवतात. तर मुलींना मात्र मराठी साध्या शाळेत टाकतात. त्यामुळेही मुलींच्या मनात दुय्यम भाव निर्माण होतो व मुले म्हणजे श्रेष्ठ व मुली म्हणजे किनष्ट अशी भावना होते. मासिकपाळी ही नैसर्गीक बाब आहे. पण तीला अपवित्र मानून काही दिवस बाजूला बसवले जाते, याउलट मात्र मुलांना असे काहीच नियम नसतात. मुलीवर अत्याचार झाला किंवा बलात्कार झाला की, तीचे चारीत्र खराब झाले असा ठपका ठेवला जातो, तर ज्या मुलांने अत्याचार केला त्याला मात्र असे काहीही नियम नसतात. त्याचे चारीत्र खराब होत नाही. म्हणजेच बलात्कार हा असा गुन्हा आहे, जीच्यावर अन्याय झाला तीलाच दोषी मानले जाते. तीच्याशी कोणी लग्न करायला तयार नसते निट बोलत नाही इत्यादी. अशा चुकीच्या सामाजिकरणमुळे स्त्रीला स्वत: बद्यल घृणा निर्माण होते.

भारतासारख्या पितृसत्ताक देशात वारसा हक्क हा मुलांनाच दिला जातो. मुलगीही परक्याचे धन म्हणून ओळखले जाते. त्यामुळे शेतीची मालकी, घराची मालकी ही मुलाच्याच नावाने केली जाते. त्यामुळे मुली हया आर्थिक दृष्टीने असुरक्षीत बनतात. त्यांचे बहुतांश कामे सुध्दा गैरमौद्रिक असतात. घरात पाहुणे आले तर मुलींनी समोर येवू नये, त्यांच्याशी बोलु नये. हे सर्व सुसंस्कृतपणाचे मानले जाते. पण यामुळे मुलीची गळचेपी होते, तीचा व्यक्तीमत्व विकास निट होत नाही. हे कोणी लक्षातच घेत नाही. पाश्च्यात्य देशातील "Personal is Politics" या म्हणीमुळे महिलांचे राजकीय अलिप्तता व शोषण बाहेर आले. भारतासारख्या देशातही राजकारण हे फक्त पुरषाचे क्षेत्र आहे अशी मानसिकता आहे. एवढेच नव्हेतर कुटूंबात तसे स्त्रीच्या मनावर बिंबवले जाते. म्हणजेच तसे समाजीकरण जाणिवपूर्वक केले जाते. यामुळेच महिलांची संख्या संसदेत नगन्य असते. 2019 च्या निवडणुकीत हा आकडा थोडा वाढून 76 वर गेला. मात्र आजही स्थानिक स्वराज्य संस्थेत महिला नावापरुत्याच पदावर असतात. त्याचे पतीच सगळे कामे पहातात. हे आता 21 व्या शतकात अपेक्षित नाही. याबाबी बदलणे गरजेचे आहे.

सारांश:

प्रत्येक समाजात नर व मादिला हळूहळू स्त्री व पुरुषात रुपांतरीत केले जाते. स्त्रीत्व व पुरुषत्व (बाईपण व पुरुषपण) हया वेगळ्या भिमका, वेगळे गुण, हक्क, जबाबदाऱ्या, अपेक्षा व वर्तनप्रकार यातून घडवले जाते. म्हणजेच समाजीकरणामुळे या सर्व बाबी घडून येतात. लैगिक (जैविक) फरक सोडल्यास स्त्री पुरुषात दुसरा कोणताही भेद नाही. मग आपणास स्त्री व पुरुषात भेदभाव करण्याचा अधिकार काय? यासर्वास जबाबदार आहेत चुकीचे समाजीकरण ज्यामुळे महिलांचे शोषण होते व त्यांना समाजात दुय्यम दर्जा प्राप्त होतो. याउलट मुलाना व मुलींना नैसगिकरीत्या त्याच्या आवडीने वाढू दिले तर त्याचा विकास शध्दस्वरुपात होईल व महिलाही पुरुषांच्या गुलामीतून मुक्त होतील.

संदर्भ ग्रंथ:

- 1. विकास का समाजशास्त्र, शिवबहाल सिंह, रावत पब्लीकेशन, जयपूर. 2010
- 2. लिंगभाव समजून घेतांना, कमला भसीन, अनु. श्रुती तांबे. लोकवाड:मय गृह, पुणे.2010
- 3. सामाजिक अनुसंधान, दोषी व जैन, रावत पब्लीकेशन, जयपूर. 2010
- 4. मुलभूत समाजशास्त्रीय संकल्पना, डॉ. सर्जेराव साळुखे, नरेंद्र प्रकाशन , पुणे. 1996
- 5. विकास का समाजशास्त्र वाणी प्रकाशन, दिल्ली.1996

DAAR C

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Peer Reviewed Bi-Monthly

Vol.2 Issue.15 May-June-2022

लैंगिक समाजीकरण और भारतीय समाज : एक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

Dr. Usha Kiran Tiwari

Assistant Professor & Head, Department of Sociology B. M. Ruia Girls' College Mumbai

Abstract:

लैंगिक समाजीकरण या लिंग पर आधारित समाजीकरण पूरे विश्व में पाए जाते हैं, अंतर सिर्फ इतना ही है इसकी मात्रा एवं प्रकार भिन्न - भिन्न देशों में भिन्न है। इस शोध पत्र में विशेष रूप से भारत में पाए जाने वाले लैंगिक समाजीकरण की चर्चा की गई है। प्रदत्तों के द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है।

Key Words - लैंगिक समाजीकरण, भारतीय समाज, पितृसत्तात्मकता

प्रस्तावना

समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो जन्म के साथ शुरू होती है और जीवन पर्यंत चलती रहती है। यह एक अनवरत प्रक्रिया है जिसकी गति कभी धीमी तो कभी तेज होती है, और अलग-अलग अभिकरणों के माध्यम से यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। क्योंकि समाजीकरण समाज में होता है, इसलिए समाज के नियमों, कानूनों, आदर्श, परंपराओं तथा विचारधाराओं इत्यादि का प्रभाव इस पर पड़ना स्वाभाविक ही है। यह माना जाता है कि सभ्यता के प्रारंभ में मात् सत्तात्मक समाज होते थे, क्योंकि माता की पहचान और माता का अधिकार बच्चे पर निर्विवाद रूप से होता है। तब सभ्यता के प्रारंभ में न तो विज्ञान ने इतनी तरक्की की थी, और न ही समाज के नियम और संस्थाएं इतने विकसित तथा सुसंगठित थे, कि पिता की पहचान और उसके अधिकार को सुनिश्चित किया जा सके। किंतु बाद में जैसे-जैसे स्त्रियों को गर्भकाल के समय विशेष देख - रेख की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी, वैसे - वैसे जंगलों में शिकार और जोखिम भरे कार्यों में पुरुषों के अधिकार को निश्चित किया जाने लगा। इससे भी अधिक बच्चे के जन्म के बाद स्तनपान तो माता का ही विशेष दायित्व था ही, बच्चे की भुख- प्यास एवं उसकी देख रेख के लिए माता को अधिक जिम्मेदार माना जाने लगा। कार्ल मार्क्स के शब्दों में कहें, तो "जैसे- जैसे उत्पादन के साधनों पर पुरुषों का अधिकार बढ़ता गया, उनकी सत्ता सुनिश्चित होती गई" और पितृसत्तात्मक समाज की शुरुआत हो गई। पितृसत्ता के आरंभ के साथ - साथ ही जाने अनजाने में स्त्रियों को पुरुषों से हीन बताने का कुचक्र प्रारंभ हो गया, जो किसी न किसी रूप में आज तक चला आ रहा है। यह पितृसत्तात्मक विचारधारा समाजीकरण में निश्चित रूप से अपना प्रमुख प्रभाव रखती है, जिसे हम लैंगिक समाजीकरण के नाम से जानते हैं। लैंगिक समाजीकरण का अर्थ है, लिंग के आधार पर बच्चे का समाजीकरण करना। अर्थात यदि लड़का है तो उसका समाजीकरण अलग प्रकार से किया जाता है, और यदि लड़की है तो उसका समाजीकरण अलग प्रकार से होता है। एक ही वय, वर्ग व सम्दाय के बच्चों का लिंग के आधार पर अलग-अलग प्रकार से समाजीकरण किया जाता है, जो कि अलग-अलग संस्थाओं के माध्यम से होता है। इनमें से कुछ प्रमुख संस्थाओं के लैंगिक समाजीकरण वैविध्य को उदाहरणों के माध्यम से बताने का प्रयास किया गया है।

लैंगिक समाजीकरण में परिवार की भूमिका:

लैंगिक समाजीकरण में परिवार की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बच्चे के जन्म के साथ ही लैंगिक समाजीकरण शुरू हो जाता है। लड़िकयों के लिए गुलाबी रंग के कपड़े लाए जाते हैं, और लड़कों के लिए अलग-अलग रंग के। समय के साथ इस प्रवृत्ति में आंशिक परिवर्तन आया है, लेकिन फिर भी गांव हो या शहर हर जगह यह प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है। सिर्फ कपड़े ही क्यों खिलौनों के मामले में भी लड़िकयों के लिए गुड़िया, किचन -सेट, डांसिंग डॉल जैसे खिलौने और लड़कों के लिए स्कूटर, कार, बंदूक आदि खिलौने लाये जाते हैं। यहाँ तक कि लड़िक अगर गुड़िया से खेलने लगे तो उन्हें कहा जाता है कि "लड़िक हो क्या जो गुड़िया से खेलोगे"।इस पर के व्यवहार के द्वारा लड़िकों के दिमाग में यह बात बिठा दी जाती है कि सिर्फ लड़िकयां

गुड़िया से खेलती हैं या सिर्फ लड़िकयां ही किचन के बर्तनों से खेलती हैं। लड़के तो स्कूटर, कार चलाते हैं या बंदूक चलाते हैं। बच्चों के बड़े होने के साथ-साथ घर के कामों में लड़िकयों को सहायता करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। जबिक लड़कों को बाहर के ज्यादा काम दिए जाते हैं। लड़िकों को अनेक बार यह ताने भी सुनने को मिलते हैं कि "लड़िकयों जैसे क्यों रोते हो या लड़िकयों जैसे क्या किचन में पड़े रहते हो"। इस प्रकार के व्यवहार प्रतिमान लड़िक -लड़िकयों के मस्तिष्क में बचपन से ही यह तथ्य मजबूत कर देते हैं कि लड़िकयों के काम अलग होते हैं और लड़िकों के अलग। लड़िकयां जहां गुड़ियों की शादी रचाती हैं, वही लड़िक बंदूक चलाते हैं।

जाहिर सी बात है कि इन प्रवृत्तियों में पहले की अपेक्षा काफी कमी आई है लेकिन फिर भी यह पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ है और होने की संभावना भी दिखाई नहीं देती। बचपन का यह लैंगिक समाजीकरण आगे चलकर उनके वैवाहिक जीवन तथा कार्यस्थल पर भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पुरुष अपनी पित्वयों से वही अपेक्षा करते हैं जो बचपन में उन्होंने अपने परिवार में लड़के और लड़िकयों के के लिए अपेक्षित व्यवहार सीखा है। कार्यस्थलों पर भी जब भोजन परोसने या चाय बनाने की बात आती है, तो कई बार महिलाएं, महिला होने के नाते स्वयं यह जिम्मेदारी उठा लेती हैं, अथवा पुरुष सहकर्मी उनसे वही अपेक्षा करते है। ये वही महिलाएं और पुरुष होते है जिन पर लैंगिक समाजीकरण का अत्यधिक प्रभाव होता है। यह अक्सर देखा गया है कि जिन परिवारों में लड़के - लड़िकयों के बीच में कम भेदभाव किया जाता है, या उन्हें लिंग के आधार पर समाजीकरण नहीं किया जाता वह पुरुष वैवाहिक जीवन में अपनी पित्नयों को बराबरी का दर्जा देते हैं तथा कार्यस्थल पर भी महिला सहकर्मियों के साथ उनका व्यवहार संतुलित होता है।

लैंगिक समाजीकरण में शिक्षण संस्थाओं की भूमिका:

लैंगिक समाजीकरण में शिक्षण संस्थाओं की अपनी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है। सर्वप्रथम बच्चे जब विद्यालय जाना प्रारंभ करते हैं तो वहां पर कई बार लड़कों के साथ अलग और लड़िकयों के साथ अलग प्रकार का व्यवहार किया जाता है। यह व्यवहार कभी सकारात्मक होता है तो कभी नकारात्मक, जो लिंग के आधार पर समाजीकरण में अपनी अहम भूमिका निभाता है। बहुत सारे विद्यालयों में आज भी कक्षा में लड़कों को अलग और लड़िकयों को अलग बेंच पर बैठाते हैं, जिससे उनके बीच में यह भावना आती है कि वे दोनों एक-दूसरे से काफी अलग है। विद्यालयों में बहुत बार लड़िकयों को दंड के नाम पर कक्षा की सफाई करना बताया जाता है, जबिक लड़िकों को मैदान के कई चक्कर लगाना। इससे लड़िकों के मन में अपने आप यह भावना आ जाती है कि वह बाहर के कामों के लिए हैं, जबिक लड़िकयों साफ-सफाई जैसे घर के कामों के लिए। कई बार विद्यालयों में लड़िकों को अधिक महत्व प्रदान किया जाता है, और कई बार विद्यालयों में लड़िकयों को दंड के मामले में रियायत बरती जाती है, जिससे लड़िकों के मन में यह भावना आती है कि लड़िकयों को बहुत ज्यादा सहूलियत मिलती है। यह व्यवहार दोनों के बीच में भेदभाव को बढ़ाने में अपना योगदान देता है। पाठ्य पुस्तकों में भी बहुत बार यह भेदभाव देखने को मिलता है। उदाहरण के लिए "राम विद्यालय जाता है" अथवा "रमा खाना बनाती है" । इस प्रकार के वाक्य बच्चों के मन में इस भावना को पुष्ट करते हैं कि पुरुष का काम बाहर जाना है जबिक स्त्री का काम घर में रहकर घर के कामों को पूरा करना है एक साथ एक विद्यालय में पढ़ते हुए भी इस प्रकार के अलग- अलग व्यवहार लिंग के आधार पर समाजीकरण को प्रोत्साहित करते हैं।

लैंगिक समाजीकरण में जनसंचार माध्यमों की भूमिका:

वर्तमान समय में जनसंचार माध्यमों का महत्व बहुत अधिक बढ़ गया है। विशेष रुप से सोशल मीडिया और इंटरनेट की सुलभता ने इसके महत्व को बढ़ाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। चाहे वे टीवी पर दिखाए जाने वाले विज्ञापन हों या सीरियल अथवा लाइव शो, हर जगह यह लिंग समाजीकरण हमें दिखाई देता है।यहां तक की जो कार्यक्रम यह सोचकर बनाए जाते हैं कि वे समानता को प्रोत्साहित कर रहे हैं, उसमें भी कहीं ना कहीं स्त्री की भूमिका को अलग प्रकार से दिखाया जाता है और यह सिद्ध कर दिया जाता है कि नारी की महत्ता घरेलू कार्यों को अच्छी तरह से संपूर्ण करने में ही है। सोशल मीडिया पर यत्र -तत्र सर्वत्र ज्ञान बिखरा पड़ा मिलता है। जिसमें सबसे अधिक चुटकुले स्त्रियों के ऊपर बनाए जाते

हैं। अगर पुरुषों के ऊपर चुटकुले बने भी, तो वे इस प्रकार से होते हैं कि वे स्त्रियों से किस प्रकार प्रताड़ित होते हैं। सबसे बड़ी विसंगित यह है कि इस तरह के व्यवहार को प्रचारित करने में स्त्रियों की ही बड़ी भूमिका होती है। क्योंकि ये स्त्रियां भी उसी समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जहां पर इस प्रकार की पितृसत्तात्मक सोच की जड़ें कहीं गहरे तक जमी हुई हैं। तो जाहिर सी बात है कि इन औरतों की सोच भी इसी पितृसत्तात्मक समाज की संरचना में ढली हुई होगी। बहुत कम औरतें और पुरुष होते हैं, जो इस सोच से बाहर निकलकर कुछ सोच पाते हैं और लैंगिक भेदभाव तथा लैंगिक समाजीकरण को हतोत्साहित करते है।

निष्कर्ष:

यदि हम प्राचीन भारतीय समाज से तुलना करें, तो वर्तमान समाज में पहले की अपेक्षा काफी परिवर्तन आया है। लिंग पर आधारित समाजीकरण, लैंगिक भूमिकाएं, लैंगिक भेदभाव पहले की अपेक्षा काफी कम हुए हैं, लेकिन फिर भी जितना परिवर्तन होना चाहिए था, जाहिर सी बात है कि उतना नहीं हुआ है।आवश्यकता इस बात की है कि लैंगिक समाजीकरण के स्थान पर मानवीय समाजीकरण को प्रोत्साहन दिया जाये, लैंगिक भेदभाव को दूर किया जाये तथा पुरुष और स्त्री के आधार पर नहीं, वरन मनुष्य होने के आधार पर लोगों की जाँच - परख की जाये। तभी जाकर कहीं पूर्ण समानता संभव होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

- 1. बघेल, डी. एस.(1999). भारतीय सामाजिक संस्थाएँ. विजय प्रकाशन मंदिर, वाराणसी
- 2. Maciver, R.M. & Page C.H.(1962). Society ; An Introductory Analysis. MacMilan
- 3. Tripathi, B.D. (1990). Society: Today and Tomorrow. Himalaya Publishing House, Bombay

DAAR C

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Vol.2 Issue.15 May-June-2022

Peer Reviewed Bi-Monthly

नैतिकता के दुष्टचक्र में बेहाल नारी

डॉ. अरविंद अंबादास घोडके

यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय अंबाजोगाई, सहाय्यक प्राध्यापक-हिंदी विभाग **Email**- ghodkearvind123@gmail.com

भूमिका:-

विश्व में आज भाषा और संस्कृति के बल पर मनुष्य सभी जीवो पर अपना वर्चस्व स्थापित कर चुका है। अपने पूर्वजों द्वारा प्राप्त ज्ञान का संग्रह कर अपने अनुभव को उसके साथ जोड़कर आने वाली पीढ़ी के लिए विचार, कला, स्थापत्य, कुशलता, चालाकी, परंपरा आदि का संवर्धन और संक्रमण करता है। मनुष्य द्वारा अपने जीवन में अपनाए गए इसी जीवन व्यवस्था को संस्कृति माना जा सकता है। आहार, निद्रा और मैथुन को सामाजिक नियमों में बांधकर उसका नियमन किया जाता है।मनुष्य के आहार, निद्रा और मैथुन से ऊपर उठकर समाज कल्याण हेतु बनाए गए नियम संस्कृति कहलाए जाते हैं।सामाजिक नियम समाज मान्य सामाजिक संस्कृति कहलाए जाती है। सामाजिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए नैतिक- अनैतिक, प्रतिष्ठित-अप्रतिष्ठित, आबरू-बेआबरू आदि प्रकार से व्यक्ति के व्यवहारों को परख कर उसे सही दिशा देने का कार्य किया जाता है। प्रतिष्ठित, नैतिक व्यक्ति समाज के लिए, सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। तथा अप्रतिष्ठित और अनैतिक और बेआबरू व्यक्ति समाज व्यवस्था के लिए घातक मानकर उसके ऊपर अनेक बंधन लादे जाते हैं। विश्व के लिए आज पथ मार्ग दर्शक बनी हुई भारतीय संस्कृति विश्व की दृष्टि में भले ही महान दिखाई देती हो, किंतु भारतीय नारी की दृष्टि में अन्यायी और एकांकी है। सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए बनाए गए नियम पुरुष वर्चस्वादी सामाजिक नियम तथा सामाजिक मान्यताए नारी विरोधी है। परंपरा से लेकर आज तक, आज के आधुनिक युग में भी भारतीय नारी को पुरुष-स्त्री द्वारा पुरुष प्रधान व्यवस्था में शोषण का अधिकारी बनाने के लिए मजबूर किया जाता है। स्त्री के प्रति एक अन्याय और पुरुष के प्रति अलग न्याय यह भारतीय सामाजिक व्यवस्था में अन्यायी समाज व्यवस्था दिखाई देता है।

शब्द:- नैतिक- अनैतिक, प्रतिष्ठित-अप्रतिष्ठित, आबरू-बेआबरू, संस्कृति, पुरुष वर्चस्वादी सामाजिक नियम, बैडमिंटन, मंगलसूत्र आदि।

उद्देश :-

कुँवारी धरती एकांकी में मोहन राकेश जी ने भारतीय समाज व्यवस्था के नारी विरोधी रूप का सजीव चित्रण किया है। भारतीय नारी को नैतिकता के कटघरे में खड़ा करते हुए पुरुष प्रधान मानसिकता उसका कैसे हर रूप में शोषण करती आई है इसका सजीव चित्रण मोहन राकेश जी ने रजनी के माध्यम से किया है। नैतिकता का लेबल लगाकर भारतीय नारी का शोषण हर समय धरना भारतीय समाज की धारणा बनी हुई है। मोहन राकेश द्वारा लिखित कुंवारी धरती इस एकांकी में भारतीय नारी का यथार्थ चित्रण किया गया है। एकांकी की नायिका रजनी आधुनिक युग की पढ़ी-लिखी सिशक्षित यवती है। रजनी मॉडर्न होने के साथ साथ अपने मां-बाप के संस्कारों को भलीभांति पहचानते हुए अपना जीवन यापन करती है। बैडमिंटन के खेल में तेजतर्रार रजनी विजय के साथ बैडमिंटन खेला करती थी। इस खेल के दौरान दोनों की आपस में पहचान होती है, पहचान दोस्ती में बदल जाती है। यह दोस्ती जीवन के अंत तक निभाने के वादा विजय रजनी के साथ करता है। रजनी विजय को पती के रूप में देखकर उसे अपना लेती है। यहां विजय से धोखा खाती है। भारतीय समाज व्यवस्था में नारी को बंधन में बांध कर रखने की भरसक कोशिश सदियों से की है। फिर उसे आभषण का लालच देकर हो उस पर जोर जबरदस्ती सामाजिक बंधन लादकर हो उसे नियंत्रण में रखने की कोशिश पुरुष मानसिकता करती आई है। वैवाहिक परुष पहचानने के लिए सामाजिक व्यवस्था ने ऐसा कोई प्रावधान नहीं बनाया है किंत विवाहित महिला को पहचानने के लिए सामाजिक व्यवस्था ने अनेक प्रावधान बना कर रखे हैं। विवाहित महिला के लिए गले में मंगलसूत्र पहनना समाज की महत्वपूर्ण धारणा और सामाजिक मान्यता रही है। किंतु भारतीय समाज में विवाह के बाद परुष के लिए मंगलसत्र जैसी कोई चीज बनाई है और न हीं परुष उसे पहनता और ना ही उसे पहनने के लिए समाज उस पर बंधन डालता है। मंगलसूत्र पहने के बाद महिला विवाहित है यह पहचाना जा सकता है किंत जिसके पास न कोई मंगलसूत्र हो अथवा विवाहित होने का कोई दूसरा निशान नहो उस पुरुष को विवाहित अथवा अविवाहित है ऐसा नहीं पहचाना जाता। कुंवारी धरती एकांकी का विजय रजनी को विवाहित होकर भी अविवाहित हूं ऐसा बताता है और रजनी का शोषण करता है। पढ़ी लिखी आधनिक विचारों वाली रजनी विजय के इन शब्द-जाल में फंस कर विजय के शब्दों में आकर फस जाती है। रजनी का शारीरिक शोषण करने के बाद विजय उसे धोखा देता है। विजय पहले से शादीश्दा था किंतु रजनी को अपनी हवस का शिकार बनाने के लिए उसे वह अविवाहित बताता है। रजनी विजय के धोखे में फंसकर पेट से ठहरती है। रजनी पेट में बढ़ने वाले इस बच्चे को जन्म देना चाहती है किंतु रजनी के मां-बाप समाज के डर से सामाजिक प्रतिष्ठा के डर से इस बच्चे को गिरा देना चाहते हैं। इस बच्चे को रजनी के पेट से गिरा कर रजनी की दूसरी शादी करवाना चाहते हैं। सामाजिक प्रतिष्ठा के डर में रजनी की मां रजनी को भला-बुरा कहती है तथा पिता उसे पेट में बढ़ने वाले बच्चों को गिराने के लिए मजबूर करते हैं। रजनी के पिता रामचरण रजनी से कहते हैं कि "तु साहस रख बेटे. सब कुछ ठीक हो जाएगा। तेरी चिंताए अपने ऊपर लेने के लिए मैं जो हूं।... मैं कल ही जाकर डॉ खोसला से बात करूंगा।.... डॉ खोसला तो अपने घर के से ही आदमी है।.... उनसे आगे किसी के कानों तक बात नहीं जाएगी।.... मैं उनके पांव पकड़ लंगा कि जैसे भी हो मेरी बच्ची को इस मुसीबत से छुटकारा दिलाओ। वह जरूर कोई ना कोई उपाय करके इस सब का निपटारा....।¹ सामाजिक प्रतिष्ठा के डर से रजनी के पिता रामचरण बेटी रजनी के विचारों को ठुकराकर रजनी का जबरदस्ती अबॉर्शन करवाना चाहते हैं। रजनी पेट में बढ़ने वाले बच्चों को जन्म देना चाहती थी किंतु भारतीय समाज में कंवारी माता के लिए कोई स्थान नहीं होता है। महाभारत की स्त्री पात्र कुंती से लेकर आज तक कोई भी कुमारी माता भारतीय समाज व्यवस्था में मान - सम्मान का स्थान नहीं पा सकी है। रजनी जैसे हजारों महिलाएं नारी विरोधी नैतिकता के दृष्टचक्र में अन्यायी भारतीय समाज व्यवस्था के शोषण का शिकार बनी हुई दिखाई देती है। अपने मां-बाप की सामाजिक प्रतिष्ठा तथा नैतिकता के डर से रजनी अपने पिता का गांव छोड़कर हरिद्वार चली आती है। जहां अपने पहचान का कोई नहीं है, वहां उसके प्रतिष्ठा को लेकर भी चर्चा नहीं होगी ऐसी धारणा रजनी की थी। किंतु भारतीय समाज व्यवस्था में कुंवारी माता को लेकर परिचित हो अथवा ना हो उसे सामाजिक शोषण का शिकार होना पड़ता है। समाज के डर से माता पिता की प्रतिष्ठा और नैतिकता के डर से काशी में आई हुई रजनी को भी दर-दर की ठोकरें खाकर भी सामाजिक शोषण का शिकार होना ही पड़ता है। विलोचन के घर में किराए पर रहने वाले रजनी को विलोचन की पत्नी राधिका अकेली रजनी और उसकी गर्भधारणा कर चुकी शारीरिक हालत को देखकर उसे समाज और राधिका भला-बुरा कहती है। राधिका को उसके आस पड़ोस वाले कुंवारी गर्भवती रजनी को अकेले देख कर भला बुरा कहने लगते हैं। राधिका कहती है कि,"कोई कहे कि विलोचन पंडा की सगी बहन है, और कहीं से पाप का पेट ले आई है। कोई कहे है कि विलोचन पंड्या ऐसा वैसा रोजगार करता है। अब हम रात दिन कथा कीर्तन में बैठने वाली किस-किस का मुंह पकड़े। किस किस को जवाब दे। दो सौ बात की एक बात तुमसे जहां बने तुम अपना प्रबंध कर लो। हमारे घर में अब तुम्हारा ठिकाना नहीं है। "2 सामाजिक प्रतिष्ठा की डर से काशी में जिस घर में ठहरी हुई थी रजनी उस घर का पुरुष विलोचन अपने बीवी के बातों में आकर रजनी को घर से बाहर निकाल देता है। भारतीय महिला का प्रतिनिधित्व करने वाली रजनी की समस्या यहीं पर समाप्त नहीं होती है। रजनी राधिका, विलोचन और चंपा से विनती करती है कि उसे ऐसी हालत में घर से बाहर न निकालो। फिर भी सामाजिक प्रतिष्ठा के डर से विलोचन और राधिका रजनी को घर से बाहर निकाल देती है। भारतीय समाज व्यवस्था में आज हजारों ऐसी कंवारी माताएं हैं। जो खोकली सामाजिक प्रतिष्ठा का शिकार बनी हुई है। नैतिकता के दंभ में, दिखावे में ऐसी हजारों लड़कियों का. महिलाओं का परुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था में शारीरिक और मानसिक शोषण किया जाता है। विजय द्वारा किए गए अत्याचार को भुलकर रजनी पेट में पढ़ने वाले बच्चे को जन्म देना चाहती है। फिर भी समाज रजनी को ही दोषी मानता है। काशी में डर-डर की ठोकरें खाकर रजनी बच्चे को जन्म देती है। उसे लगता है कि मैंने बच्चों को जन्म दिया है समाज इसे अपना लेगा। किंतु रजनी की यह धारणा पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था में बिल्कुल गलत है। लावारिस बच्चों को आज भी समाज एक बच्चा ना समझ कर उसे प्रतिष्ठा के रूप में सामाजिक कलंक लगता है। लावारिस बच्चे के लिए नारी को ही दोषी माना जाता है। रजनी के बच्चे को देखकर कीर्तन भजन करने वाली मंडली कहती है कि. "हिर हिर हिर न जाने कौन पातिकन गंगा तट पर अपना यह पातक फेक गई है। स्त्री- स्वर शिव शिव शिव! न जाने कैसी-कैसी हत्यारीन मांए होती है। अब संसार में पाप का भार इतना बढ़ रहा है कि अवश्य भगवान का ही अवतार होगा....।"3 कंवारी धरती एकांकी के अंत में भी डर-डर की ठोकरें खाकर नन्ही जान को जन्म देकर अपना कर्तव्य पुरा करने वाली रजनी को ही भारतीय पुरुष प्रधान समाज दोषी मानता है। तथा उसके इस बलिदान को अनदेखा कर सामाजिक प्रतिष्ठा के रूप में उसे भला-बुरा कहता है।

निष्कर्ष:-

मानवता की दृष्टि से देखा जाए तो इस एकांकी का पुरुष पात्र विजय अप्रतिष्ठित और अनैतिक और अन्याय है। किंतु भारतीय समाज व्यवस्था में विजय जैसे पुरुषों के लिए ऐसा कोई प्रावधान नहीं बनाया गया है, जो सामाजिक रूप में उसके ऊपर बंधन डाल सके। नारी दोषी हो अथवा न हो किंतु निसर्ग ने उसमें माता बनाने का जो वरदान दिया है वही वरदान उसके लिए आज शाप बना हुआ दिखाई देता है। विजय जैसे हजारों पुरुष आज भी महिलाओं पर अत्याचार करते हैं। नैतिकता और सामाजिक प्रतिष्ठा के डर से आज भी हजारों महिलाएं विजय जैसी अत्याचारी पुरुषों का अत्याचार चुपचाप सहन करने के लिए मजबूर दिखाई देती है। भारतीय समाज व्यवस्था विजय जैसे पुरुषों को अन्याय करने के लिए खुला छोड़ देती है। तथा रजनी जैसे अनेक भारतीय नारी को ही नैतिकता के कटघरे में खड़ा कर उसका शोषण करती हुई दिखाई देती है। भारतीय समाज व्यवस्था में आज भी नारी के प्रति एक न्याय और पुरुष के प्रति एक न्याए दिखाई देता है। स्त्री और पुरुष में समानता अगर दिखानी है तो जिस तरह शादी के बाद स्त्री के गले में मंगलसूत्र परिधान करने का प्रावधान भारतीय समाज व्यवस्था में बनाया गया है। वैसा ही प्रावधान पुरुषों के लिए भी बनाना जरूरी है। सदियों से लेकर आज तक पुरुष अपने इसी आजाद रूप का फायदा उठाकर स्त्री का शोषण करता आया है। कंवारी धरती एकांकी में विजय शादीशुदा होता है। किंतु उसके पास शादीशुदा होने के बाद भी शादीशुदा है या नहीं यह पहचानने का कोई प्रावधान इस समाज व्यवस्था ने नहीं बनाया। इसलिए वह रजनी को धोखा देने में कामयाब हो जाता है। इसलिए मुझे लगता है कि आधुनिकता का ढिंढोरा पीटने वाले इस भारतीय सामाजिक व्यवस्था में जिस तरह स्त्री के लिए मंगलसूत्र का प्रावधान किया गया है। वैसे ही पुरुषों के लिए भी ऐसा ही प्रावधान करना जरूरी है। नैतिकता की डर से रजनी की मां बाप रजनी को बच्चा गिराने के लिए मजबूर कर देते हैं। ऐसी एकांगी नैतिकता को दूर करते हुए स्त्री पुरुष समानतावादी उदार सामाजिक व्यवस्था बनाने की और उसे अपनाने की जरूरत आज के समाज के लिए जरूरी है।

संदर्भ

- 1. कंवारी धरती मोहन राकेश एकांकी नए पुराने- पृष्ठ 138
- 2. कंवारी धरती डॉ मोहन राकेश- एकांकी नए पुराने पृष्ठ 174
- 3. कंवारी धरती मोहन राकेश एकांकी नए पुराने पृष्ठ 180

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Vol.2 Issue.15 May-June-2022

Peer Reviewed Bi-Monthly

जागतिक लिंग असमानता

प्रोफेसर दिपक .एम . भारती¹ मैंद आनंद श्रीकृष्ण²

प्र . प्रचार्य, कला वाणिज्य विज्ञान महाविद्यालय किल्ले धारूर विद्यापीठ,औरंगाबाद
 ²संशोधक विद्यार्थी, डाॅ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा

गोषवारा(Abstract)

लिग लिंग असमानता हा जागतिक प्रश्न आहे . आणि तो सध्याच्या काळामध्ये सर्वात जास्त चर्चेचा विषय आहे .लिंग असमानता कमी करण्यासाठी जागतिक पातळीवर मोठ्या प्रमाणावर प्रयत्न होणे आवश्यक आहे . तसेच राष्ट्रीय पातळीवर देखील लिंग असमानता कमी करण्यासाठी प्रयत्न होणे आवश्यक आहे . त्यासाठी जागतिक पातळीवर तसेच राष्ट्रीय पातळीवर वेगवेगळ्या योजनांच्या माध्यमातून प्रयत्न होताना आपल्याला दिसून येतात.

किवर्ड: लिंग असमानता, लिंगभेद, लिंगभाव.

प्रस्तावना

कोणत्याही समाजामध्ये लिंगभावाचा आधारावर स्त्री आणि पुरुष असा भेदभाव केला जात असेल तर साधारणपणे आपण त्याला लिंगभेद असे म्हणत असतो . लिंगभेद या शब्दाचा वापर आपण सामाजिक आणि जैविक अशा दोन्ही अर्थाने आपण करीत असतो .विज्ञान च्या व्याख्येनुसार शारीरिक आणि मानसिक विभेदानुसार आपण स्त्री आणि पुरुष प्रकार आहेत .असे मानतो आणि सामाजिक दृष्ट्या आणि सांस्कृतिक दृष्ट्या आपण एकमेकांना सोबत तुलना करून आपण वेगवेगळ्या बंधनात अडकलेले आहे .

पुरुष असेल तर त्याची कामे आणि स्त्री असतील तर त्याची वेगळी कामे स्त्री-पुरुषांना वैवाहिक पारिवारिक सामाजिक आणि आर्थिक वेगवेगळ्या प्रकारचे अधिकार असतात . पुरुषांना स्त्रियांपेक्षा जास्त अधिकार असतात. यामुळेच आपल्याला लिंगभेद समजून येतो .धर्माच्या आधारावर देखील बऱ्याच प्रमाणात लिंगभेद असतो. त्यामध्ये धर्मापेक्षा सामाजिक चालीरीती मध्ये मोठ्या प्रमाणावर लिंगभेद आपल्याला दिसून येतोत्यामुळे आपल्याला समाज सामाजिक लिंगभेद पाहणे गरजेचे आहे.समाजामध्ये महिलांचे महत्व वाढवण्यासाठी सर्वांना संघटित स्वरूपात घेऊन चालावे लागेल. तेव्हाच सामाजिक मानसिक प्रवृत्ती मध्ये बदल होईल तेव्हाच सर्व महिलांना व पुरुषांना केंद्र सरकारच्या योजनांची आणि सहयोगाची आवश्यकता आहे . त्यामध्ये शिक्षण कौशल्य विकास तसेच सुरक्षा देण्यात आल्यानंतरच मोठ्या प्रमाणावर लैंगिक असमानता कमी होण्यास मदत होईल .लिंग असमानता कमी करण्यासाठी युनिसेफ आणि भारत देश यांनी 2018 ते 22 हा कार्यक्रम आयोजित केला आहे . यामध्ये लिंगभेद विरहित बनवण्यासाठी बाल संरक्षण सामाजिक नीती या कार्यक्रमाच्या आधारे लिंग असमानता कमी करण्यात येईल.

संशोधनाची उद्दिष्टे:

लिंगभेद संकल्पना अभ्यासणे.

लिंग भेदाची भूमिका अभ्यासणे.

लिंग भेद न करण्याचे महत्व अभ्यासणे.

संशोधनाची पद्धती:

सदरील विषयावर संशोधन करण्यासाठी द्वितीयक साधनांचा वापर करण्यात आला आहे .त्यामध्ये प्रकाशित ग्रंथ,मासिके ,वर्तमानपत्रे ,व संबंधित विषयाशी निगडीत साहित्याचा वापर करून माहितीचे संकलन केले.

लिंग असमानतेत भारताची:

वर्ड इकॉनोमिक फोरम (WEF) जागतिक स्त्री पुरुष समानता निर्देशांक (ग्लोबल जेंडर गॅप इंडेक्स)२०२२ यावर्षी २१ अंकांनी घसरले आहे . त्यामुळे या यादीत भारत १०८ व्या क्रमांकावर आहे .

देशातील अर्थव्यवस्थेमध्ये महिलांचे योगदान कमी असणे .आणि त्यांना पुरुषांच्या तुलनेत कमी मिळणारे वेतनही यामागील असल्याचे तरतूद करण्यात आली आहे .या यादीमध्ये भारताच्या शेजारील देश बांगलादेश ७४ स्थानी आहे तर चिन १०८ व्या स्थानी २००६ मध्ये वर्ल्ड इकॉनॉमिक फोरम ने जेंडर गॅप चे निकष निर्धारित करून जगभरातील देशांची यादी तयार करण्यात आली २००७ मध्ये जेव्हा पहिली यादी तयार झाली त्यावर्षी भारत ९८ व्या स्थानी होता. महिलांना मिळणाऱ्या संधी मध्ये भारताचे स्थान १३९ तर आरोग्य आणि मिळणाऱ्या सोयी सुविधा मध्ये १४१ वे आहे. या यादीमध्ये भारताचा क्रमवारीमध्ये दुसरं होण्यामागे राजकीय प्रतिनिधित्व वाढले. आरोग्य आणि शिक्षणातील घसरण ही प्रमुख कारणे आहेत. आइसलँड या यादीमध्ये पिहल्या स्थानी आहे. आईस लँड मध्ये शिक्षण कामाची जागा राजकीय प्रतिनिधित्व आदी क्षेत्रात अली १००: ८८ स्त्री-पुरुषांचे प्रमाण. मुलाला अधिकार. की त्याच्या क्षमतेनुसार त्याला त्याचे अधिकार मिळायला पाहिजेत. मग ती मुलगा असो वा मुलगी परंतु लैंगिक असमानता मोठ्या प्रमाणात असल्यामुळे ती त्या मुलाला योग्य प्रकारे मिळत नाही. भारत देशामध्ये घरातच नाही तर समाजामध्ये देखील मोठ्या प्रमाणावर असमानता असल्याचे आपल्याला दिसून येते. त्यामध्ये सिनेमा मीडिया पाठ्यपुस्तके यामध्ये देखील लिंग असमानता आपल्याला पाहायला मिळते. जगाच्या आकडेवारीनुसार मुलींची जन्म घेण्याची संख्या जास्त आणि त्यांचा विकास देखील जास्त प्रमाणात होतो. परंतु भारत देशामध्ये मुलींपेक्षा मुलांना जास्त महत्त्व दिले. त्यामुळे मुलींचे प्रमाण हे मुलांपेक्षा कमी असल्याचे दिसून येतेया सर्व गोष्टीमुळे आपल्याला दिसून येते की मुलींच्या मृत्यूचे प्रमाण देखील जास्त आहे. मुलां मुलींचा दर हा कमी असलेला दिसून येतो.

लिंग भेदा वर उपाय: -

२०१० मध्ये युरोपियन युनियनने लिंग समानतेला प्रोत्साहान देण्यासाठी आणि लैंगिक भावाशी लढण्यासाठी लिथुआनिया विल्नियस मध्ये " युरोपीयन इन्स्टिट्यूट फॉर जेंडर इक्वॅलीटी उघडली .२०१५ मध्ये त्यांनी लिज कृती योजना २०१६-२०२० प्रकाशित केलेलिंग समानता ग्रेट ब्रिटन आणि इतर अनेक युरोपियन देशातील राष्ट्रीय अभ्यासक्रमाचा भाग आहे .कजािकस्तान प्रजासत्ताकाने लिंग समानतेच्या प्रयत्नांच्या पुढील दशकाचे चार्ट तयार करण्यासाठी समानता २००६-२०२६ साठी एक धोरण तयार केली .वैयक्तिक सामाजिक आणि आरोग्य शिक्षण धार्मिक अभ्यास आणि भाषा अधिग्रहण अभ्यासक्रम लिंग समानतेच्या समस्यांना अतिशय गंभीर म्हणून संबोधतात चर्चा आणि समाजात त्याच्या प्रभावाचे विश्लेषण करण्यासाठी विषय सरकारने महिलावरील हिंसाचार संपवण्यात प्रधान्य दिले . आणि मुलींची तस्करी घरगुती हिंसा लैंगिक छळाचा सामना करण्यासाठी विशेष उपाययोजना सुरू केल्या आहेत . जानेवारी २०१५मध्ये बेटी बचाव बेटी पढाव हा उपक्रम मुलींना वाचवण्यासाठी आणि सक्षमीकरण करण्यासाठी सादर करण्यात आला. आणि या उपक्रमामुळे मोठ्या प्रमाणावर समाजावर प्रभाव पाडला.

लिंगभाव[.]

स्त्रिया आणि पुरुष यांच्या शरीर रचनेमध्ये फरक आहे. पण समाजामध्ये स्त्रिया आणि पुरुषांसोबत जे भेदभाव केले जातात त्या सर्वांचे कारण आपल्याला त्यांच्या शारीरिक फरक का मध्येच सापडते असे नाही लिंग हे शारीरिक आहे . तर लिंगभाव समाजात घडवला जातो . स्त्रिया आणि पुरुषांना विशिष्ट प्रकारे वाढवली जाते . यात स्त्रियांनी आणि पुरुषांनी कसे वागावे हे शिकवले जाते. ह्याच स्त्रीत्व आणि पुरुषत्व त्या कल्पना होय. ह्या कल्पना माणसांच्या वागणुकीवर खोलवर प्रभाव टाकत असतात. स्त्रीत्व आणि परुषत्व च्या रूढ कल्पना ह्या स्त्रिया आणि परुष यांना साचेबद्ध करून एकमेकांविरुद्ध उभे करतात. उदाहरणार्थ स्त्रीने सहनशील असावे .स्त्रीने नम्र असावे .व आज्ञाधारक असावे . सर्वांशी जुळवून घ्यावे. तशी स्त्रियांकडून अपेक्षा केली जाती तर याउलट पुरुषांना आक्रमक होण्याची मुभा असते . ह्या कल्पना स्त्री आणि पुरुषांवर अवास्तव बोजा टाकतात. उदाहरणार्थ पुरुषांना रडण्यासाठी नोकरीत नसते. एखादा पुरुष रडायला लागला की मुलींसारखा काय मुळुमुळु रडतोस असे हिणवले जाते .याउलट स्त्री जोरात बोलली, हसली तर तिच्याकडे पुरुषी म्हणून पाहिले जाते .घर काम चूल आणि मूल ही बाईची जबाबदारी तर घराबाहेर च्या जबाबदाऱ्या पुरुषांच्या मानल्या जातात. मुलींना लहानपणी खेळण्यासाठी बाहली, भातुकली तर मुलांना सायकल, कार ,बंदुक अशी खेळणी दिली जातात . प्रोढ वयात येणाऱ्या जबाबदारीचे प्रशिक्षण लहान वयात तच दिले जाते. स्त्री आणि पुरुषां मधला शारीरिक फरक हा प्रामुख्याने त्यांच्या पुनरुत्पादनाच्या भिन्न जबाबदाऱ्या आहेत. अशा तऱ्हेने लिंगभाव हा सामाजिक संस्कृतिक संरचना मधून घडवला जातो . उदाहरणार्थ जात ,धर्म , वय इत्यादी वेगळ्या संस्कृतीनुसार लिंगभाव बदलत असतो . पुरुष प्रधान समाजात लिंग भावाची जडणघडण पुरुषांना झुकते माप देणारी असते . आणि तुलनेने स्त्रियांना पक्ष पातला अधिक तोंड द्यावे लागते. पुरुष कुटुंब प्रमुख , पुरुषांकडे मालमत्तेची मालकी , लग्न झाल्यावर स्त्रियांना सासरी जाणे . पितृ वंशी व्यवस्था या सामाजिक प्रक्रिया आपली समाज व्यवस्था पुरुष प्रधान असल्याचे दर्शवते .अशा समाजात स्त्रियांचे स्थान द्य्यम बनते. त्याला एक गंभीर परिणाम म्हणजे स्त्रियांवर होणारा अत्याचार बहुतेकदा स्त्रियांना आपल्या दुय्यम स्थानामुळे अत्याचारांना तोंड द्यावे लागते . अधिक अधिक स्त्रिया सामाजिक क्षेत्रात अनेक जबाबदाऱ्या निभवत आहेत. आणि स्त्रियांवरील अत्याचाराच्या घटना देखील वाढत आहे. यासाठी सामाजिक प्रबोधन आणि स्त्रियांना माणस म्हणन आदर समाजात रुजवणे गरजेचे आहे. थोडक्यात असे म्हणता येईल की लिंगभाव म्हणजे स्त्रियांचा वेगळा विचार नव्हे तर लिंगभाव म्हणजे एखाद्या समाजातील स्त्री आणि पुरुषांची सापेक्ष सामाजिक स्थिती अर्थात आज पर्यंत प्रामुख्याने स्त्री आणि पुरुष या दोन लिंग भाव आस्थीचाच विचार झाला आहे.

जागतिक लिंगभाव असमानता निर्देशांक:

वर्ल्ड इकॉनॉमिक फोरम कडून सन २०१८ जागितक लिंग समानता निर्देशांक प्रसिद्ध झालेला आहे. १४९ देशातील महिलांची पुरुषांच्या तुलनेतील स्थिती या आधारे मांडली जाते . हा निर्देशांक मानवी हक्क स्त्रियांचे हक्क या गोष्टींचीतुलना करण्यासाठी उपयोगी येतो .हा निर्देशांक २००६ पासून वर्ल्ड इकॉनॉमिक फोरम कडून दर वर्षी प्रसिद्ध केला जातो . विविध क्षेत्रांमध्ये लिंगभाव सापेक्ष असमानता आणि तिच्या मध्ये होणारी प्रगती दरवर्षी मोजणे या हेतूने निर्देशांक तयार केला जातो . या निर्देशांकामध्ये ० ते १दरम्यान गुण देण्यात येतात २०१८ च्या निर्देशांका प्रमाणे महिला व पुरुषांच्या समानतेचे प्रमाण ६८ टक्के इतके आहे . राजकीय क्षेत्रातील असमानता सर्वात जास्त आहे . प्रमाण ७७% तर आर्थिक क्षेत्रातील असमानता ४२ टक्के इतकी आहे . शिक्षण क्षेत्रातील असमानता ४.४ तर आरोग्य क्षेत्रातील असमानता चार ४.६टक्के आहे

निष्कर्ष:

महिलांचा विविध क्षेत्रांमध्ये प्रभाव वाढला पाहिजे त्याच प्रमाणे संधी आणि सबलीकरणाचे प्रमाण वाढले पाहिजे. यासाठी जागतिक स्तरावर तसेच राष्ट्रीय स्तरावर प्रयत्न करणे गरजेचे आहे. समानता मिळवण्यासाठी जास्त वेगाने प्रयत्न करणे गरजेचे आहे. मुलींना शिक्षण कौशल्य विकास खेळ यामध्ये सहभागी करून समाजामध्ये त्यांना महत्त्व दिले जाऊ शकते. मुलींना सक्षम करून जसे की शिक्षण तसेच अनेमिया चे प्रमाण कमी करणे. बालविवाह बंद करणे. तसेच दीर्घकालीन कार्यक्रम यामध्ये लिंग आधारित पक्षपात कमी करणेयासाठी सर्वजण सामूहिक योगदान देऊ शकतात.

संदर्भ सूची:

- 1. Gender inequality social economic analysis and developing country case study May 2019 Clement A. Tisdell
- 2. Gender inequality: reference handbook annotated edition -david E Newton
- 3. Gender in equality in India -Mamta Malhotra Prabhat books
- 4. Landmark judgement on gender inequality: the political reality -Shreya Shri Singh October 7,2020
- 5. Gender equality and inclusive growth: economics policies to achieve sustainable development -dianc Elson and Anuradha Seth
- 6. MDPI sustainable development goals transitioning to gender equality -christa binswanger and Andrea Zimmermann published sep-2021

DAAR .

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Vol.2 Issue.15 May-June-2022

Peer Reviewed Bi-Monthly

परिवार मे लिंग और लैगिंक असमानता विषयक दृष्टिकोन

डॉ. गजानन खंडू सोनुने^१ डॉ. जयसिंग पोपटसिंग सिंगल⁵

^१समाजशास्त्र विभाग

^२समाजशास्त्र विभाग, श्री. भा. झा. महाविद्यालय, सोलापूर

प्रस्तावना:

परिवार एक ऐसी संस्था है की जिसे प्रत्येक व्यक्ति के पालन पोषण, उसकी उचित देखभाल और सामाजिकीकरण का केन्द्र समझा जाता है। इससे अपेक्षा की जाती है की वह सदस्यों को बाहरी दुनियासे बचाये एवं संरक्षित करती है। परन्त पितुसत्तात्मक पुष्ठभमि और जेंडर लेंस से गहराई से देखने पर पाया जाता है कि परिवार कोई समतावादी संस्था नहीं बल्कि पदसोपानिक संरचना है। इस शोधपत्र का यह उद्देश है की, कैसे परिवार शक्ति का और कछ सदस्यों जैसे कि महिलाओं, छोटी लडिकयों और गैर-मानक लैंगिकता (सेक्स्अलिटी) वाले सदस्यों की अधीनस्थता और शोषण का केन्द्र बन जाता है। यह जानना है। भारत में परिवार भारत मुख्यतः कृषिप्रधान देश है और यहाँ की पारिवारिक रचना प्रायः कृषि की आवश्यकताओं से प्रभावित है। समाज ऐसे व्यक्तियों का संग्रह है। जो कुछ संबधो अथवा व्यवहार की विधियो द्वारा संगठित है। तथा उन व्यक्तियों से भिन्न है। जो इस प्रकार संबधो द्वारा बंधे हुए नहीं है। अथवा जिनके व्यवहार उनमें भिन्न है। विश्व में की कुल निरक्षर जनसंख्या में दो तिहाई संख्या स्त्रिया की है। जहाँ लडिकयाँ स्कल, कॉलेज तकनीकी प्रशिक्षण क्षेत्रों में प्रवेश के लिए बाराबरी की हकदार है।वहाँ भी अनेक पाठ्यक्रम एवं पाठ्येत्तर गतिविधिया समान नहीं है। महिलाओं के प्रति परंपरांगत सामाजिक दुष्टिकोन ही इसके मूल कारक है। बच्चो की संख्या और एक से दूसरे बच्चे के बीच की अवधी का निर्धारण माता-पिता का मूल अधिकार है। पर विशेष रूप से यह माता का अधिकार माना जाना चाहिए। विश्व की जनसंख्या का समाधान नारी की स्वतंत्रता और आत्मनिर्भता में ही निद्रित है। लिंग के संदर्भ में हमें ऐसा लगता है की, लिंग एक सामाजिक शब्द है। जो सामाजिक परिभाषा से संबंधित है। जिसे समाज में पुरुषो और महिलाओं से संबंधित है। जिसे समाज में पुरुषों और महिलाओं के कार्यों और व्यवहारों को परिभाषित करता है। जबिक 'सेक्स' शब्द आदमी और औरत को पारिभाषित करता है। जो एक जैविक और शारिरीक घटना है। सामाजिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहुओं पर हम नजर डालते है तो लिंग पुरुष और महिलाओं के बीच शक्ती, अधिकार, कर्तत्व, कार्य के संबधी है। जहाँ पुरुष को महिला से श्रेष्ठ माना जाता है। इस तरह लिंग के आधार पर असमानता दिखाई देती है। जबकि 'सेक्स' मानव की प्राकृतिक या जैविक विशेषता है।

अध्ययन निबंध का उद्देश :-

- १. परिवार में लिंगसंबधी दृष्टिकोन का अध्ययन करना।
- २. परिवार में लिंग संबधी असमानता के पैल तथा परिवारीक भिन्नताओं को सामने लाना।

संशोधन पद्धती:-

प्रस्तुत शोधपत्र के विषय की सीमाऐ एवं समयाविध ध्यान में रखते हुऐ शोधपत्र के लिए संशोधन पद्धती के दुय्यम स्त्रोत का उपयोग किया है। इसमें पुस्तके, वर्तमानपत्रे, मासिके, वेबसाईट या इंटरनेट के आधार पर दुयय्म साधनों का उपयोग शोध निबंध के लिए किया है। गणात्मक शोध विधी का स्वीकार करके उन्हे पारिवारीक सम्बंध में समझने का प्रयास किया है।

सैध्दांतिक परिपेक्ष्य में परिवार और लैंगिकता

प्रकार्यवाद कहता है कि परिवार प्रत्येक समाज की आधारभूत संस्था का निर्माण करता है और इसकी प्रकृति सार्वभौमिक है। अपने विभिन्न प्रकार्यों के द्वारा परिवार समाज के कार्यात्मक पूर्व प्रयोजनों को पूरा करता है और समाज में सुव्यवस्था को बरकरार रखने में सहायता करता है। प्रकार्यवाद परिवार को उद्देशपूर्ती, अनुकूलन, एकीकरण तथा यथास्थिती के दृष्टीसे देखते है। पार्सन्स के अनुसार, परिवार, समाजीकरण का सबसे मूलभूत अभिकर्ता है और समाज का प्रत्येक सदस्य, परिवार में अपनी स्थिती के आधार पर अपनी भूमिका और स्थान को निश्चित कर पाता है। (पार्सन्स एण्ड बेल्स, १९५५) अपितु यही भूमिका के स्वीकारण एवं निर्वाहन को सुनिश्चित करता है।

नारीवादी परिपेक्ष्य से अगर हम परिवार को देखते है तो ऐसा समझ आता है कि महिलाओं के उपेक्षित पैलू तथा घरेलू क्षेत्र में महिलाओं के अनुभवों की पडताल करने पर ध्यान केन्द्रित करता है। उदारवादी नारीवाद यह बहस करता है कि महिला और पुरुष अपने जैविकी के कारण भिन्न नहीं है बल्कि समाजीकरण की लैंगिक - भूमिका आधारित प्रक्रिया के कारण भिन्न है। मार्क्सवादी नारीवादियों के अनुसार, परिवार में महिलाओं की अधीनस्थता की स्थित सम्पत्ति पर उनके अधिकार से सम्बधित है। तथा उग्र नारीवादी विद्वान आर्थिक शोषण की बजाय लैंगिक शोषण पर अधिक जोर देते है। वे महिलाओं के शोषण को मूलभूत रूप से उनके द्वारा परिवार में निभाए जाने वाली लैंगिक और प्रजनक भूमिका से जोडते है। नारीवादी विद्वानों ने परिवार के अन्दर

महिलाओं के रोजमर्रा के अनुभवों एवं उपलब्ध मानवशास्त्रीय - सामाजिक ज्ञान के बीच गहरी और विस्तृत खाई की ओर इशारा करते हुए अपना अध्ययन करते है।

परिवार मे लैंगिक भेदभाव और समानता :-

शुलामिथ फायरस्टोन इन्होनें "द डायलेक्टिक ऑफ सेक्स (१९७२)" मे यह बताते है कि पुरुष और महिला में असमानता का भौतिक आधार वास्तव में जैविक परिवार के अन्तर्गत तैयार किया जाता है। लिंग का अर्थ का आधार सामाजिक और सांस्कृतिक होता है। लिंग का निर्धारण जैवकीय लक्षणो पर होता है। लिंग शब्द का अर्थ हम सब कुछ इस तरह कहते है। पुरुष या स्त्री होना। कुछ शारीरिक लक्षणो के आधार पर समाज को पुरुष व स्त्री में बांटा जा सकता है। पुरुष और स्त्री के बीच जैविक अंतरो की पहचान करता है। जैसे महिलाए जन्म दे सकती है। और पुरुष शुक्राणु उपलब्ध कराते है। लिंग भूमिकाए सावैभौमिक है। यह कह सकते है की, बच्चे को जन्म देना पुरुष नहीं कर सकता, स्त्री करती है। यह इसिलिए कि जन्म देने के लिये स्त्री के पास में योनि है। और गर्भाशय है। जन्म से पहले इसी गर्भाशय में बच्चा विकिसत होता है। स्त्री बच्चो को जन्म देते है। पुरुष नहीं। इस अन्तर को योनि भेद के कारण आसानी से समझते है।

परिवार का अर्थ है कुछ संबंधित लोगो को समुह जो एक ही घर में रहते है। परिवार के रहस्य परिवार से जन्म, विवाह व गोद लिये जाने से संबंधित होते है। मेकाइवर और पेज कहते है कि, परिवार उस समूह को कहते है। जो यौन संबंधो पर आधारित है और जो इतना छोटा व स्थायी है। कि उसमें बच्चो की उत्पत्ति एव पालन- पोषण हो सके। आपने ही परिवार में जीवन की पहली नीव होती है। सर्वप्रथम परिवार से ही अपने बच्चो को शिक्षा अर्जित किया जाता रहा है। अर्थात जीवन मे परिवार ही पाठशाला का पहिला भाग होता है। हम जब सामान्यात लैगिंकता की बात करते है। तो सबसे पहिले परिवार से लिंग निधारीत कार्यों से लैंगिकता का परिचय होता है। नारीवादी अध्ययन दिखलाते है कि लडिकयों से अपेक्षा की जाती है कि वे दर्द और वंचन सहे, जो कुछ भी उन्हें दिया जाए उसे चपचाप खा लें और आत्म-बलिदान के गुणों को अर्जित करें। (दुबे, २००१) लिंग के आधार पर परिवार और समाज की भूमिका निभानी पड़ती रही है। परिवार से बच्चों को लिंग, भेद का पता चलता है। लिंग के आधार पर परिवार में आपने मॉ-बाप और भाई, बहिण, बुढे व्यक्तियों का सहयोग से समाज की दाएरेसे शिक्षा देती आर रही है। परिवार के माध्यम से ही लडके और लडिकयों के बीच विभेद, भिन्नता, शिक्षा, कार्य, बोलने, चालने, कपड़े, हसने का दरीका परिवार में सिखाया जाता रहा है। अर्थात लिंग के आधार पर लड़के और लड़िकयों के बीच दरार और अन्तर, भिन्नता पैदा परिवार और समाज ने बच्चों को शिक्षा देता आ रहा है। प्राथमिक कालो से समाज और परिवार के द्वारा लैगिंक विभेद को पैदा किया गया। और पुरुषओं महिला के कार्यो में बटवारा किया। सदियोसे आ रही पुरुष और महिला के बीच भिन्नता आज ही उसका प्रभाव परिवार और समाज व्यवस्था में दिखाई देता है। नवीन पारीगास बनवा परिवार को लिंग के संदर्भ के समानता का दृष्टिकोन आपनाना होगा। परिवार में रहने वाले सभी बच्चो समान शिक्षा प्रदान करना चाहिए। बच्चो के सपने, कुछ बनेका वादा उस सबका अंदाज करके अच्छे स्कूल में भेजना जरुरी है। इसमें यह मत देखना की लड़का है। या लड़की है। दोनो को शैक्षिक स्तर का दृष्टिकोन समान रखना जरुरी है। बेटियो को लडका जैसे आत्मनिर्भर बनकर। बेटी आत्मनिर्भर बनी तो वैवाहिक सम्बंन्ध को जोडना चाहिए। ताकि वो किसी पर निर्भर रहने उसे जीवन यापन ना करे। परिवर के बेटो के समान बेटिया भी अपने जीवन में अपने अच्छे या ब्रे का फैसला खुदकर सके। परिवार की अपनी सम्पती में बेटी और बेटा को समान अधिकार और हिस्सा देना चाहिए। परिवार का कर्तव्य है की, वह बेटो और बेटियों को यह समझाए कि दोनो परिवार में एक समान है। जब हम समानता की परिवार में बात करते है। तो परिवार का संतुलन अच्छा होना चाहिए। जब परिवार ही लैगिंक भेदभाव का बडा स्त्रोत है। लडको और लडिकयो को विभेदक प्रकार की भूमिकाओं के लिए समाजीकृत परिवार में किया जाता है। परिवार में जो भेदभाव होता है। उसका योग्यता पर नहीं बल्की लिंग पर किया जाता रहा है। उसके कारण लड़के और लड़की के पारिवारीक कार्य भिन्न-भिन्न होते है। लैगिंक असमानता परिवार में ही पैदा या मौजूद होते है।

लिंग एवं लैगिक असमानता :-

लिंग के विपरीत जेंडर की निर्मिती सामाजिक रूप से होती है। जब शिशु जन्म लेता है। तो किस प्रकार यह सामाजिक निर्मिति घटित होती है। परिवार, समाज और अन्य सामाजिक - आर्थिक प्रथाओं जैसी सामाजिक संरचनाएँ शिशु के सेक्स के आधार पर विभेदों को निर्धारित करती है। इन विभेदों में कपडे पहनाना, व्यवहार, सामाजिक भूमिका, स्थिती, पहचान और जिम्मेदारी शामिल होते है। इस प्रकार जेंडर की निर्मिति की जाती है और उसका व्यवहार किया जाता है। यही समाजशास्त्रीय भाषा में समाजीकीकरण के रूप संकल्पणीकृत है।

लिंग एक शारीरिक सरंचना है। जबकी जेंडर एक सामाजिक सरंचना है। लिंग स्थायी होता है और आसानी से नहीं बदला जा सकता है। जेंडर परिवर्तनशील होता है और समय समय पर एंव एक संस्कृती से। दूसरे संस्कृती मे परिवर्तीत होता रहता है। लिंग श्रेणीबद्ध नहीं होता। जेंडर श्रेणीबद्ध होता है। लिंग (महिला/ पुरुष) जीवन के जैविक तथ्य को चिन्हत करता है। जेंडर उस भुमिका को चिन्हित करता है। जिससे व्यक्ति (महिला/ पुरुष) पहचाना जाता है। और लैंगिक असमानता के सांकेतिक लक्षण इस प्रकार। अत्यांधिक मृत्यू दर लिंगानुपात में गिरावट। स्वास्थ्य सेवांओ को पाने मे असमानता। साक्षरता, शिक्षा, प्रशिक्षण, रोजगार

में बडी असमानता बढता जन्मदर। लैंगिक असमानता के कारणों मे पितृसत्ताक समाज। सामाजिक परंपराए, अनुचित सामाजिकरण, साक्षरता, धार्मिक अंधविश्वास, अपर्याप्त कानून, आर्थिक निर्भरता, जागरुकता का अभाव आदी।

विद्वानों ने परिवार की इज्जत के नाम पर महिलाओं पर लादी जाने वाली हिंसा पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है और दिखलाया है कि किस तरह परिवार की इज्जत की तार्किकता महिलाओं को अधीनस्थ बना देती है और पुरुषों को महिलाओं के स्वत्व (Self) और यौनिकता पर नियंत्रण करने की शक्ति प्रदान कर देता है। (दास, १९९६)

परिवार के मुख्य तत्वे :-

भारत में परिवार को एक संस्था के रुप मे देखा जाता है। लेकिन यह भी सही है कि सभी समाजों में परिवार एक जैसे नही है। कही संयुक्त परिवार है तो कही विभक्त परिवार, एकल परिवर और बहुपत्नी, बहुपति, पितृवंशीय, मातृवंशीय परिवार भारत में मौजूद है। इस विभिन्नता के होते हुए भी बहुसंख्याक परिवार एक पती-पत्नी परिवार है।

- १. **यौन सम्बन्ध :** सभी समाजों मे परिवार में यौन संबंध अनिवार्य रुप से पाये जाते है।
- २. **प्रजनन**:- परिवार एक बहुत बड़ा लक्षण सन्तानोत्पती है। यदि प्रजनन न किया जाये समाज की निरन्तरतता समाप्त होगी।
- **३. आर्थिक बंधनः-** परिवार के सदस्यों को एक सत्र में बांधे रखने का काम आर्थिक बंधन करते है।
- ४. **लालन पालन** :- परिवार ही बच्चो का पालन-पोषण करता है। और बच्चों शिक्षा -दिक्षा देता है।और बच्चो की शादी ब्याह करवाता है और आर्थिक स्वावलंबन प्रदान करता है।
- ५**. परिवार का आकार**:- सामान्यतथा एक परिवार में पति-पत्नि के अतिरिक्त बच्चे होते है। कभी कभी इन सदस्यों के अतिरिक्त परिवार में अन्य सदस्य भी होते होते ऐसे परिवारों को संयुक्त परिवार कहा जाता है।

लिंग असमानता :-

भारत मे आज भी पुरुषों के लिंगानुपात से नहीं है महिलाए। आज लिंग के आधार पर समस्या उत्पत्ती हुई है। परिवारों में लड़के की संख्या अधिक है। और लड़कीयों की संख्या कम होती जा रही है। इस कारण अनेक परिवरों में लड़के की शादी लड़की ना मिलने पे शादी रुक गई है। लड़के शादी करने के लिए तयार है। मगर लड़कीया नहीं मिल पा रही है। परिवार निर्माण के लिए लड़के और लड़कीयों की शादी होने पर परिवार बनता है। आज स्थिती असी बनी हैक की, लड़कीयों की कमीयों के कारण बहुतांश जाती-जमाती में लड़कों की शादी नहीं हो रही है। भारत में यह एक बोहोत निंदा का विषय बनता जा रहा है। हर साल लड़िकयों की, कमी होती गयी थी। शादी के लिए लड़की नहीं मिलगी और लड़के कुवारे ही रह जांएगे। भारत में लड़के की चाह और छोटे परिवार की सोच ने लड़िकयां की संख्या में भारी गिरावट दिखाई दे रही है। ०.६ साल की उम्र में हर एक हजार लड़कों पर लड़िकयों की संख्या

वर्ष	एक हजार लडको पर लडकियो की संख्या
१९८१	९३४
१९९१	९४५
२००१	<i>९२७</i>
२०११	९१४

भारत में लिंगानुपात में दिनो दिन गिरावट होती जा रही है। उसका मुख्य वजह भ्रूण हत्या को बना जा रहा है। भारतीय समाजोमें आज भी बेटियो को बोझ मानते है। पिरवार में कुल का नाम पिठ दर पिठ चलाने के लिए बेटा चाहिए। पुत्र के लिए पिरवार का दबाव, साक्षरता कि कमी और लडिक की प्रित भेदभाव, समाज में प्रचलित दहेज प्रथा और लिंग की जांच हे सब लिंगानुपात के लिए वजह सामने आते रहे है। पिछले कुछ सालो में भारत में रहनेवाले हर समाज के लोगों की मानिसकता लिंग के संदर्भ में बदल गई। लेकिन इसकी गती बोहोत धिमी जल रही है। भारत में रहनेवाले लोगो की लाइफ स्टाइल भले ही बदल गई हो। लेकिन बेटियो। लडिकीयों के प्रित सोच नहीं बदली है। यही कारण है की, लिंगानुपात में बोहोत बढा आज ही गैप दिखाई देता है। भारत में बेटियों को दुनिया में आने से पहले लिंग जांच और भ्रूण हत्या के वजह कम होती जा रही है। यह बोहोत बढा चिंता का विषय बनता जहा रहा है। और सरकारे इनपर नजर अंदाज करते जा रहे। भ्रुण की जांच करना कानुन बना गया। भ्रुणहत्या या जांच करने पर कडी संजाओं का प्रावधान है। लेकिन ज्यादातर उसे कानून के मामले दरज नहीं होते। यह कारण है की जो कानून का उल्लघन करते है। मगर पकडे नहीं जाते। और वी चोरी - चुपके भ्रुण हत्या करते है। इसके परिणाम आज देख रहे है। की लडिक की शादी के लिए लडिकया नहीं मिल पा रही है।

निष्कर्ष :-

भारत में परिवार को देखेंगे तो इसमें पुरुषो की तुलना में महिलाओं के साथ समान व्यवहार नही होता। भारत के परिवारोमे पिता परिवार का मुख्य मुखिया मानते है। और महिलाए रसोई का कार्य करती है। और उसके साथ बच्चो का पालन पोषण और अन्य काम भी महिलाओं को करना पडता है। महिला नोकरी के लिए घर के बाहर जाते है। मगर घर पर आनेपर रसोंई कार्य उसके कर्तव्य का काम करना पडता है। पितृसत्ताक परिवारों मे उत्तराधिकारी पुरुषों के वंश से आगे चलता है। और मिहलाओं को अपने पिता के संम्पत्ती में समान भाग नहीं मिलता। लैंगिक समानता लाने का मतलब एक ऐसे समाज बनाना है। जहाँ पुरुष और मिहला के बीच में जो भी असमानता के स्वरुप है उन्हें हटा दिया जाये। लैंगिक भेदभाव से मुक्त मिलने से। पुरुष और मिहलाओं स्वतंत्रता खरे रुप से मिलेगी। अपने परिवार या अपने खुदका दृष्टिकोन बदलना होगा। तब पुरुष और मिहलाओं को समान नजरेसे देखना होगा। तभी परिवार में समान वागणूक बच्चों को मिलेगी। और लडका एंव लडिकयों में कोई भेदभाव नहीं होगा।

विश्व की जनसंख्या का समाधान नारी की स्वतंत्रता और आत्मिनर्भता में ही निद्रित ममत्व (mothering) का सारा भार महिलाओं के कंधों पर ही डाल दिया जाता है, जिसके कारण वे अपनी सम्पूर्ण मानवीय क्षमता को कार्यरूप देने से वंचित, उपेक्षित रह जाती हैं। भारत में एक संस्था के रूप में मातृत्व सिदयों पुराने जेंडर पूर्वाग्रहों से किस प्रकार उलझा हुआ है तो भी, यह भी सत्य है कि समकालीन समय के दौरान हमें तमाम सकारात्मक परिवर्तन भी दिखने शुरू हुए हैं, जैसे बच्चों के अभिभावक के रूप में अकेले पिताओं को मिलने वाले पैतृक अवकाश। शहरी और ग्रामीण महिलाओं नेहासिल करना शुरू किया है, वे इस योग्य बन रही हैं कि वे महिलाओं और माताओं के रूप में अधिक स्वतन्त्रता के साथ अपनी वैयक्तिक नियति का निर्धारण स्वयं कर सकें। परिवार और समाज की पारम्परिक सरचनाएँ विवाह और मातृत्व के सम्बन्ध में, महिलाओं द्वारा चुने जाने वाले विकल्पों को अभी भी सीमित करती हैं। वैयक्तिक स्वतन्त्रता को महिलाएँ शैक्षिक और व्यावसायिक अवसरों के जिरये हासिल कर रही हैं। जेंडर सम्बन्धों ने जेंडरों के बीच एक अधिक न्यायसम्मत सन्तुलन को प्रतिबिम्बित करना शुरू कर दिया है। बालिका शिशु के पक्ष में सार्वजिनक के साथ-साथ निजी नीतियों का निर्माण, लड़िकयों की शिक्षा-दीक्षा, महिलाओं के लिए रोजगार के अवसरों में वृद्धि, मातृत्व की और बच्चों की देखरेख की उन्तत व्यवस्थाओं का विकासय अधिक मातृत्व अवकाश के साथ-साथ अधिक पितृत्व अवकाश दिए जाने के प्रावधान महिलाओं के लिए एक अधिक सुरक्षित वातावरण निर्मित करने में मदद की है।

संदर्भ :-

- १. आहुजा, राम. (२०००). 'भारतीय समाज', नई दिल्ली : रावत पब्लिकेशन.
- २. दोषी, एस. एल. (१९६७). 'भारतीय समाज व संस्कृती', नई दिल्ली: विवेक प्रकाशन
- ३. अग्रवाल, जी. के. (१९६०). 'भारत में ग्रामीण एंव नगरीय समाज', आगराः साहित्य भवन पब्लिकशन्स
- y. Singh, K. K. Gender Discrimination Vaninasi Mahatama Gandhi Kasi Vidyapeeth
- ५. भारद्वाज, निधि. (२०१२). 'महिला सशक्तीकरण', जयपूरः सागर पब्लिशर्स.
- ६. आहजा, राम. (२०१८) 'सामाजिक समस्याए' नई दिल्ली रावत पब्लिकेशन्स.
- ७. दाह, मा. ओ. पी. 'ग्रामीण समाजशास्त्र', भोपाल: मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी.
- ८. भारत की जनगणना २०११.

MAR .

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Vol.2 Issue.15 May-June-2022

Peer Reviewed Bi-Monthly

आदिवासी महिलाएं की परिवारिक भूमिका विषयक अध्ययन

डॉ. गजानन खंडू सोनुने^१ डॉ.राजू शेषराव पोपळघट^१

प्रास्ताविक

भारत में अनेक आदिवासी समुह निवास करते हैं। आदिवासी समूह अपनी- अपनी समूह की संस्कृती एंव परंपराएँ के अनुसार जीवन बीता रहे है। महाराष्ट्र राज्य में भिल्ल, गोंड, कोळी, ठाकूर, वारली, मन्नेवारलू, कोकणी आदी, आदिवासी समुदाय निवास करते है। महाराष्ट्र राज्य में आदिवासी समुदाय अलग-अलग क्षेत्र में फेली हुई है। आदिवासी समुदाय पर विचार करना हो तो उसकी परिवारिक महिलाए के संदर्भ विचार करना आज जरुरी लगता है। क्योंकी आदिवासी समुदाय में महिलाए की सामाजिक- आर्थिक स्थिती और उनकी परिवार में भूमिका संबधी विचार करना आज जरुरी लग रहा है। प्रत्येक समाज एंव आदिवासी समुदाय कैसे जीवन बीता रही है। प्रत्येक समाज एवं आदिवासी समुदाय में परिवार महत्त्वपूर्ण संस्था है। और परिवार में महिलाए अपनी- अपनी भूमिका निभाती आ रही है। हर परिवार में मां, बीबी, लडकी, सांस, बहु और रिश्ते में लगनी वाली महिलाए अपनी- अपनी स्थान के आधार पर भूमिका निभाती है। क्योंकी आदिवासी महिलाए अपने समुदाय में पारिवारिक सरंचना में एक अभिन्न अंग होती है। आदिवासी समुदायों का जीवन वनो और वन्य जीवन के साथ घनिष्ठत से जुडा हुआ है। जंगल, पहाडी और पठारी क्षेत्रो में आदिवासी निवास एंव उनके रहने का स्थान दिखाई देते है। और जंगल में रहकर जंगल में मिलने वाली साधनो पर उनकी आजीविका जलती है। और फुल, पेड, पौधे, फल, लकडी, कंदमुळे और पशुओं की उपासना करनेवाले आदिवासी समूह के लोग अपने धर्म, जादू-टोना आदि के लिए जंगल पर निर्भर है।

अध्ययन निबंध का उद्देश :-

आदिवासी महिलाए की परिवारिक भूमिका को समझना।

अनुसंधान :-

प्रस्तुत अध्ययन समाजशास्त्रीय दृष्टिकोन से किया है। समाजशास्त्र की अध्ययन अनुसंधान के अनुसार, अध्ययन अनुसंधान के अनुसार, अध्ययन अनुसंधान के अंतर्गत आनेवाली दुय्यम स्त्रोत के माध्यम अपनाकर पूरा किया है। इसमें पुस्तके वर्तमानपत्रे और वेबसाईट का आधार लेकर शोध निंबध पुरा किया।

आदिवासी का अर्थ और परिभाषा:-

भारत के विभिन्न क्षेत्रो में आदिवासी समूह निवास करते है। आज भी सभ्य समाजो से अलग जंगल, पहाडो, नदी के पास, पठारी क्षेत्रो में, गाव के बाहर, कुछ गावो में भी उनके कबीले है। आदिवासी समुदाय को आदिवासी, आदिम, जनजाति, वन्यजाती, जंगल में रहनेवाले लोग आदि नामों से जाना जाता है। आदिवासी समुदाय की जीवन शैली और संस्कृती, रिती-रिवाज और पंरपराए अन्य जाती से भिन्न होती है। आदिवासी लोगो में भी अपनी-अपनी संस्कृती और परपराएं, विश्वास, भाषा, और स्थान अलग-अलग होते है। राल्फ लिंटन के अनुसार, सरलतम रुप में आदिवासी ऐसी टोलियो का एक समूह है। जिसका एक सानिध्य वाले भूखण्डो पर अधिकार हो और जिनमें एकता की भावना, संस्कृती में गहन सामान्यतः निरंतर संपर्क तथा कतिपथ सामुदायिक हितो से समानता से उत्पन्न हुई हो। एक आदिवासी जमाती समान नाम धारण करने वाले परिवारो का संकलन है। जो समान बोली बोलती है। एक क्षेत्र से संबधित होते है। एंव सामान्यत ये समुह अंतर्विवाही होते है। एल्विन ने कहा, कि आदिवासी समुदाय वस्तुतः प्रकृती प्रेमी है। और हिन्दु जातियो से उनका कोई लेना देना नही है। जो अलग एंव स्वंतत्र है। निर्मल कुमार बोस ने कहा, आदिवासी वास्तव में इस देश की मूल निवासी है। परिवर्तन के दौरान में ये मूल निवासी हिंदू जातियो में एकीकृत हो रहे है। गिहार रंजन का मानना है, कि आदिवासी जमातीया इस देश की उपज है। वे देशी है, आदिवासी है। और आर्यो के आने से पहले ये लोग देश के विभन्न भागो और नदी, जंगल, पहाडी घाटियो में रह रहे थे। वेरियर- एल्विन ने आदिवासी जमातीया की समस्याओ के मुल कारणो के रुप में बाहरी सम्पर्क और आधुनिक संचार को बताया है।

आदिवासी महिलाएं की परिवारिक भूमिका:-

आदिवासी समुदाय में महिलाओं को पुरुष के बराबर दर्जा जाता रहा है। इस कारण आदिवासी महिलाए अपने परिवार में सक्रीय भूमिका निभाती है। आदिवासी महिलाए के अधिकार पुरुष से कम होने पर भी परिवार में महिलाए की स्थिती िकसी भी प्रकार से नीची नहीं होती। क्योंकी आदिवासी महिलाए अपने परिवार के अंतर अधिक कर्तव्यो पर जोर देती है। इस कारण आदिवासी महिलाए अपने परिवार और रिश्ते दारों में और पास- पड़ोस रहनेवाले नातेदारों में अपनी भूमिका जिम्मेदारी के साथ बखुबी से निभाती आ रही है। महात्मा गांधी कहते थे, कि किसी समाज के विकास की प्रकृति का निर्धारण समाज में महिलाओं की स्थिती या उन्हें दिए जाने वाले व्यवहार से किया जा सकता है। आदिवासी महिलाएँ अपने परिवार के पुरुष की तुलना में मेहनती होती है। और वे अपनी पारिवारिक आय बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। और किसी भी काम में पुरुष से पिछे नहीं होती है। बल्क पुरुष से अधिक काम करती है। एक मुहावरा प्रचलित है कि, बिना पत्नी का आदमी, बिना सिर का धड़ है।

सभ्य समाजों मे जहाँ लिंग के आधार पर सामाजिक, आर्थिक स्तर पर भेद किया जाता है। जबकी आदिवासी जमातीयों में महिलाओं को पुरुषों के समान ही अधिकार दर्जा मिलता है। इस कारण अपने परिवार में महिलाए और पुरुष मिलजुलकर परिवार के लिए भूमिका निभाते है। आम तोर पर देखा जाए तो आदिवासी जमातीयों में, कुछ जमातीयों छोड दिय जाए तो, सभी जमातीयों में महिलाओं का स्थान अच्छा है। हिरालाल शुक्ल कहते है, कि आदिवासी जमातीयों में लिंग भेदभाव से मुक्त है। सामाजिक व्यवस्थाओं के तहते हर महिलाए समूह का एक स्थान पहले से ही निर्धारित होता है। जो महिलाए के लिए आवश्यक व उतना ही महत्त्वपूर्ण भी होता है। जिस प्रकार भारत में अनेक जाती - जमातीयों निवास करती है। उसमे जाती- जमातीओं के महिलाओं का स्थान उसे परिवार से मिलता है। उसकी तहत महिलाओं पर प्रभाव पडता रहता है। लेपियर कहते है, कि, सामाजिक प्रस्थिती साधरणतया ऐसे पद के रुप में समझी जाती है, जो कोई भी महिलाए अपने समुह में धारित या प्राप्त किए हुई होती है। किसी महिलाओं समाजिक प्रस्थितया का निर्धारण उसके जन्म के कारण भी होता है। जैसे किसी महिलाने किस समुह अथवा समुदाय में जन्म लिया है। उस परिवार की अनुसार महिलाओं का व्यवहार करना पडता है। यह प्रस्थिती समुह द्वारा स्वंय उपलब्ध करवाई जाती है। इसी कारण प्रत्येक जाती- जमातीयों में अपनी संस्कृती, प्रथाए, मूल्य, आदर्श एंव परंपराओं को पालन किया जाता है।

आदिवासी जमातीयों के परिवार में जब लडका या लडकी का जन्म होता है। तब से लेकर मृत्यू तक, लिंग के आधार पर परिवार मे शिक्षा मिलती है। उसके अनुसार जब लडकी, अपने परिवार मे प्रथा, परंपरा, और मूल्यों का पालन करती है। जब शादी होती है तो वह एक महिला माना जाता है। महिला के अनुसार रिती रिवाज और संस्कृती के अनुसार उसे व्यवहार करना पडता है। परिवार में उसके आयु के उपर वाले व्यक्ती या महिलाओं सम्मान करना पडता है। कुछ महिलाओं के रिश्ते में हसी मजाक करणी की ही सुट होती है। आदिवासी जमातीयों में नातेदारी को मोहोत महत्व दिया जाता है। माता-पिता, भाई-बहन, दादा-दादी, बेटे, चाचा, मामा, जीजा, साला, साली, अंकेल - अंनडी आदी रिश्ते में कुछ आदिवासी जमातीयों हसी मजाक करना भी सुट रहती है।

संदर्भ :-

- १. गंगणे वर्षा २०१५. 'आदिवासी स्त्रियांच्या आर्थिक व सामाजिक समस्या', नागपूर:ऋचा प्रकाशन.
- २. जाधव स्थाकर एल. २०१२. 'भारतीय आदिवासी समाज', औरंगाबाद : चिन्मय प्रकाशन.
- ३. हरिराम मीना. २०१२ 'आदिवासी दुनिया', नई दिल्ली : नॅशनल बुक इस्ट इंडिया.
- ४. गुप्ता एम.एल. शर्मा डी.डी. २०१४. 'समाजशास्त्र'. आगराः साहित्य भवन.
- ५. पी.एन. झा. 'समाजशास्त्र'. जयपुर: अरिन्त पब्लिकेशन्स (इंडिया) लिमिटेड.
- ६. कऱ्होड बी.एम. २०१०. 'आदिवासी समाजाचे समाजशास्त्र', नागपूर : पिंपळापुरे ॲण्ड क. पब्लिशर्स.

DAAR .

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Vol.2 Issue.15 May-June-2022

Peer Reviewed Bi-Monthly

लिंगभेद आणि स्त्रियांची बदलती स्थिती

डॉ.सोनटक्के रमेश शंकरराव

सहाय्यक प्राध्यापक व समाजशास्त्र विभागप्रमुख, स्वामी रामानंद तीर्थ महाविद्यालय, अंबाजोगाई

प्रस्तावना:

समाजात, प्रत्येकाला कोणताही भेदभाव न करता आपले जीवन जगण्याचा अधिकार आहे. जेव्हा ही स्थिती प्राप्त होते जिथे सर्व व्यक्तींना त्यांची जात, लिंग, रंग, व्यवसाय आणि स्थिती विचारात न घेता समान मानले जाते तेव्हा आपण त्याला समानता म्हणतो. समानतेची व्याख्या अशी परिस्थिती म्हणून देखील केली जाऊ शकते जिथे प्रत्येक व्यक्तीला समान अधिकार, वाढ आणि समृद्धीची समान संधी असते. समाजातील प्रत्येक व्यक्ती समान हक्क आणि त्यांच्या विल्हेवाट उपलब्ध संसाधनांमध्ये प्रवेशाचे स्वप्न पाहतो, परंतु तेथे खूप भेदभाव आहे. हा भेदभाव सांस्कृतिक फरक, भौगोलिक फरक, व्यक्तीचा रंग, सामाजिक स्थिती आणि अगदी लिंग यांमुळे असू शकतो. सर्वात प्रचलित भेदभाव म्हणजे लैंगिक असमानता. ही स्थानिक समस्या नाही आणि केवळ जीवनाच्या काही क्षेत्रांपुरती मर्यादित आहे. परंतु जगभरात प्रचलित आहे. पुरोगामी समाज आणि सर्वोच्च संस्थांमध्येही आपण लिंगभेदाची अनेक उदाहरणे पाहू शकतो. लिंग समानता तेव्हाच प्राप्त होऊ शकते जेव्हा स्त्री आणि पुरुष दोघांनाही समान वागणूक दिली जाते. भेदभाव हा एक सामाजिक धोका आहे जो विभाजन निर्माण करतो. आम्ही एकत्र राहणे बंद करतो आणि आमच्या समस्या सोडवण्यासाठी एकत्र उभे नसतो. हा सामाजिक कलंक अनेक शतकांपासून सर्व समाजाच्या पोटात शिरला आहे. हे लिंग-आधारित प्रकरणांमध्ये देखील पाहिले गेले आहे. लैंगिक असमानता ही भूतकाळातील गोष्ट आहे कारण स्त्री आणि पुरुष दोघेही सर्व विभागांमध्ये एकत्र इतिहास घडवत आहेत.

संशोधनाची उद्दिष्टे:

- १) लिंगभेद संकल्पना समजून घेणे.
- २) महिलांच्या समस्या समजून घेणे.
- ३) महिलांचा सामाजिक दर्जा व भूमिका समजून घेणे.
- ४) महिलांच्या समस्या आणि आव्हाने यासाठी उपाययोजना सुचविणे.

संशिधनाची गृहीतके:

- १) महिलांच्या समस्या वाढत आहेत.
- २) महिलांवर होणारे सामाजिक अन्याय, अत्याचार वाढत चाललेले दिसन येते.
- ३) महिलांकडे पाहण्याचा समाजाचा दृष्टीकोन बदललेला नाही.
- ४) महिलांना आजही वेगवेगळ्या आव्हानांना सामोरे जावे लागते.

संशोधन पद्धती:

शोध निबंध हा संशोधनाचा एक भाग असतो. ज्याप्रमाणे संशोधनातून संशोधक हा एखाद्या समस्येचे सूत्रन करतो आणि निष्कर्षाप्रत पोहोचतो, त्याचप्रमाणे शोध निबंधात एखादी समस्या निश्चित करून त्या समस्येची कारण मीमांसा केली जाते आणि समस्येच्या सोडवणुकीसाठी शिफारशी सुचविण्यात येतात. तसेच संशोधनाप्रमाणे शोधनिबंधासाठी सुद्धा तथ्य संकलित करण्याची गरज पडते. तथ्य संकलन म्हणजे अध्ययन विषयाच्या सखोल अभ्यासासाठी अध्ययन सामग्री गोळा करणे होय. तथ्य संकलन प्रामुख्याने दोन प्रकारे करण्यात येते. ते म्हणजे प्राथमिक आणि दुय्यम. प्राथमिक तथ्य संकलनाद्वारे गोळा करण्यात येणारी तथ्य ही प्रामुख्याने निरीक्षण, प्रश्नावली, मुलाखत आणि अनुसूची यांच्या माध्यमाने गोळा केली जातात. द्वितीय तथ्य संकलन हे शासकीय अहवाल, पुस्तके, मासिके, ग्रंथ इत्यादी प्रकाशित आणि अप्रकाशित ग्रंथाच्या माध्यमातून गोळा केली जातात. प्रस्तुत शोध निबंधाच्या अध्ययनासाठी प्रामुख्याने द्वितीयक तथ्यांचा आधार घेण्यात आला असून ही तथ्य महिलांच्या समस्या आणि आव्हाने या समस्येशी संबंधित ग्रंथ आणि पुस्तके यांच्या माध्यमातून गोळा करण्यात आली आहेत.

लिंग समानता म्हणजे काय?

लैंगिक समानता तेव्हा प्राप्त होते जेव्हा सर्वाना आर्थिक सहभाग आणि निर्णय घेण्यासह समाजाच्या सर्व क्षेत्रांमध्ये समान अधिकार आणि संधी मिळतात आणि जेव्हा स्त्रिया आणि पुरुषांच्या भिन्न वर्तन, आकांक्षा आणि गरजा समान मूल्यवान आणि अनुकुल असतात.

डॉ.सोनटक्के रमेश शंकरराव

स्त्रियांची बदलती स्थिती

लैंगिक समानता एक राष्ट्र निर्माण करते या शतकात, महिला आणि पुरुष समान विशेषाधिकारांचा आनंद घेतात. समाज हळूहळू पण स्थिरपणे बदलत आहे. लोक आता त्यांच्या हक्कांबद्दल अधिक जागरूक झाले आहेत. असे दिसून आले आहे की, जेव्हा स्त्रिया आणि पुरुष समान पदावर असतात आणि समानतेने सहभागी होतात तेव्हा समाज अनन्यपणे प्रगती करतो आणि एक महत्त्वाचा पाया निर्माण करतो. जेव्हा एखादा समुदाय लैंगिक समानतेपर्यंत पोहोचतो तेव्हा प्रत्येकाला समान विशेषाधिकार मिळतात. त्यांना शिक्षण, आरोग्य, व्यवसाय आणि राजकीय पैलूंमध्ये समान वाव मिळतो. कुटुंबातही, जेव्हा स्त्री आणि पुरुष दोघांनाही समान वागणूक दिली जाते, तेव्हा ते वाढण्यासाठी, शिकण्यासाठी आणि उत्तम मूल्य जोडण्यासाठी सर्वोक्तम संधी दिली जाते. एखाद्या राष्ट्राने योग्य ठिकाणी प्रगती करण्यासाठी प्रत्येक लिंगाला समान मूल्य दिले पाहिजे. जेव्हा दोन्ही लिंग समान संधींसाठी पात्र असतात तेव्हा समाज सर्व पैलूंमध्ये चांगला विकास साधतो. निर्णय घेणे, आरोग्य, राजकारण, पायाभूत सुविधा, व्यवसाय इत्यादींतील समान हक्क आपल्या समाजाला नक्कीच नवीन स्तरावर नेतील. घरात राहणाऱ्या स्त्रियांचा सामाजिक कलंक बदलला आहे. आजकाल शाळेत मुलांबरोबर मुलींचीही तितकीच स्पर्धा आहे. ते आपापल्या व्यवसायातही ऐतिहासिक विकास घडवत आहेत. स्त्रिया आता लग्नाआधी आर्थिक स्वातंत्र्य शोधत आहेत. हे त्यांना दडपशाहीविरुद्ध उभे राहण्याचा आणि स्वतःसाठी चांगले निर्णय घेण्याचा आत्मविश्वास देते.

पुरूष जेव्हा ब्रेड आणि बटर कमवण्यासाठी बाहेर जातात तेव्हा स्त्रियांनी सर्व काळजी घेऊन घरातच राहणे आवश्यक आहे असे जुन्या सामाजिक रचनेने सांगितले. हे युगानुयुगे चालत आले आहे. जेव्हा बाहेरचे जग सुरक्षित नव्हते. आता काळ बदलला आहे आणि आम्ही यशस्वीरित्या आमचे वातावरण अधिक सुरक्षित केले आहे, स्त्रिया पुढे पाऊल टाकू शकतात, शिक्षण घेऊ शकतात, त्यांची आवड जोपासू शकतात, त्यांच्या कुटुंबात आर्थिक संतुलन आणू शकतात आणि कुटुंबाचे वजन पुरुषांसोबत सामायिक करू शकतात. यामुळे, एकत्रितपणे, देशाच्या अर्थव्यवस्थेची प्रगती जलद आणि चांगली होईल.

लैंगिक समानता मोजण्याच्या पद्धती:-

लिंग समानता मोजली जाऊ शकते आणि खालील पद्धती वापरून देशाची वाढ शोधली जाऊ शकते.

- (१) लिंग विकास निर्देशांक (GDI) ही लिंग-आधारित गणना आहे जी मानवी विकास निर्देशांकासारखीच केली जाते.
- (२) जेंडर एम्पॉवरमेंट मेजर (GEM) ही निर्णय घेण्याच्या भूमिकेतील महिला सदस्यांच्या टक्केवारीची तपशीलवार गणना पद्धत आहे.
- (३) जेंडर इक्विटी इंडेक्स (GEI) आर्थिक सहभाग, शिक्षण आणि सशक्तीकरण यांचा विचार करते.
- (४) ग्लोबल जेंडर गॅप इंडेक्स (GGGI) चार निकषांच्या आधारे विद्यमान लैंगिक असमानतेच्या पातळीचे मूल्यांकन करतो: आर्थिक सहभाग आणि संधी, शैक्षणिक प्राप्ती, राजकीय सशक्तीकरण, आरोग्य आणि जगणे.
- (५) जेंडर गॅप इंडेक्स (GGI) नुसार, 156 सहभागी देशांमध्ये भारताचा क्रमांक 140 आहे. हे दर्शविते की भारताची कामगिरी मागील वर्षांच्या तुलनेत घसरली आहे, लिंग अंतर कमी करण्याच्या दृष्टीने नकारात्मक वाढ दर्शवते. सध्याच्या वातावरणात जिथे समानता आणि समान संधी सर्वोच्च मानल्या जातात, त्यामुळे भारताची मोठी गैरसोय होत आहे.

स्त्री-पुरुष समानतेतील अडथळे भारतीय समाज अजूनही अशा कलंकांमुळे उद्ध्वस्त आहे की स्त्रियांना घर सांभाळणे आणि घरातच राहायचे हे युगानुयुगे केले जात आहे, ज्यामुळे शिक्षण, आरोग्य, संपत्ती आणि सामाजिक-आर्थिक क्षेत्रांमध्ये मिहलांचे दुर्लक्ष होत आहे. याशिवाय हुंडापद्धती समाजाला आणखी पंगू करत आहे. या कुप्रथेमुळे असंख्य स्त्री भ्रूणहत्या झाल्या. मुली या कुटुंबावर ओझे आहेत, अशी धारणा निर्माण झाली आहे, ही मुलगी तिचे शिक्षण सुरू ठेवू शकत नाही याचे एक प्राथमिक कारण आहे. जरी ते शिक्षणात उत्कृष्ट झाले आणि स्वतंत्र झाले, तरीही त्यांच्यापैकी बहुतेकांना नोकरी सोडण्यास भाग पाडले जाते कारण त्यांचे उत्पन्न हे बॅकअप स्त्रोत मानले जाते, जे योग्य नाही. नव्या युगातील मिहला केवळ स्वतंत्रच नाहीत तर त्या आत्मविश्वासही आहेत. समाजाकडून त्यांना फक्त समर्थनाची मागणी आहे, जी आम्ही त्यांना दिली पाहिजे.

हुंड्याबरोबरच आणखी एक ज्वलंत मुद्दा आहे ज्याचा महिलांच्या वाढीवर खोलवर परिणाम होतो. हे सर्व प्रकारच्या समाजात प्रचलित आहे. हिंसा म्हणून ओळखले जाते. सार्वजनिक आणि खाजगी जागांवर महिलांवरील हिंसाचार कोणत्या ना कोणत्या स्वरूपात असतो. काहीवेळा, शोषण, छळ आणि तस्करी यासारख्या ज्वलंत समस्यांसोबत हिंसाचार होतो, ज्यामुळे जग महिलांसाठी असुरक्षित बनते. हे थांबवण्यासाठी आणि महिलांसाठी सुरक्षित आणि निरोगी ठिकाण सुनिश्चित करण्यासाठी आपण पावले उचलली पाहिजेत. दारिद्र्य हा देखील स्त्री-पुरुष समानतेच्या मार्गातील प्रमुख अडथळ्यांपैकी एक आहे. यामुळे बालविवाह, मुलांची विक्री, तस्करी आणि बालमजुरी यासारख्या इतर गैरप्रकारांना कारणीभूत ठरले आहे. समान रोजगाराच्या संधी उपलब्ध करून देणे आणि दारिद्र्यरेषेखालील लोकांचे उत्थान यामुळे यावर काही नियंत्रण आणण्यास मदत होऊ शकते. स्त्री-पुरुष समानतेच्या दिशेने पुढाकार कोणत्याही प्रकारचा भेदभाव कोणत्याही देशाच्या विकासात अडथळा म्हणून काम करतो आणि एखादे राष्ट्र तेव्हाच समृद्ध होऊ शकते जेव्हा सर्व नागरिकांना समान अधिकार असतील. बहुतेक विकसित देशांमध्ये तुलनेने कमी लैंगिक भेदभाव आहे आणि ते दोन्ही लिंगांना समान संधी देतात. लिंगभेद कमी करण्यासाठी भारत सरकारही अनेक पुढाकार घेत आहे. मुलींच्या शिक्षणाला प्रोत्साहन देण्यासाठी त्यांनी "बेटी बचाओ, बेटी पढाओ योजना" ही सामाजिक मोहीम सुरू केली आहे. याशिवाय, लोकांमध्ये जागरूकता निर्माण करण्यासाठी सरकार महिला हेल्पलाइन योजना, उज्वला, महिला सक्षमीकरणासाठी राष्ट्रीय मिशन इ. यासारख्या अनेक योजना चालवते. शिवाय, जबाबदार नागरिक म्हणून, महिलांसाठी एक सुंदर जग निर्माण करण्यासाठी लंगभेदाबाबत ज्ञानाचा प्रसार करणे ही आपली जबाबदारी आहे.

निष्कर्ष:

महिलांच्या हक्कांची हमी देणे आणि त्यांना त्यांच्या पूर्ण क्षमतेपर्यंत पोहोचण्यासाठी संधी देणे हे केवळ लैंगिक समानता मिळविण्यासाठीच नव्हे तर आंतरराष्ट्रीय विकासाच्या विस्तृत उिद्दष्टांची पूर्तता करण्यासाठी देखील महत्त्वाचे आहे. सशक्त स्त्रिया आणि मुली त्यांच्या कुटुंबांच्या, समुदायांच्या आणि देशांच्या आरोग्यासाठी आणि उत्पादकतेमध्ये योगदान देतात, ज्यामुळे प्रत्येकाला फायदा होतो. या सर्व संकटांचे निर्मूलन झाल्यावर, प्रत्येक कुटुंबाला स्त्रीचे मूल्य समजेल आणि आपला देश खऱ्या अर्थाने स्त्री-पुरुष समानता प्राप्त करेल. महिला सर्वत्र उदाहरणे निर्माण करत आहेत आणि परिस्थिती बदलण्यासाठी आणि त्यांना समान अधिकार देण्यासाठी आपण सर्वांनी त्यांना अधोरेखित केले पाहिजे. सरतेशेवटी, ऑलिम्पिक 2021 मधील भारताची कामगिरी हे सध्याचे उदाहरण आहे जिथे भारताने सात पदके जिंकली आहेत. त्या सात पदकांपैकी सहा वैयक्तिक स्पर्धांमध्ये आले आणि त्या सहा पदकांपैकी महिला खेळाडूंनी तीन जिंकले. एवढ्या अडचणींचा सामना करूनही त्यांची कामगिरी पुरुष खेळाडूंच्या बरोबरीने असल्याचे दिसून येते. एवढ्या मोठ्या क्षमतेसह, स्त्रिया पुरुषांना मागे टाकतील आणि त्यांच्या सर्व क्षमता जगाला पाहण्यासाठी दाखवतील तेव्हाच ती काळाची बाब आहे!

संदर्भ ग्रंथसूची:

- १) प्रा.डॉ.पद्मजा पाटील, प्रा.डॉ.शोभा जाधव: 'भारतीय इतिहासातील स्त्रिया, फडके प्रकाशन, कोल्हापूर
- २) डॉ.प्रदीप आगलावे, 'सामाजिक संशोधन पद्धती'साईनाथ प्रकाशन, नागपूर
- ३) डॉ.गुप्ता आणि डॉ. शर्मा, 'भारतीय सामाजिक समस्या', साहित्य भवन पब्लिकेशन, हॉस्पीटल रोड, आग्रा
- ४) चौधरी प्रतिमा, आधुनिक समाज मे कार्यशील महिला, मार्क पब्लिशर्स, जयपुर
- ५) सुजाता वर्मा, 'जनसंचार, जनसंपर्क एवं विज्ञान' ज्ञानोदय प्रकाशन, कानपूर
- ६) साळुंखे आ.ह., 'हिंदू संस्कृती आणि स्त्री' लोकवांग्मय, गृह मुंबई

DAAR C

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Peer Reviewed Bi-Monthly

Vol.2 Issue.15 May-June-2022

लैंगिक असमानता आणि महिलांच्या राजकीय सहभागाची वास्तविकता

दत्तात्रय मधुकर तोंडे साहाय्यक प्राध्यापक, दूर व मुक्त अध्ययन संस्था (आयडॉल) मुंबई विद्यापीठ, मुंबई

संशोधन गोषवारा:

लैंगिक असमानता ही संकल्पना नेहमीच आर्थिक सामाजिक व राजकीय विकासामध्ये प्रमुख मुद्दा म्हणून समोर येते. सदरील संकल्पना बहुआयामी असल्यामुळे सदरील संकल्पनेचा अर्थ सोप्या भाषेत समजून घेणे, तसेच लैंगिक असमानता आणि राजकीय क्षेत्र यातील परस्पर संबंध समजून घेऊन, राजकीय क्षेत्रात लैंगिक असमानतेचा प्रभाव कश्या पद्धतीने दिसून येतो, हे पहाणे, हा संबंधित संशोधन लेखाचा उद्देश आहे. त्याबरोबरच राजकारणात सहभागी होणाऱ्या महिलांची राजकीय सहभागाबद्दलची वास्तविकता काय आहे ? हे समजून घेण्याचा प्रयत्न प्रस्तुत संशोधन लेखामधून केला गेला आहे यासाठी स्वातंत्र्यानंतर लोकसभा ,राज्यसभा व स्थानिक संस्था या लोकशाहीच्या प्रातिनिधिक संस्था मधून सहभाग घेतलेल्या महिलांच्या आकडेवारीचे विश्लेषण केले गेले आहे. तथ्य संकलनासाठी विविध सरकारी, गैरसरकारी अहवाल, वर्तमानपत्रे, मासिके, इंटरनेट आणि या विषयी झालेले गत संशोधन, या दुय्यम स्रोताद्वारे माहिती संकलित करून निष्कर्ष काढण्यात आलेले आहेत.

मुख्य शब्द (Key words) : लैंगिक असमानता , राजकीय सहभाग प्रस्तावना:

२१ व्या शतकात जागतिक स्तरावर भारताचा एक शक्तिशाली राष्ट्र म्हणून गौरव केला जात आहे, त्याबरोबर भारताला प्राचीन काळापासून गौरवशाली परंपरा लाभली आहे हे सर्व असताना लोकसंखेच्या विचार करता भारत जगात दुसऱ्या क्रमाकांचा देश दिसून येतो. या लोकसंख्येपैकी निम्मी लोकसंख्या महिलांची आहे ही वस्तुस्थिती आहे हे नाकारता येणार नाही. परंतु या महत्त्वपूर्ण असलेल्या अर्ध्या लोकसंख्येला विचारात न घेता भारतच काय जगातील कोणतेही राष्ट्र आपली आर्थिक, सामाजिक राजकीय, सांस्कृतिक, प्रगती करू शकत नाही हीच बाब प्राचीन काळापासून भारतात महिलांना देण्यात येणाऱ्या द्य्यम दर्जाच्या वागण्कीवरून दिसून येते. लैंगिक असमानता भारताच्या विकासाला खुप मोठा अडथळा आहे असे म्हटले तर वावगे ठरणार नाही. राजकीय द्रष्टिने विचार केला तर भारतीय संसद , विविध राज्यातील विधिमंडळे. स्थानिक स्वराज संस्था या राजकीय प्रक्रियेच्या तिन्हीही स्तरावर लैंगिक असमानतेच्या आधारावर महिलांचा सहभाग अगदी नगण्य दिसन येतो. स्वातंत्र्यानंतरचा इतिहास पाहितला तर महिलांचा राजकीय सहभाग १९९० पर्यंत अगदी अल्प स्वरुपात होता सिंघवी समितीच्या शिफारशीनुसार १९९३ ला ७३ वी घटना दरुस्ती झाली. या नुसार महिलांनी स्थानिक शासनात जास्तीत जास्त सहभागी व्हावे याकरिता ऐतिहासिक पाऊल उचलले खरे. परंत नंतरच्या काळात जी वास्तविकता समोर आली ती विचार करायला लावणारी आहे. ती म्हणजे महिलांनी मोठ्या प्रमाणात राजकीय सहभाग तर नोंदवला, पण तो नाममात्र स्वरुपाचा दिसुन येऊ लागला. या अनुषंगाने विचार होणे गरजेचे झाले आहे म्हणून लैंगिक असमानतेवर आधारावर राजकीय सहभागाची वास्तविकता पहाणे क्रमप्राप्त आहे.

- उद्दिष्टे:
- 1. लैंगिक असमानता या विषयी जाणून घेणे
- 2. राजकीय क्षेत्रातील लैंगिक असमानता समजून घेणे
- 3. महिलांच्या राजकीय सहभागाविषयी जाणून घेणे
- 4. महिलांच्या राजकीय सहभागाची वास्तविकता अभ्यासणे

गृहितकृते:

- 1. राजकारणात आजही लैंगिक असमानता दिसून येते.
- 2. महिलांचा राजकीय सहभाग हा नाममात्र स्वरूपाचा आहे संशोधन पद्धती:

लैंगिक असमानता आणि राजकीय सहभागाची वास्तविकता या संशोधन लेखाचे उद्दिष्ट लक्षात घेता वर्णनात्मक व विश्लेषणात्मक संशोधन पद्धतीचा अवलंब केला आहे एखाद्या सामाजिक घटनेचे शास्त्रीय विश्लेषण करण्यासाठी तथ्ये गोळा करणे म्हणजेच त्याच्यातील वास्तविकतेचे अध्ययन होय.

तथ्य संकलन:

प्रस्तुत लेखाच्या संशोधन कार्यात माहितीच्या अनुषंगाने तथ्य संकलन करण्यासाठी दुय्यम स्रोतांचा वापर केलेला आहे यामध्ये संदर्भ ग्रंथ, वर्तमानपत्रे, शासकीय पत्रके या संबंधित समित्यांचे अहवाल, राज्यघटनेतील तरतुदी, इ. साधनांचा आधार घेण्यात आला आहे

लैंगिक असमानता:

लैंगिक असमानता म्हणजे 'लैंगिक आधारावर महिलांबरोबर भेदभाव करणे होय' पुरुषाला श्रेष्ठ समजून महिलांना दुय्यम समजण्याची मानसिकता होय. पारंपरिक काळापासून महिलांना कमकुवत स्वरूपातच पाहिले जाते, घरी आणि समाजात दोन्ही ठिकाणी ती शोषण मानहानि आणि भेदभाव यांनी ग्रासलेली दिसून येते. जन्मापासूनच भारतामध्ये मुलगा मुलगी असा भेद पाहावयास मिळतो यावरून पुढे शिक्षण, नोकरी, राजकारण, समाजकारण यामध्ये संधी देतांना माहिला किंवा मुलगी म्हणून तिच्याबरोबर भेदभाव केलेला दिसून येतो. भारतामध्ये आजही पितृसत्ताक कुटुंब पद्धती असल्याकारणाने आजही लैंगिक असमानता पहावयास मिळते. वर्तमान काळात जागतिक लैंगिक असमानता निर्देशांक २०२१ चा अहवाल पाहितल्यावर लक्षात येते की १५६ देशाच्या यादीत भारत १४० व्या स्थानावर आहे यावरून महिलांचा आर्थिक सहभाग ,शिक्षा आणि स्वास्थ्य याच्या बाबतीतील वास्तविकता समोर येते.

भारतातील राजकीय क्षेत्रात महिला: लोकसभेतील महिला (१९५१-२०१९) राज्यसभेतील महिला (१९५२ -२००२)

		(1)	((' ()		
वर्ष	महिलांची संख्या	टक्केवारी	वर्ष	महिलांची संख्या	टक्केवारी
१९५१	२२	४.५०	१९५२	१५	६.९४
१९५७	२२	8.84	१९५४	१७	७.७९
१९६२	३ १	६.२८	१९५६	२०	८.६२
१९६७	२९	५.५८	१९५८	२२	९.५२
१९७१	२८	५.४१	१९६०	२४	१०.२५
१९७७	१९	३.५१	१९६२	१८	७.२०
१९८०	२८	4.79	१९६४	२१	८.९७
			१९६६	२३	९.८२
१९८४	४३	७.९५	१९६८	२२	९.६४
१९८९	२९	५.४८	१९७०	१४	4.24
१९९१	३९	७.३०	१९७२	१८	७.४०
१९९६	४०	७.३७	१९७४	१८	<i>૭.५</i> રૂ
१९९८	४३	७.९२	१९७६	२४	१०.१६
१९९९	४९	९.०२	१९७८	२५	१०.२४

२००४	४५	८.२९	१९८०	२९	११.९८
२००९	५९	१०.८७	१९८२	२४	१०.१६
२०१४	६६	१२.१५	१९८४	२४	१०.३०
२०१९	८१		१९८६	२८	११.५२
			१९८८	२५	१०.५९
			१९९०	२४	१०.३४
			१९९२	१७	७.२९
			१९९४	२०	८.३६
			१९९६	१९	७.८१
			१९९८	१९	૭.૭૫
			२०००	२२	९.०१
			२००२	२५	१०.२०

South Asia research vol ३७ -Praveen Rai Feb २०१७, @Rajya Sabha secretariat New Delhi २००३ वरील तक्ता लोकसभेतील महिलांचा सहभाग (१९५१-२०१९) राज्यसभेतील महिलांचा राजकीय सहभाग (१९५२ –२००२) दर्शवित आहे.

महिलांचा राजकीय सहभाग:

राजकारणात महिलांचे प्रमाण किती आहे यावरून महिलांचा राजकीय सहभाग लक्षात येतो स्वातंत्र्या पासून महिलांचा सहभाग कमी अधिक दिसून येत होता परंतु खऱ्या अर्थाने महिलांचा सहभाग जास्तीत जास्त राजकारणात वाढला तो ७३ व्या आणि ७४ व्या घटना दुरुस्ती पासून ७३ व्या व ७४ व्या घटना दरुस्तीने महिलांना स्थानिक स्वराज संस्थेमध्ये ३३ % आरक्षण देण्यात आले. लोकशाही विकेंद्रीकरणात स्थानिक संस्थांचा खुप मोठा सहभाग होता स्थानिक समस्याचे निराकरण करण्यासाठी महिला मोठ्या प्रमाणात सहभागी होऊ लागल्या इतक्या वरच न थांबता महिलांना ५० % आरक्षण देण्यात आले यामुळे महिलांचा राजकीय सहभाग निश्चित पणे वाढलेला दिसून येतो

महिलांच्या राजकीय सहभागाची वास्तविकता:

महिलांचा राजकीय सहभाग वाढला परंतु त्यांचे जे अधिकार आहेत त्याचा त्या स्वतः उपयोग करतात का ? त्यांच्या अधिकाराचा उपयोग कोण करते ? त्यांना पुरुषाबरोबरीने काम करू दिले जाते का ? त्यांना द्य्यम वागणक मिळते का ? या सर्व प्रश्नांचा शोध घेतल्यानंतर त्यांच्या राजकीय सहभागाची वास्तविकता लक्षात येते या संदर्भात खालील काही संशोधन प्रबंध सादर झालेले आहेत अमतकर प्रशांत. "चंद्रपुर जिल्ह्यातील चंद्रपुर जिल्हा परिषद तसेच चंद्रपुर, वरोरा व राजुरा पंचायत समित्या अंतर्गत पंचायतराज संस्थांमधील सदस्य व पदाधिकारी स्त्रियांचा सहभाग व भूमिकेबाबत अध्ययन." यमलवाड गो.तु. पंचायतराज संस्थातील महिलांचा सहभाग: नांदेड जिल्ह्याचा अभ्यास" कटारे ब. द. "ग्रामीण स्थानिक स्वराज्य संस्थेतील महिला पदाधिकाऱ्यांचे स्थान: जालना जिल्ह्यातील महिला सरपंचाच्या कार्याचा चिकित्सक अभ्यास (१९९४-२००४)" वरील संशोधनाचे निष्कर्ष पाहता असे लक्षात येते की महिलांचा राजकीय सहभाग हा नाममात्र स्वरूपाचा दिसून येतो जसे की वरील गत संशोधनाच्या निष्कर्षा वरुन लक्षात येते की.

1. परूष मंडळी कडून महिलांना द्य्यम वागणुक भेटते

- 2. महिलांची राजकीय कामे पुरुषच करतात
- 3. भारतात आजही पित्रसत्ताक कुटुंब पद्धती असल्या कारणाने महिलांना समानतेची वागणूक मिळत नाही

निष्कर्ष :

- 1. महिलांना आजही असमानतेची वागणूक मिळते
- 2. महिलांचा राजकीय सहभाग वाढलेला आहे परंतु तो बऱ्याच अंशी नाममात्र स्वरूपाचा आहे निष्कर्षाचा पडताळा:

राजकारणात आजही लैंगिक असमानता दिसून येते, यामुळे वास्तविक रित्या महिलांचा सहभाग जरी वाढला असला तरी त्याचा वापर स्थानिक पातळीवर पुरुषाकडून केला जात असल्यामुळे सहभाग हा नाममात्र दिसून येतो.

शिफारशी:

- १. महिलांना समानतेची वागणुक मिळावी याकरिता कायद्याची काटेकोर अमलबजावणी आवश्यक आहे.
- २. महिलांचे नेतृत्व निर्माण करण्याच्या दृष्टीने प्रत्येक राजकीय पक्षाने पक्षांतर्गत प्रबोधन, शिबिरे व चर्चासत्राचे आयोजन करावे, ज्यामुळे महिलांमध्ये राजकीय हक्काची जाणीव निर्माण होऊन महिला जास्तीत जास्त राजकारणात सहभागी होतील व समानता निर्माण होईल.
- ३. पक्षांतर्गत एकाधिकारशाही संपुष्टात आणून पक्षाच्या निर्णय प्रक्रियेत महिलांचा सहभाग वाढवावा व त्या दृष्टीने पक्ष पातळीवरील विविध पदांमध्येदेखील ५० % आरक्षणाचे तत्त्व लागू करण्याचे कायदेशीर बंधन सर्व राजकीय पक्षांवर टाकण्यात यावे ज्यामुळे समानता निर्माण होईल
- ४. एकूण भारतीय महिलांची राजकीय स्थिती सुधारण्याच्या दृष्टीने व महिलांचे नेतृत्व निर्माण करण्यासाठी पंचायत राज संस्थांप्रमाणेच संसद व राज्य विधिमंडळातदेखील ५०% आरक्षण देण्यात यावे व या दृष्टीने स्वतःस पुरोगामी समजणाऱ्या विविध राजकीय पक्षांनी गांभिर्याने विचार करावा ज्यामुळे महिलांमध्ये राजकीय जागृती निर्माण होऊन लैंगिक समानता निर्माण होईल व राजकीय सहभागही वाढेल.
- ५. लोकप्रतिनिधी कायद्यामध्ये दुरुस्ती करून सर्व मान्यताप्राप्त राजकीय पक्षांनी महिलांसाठी ५० % उमेदवारी देण्याचे घटनात्मक व कायदेशीर बंधन टाकण्यात यावे, असे न करणाऱ्या राजकीय पक्षाची मान्यता काढून घेण्याचा अधिकार निवडणूक आयोगास देण्यात यावा.

संदर्भ सूची:

- 1. प्रा. बी बी पाटील, 'महाराष्ट्र शासन आणि राजकारण' फडके प्रकाशन, कोल्हापूर प्रष्ठ क्र १६९ ,२८९
- 2. प्रा. संजय खंडारे, प्रा. शैला थोरवे 'पंचायतराज संस्था आणि विकासाच्या योजना' अनुज पब्लिकेशन, औरंगाबाद. प्रष्ठ क्र-२२
- 3. आलोनी विवेक, 'सामाजिक संशोधन पद्धती' दत्त सदन प्रकाशन, नागपूर. प्रष्ठ क्र ७५.
- 4. गाठाळ एस. एस. 'भारतीय इतिहासातील स्त्रिया आणि स्त्री जीवन' कैलास पब्लिकेशन औरंगाबाद २०१७ प्रष्ठ क्र-२५६ ,२५९
- 5. डॉ गोपा जोशी 'भारत मे स्त्री असमानता' हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय ,दिल्ली प्रष्ठ क्र ४१३

MAR .

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Vol.2 Issue.15 May-June-2022

Peer Reviewed Bi-Monthly

महिलाओं के संदर्भ में घरेलू हिंसा एंव समानताविषयी: समाजषास्त्रीय अध्ययन

डॉ. राजू शेषराव पोपळघट^९ डॉ. गजानन खंडू सोनुने^२

स्माजषास्त्र विभाग, राजर्षी शाहू कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, पाश्री, ता. फुलंब्री, जि. औरंगाबाद, ;महाराष्ट्रद्ध

प्रस्ताविक :

भारतीय समाज व्यवस्था में घरेंलू हिंसा लगभग सभी भारतीय जाती-जमाती में मौजूद है। अपने ही परिवार में रहने वाले व्यवती, बच्चे या महिलांओं के संदर्भ दुर्व्यवहार किया जाता है। आज-कल अनेक घरेलू हिंसा के मामले वर्तमान पत्रों और न्युज चॅनल्स के माध्यम से सामने आते रहे हैं। इस सभी घटनाओं में अधिकतम महिलाओं और बच्चे सामील होते हैं। इस में शारीरिक शोषण, मानसिक अवहेलना, भावात्मक शोषण और दुर्व्यवहार, हर दिन गाली, गलौज करना, ताना मारना, कभी-कभी मारझोड करना, इस तरह के मामले सामने आते हैं। भारत में महिलांओं के साथ भेदभाव का चक्र उनके जन्म होते ही शुरू होता हैं। जहां जिस परिवार में जन्म होता हैं, या जिस जाती- जमाती में जन्म होता हैं। उस परिवार, जाती- जमाती के अनुसार वर्तन, रूढी- परंपरा, चालीरिती के अनुसार व्यवहार किया जाता है। और समाज के दाईरे से चलना पड़ता हैं।

कुछ परिवार में लडिकेंगो के मुकाबले लडिको को ज्यादा महत्त्व दिया जाता है। उसी कारण लिंग के आधार पर भारतीय जाती-जमाती के परिवार में भेदभाव का मुख्य कारण माना जाता है। इसके कारण ही भारत में लिंग चयन आधारित भ्रुणहत्या के मामले सामने आते हैं। इस लिंग के भेदभाव और असमान सामाजिक दर्जा महिलाओं पर होनेवाली घरेलू हिंसा के मुल कारण है।

अध्ययन निंबध का उद्देष :

- १. महिलांओ के बारे में घरेलू हिंसा का अध्ययन करना
- २. घरेलू हिंसा के कारणोओं को सामने लाना.
- ३. घरेलू हिंसा रोखने के लिए उपाय सामने रखना.
- ४. महिला व पुरुष विषयी समानता का दृष्टिकोण समझना

संशोधन पद्धती :

प्रस्तुत अध्ययन निवधों के लिए संबोधन पद्धती के दुरयम स्त्रोत के माध्यम से पूरा किया है। इस संबोधन पद्धती जिसे दुरयम साधने का आधार लेना पडता है। इसमें पुस्तके, ग्रंथ, मासिके, वर्तमानपत्रे, वेबसाईट, शासकीय अहवाल के आधार पर निवध पूरा किया।

महिलांओ के संदर्भ घरेल हिंसा :

महिला हिंसा एक गंभीर समस्या है। जो भारत नहीं पूरे विश्व में महिलांओं को प्रभावित करती है। इसकी जड़े सामाजिक ढांचा में हैं और भारतीय जाती-जमाती के सभी वर्गों में फैली हुई हैं। इसमें हर जाती-जमाती, वर्ग, उम्र, धर्म, संस्कृती व शैक्षिक स्तर की महिला घरेलू हिंसा से प्रभावित होती है। हम सब आमतौर पर मानते हैं की, पुरूष ही महिलांओ पर हिंसा करते हैं, लेकिन ऐसा हर परिवार में नहीं होता है। परिवार में पितृसत्ताक सोच होने के कारण भी और महिलांओं के संदर्भ पास-पड़ोस, नातेतारी संबंधों से भी खितकार होती रहती है।

भारत में घरेलू हिंसा का सबसे बुरा असर पिडित होने वाले व्यवितओं पर मानसिक दृष्टीकोन में संतुलन खो या विद्यांड हो जाते हैं। उसी कारण उसका मन किसी भी काम या कार्याओं में नहीं लगता। उसके मन के भीतर ही भीतर दुःख सहना पड़ता हैं। और सबसे ज्यादा प्रभाव बच्चे और महिलांओं पर पड़ता रहा हैं।भारतीय जाती-जमाती के गाव और आसपास के समुदाय में हर रोज महिलांओं के साथ हिंसा की घटनाए होती रहती हैं। जीवन की शुरूवात यानि लड़की के जन्म के पहले से लेकर बुढापे तक चलती रहती हैं।घरेलू हिंसा न केवल विकासशील या अन्य विकसित देशों की समस्या हैं। बल्कि यह सभी देशों में कमया ज्यादा में प्रचलित होगी किन्तू यह सभी देशों में पायी जाती हैं।घरेलू हिंसा ही महिलाओं के संदर्भ में अमानवीय कृत्य की श्रेणी में आते हैं। लेकिन कितने भी कानून बने हो घटनाओं की पुनरावृत्ती स्पष्ट संकेत हैं की अब तक कोई भी कानून इतनी कड़ाई से होना चाहिए जैसा हो नहीं पाया कि महिलांओं में निर्भीकता से स्वतंत्रता का जीवन जी पाए।

भारत में घरेलू हिंसा अधिनियम २००५ के अनुसार घरेलू हिंसा के पिडित के रूप में महिलांओं के किसी भी रूप तथा १८ वर्ष से कम आयुके बालक एंव बांतिका को संरक्षित किया गया है। भारतीय संविधान का अनुच्छेद १४ यह निर्धारित करता है कि किसी व्यवती या महिला को विधी के समक्ष समता से अथवा विविधों को समान सरक्षण से राज्यों द्वारा वंवित नहीं किया जाएगा। अनुच्छेद १५ स्पष्ट रूप में यह बताता है। कि राज्य केवल जन्म, लिंग, जाती, वंष, मूल, स्थान, धर्म क आधार दर नागरिकों के बीच कोई विभेद नहीं करेगा। किंतु संविधान में सभी व्यवितयों के लिए समानता स्थापित होने के बावजूद महिला और पुरूष में समानता नहीं देखाई देती, लिंग के आधार पर महिलाओं के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार किया जाता है। इनमें से एक है घरेलू हिंसा से पिडित महिलाओं और बच्चे भारत में ग्रस्त है।महिलांओं के लिए थॉमसन रायटर्स फांउडेबन के वार्षिक सर्वेक्षण में भारत को सबसे

पहला स्थान दिया गया है। यौन हिंसा की श्रेणी ने भारत ने सबसे बद्हाल देषो में पहला स्थान प्राप्त किया। गैर-यौन हिंसा की श्रेणी में भारत दस ;१०द्भदेषो मे तीसरे स्थानपर रहा है।महिला एंव बाल विकास मंत्रालय तथा राष्ट्रीय महिला आयोग और भारत के अनेक विषेषज्ञों ने इस सर्वेक्षण को अनदेखा किया।

हिंसा के रूप और कारण :

शारीरिक हिंसा : परिवार में महिलांओं को थप्पड मारना, बाल खिवना, मारना, मुक्का मारना, लात मारना या हाथियार के द्वारा या बिना हाथियार के चाटे पहुचाना आदी.

यौजिक हिंसा : छेडछाड करना, पीछा करना, बलात्कार या बलात्कार की कोषिष करना, जबरन विवाह या बालविवाह करना, परिवार नियोजन के साधन प्रयोग करने से रोकना, परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा यौन प्रयास करना आदी.

भावनात्मक हिंसा : अपने ही परिवार की महिलाओं पर शक करना, गाली-गलौज व ताने मारना, अपने ही परिवार में अधिकार से वंचित रखना, सार्वजनिक ठिकाणे या अकेले में अपमानित करना आदी.

आर्थिक हिंसा : महिलाओं को पैसो और संपत्ती से जुडे अधिकार न देना, स्वास्थ और षिक्षा, भोजन, कपडा देखभाल से वंचित रखना, दहेज मागना आदी

महिला का मानव जीवन सृष्टी में ही नहीं, संपूर्ण समाज निर्माण में भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। महिला और पुरूष मिलकर परिवार का निर्माण करते हैं। अनेक परिवारों से जाती-जमाती समूह से समाज निर्मित होता है। हम इतिहास को देखते हैं तो संस्कृती की नीव डालने का श्रेय प्रथम महिला को ही दिया जाता है। महिलांओं की प्रस्थिती सभी जाती-जमाती में एक समान नहीं हैं। किसी जाती-जमाती में यदि महिलांओं को पुरूषों के बराबर का दर्जा दिया जाता है। तो किसी जाती-जमाती में उन्हें पुरूषों की तुलना में बहुत कम अधिकार प्राप्त होते हैं। भारतीय महिलाओं के सामाजिक प्रस्थिती और समस्याओं का अध्ययन अपने में एक बडा जटिल विषय हैं।

तिष्कर्ष -

महिलाओं के विरुद्ध होने वाली हिंसा को मुक्त करने के लिए भारतीय कानूनों को सक्त लागू करना और दंडात्मक क्रियाषील बनाना होगा। महिलांओं के साथ होने वाली हिंसा या घरेलू हिंसा के संदर्भ में जागरूकता अभियान चलाया चाहिए। विक्षा के क्षेत्र में महिलांओं का टक्का बढ़ना चाहिए। महिलांओं और लड़कियों के साथ होने वाली हिंसा और भेदभाव को सही मायनों में देखना चाहिए। गाव, करना, ग्रामीण ईलाखा में महिलाओं को अपने अधिकार और कर्तृत्वाओं का परिचय देना चाएिये। इस कारणों से सभी भागों में रहनी वाली महिलाए आपने परिचय को अधिकार कर्तृत्वाओं घरेलू हिंसा कम कर सकती हैं। और भारत की महिला जागृत होगी। और समानता से जीवन विताएगी।

संदर्भ ग्रंथ :

- 1. राम आहुजा २००२ 'सामाजिक समस्याएः जयपूरः रावत पहिलकेशन.
- 2. चौधरी कविता २०१६ महिला के विरुद्ध घरेलू हिंसा एक समाजषास्त्रीय
- 3. अध्ययन, अप्रकाषित पी.एच.डी. प्रंबध, कोटाः विश्वविद्यालयः
- 4. National Health Mission, Minisyry of Health of family welfare
- 5. Government of India New Delhi Nirman Bhawan.
- 6. अग्रवाल गोपाल कृष्ण २०१५ 'समाजषास्त्र' आगराः एसवीपीडी पहिलिषिंग हाऊस
- 7. गुप्ता दीपक, घरेलू हिंसा से महिलाओं की सुरक्षा
- 8. राम आहजा, महिलांओ के विरुद्ध अपराध, जयपूर: रावत पब्लिकेशन.

DAAR C

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Vol.2 Issue.15 May-June-2022

Peer Reviewed Bi-Monthly

मानव आबादी में असंतुलित लिंग अनुपात: कारण और परीणाम

डॉ. आर्डले एस. डी.

सहाय्यक प्राध्यापक, लोकप्रशासन विभागप्रमुख, सरस्वती महाविद्यालय, केज

परिचय

नृविज्ञान (मानवता का वैज्ञानिक अध्ययन, मानव व्यवहार, मानव जीव विज्ञान से संबंधित) और जनसांख्यिकी (मानव आबादी का सांख्यिकीय अध्ययन) में मानव लिंग अनुपात जनसंख्या में पुरुषों और महिलाओं का अनुपात है। किसी भी अन्य प्रजाति की तुलना में मनुष्यों के लिए अधिक जानकारी उपलब्ध है, और किसी भी अन्य प्रजाति की तुलना में मानव लिंग अनुपात का अधिक अध्ययन किया जाता है, लेकिन इन आंकड़ों की व्याख्या करना मुश्किल हो सकता है। अधिक महिला मृत्यु दर घटते लिंगानुपात और अधिक महिला मृत्यु दर का मूल कारण है और बारी कन्या भ्रूण हत्या, कन्या भ्रूण हत्या, महिलाओं की उपेक्षा और मातृ मृत्यु दर का परिणाम है। यह ज्ञात था कि बाल मृत्यु दर में सुरक्षित अंतर, जहां 1961 की जनगणना के समय भारत के ग्रामीण हिस्से में पर्याप्त और व्यापक रूप से वितरित किया गया था, 1971 की जनगणना के समय तक वे और भी अधिक थे। भारत के संदर्भ में 6 अनुपातों में चेहरे की विविधताओं के एक अन्य हालिया अध्ययन में, जहां उन्होंने महिलाओं की भागीदारी दर और साक्षरता दर के लिए श्रम को 6 अनुपातों को सुनने में महत्वपूर्ण पाया, जबिक 6 चयनात्मक गर्भपात की पुनरावृत्ति बढ़ने से स्थिति और खराब हो गई।

मनुष्यों में लिंगानुपात को प्रभावित करने वाले कारक

फिशर का सिद्धांत

फिशर का सिद्धांत बताता है कि अधिकांश प्रजातियों का लिंगानुपात लगभग 1:1 है। रोनाल्ड फिशर द्वारा अपनी 1930 की पुस्तक में उल्लिखित, यह माता-पिता के खर्च के संदर्भ में एक तर्क है। अनिवार्य रूप से उनका तर्क है कि 1:1 अनुपात क्रमिक रूप से स्थिर रणनीति है।

निम्नलिखित कारक मनुष्यों में लिंगानुपात को प्रभावित करते हैं:

1. प्राकृतिक कारक:

मानव लिंगानुपात को प्रभावित करने वाले प्राकृतिक कारक वैज्ञानिक अनुसंधान के एक सक्रिय क्षेत्र हैं। विभिन्न पत्रिकाओं में 1000 से अधिक लेख प्रकाशित हो चुके हैं। मानव लिंगानुपात पर वैज्ञानिक अध्ययनों की दो बार उद्धृत समीक्षाएं डब्ल्यू एच जेम्स द्वारा की गई हैं।

2. पर्यावरणीय कारक:

- 2.1 जलवायु परिवर्तन के प्रभाव
- 2.2 गर्भ के वातावरण के प्रभाव
- 2.3 रासायनिक प्रदूषण के प्रभाव

3.सामाजिक कारक:

- 3.1 युद्ध के प्रभाव
- 3.2 शीघ्र विवाह और माता-पिता की आय
- 3.3 डेटा स्रोत और डेटा गुणवत्ता मुद्दे

डॉ. आर्डले एस. डी.

4. आर्थिक कारक

5. अन्य गर्भकालीन कारक

ये कारक पूरी दुनिया में लिंगानुपात असंतुलन को गहराई से प्रभावित करते हैं।

जन्म के समय लिंगानुपात और जनसंख्या लिंगानुपात।

जन्म के समय लिंगानुपात और जनसंख्या लिंगानुपात, इन दो शब्दों को स्पष्ट रूप से अलग करने की आवश्यकता है। जन्म के समय यह लिंगानुपात प्रत्येक 100 महिला जन्म के लिए पुरुष लुबर्स की संख्या के रूप में परिभाषित किया गया है। महत्वपूर्ण सांख्यिकी पंजीकरण की अपर्याप्तता के कारण कई आबादी में जन्म के समय लिंग अनुपात के सटीक आंकड़े प्राप्त करना मुश्किल है। विशेष रूप से घर पर होने वाले शब्दों और अवांछित या प्रचुर मात्रा में शिशुओं के जन्म को अक्सर दर्ज किया जाता है। चीन में, एक बच्चा नीति है जो सटीक डेटा संग्रह के लिए विशिष्ट चुनौतियां प्रस्तुत करती है क्योंकि माता-पिता और अधिकारियों के बीच जन्म को छिपाने के लिए टकराव हो सकता है जो नीति के भीतर स्वीकृत नहीं हैं।

पुत्र वरीयता की विशिष्ट मानसिकता

दुनिया भर में कई जगहों पर, सोन वरीयता की परंपरा के कारण लिंग अनुपात इन मानदंडों से विचलित हो गया है। पूर्वी एशिया से लेकर दक्षिण एशिया से लेकर मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका तक के देशों में पुत्र की वरीयता सबसे अधिक प्रचलित है। बेटों को प्राथमिकता दी जाती है क्योंकि, उनके पास विशेष रूप से अर्थशास्त्र में उच्च मजदूरी अर्जन क्षमता होती है, वे परिवार की रेखा को जारी रखते हैं और वे आम तौर पर विरासत के प्राप्तकर्ता होते हैं। दहेज प्रथा के कारण लड़कियों को अक्सर आर्थिक बोझ माना जाता है, शादी के बाद आमतौर पर पित के परिवार का सदस्य बन जाता है, बीमारी और बृढ़ापे में अपने माता-पिता की जिम्मेदारी लेने का मौसम होता है।

पुत्र को वरीयता देने वाली मानसिकता प्रसव पूर्व लिंग निर्धारण और लिंग-चयनात्मक गर्भपात और प्रसवोत्तर उपेक्षा और प्रचुर मात्रा में कन्याओं के माध्यम से प्रकट होती है जिससे महिला मृत्यु दर अधिक होती है। 1980 के दशक के मध्य में प्रसव पूर्व लिंग निर्धारण उपलब्ध होने के बाद से इसने कई एशियाई देशों में देखे गए लिंग अनुपात में असंतुलन में एक बड़ा योगदान दिया है। हालांकि, यह लिंग चयनात्मक प्रौद्योगिकी और छोटे परिवार की संस्कृति का संयोजन है जो उच्चतम लिंग अनुपात का कारण है। जब बड़े परिवार का आकार आदर्श है और गर्भनिरोधक तक पहुंच सीमित है, तो लिंगानुपात पर प्रभाव d वरीयता का बहुत कम प्रभाव पड़ता है क्योंकि जोड़े बच्चों को पहनना जारी रखते हैं, बड़े पैमाने पर बच्चों के लिंग पर ध्यान दिए बिना। ऐसे समाज में नवजात लड़िकयों की कन्या भ्रूण हत्या और बेटियों की उपेक्षा का इस्तेमाल परिवार में पुरुष से महिला अनुपात को बढ़ाने के लिए किया गया है, खासकर ऐसी स्थिति में जहां गरीबी ने वांछित बच्चों की संख्या सीमित कर दी है। जब परिवार के आकार का मानदंड मध्यम होता है और केवल गर्भनिरोधक विधियां उपलब्ध होती हैं, तो जोड़े अपने मौजूदा बच्चों के लिंग वितरण पर विचार कर सकते हैं और यह तय कर सकते हैं कि परिवार नियोजन का उपयोग उनके वांछित परिवार के आकार के मुकाबले बेटे की आवश्यकता को तौलना है या नहीं। हालाँकि, जब प्रजनन दर कम होती है, तो पसंद या सवाल से, परिवार के आकार के मानदंड के भीतर बेटों की वांछित संख्या की अनुमित देने के लिए महिला जन्म को रोका जाना चाहिए।

लिंगानुपात पर पुत्र वरीयता का प्रभाव

बेटों की वरीयता ज्यादातर गांवों में, अशिक्षित परिवारों में लिंगानुपात को प्रभावित करती है। हमारे समाज के अशिक्षित लोगों ने सोचा कि लड़के अपने परिवार का नाम जारी रखेंगे जबिक बेटियां शादी करके दूसरे के घर चली जाएंगी। और इससे भी बुरा असर आजकल युवाओं को दुल्हन खोजने में हो रही है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह डॉ. आर्डले एस. डी.

है कि पुरुषों के लिए समान सामाजिक और आर्थिक अधिकार। स्वास्थ्य सेवा नि:शुल्क उपलब्ध होनी चाहिए, तािक माता-पिता अपनी बेटियों के लिए स्वास्थ्य देखभाल की मांग करने से वित्तीय बाधाओं से विचलित न हों। इसके अलावा, वृद्धावस्था में माता-पिता की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए, आपके द्वारा मापी जाने वाली विशेष सहायता बिना पुत्र वाले परिवारों के लिए प्रदान की जानी चाहिए।

असंतुलित लिंगानुपात समाज का भविष्य

भविष्य में असंतुलित लिंगानुपात के कारण समाज को कई बड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। पुरुषों को महिलाओं की जरूरत होती है, और उन्हें बुरा लगेगा कि वे महिलाओं को हर भूमिका यानी साथी आसानी से नहीं पा सकेंगे। हमारे समाज के पुरुषों को महिलाओं की कमी मिलेगी और कुछ पुरुषों को अपने जीवन में महिलाओं के बिना रहना होगा। पुरुषों को ज्यादातर महिलाओं के काम करने होंगे और उन्हें अपने परिवार के लिए महिलाओं की भूमिका निभानी होगी। बेटियाँ, औरतें नहीं होंगी तो मर्दों का जीवन अधूरा रहेगा।

निष्कर्ष

इसलिए यहाँ स्पष्ट संकेत हैं कि दृष्टिकोण में आवश्यक मौलिक परिवर्तन होने लगा है। हमारा मानना है कि इस उच्च लिंगानुपात वाले देशों में जनसंख्या लिंगानुपात और जन्म के समय लिंगानुपात दोनों में अगले 2 से 3 दशकों में धीरे-धीरे गिरावट आएगी; हालांकि आज के युवा पुरुषों और लड़कों की एक बड़ी संख्या के लिए नुकसान पहले ही किया जा चुका है।

Reference

- 1. Visaria PM. The sex ratio of the population in India Census Monography. 1971 No.10, New Delhi
- 2. Miller B.D. Changing patterns of Juvenile Sex Ratios in Rural India, 1961 to 1971.
- 3. https://en.wikipedia.org/wiki/Human_sex_ratio

DAAR C

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Peer Reviewed Bi-Monthly

Vol.2 Issue.15 May-June-2022

लिंग और घरेलू हिंसा।

डॉ. चिताडे एन. पी.

अर्थशास्त्र विभाग, जनविकास महाविद्यालय बनसारोळा

संशोधन सारांश:

महात्मा ज्योतिबा फुले के अनुसार एक महिला जो सामान्य रूप से परिवार और समाज की आधारिशला रही है जो जीवन को जन्म देती है, जीवन का पोषण करती है, इसे आकार देती है और इसे मजबूत करती है, जो परंपरा का संवाहक है और एक साधन है जिसके माध्यम से संस्कृति को संरक्षित और प्रसारित किया जाता है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी, हमारे देश में सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि उसके साथ घोर अन्याय किया जाता है। मानव अधिकार में स्त्री और पुरुष दोनों समान हैं। पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं के साथ भेदभाव किया जाता है। परिणामस्वरूप अधिकांश महिलाएं अपने अधिकार और स्वतंत्रता को समझने में असमर्थ हैं। वह अपनी उम्र, नस्ल और जाति, सामाजिक और आर्थिक और राजनीतिक स्थिति के बावजूद घरेलू हिंसा के अधीन है। विभिन्न रूपों में उसकी भेद्यता भारतीय समाज में सामान्य घटना है। एक महिला की खामोश पीड़ा उसे पुरुष वर्चस्व का आसान शिकार बना रही है जिसे प्रचलित पितृसत्ता का समर्थन प्राप्त है। समाज में पुरुष सदस्य का आधिकारिक, निरंकुश स्वभाव और महिला का उत्पीड़न स्थिति को बदतर बना देता है। भारत में लगभग हर घर किसी न किसी तरह की घरेलू हिंसा से पीड़ित होना चाहिए जहां महिलाओं को या तो बेटी, बहू या पत्नी के रूप में शारीरिक, मानसिक, मौखिक रूप से आर्थिक रूप से प्रताड़ित किया जाता है।

प्रास्ताविक:

"महिलाओं के खिलाफ हिंसा पुरुषों और महिलाओं के बीच ऐतिहासिक रूप से असमान शक्ति संबंधों की अभिव्यक्ति है, जिसके कारण पुरुषों द्वारा महिलाओं पर वर्चस्व और भेदभाव किया गया है और महिलाओं की पूर्ण उन्नति को रोका गया है" घरेलू हिंसा शारीरिक, यौन है या घर में किसी के पित या पत्नी, साथी या पिरवार के अन्य सदस्य के प्रति निर्देशित मनोवैज्ञानिक दुर्व्यवहार। घरेलू हिंसा तब होती है जब पिरवार का कोई सदस्य, साथी या पूर्व साथी शारीरिक या मनोवैज्ञानिक रूप से दूसरे पर हावी होने या नुकसान पहुंचाने का प्रयास करता है। यह सभी संस्कृतियों में होता है, सभी जातियों और धर्मों के लोग घरेलू हिंसा के अपराधी हो सकते हैं। महिलाओं के खिलाफ हिंसा विशेष रूप से अंतरंग साथी हिंसा है और महिलाओं के खिलाफ यौन हिंसा प्रमुख सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्याएं और महिलाओं के मानवाधिकारों का उल्लंघन है।

महिलाओं के खिलाफ होने वाली हिंसा के लिए कई कारक जिम्मेदार हैं। तेजी से, अनुसंधान ने विभिन्न कारकों की अंतर-संबंधितता पर ध्यान केंद्रित किया है जिससे विभिन्न सांस्कृतिक संदर्भों में समस्या की हमारी समझ में सुधार होना चाहिए। कई जटिल और परस्पर संस्थागत सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों ने महिलाओं को विशेष रूप से उन पर निर्देशित हिंसा के प्रति संवेदनशील बना दिया है, ये सभी पुरुषों और महिलाओं के बीच ऐतिहासिक रूप से असमान शक्ति संबंधों की अभिव्यक्तियाँ हैं। इन असमान शक्ति संबंधों में योगदान करने वाले कारकों में शामिल हैं: सामाजिक आर्थिक ताकतें, पारिवारिक संस्था जहां सत्ता संबंध लागू होते हैं, महिला कामुकता का डर और नियंत्रण, पुरुषों की अंतर्निहित श्रेष्ठता में विश्वास, और कानुन और सांस्कृतिक प्रतिबंध जो पारंपरिक रूप से महिलाओं

और बच्चों को वंचित करते हैं। स्वतंत्र कानूनी और सामाजिक स्थिति। घरेलू हिंसा के निम्नलिखित कारण हैं: क) सांस्कृतिक ख) आर्थिक ग) कानूनी घ) राजनीतिक।

"महिलाओं के खिलाफ घरेल हिंसा" शब्द का अर्थ किसी भी कार्य या आचरण से है जिसमें घर की चार दीवारों के भीतर शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से भी महिलाओं को चोट पहुंचाने या चोट पहुंचाने की क्षमता है, हालांकि, ऐसा कार्य या आचरण आमतौर पर नहीं किया जाता है अजनिबयों द्वारा। 'घरेलू हिंसा परिवार की सीमाओं के भीतर महिलाओं का हिंसक उत्पीड़न है, आमतौर पर पुरुषों द्वारा। घरेलू हिंसा ज्यादातर मामलों में घर के सदस्यों द्वारा महिलाओं के खिलाफ हिंसा होती है जहां वह रहती है। यह पति, उसके माता-पिता, या भाई-बहन या कोई अन्य निवासी हो सकता है, जिसके पास उन कार्यों के लिए खुला या गुप्त अक्षांश है जो महिलाओं को शारीरिक या मानसिक पीड़ा दे सकते हैं ... यह बंद दरवाजों के पीछे होता है और अक्सर महिलाओं द्वारा इनकार किया जाता है हिंसा का शिकार हुआ है।' पिछले दो दशकों में, भारतीय महिला आंदोलन ने महिलाओं के खिलाफ हिंसा के प्रति बढ़ती जन जागरूकता में योगदान दिया है। हिंसा के विभिन्न कृत्यों को संबोधित करने के लिए महिला कार्यकर्ताओं ने आपराधिक संहिता और पुलिस प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण बदलाव के लिए लामबंद और दबाव डाला है। उदाहरण के लिए, 1980 के दशक के दौरान, भारतीय समाज ने दहेज हत्या, हिरासत में बलात्कार, महिलाओं के अपहरण, सती और बच्चों के लिंग चयन के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले एमनियोसेंटेसिस, सार्वजनिक स्थानों पर युवा लड़कियों और महिलाओं के यौन उत्पीड़न, तस्करी के खिलाफ महिला संगठनों द्वारा कई विरोध प्रदर्शन देखे। और वेश्यावृत्ति। महिलाओं के खिलाफ घरेलू हिंसा की लगातार धारणा यह है कि यह वैवाहिक संबंधों के भीतर वयस्क महिलाओं पर होने वाले शारीरिक नुकसान तक ही सीमित है। हालांकि यह समझ महिलाओं के अनुभव के एक बड़े ब्रह्मांड को पकड़ सकती है, यह इस धारणा पर आधारित है कि महिलाएं मुख्य रूप से एकल परिवारों में रहती हैं। विभिन्न संस्कृतियों में, संयुक्त परिवारों से लेकर एकल परिवारों से लेकर एकल माता-पिता परिवारों तक विभिन्न प्रकार के रहने की व्यवस्था है।

निष्कर्ष:

अंत में, महिलाओं के खिलाफ हिंसा समुदाय में असुरक्षा और भय की भावना पैदा करती है। सिक्रिय रूप से व्यापक देखभाल प्रदान करके जिटल मुद्दे से निपटा जा सकता है। जिला अस्पताल में एक छत के नीचे समग्र देखभाल प्रदान करने के लिए मनोसामाजिक सहायता तक पहुंच सिहत एक बहु-आयामी और बहु-एजेंसी टीम उपलब्ध कराई जानी है। साथ ही सभी स्कूलों और कॉलेजों में जीवन कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम, लिंग संवेदीकरण और यौन शिक्षा जैसे प्राथमिक रोकथाम कार्यक्रमों को लागू करने से काफी मदद मिलेगी।

डब्ल्यूएचओ इंगित करता है कि अंतरंग साथी हिंसा, यौन हिंसा, या उनके आत्मघाती व्यवहार के शिकार लोगों को पहचानना आवश्यक है। महिलाओं के प्रति हिंसा के व्यक्तिगत मामले अक्सर सबसे पहले स्वास्थ्य देखभाल प्रदाताओं के ध्यान में आते हैं। मनो-सामाजिक देखभाल आम तौर पर उपलब्ध नहीं होती है और यह बहुत आवश्यक व्यापक देखभाल के मामले में एक बड़ा अंतर छोड़ देती है।

संदर्भ सूचि :

- 1) National Crimes Record Bureau, Ministry of Home Affairs, India. 1995.
- 2) Crime in India. New Delhi: Government of India.
- 3) National Committee on Violence against Women (NCVAW). 1993.
- 4) National Strategy on Violence against Women.
- 5) "Wife-beating in rural south India: A qualitative and econometric analysis." Social Science and Medicine

DAAR S

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Peer Reviewed Bi-Monthly

Vol.2 Issue.15 May-June-2022

महिला और उद्यमिता

डॉ. कार्तिक अरोड़ा

सहायक प्रोफेसर अर्थशास्त्र, गव्हर्मेंट कॉलेज, सिवानी, भिवानी (हरियाणा) Email- karoraeco@gmail.com

संशोधन सारांश:

भारत में महिलाएं नई उद्यमी हैं। महिला उद्यमी उद्योगों को नवीन उत्पाद बना रही हैं और अंततः दुनिया को बदल रही हैं। महिला उद्यमियों की सबसे प्रशंसनीय बात यह है कि वे वास्तव में इसे अपने नियमों से कर रही हैं। महिला उद्यमियों को महिलाओं या महिलाओं के समूह के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो एक व्यावसायिक उद्यम की शुरुआत, आयोजन और सहयोग करते हैं। भारत सरकार ने महिला उद्यमियों को एक महिला के स्वामित्व और नियंत्रित उद्यम के रूप में परिभाषित किया है, जिसमें पूंजी का न्यूनतम वित्तीय हित 51% है और उद्यम में उत्पन्न रोजगार का कम से कम 51% महिलाओं को देना है। भारतीय महिलाओं को कॉर्पोरेट जगत को संभालने या सामना करने के लिए बहुत ही घरेलू, काफी, आक्रामक, अंतर्मुखी, शर्मीली और अक्षम माना जाता था। भारतीय महिलाओं ने बहुत संघर्ष किया है क्योंकि उन्होंने अपने जन्म के दिन से या जन्म से पहले क्रूर व्यवहार, महिलाओं पर हिंसा, शिक्षा के मामले में असमान व्यवहार, कमाई का सामना किया है। उन्हें घर का काम संभालना था और उन्हें घर से बाहर निकलने का डर था। लेकिन आज की अधिकांश महिलाएं ऊपर नहीं हैं, वे अब अधिक आत्मविश्वासी, अभिनव, शिक्षित, प्रतिभाशाली, एक बेहतर आयोजक, एक पूर्णतावादी और बहुत कुछ हैं। ये महिलाएं अन्य सभी महिलाओं के लिए एक प्रेरणा हैं जो अपने जीवन में महान ऊंचाइयों को प्राप्त करने का प्रयास करती हैं। उन्हें रोल माँडल के रूप में लेते हुए हर कोई वहां हो सकता है, जहां वे अभी हैं। उन्हें बस अपने आप में विश्वास, आत्मविश्वास और सबसे बढ़कर एक निश्चित लक्ष्य की जरूरत है, जिसके लिए काम करने की जरूरत है।

मुख्य शब्द : महिला, उद्यमी, रोजगार, नवाचार, सरकार, भारत।

प्रस्ताविक :

उद्यमिता क्या है?

उद्यमिता बाजार में अवसरों की पहचान करने, इन अवसरों का पीछा करने के लिए आवश्यक संसाधनों को मार्शल करने और दीर्घकालिक लाभ के अवसरों का फायदा उठाने के लिए संसाधनों का निवेश करने की प्रक्रिया है। इसमें विजुअलाइज़ेशन, संगठन, विचार निर्माण, नवाचार, जोखिम वहन, निर्णय लेना, योजना बनाना आदि शामिल हैं। जब ये सभी क्षमताएं एक महिला में होती हैं और उसे दिखाने के लिए उसे सही मंच मिलता है, तो कोई आश्चर्य नहीं कि वह पुरुष उद्यमियों से बेहतर कर सकती है। सदियों से हमारे समाज की धारणा यह थी कि महिलाएं परिवार को संभालने के लिए होती हैं और घर का पुरुष सदस्य कमाई के लिए जिम्मेदार होता है। जमाना बदल गया और सोच भी। भारतीय लगभग हर क्षेत्र में पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित थे और उनकी विचारधाराओं को अपनाने लगे। यह भारतीय महिलाओं के लिए खुद को साबित करने के लिए एक जैकपॉट की तरह था। और उन्होंने इसे हर क्षेत्र में सफलतापूर्वक किया। उन्होंने कुछ क्षेत्रों पर भी हावी होना शुरू कर दिया है उदा। शिक्षा प्रणाली में लड़िकयों ने लगातार लड़कों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन किया है। कॉरपोरेट क्षेत्र में भी लड़िकयों को अपने क्षेत्र में अधिक मेहनती और समर्पित माना जाता है। बदलते चलन के साथ; लड़िकयां अपनी आय से पूरे परिवार की आजीविका का भरण-

डॉ. कार्तिक अरोड़ा

पोषण भी कर रही हैं। उन्होंने साबित कर दिया है कि वे तुलना में पुरुषों से कम नहीं हैं; चाहे वह काम हो, प्रदर्शन हो या उपलब्धियां और किसी भी क्षेत्र में - कॉर्पोरेट, खेल या राजनीति।

अखिला श्रीनिवासन, प्रबंध निदेशक, श्रीराम इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड राजश्री पथी, अध्यक्ष, राजश्री शुगर्स एंड केमिकल्स लिमिटेड चंदा कोचर, कार्यकारी निदेशक, आईसीआईसीआई बैंक रंजना कुमार, अध्यक्ष, नाबार्ड एकता कपुर, क्रिएटिव डायरेक्टर, बालाजी टेलीफिल्म्स रवीना राज कोहली, मीडिया हस्ती और पूर्व अध्यक्ष, स्टार न्युज ज्योति नाइक, अध्यक्ष, लिज्जत पापड़ रेणुका रामनाथ, सीईओ, आईसीआईसीआई वेंचर्स किरण मजूमदार-शॉ, अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक, बायोकॉन रितु कुमार, फैशन डिजाइनर ललिता डी गुप्ते, संयुक्त प्रबंध निदेशक, आईसीआईसीआई बैंक रितु नंदा, सीईओ, एस्कोलाइफ नीलम धवन, प्रबंध निदेशक, माइक्रोसॉफ्ट इंडिया शहनाज हुसैन, सीईओ, शहनाज हर्बल्स नैना लाल किदवई, डिप्टी सीईओ, एचएसबीसी शरण अप्पाराव, मालिक, अप्पाराव गैलरी मल्लिका श्रीनिवासन, वर्तमान में TAFE की निदेशक सिमोन टाटा, अध्यक्ष, ट्रेंट लिमिटेड प्रीता रेड्डी, प्रबंध निदेशक, अपोलो अस्पताल सुलज्जा फिरोदिया मोटवानी, ज्वाइंट एमडी, काइनेटिक इंजीनियरिंग प्रिया पॉल, चेयरमैन, एपीजे पार्क होटल्स तारजानी वकील, पूर्व अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक, एक्जिम बैंक भारत में महिला उद्यमियों की समस्याएं महिलाओं की खराब आत्म छवि व्यापार की जानकारी और अनुभव का अभाव अपर्याप्त प्रेरणा आर्थिक स्वतंत्रता का अभाव भेदभावपूर्ण उपचार जोखिम वहन करने की क्षमता दोषपूर्ण समाजीकरण भूमिका संघर्ष पारिवारिक समस्याओं में भारी भागीदारी सांस्कृतिक मूल्य साहस और आत्मविश्वास की कमी अपर्याप्त प्रोत्साहन पुरुष प्रधान समाज सामाजिक स्वीकृति का अभाव अन्यायपूर्ण सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक व्यवस्था अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अभाव व्यवहार्य अवधारणा का अभाव असफलताओं और आलोचनाओं से डरना नकारात्मक दृष्टिकोण के प्रति संवेदनशील श्रम की कम गरिमा महिला उद्यमियों को सशक्त बनाने वाले राष्ट्रीय संगठन महिला उद्यमियों को सशक्त बनाने वाले राष्ट्रीय संगठन

- 1. FIWE: भारतीय महिला उद्यमियों का संघ: दिल्ली से बाहर, FIWE की स्थापना 1993 में हुई थी। अब इसके 15000 से अधिक सदस्य और लगभग 28 सदस्य संघ हैं। इस संगठन का उद्देश्य तकनीकी जानकारी, उद्योग अनुसंधान, विशेषज्ञता और कौशल विकास पर प्रशिक्षण के माध्यम से महिला उद्यमियों को सशक्त बनाने में मदद करना है। वे बड़े पैमाने पर एसएमई (लघु और मध्यम उद्यम) खंड पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
- 2. TREAD: व्यापार संबंधी उद्यमिता सहायता और विकास: MSME (सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम) मंत्रालय महिलाओं के सामने आने वाली विकास संबंधी बाधाओं को दूर करने में मदद करने के लिए शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में एक योजना चलाता है। यह संगठन गैर-कृषि गतिविधियों में महिलाओं को व्यापार के संबंध में जानकारी और परामर्श प्रदान करके उनके उद्यमिता कौशल को विकसित करने में मदद करता है।
- 3.CWEIE: भारत की महिला उद्यमियों का संघ: क्षेत्र में एक अग्रणी संगठन, सीडब्ल्यूईआई संयुक्त राष्ट्र महिला, एमएसएमई मंत्रालय और ग्रामीण विकास मंत्रालय के साथ काम करता है। वे महिला उद्यमियों की सहायता से संबंधित सभी पहलों में सबसे आगे हैं उन्हें बेहतर विपणन कौशल सीखने में मदद करें, शहरी संगठनों के साथ उन्हें एकीकृत करने के लिए आदिवासी और पिछड़ी महिलाओं के साथ काम करें और महिलाओं द्वारा संचालित व्यवसायों के लिए वित्तपोषण की व्यवस्था करने के लिए नए और अभिनव तरीकों को तैयार करें।
- 4. टाई द्वारा स्त्री शक्ति: सिंधु उद्यमी आंदोलन 'स्त्री शक्ति' का उद्देश्य समाज के विभिन्न वर्गों की उद्यमी महिलाओं को ऑन-ग्राउंड केंद्रित कार्यक्रमों की एक श्रृंखला के माध्यम से जोड़ना और सक्षम करना है। वे सलाह देने, शिक्षित करने और प्रेरणा प्रदान करने में एक अग्रणी संगठन हैं।

- 5. NWEA: नोएडा महिला उद्यमी संघ: इसे नोएडा में व्यवसायी महिलाओं की मदद के लिए स्थापित किया गया था। संगठन अपने सदस्यों के लिए एक संरक्षक की भूमिका निभाता है।
- 6. गोवा सरकार: गोवा राज्य सरकार महिलाओं को स्वरोजगार में सहायता के लिए विभिन्न योजनाएं चलाती है। उद्योग निदेशालय द्वारा चलाई जा रही ऐसी ही एक योजना महिलाओं को पूंजी योगदान में वृद्धि जैसे वित्तीय लाभ देकर लाभान्वित करने में मदद करती है।

निष्कर्ष

फोर्ब्स में जैक ज़ेंगर और जोसेफ फोकमैन द्वारा बहुत अच्छी तरह से कहा गया है, "महिलाएं पुरुषों की तुलना में बेहतर नेता बनाती हैं, वे बेहतर टीमों का निर्माण करती हैं, उन्हें प्रबंधकों के रूप में अधिक पसंद और सम्मानित किया जाता है; वे सहज और तार्किक सोच को अधिक सहजता से संयोजित करने में सक्षम होते हैं; वे अपने और दूसरों के कार्यों के प्रभावों के बारे में अधिक जागरूक हैं; और वे किसी दिए गए परिणाम को प्राप्त करने के लिए आवश्यक संसाधनों के बारे में अधिक सटीक रूप से सोचते हैं," महिलाएं भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। उनके पास वह क्षमता और शिक्षा है। उन्हें केवल उपयुक्त वातावरण और गति की आवश्यकता है। अन्य उद्यमियों के साथ नेटवर्किंग और इंटरनेट तक पहंच होने से महिला उद्यमियों के लिए अवसर पैदा करने में मदद मिलती है। विशेष रूप से, इंटरनेट नेटवर्किंग के नए तरीके प्रदान करता है जो अस्थायी और भौगोलिक को समाप्त करता है जो सूचना और संसाधनों तक महिलाओं की पहुंच को सीमित कर सकता है। यू.के. में, 78 प्रतिशत इंटरनेट उपयोगकर्ता महिलाएं हैं, जबिक भारत में यह 7 प्रतिशत से भी कम है। उच्च क्षमता वाली महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए प्रौद्योगिकी एक आवश्यक घटक है। जबकि अनुसंधान और विकास सफल विकास की गारंटी नहीं देता है, व्यवस्थित अनुसंधान गतिविधि के बिना, नए उत्पाद विकास और भविष्य की वृद्धि बाधित होगी। प्रौद्योगिकी ने इसे कई सामाजिक और शारीरिक बाधाओं को भी सस्ता कर दिया है, जिन्हें महिलाओं को अपना व्यवसाय शुरू करने और उन्हें आवश्यक संसाधनों से जोड़ने के लिए दूर करना होगा। हाल के वर्षों में, संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान और कनाडा जैसे विकसित देशों में भी, महिलाओं की भूमिका छोटे व्यवसाय में उनकी हिस्सेदारी के मामले में बढ़ रही है। जापान में महिला उद्यमियों की संख्या पुरुष से अधिक है। इसलिए भारत सरकार को भी यह स्वीकार करना चाहिए कि कोई देश बिना विकास के नहीं हो सकता है

अर्थव्यवस्था में अपनी महिलाओं का योगदान। सरकार जो भी हो करना काफी नहीं है, महिलाओं के लिए अच्छी योजनाएं और उसी का क्रियान्वयन समय की जरूरत है। सरकार महिला उद्यमी को अलग से वित्तीय निधि प्रदान करनी चाहिए, उसे जो कुछ भी चाहिए, उसे विशेष बुनियादी सुविधाएं प्रदान करना चाहिए। सरकार महिला उद्यमिता के कौशल और व्यावसायिक गुणों को विकसित करने के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों की व्यवस्था करनी चाहिए।

संदर्भ

- 1. बत्रा. यु. महिला साक्षरता एवं सामाजिक परिवर्तन जयपूर मार्क पब्लिशर २०१२.
- 2. छापडीया एम स्त्री शिक्षा और सामालजक गतिशीलता, नई दिल्ली २००८.
- 3. http://www.entrepreneur.com
- 4. http://www.womensweb.in
- 5. http://www.voiceof.india.com
- 6. http://www.entrepreneur.com

DIANK .

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Vol.2 Issue.15 May-June-2022

Peer Reviewed Bi-Monthly

भारत में लैंगिक असमानता

डॉ. कार्तिक अरोड़ा

सहायक प्रोफेसर अर्थशास्त्र, गव्हर्मेंट कॉलेज, सिवानी, भिवानी (हरियाणा)

Email- karoraeco@gmail.com

संशोधन सारांश:

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, आधुनिकीकरण के बाद के युग में, जिन मुद्दों ने नीति निर्माताओं और सामाजिक वैज्ञानिकों का ध्यान आकर्षित किया था, उनमें से एक था लैंगिक मुद्दे और चिंताएँ। जेंडर मुद्दों का मतलब पुरुषों और महिलाओं दोनों पर चर्चा है, हालांकि वे महिलाएं जो लैंगिक असमानता से पीड़ित हैं। सभी लिंग मुद्दों से, भारत में लैंगिक असमानता सबसे अधिक प्रचलित है। लैंगिक असमानता पर विचार अब सरकारी, गैर-सरकारी संगठनों और भारत की राजनीति में आम है। नीति निर्माताओं का दृढ़ विश्वास है कि लैंगिक समानता और समानता के प्रति सकारात्मक प्रतिबद्धता गरीबी को कम करने के लिए कार्रवाई के हर क्षेत्र को मजबूत करेगी क्योंकि महिलाएं नई ऊर्जा और नई दृष्टि ला सकती हैं। पिछले कुछ दशकों से महिलाओं और उनके विकास पर बहुत बहस चल रही है। इस प्रकार, कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठन महिलाओं की उन्नति और विकास प्रक्रिया में उनकी पूर्ण भागीदारी को बढ़ावा देने और महिलाओं के खिलाफ सभी प्रकार की असमानता को खत्म करने का प्रयास कर रहे हैं। नारीवाद का महत्व लगातार बढ़ रहा है और बौद्धिक वैधता प्राप्त कर रहा है। इसलिए, यह पेपर भारत में लैंगिक असमानता के मुद्दों पर प्रयास करता है।

मुख्य शब्द : लिंग असमानता, लिंग।

प्रास्ताविक:

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की मानव विकास रिपोर्ट 2013 के अनुसार, लिंग असमानता सूचकांक में भारत 187 देशों में से 132वें स्थान पर है - पाकिस्तान से कम (123)। रिपोर्ट में कहा गया है कि अफगानिस्तान को छोड़कर दक्षिण एशिया के सभी देश बेहतर थे। भारत की तुलना में महिलाओं के लिए स्थान, श्रीलंका (75) उन सभी में सबसे ऊपर है। नेपाल 102वें और बांग्लादेश 111वें स्थान पर है। लैंगिक असमानता विशेष रूप से दुखद है क्योंकि यह न केवल महिलाओं को बुनियादी सामाजिक अवसरों से बाहर करती है, बल्कि इसलिए भी कि यह आने वाली पीढ़ियों के जीवन की संभावनाओं को गंभीर रूप से खतरे में डालती है। भारतीय परिवार अक्सर लड़िकयों की तुलना में लड़कों को पसंद करते हैं, और कन्या भ्रूण हत्या दुखद रूप से आम है। 2011 में 15 वर्ष से अधिक आयु की केवल 29% भारतीय महिलाएं 80.7 प्रतिशत पुरुषों की तुलना में देश की श्रम शक्ति का हिस्सा थीं। संसद में केवल 10.9% विधायक महिलाएं हैं, जबिक पाकिस्तान में 21.1% महिलाएं हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में जो सूची में 42वें स्थान पर है, 57.5% महिलाएं और 70.1% पुरुष श्रम शक्ति का हिस्सा हैं। चीन ने और भी बेहतर प्रदर्शन किया, 35वें स्थान पर रहा।

साहित्य की समीक्षा:

रुस्तगी, पी. (2005) ने आय और मजदूरी में लैंगिक असमानताओं को दूर करने की दिशा में आर्थिक विकास और महिलाओं की आर्थिक भागीदारी को बढ़ाने की क्षमता का निष्कर्ष निकाला है, जब तक कि महिलाओं की भूमिका और योगदान के प्रति दृष्टिकोण को बदलने के ठोस प्रयासों का समर्थन नहीं किया जाता है, जो कि विभिन्न एजेंटों द्वारा आश्रय दिया जाता है। श्रम बाजार।

थॉमस, आर.ई. (2013) ने आधुनिक भारत में लिंग आधारित असमानता की स्थिति के साथ अपने पेपर पर प्रकाश डाला है। इसने कुछ तथ्यों और संकेतों की मदद से लैंगिक असमानता को प्रस्तुत किया है और भारत में प्रचलित असमानता और अन्य एशियाई और पश्चिमी देशों के साथ इसकी तुलना का प्रतिनिधित्व किया है।

जयचंद्रन, एस. (2014) ने विकासशील देशों में लैंगिक असमानता की जड़ें प्रस्तुत की हैं। इस पत्र में कई तंत्रों पर भी चर्चा की गई है जिसके माध्यम से आर्थिक विकास महिलाओं के सापेक्ष परिणामों में सुधार कर सकता है और देश के विकास के साथ लिंग अंतर को कम किया जा सकता है।

अध्ययन का उद्देश्य:

- 1) भारत में लैंगिक असमानता के मुद्दों की पहचान करना।
- 2) लैंगिक असमानता को कम करने के लिए सुझाव देना।

कार्यप्रणाली:

प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है जो पुस्तकों, पत्रिकाओं, लेखों और इंटरनेट स्रोतों आदि से एकत्र किए गए हैं।

भारत में लैंगिक असमानता के मुद्दे:

शिशु जीवन प्रत्याशा: दुनिया के दो सबसे अधिक आबादी वाले देशों, भारत और चीन में, महत्वपूर्ण डेटा है जो पांच साल से कम उम्र की लड़िकयों के लिए जीवित रहने के नुकसान को दर्शाता है। चीन में, लड़कों की तुलना में लड़िकयों की शिशु मृत्यु दर सात प्रतिशत अधिक है, और भारत में, 2000 के पहले दशक में किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि एक वर्ष की आयु के बीच मृत्यु का जोखिम लड़कों की तुलना में लड़िकयों के लिए प्रतिशत अधिक है।

प्रसव पूर्व देखभाल और मातृ मृत्यु दर तक पहुंच: 2017 तक, विकासशील देशों में प्रजनन आयु की 1.6 बिलियन महिलाएं हैं। 2017 में जन्म देने वाली 127 मिलियन महिलाओं में से केवल 63 प्रतिशत ने न्यूनतम चार प्रसवपूर्व देखभाल का दौरा किया और केवल 72 प्रतिशत ने स्वास्थ्य सुविधा में जन्म दिया। जिन महिलाओं को गर्भावस्था या प्रसव के दौरान चिकित्सीय जटिलताओं का सामना करना पड़ा, उनमें से केवल तीन में से एक को वह देखभाल मिली जिसकी उन्हें या उनके नवजात शिशुओं को जरूरत थी। 2017 में, विकासशील देशों में अनुमानित 308,000 महिलाओं की गर्भावस्था से संबंधित कारणों से मृत्यु हो गई और 2.7 मिलियन शिशुओं की उनके जीवन के पहले महीने में मृत्यु हो गई। इनमें से कई मौतों को स्वास्थ्य देखभाल की पूर्ण पहुंच के साथ रोका जा सकता था।

शिक्षा: 40 प्रतिशत से भी कम देश लड़िकयों और लड़कों को शिक्षा तक समान पहुँच प्रदान करते हैं और केवल 39 प्रतिशत देशों में माध्यमिक शिक्षा में नामांकित लिंगों का समान अनुपात है। वयस्क आबादी में सार्वभौमिक प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने से 42 करोड़ से अधिक लोगों को गरीबी से बाहर निकालना संभव हो सकता है। इसका सबसे ज्यादा असर उन महिलाओं और लड़िकयों पर पड़ेगा जो एम . हैं

संदर्भ ग्रंथसूची:

- Reshma Elizabeth Thomas (2013) Gender Inequality In Modern India –Scenario and Solutions, Journal Of Humanities And Social Science, Volume 13, Issue 3 - PP 48-50 e ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
- 2. Priti Jha Niti Nagar (2015) A Study of Gender Inequality in India, The International Journal of Indian Psychology ISSN 2348-5396 (e) | ISSN: 2349-3429 (p) Volume 2, Issue 3,
- **3.** Seguino, Stephanie. (2006). "Gender Equality and Economic Growth: A Cross-Country Analysis", World and Development, Vol. 28, No. 7, pp. 67-71.

डॉ. कार्तिक अरोड़ा

DANK TO BE A STATE OF THE STATE

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Vol.2 Issue.15 May-June-2022

Peer Reviewed Bi-Monthly

भारत के आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका

सुनिल कुमार

गव्हर्मेंट कॉलेज, सिवानी, भिवानी (हरियाणा) Email – <u>sfandanjrf2010@gmail.com</u>

संशोधन सारांश:

अविकसित देशों में महिलाओं का सशक्तिकरण एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। भले ही महिलाएं किसी भी समाज का अभिन्न अंग होती हैं, फिर भी आर्थिक गतिविधियों में उनके सिक्रय योगदान के उपयोग से निर्णय लेने में उनकी भागीदारी कम होती है। महिला सशक्तिकरण और आर्थिक विकास आपस में जुड़े हुए हैं, जहां एक तरफ अकेले विकास महिलाओं और पुरुषों के बीच असमानता को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, जबिक दूसरी ओर महिलाओं को सशक्त बनाने से विकास को फायदा हो सकता है। यह पेपर भारत के विभिन्न राज्यों के आर्थिक विकास के लिए कार्यबल में महिलाओं की भूमिका का खुलासा करता है।

मुख्य शब्द : महिला सशक्तिकरण, आर्थिक विकास, लिंग और विकास, महिला भूमिका, महिलाओं का रोजगार। प्रास्ताविक :

भारत में महिलाओं की भूमिका शिक्षा की स्थिति, सामाजिक स्थिति और भौगोलिक स्थिति जैसे विभिन्न चरों पर निर्भर है। देश के आर्थिक विकास में महिलाओं को शामिल करना महिला सशक्तिकरण के रूप में जाना जाता है। महिला सशक्तिकरण को विशेष रूप से स्वास्थ्य, शिक्षा, कमाई के अवसरों, अधिकारों और राजनीतिक भागीदारी में प्रगित के घटकों तक महिलाओं की पहुंच बढ़ाने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया गया है। हालांकि, महिलाओं के अधिकारों, विशेष रूप से यौन और जनरेटिव स्वास्थ्य अधिकारों को सार्वभौमिक रूप से अधिकारों के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता है, और महिलाओं के खिलाफ हिंसा दुनिया भर में प्रचलित है। और महिलाओं को अभी भी आर्थिक और राजनीतिक जीवन में पूर्ण और समान भागीदारी का अभाव है। मुख्यधारा में आना अभी बाकी है, और विकास में महिलाओं को एकीकृत करने की निरंतर प्राथमिकता की आवश्यकता है। विश्व आर्थिक मंच के जेंडर गैप इंडेक्स के 135 में से भारत 113वें स्थान पर है। भारत की 2011 की जनगणना के अनुसार, छह साल से कम उम्र के बच्चों के लिए लिंगानुपात 914 महिलाओं से 1,000 पुरुषों का था, 2001 में 927 से भारी

महिलाओं को उनकी क्षमता का एहसास करने के अवसरों से इनकार करना मानव पूंजी की बर्बादी है और आर्थिक प्रगित में बाधा है। जब हम एक महिला को शिक्षित और सशक्त बनाते हैं, तो हम एक श्रृंखला प्रतिक्रिया शुरू करते हैं जो उसके परिवार और उस समुदाय के जीवन को बदल देती है जिसमें वह रहती है। इसलिए, यह पेपर देश के आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका पर प्रकाश डालता है और बाधाओं को दूर करने का भी सुझाव देता है। महिला सशक्तिकरण को बढ़ाने के लिए।

गिरावट। आर्थिक विकास में भारतीय महिलाओं की रैंकिंग 0.3 है, जहां 1.0 का मतलब समानता है।

महिला अधिकारिता के प्रमुख प्रकार

शैक्षिक सशक्तिकरण: शिक्षा जीवन की प्रगति का एक अनिवार्य कारक है। यह ज्ञान, कौशल और आत्मविश्वास के साथ महिला सशक्तिकरण देता है। विकास प्रक्रिया में पूरी तरह से भाग लेने की जरूरत है। यह महिलाओं को उनके अधिकारों के बारे में जागरूक करने और उन पर दावा करने के लिए आत्मविश्वास विकसित करने का सुझाव देता है।

सुनिल कुमार

सामाजिक महिला अधिकारिता: महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण पहलू लैंगिक समानता में सुधार है। महिलाओं को आज विभिन्न सामाजिक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, चाहे वह अपने परिवार के लिए आय सुनिश्चित करने के लिए साबुन और लाइसेंस बनाना हो।

आर्थिक सशक्तिकरण: इसका तात्पर्य महिलाओं के स्वामित्व और प्रबंधन वाली स्थायी आजीविका के लिए भौतिक जीवन की बेहतर गुणवत्ता से है। आर्थिक विकास और महिलाओं के कानूनी अधिकारों के बीच एक मजबूत संबंध है। आर्थिक विकास और महिला सशक्तिकरण के बीच एक द्विदिश संबंध है, जिसे महिलाओं के समय को खाली करके उनकी क्षमता में सुधार के रूप में परिभाषित किया गया है। भारतीय अर्थव्यवस्था में महिलाओं के योगदान का न तो उचित हिसाब लगाया जाता है और न ही नीति निर्माताओं के पास अर्थव्यवस्था के विकास के लिए महिलाओं के महत्व को समझने की दृष्टि है।

राजनीतिक अधिकारिता: राजनीतिक महिलाओं का अस्तित्व राजनीतिक निर्णय लेने की प्रक्रिया और शासन में महिलाओं की भागीदारी के पक्ष में है।

आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका

भारत में, महिलाएं वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादकों के साथ-साथ अपने घरेलू कामों और पित्नयों और माताओं की द्वंद्व भूमिका निभाती हैं, फिर भी आर्थिक विकास में उनके योगदान की उपेक्षा की गई है। जिन समस्याओं का अक्सर हवाला दिया जाता है उनमें स्वास्थ्य, कुपोषण, बार-बार बच्चे पैदा करना और शिक्षा शामिल हैं। यिद आर्थिक विकास में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाना है, तो महिलाओं को निम्नलिखित सेवाएं प्राप्त करनी होंगी: आय-सृजन गतिविधियों में प्रशिक्षण, कम ब्याज वाले ऋणों तक आसान पहुंच, और बच्चे के जन्म को सीमित करने के लिए परिवार नियोजन सेवाएं।

भारत तेजी से विकास कर रहा है, लेकिन हमेशा समान रूप से या समावेशी रूप से नहीं। हमारा विकास मॉडल बहुत काम प्रगित पर है, और गहरी जड़ें वाली चुनौतियां बनी हुई हैं। देश के सामने सबसे बड़ी समस्या मिहला सशक्तिकरण है। दुनिया भर में मिहलाओं को शिक्षित और सशक्त बनाना तेजी से सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए उत्प्रेरक साबित हुआ है। भारत में मिहलाएं दुनिया की कुल आबादी का 7.5% हैं। जबिक विशिष्ट विकास संकेतक दिखाते हैं, उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो रहा है। यानी मातृ मृत्यु दर में गिरावट, साक्षरता दर में वृद्धि, अधिक मिहलाओं की स्वास्थ्य और शिक्षा तक पहुंच, परिवर्तन की गित हृदयविदारक धीमी है। उच्च लैंगिक समानता वाले समाज न केवल मिहलाओं के लिए बेहतर सामाजिक-आर्थिक अवसर प्रदान करते हैं, बिल्क तेजी से और अधिक न्यायसंगत रूप से विकसित होते हैं। गरीबी में कमी, पर्यावरणीय स्थिरता में लाभ हैं

उद्देश

हमारे अध्ययन का मुख्य उद्देश्य विभिन्न राज्यों में देश के आर्थिक विकास के लिए कार्यबल में महिलाओं की भूमिका का पता लगाना है।

कार्यप्रणाली

प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। आवश्यक डेटा विभिन्न स्रोतों, अर्थात् राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन (NSSO) की वेबसाइट से एकत्र किया गया था। 2012-2013, 2013-2014 और 2015-2016 की अविध के लिए आर्थिक विकास के लिए कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी का पता लगाने के लिए प्रासंगिक डेटा का चयन किया गया है। एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए विश्लेषण के लिए एक दंड आरेख का उपयोग किया गया था।

परिणामों की चर्चा

IJAAR

तालिका 1: भारत के विभिन्न राज्यों में महिला रोजगार दर

	महिला रोजगार दर का प्रतिशत				
भारत के राज्य	2012-2013	2013-2014	2015-2016		
मिजोरम	51.7	61.3	59.0		
नगालैंड	33.8	34.7	55.9		
छत्तीसगढ	44.8	51.0	54.2		
अरुणाचल प्रदेश	45.7	56.1	51.6		
मेघालय	47.6	58.9	49.9		
झारखंड	28.4	45.7	48.2		
सिक्किम	39.5	50.7	48.2		
आंध्र प्रदेश	44.9	49.6	47.0		
मणिपुर	36.9	50.8	46.4		
त्रिपुरा	32.1	31.4	45.3		
तेलुंगाना	0.0	52.1	42.7		
तमिलनाडु	35.0	39.6	39.3		
कर्नाटक	32.2	34.5	33.3		
महाराष्ट्र	32.8	34.6	32.8%		
राजस्थान	27.4	33.9	31.9%		
पुदुचेरी	20.9	25.7	28.1%		
अण्डमान और निकोबार	18.5	32.5	25.1%		
असम	27.0	33.9	24.5%		
उड़ीसा	25.3	28.5	23.7%		
केरल	20.3	27.8	23.7%		
गोवा	20.3	26.0	21.2%		
उत्तराखंड	20.6	26.4	20.5%		
पश्चिम बंगाल	20.6	17.2	20.5%		
गुजरात	16.4	24.5	19.9%		
हरयाणा	15.4	16.5	18.7%		
बिहार	10.4	16.7	17.8%		
मध्य प्रदेश	32.1	34.0	17.2%		
दादरा और नगर हवेली	16.5	10.3	16.1%		
लक्षद्वीप	8.9	19.2	15.5%		
डोमन और दीव	8.3	1.9	15.2%		
हिमाचल प्रदेश	56.6	59.4	15.1%		

उतार प्रदेश।	11.4	14.0	12.0%
दिल्ली	11.5	10.0	11.7%
पंजाब	11.8	9.4	9.4%
चंडीगढ़	12.2	12.3	8.1%
जम्मू और कश्मीर	12.3	16.4	7.9%
भारत	25.0	29.6	25.8

Source: National Sample Survey Organisation (NSSO), Women Workers Population ratio in 2012-13, 2013-2014 & 2015-2016.

उपरोक्त तालिका और आंकड़े से स्पष्ट होता है कि वर्ष 2012-2013, 2013-2014 और 2015-2016 से भारत के विभिन्न राज्यों में कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी। मिजोरम में महिलाओं को कार्यबल में शामिल करने के लिए 2012-2013 में 51.7 प्रतिशत, 2013-2014 में 61.3 प्रतिशत और आर्थिक विकास के लिए 2015-2016 में 59.0 प्रतिशत का उच्चतम अनुपात है और साथ ही जम्मू और कश्मीर को प्रोत्साहित करने के लिए सबसे कम रैंक है। महिला सशक्तिकरण जो राज्य की कुल जनसंख्या का केवल 7.9 प्रतिशत है, हालांकि यह वर्ष 2012-2013 में भिन्न है, 2013-2014 में 12.3 प्रतिशत और 16.4 प्रतिशत है। तो, यह स्पष्ट है कि राज्य के साथ-साथ देश के राजनीतिक मुद्दों से संबंधित होने के कारण वर्ष 2014 के बाद कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी में भारी कमी आई है।

हरियाणा में वर्ष 2015-2016 में राज्य की कुल महिला आबादी में से केवल 18.7 प्रतिशत महिलाओं ने उन्हें कार्यबल में शामिल किया और 2012-2013 में यह 15.4 प्रतिशत थी, और 2013 में यह 16.5 प्रतिशत बढ़ी - 2014. कुल मिलाकर तस्वीर, कार्यबल में महिलाओं का बढ़ा हुआ अनुपात पिछले वर्षों की तुलना में वर्ष 2015-2016 में अधिक है।

अंत में, यह अनुपात अपर्याप्त है और राज्य द्वारा 60 प्रतिशत से अधिक महिलाओं को व्यक्त करता है, और राष्ट्र द्वारा 75 प्रतिशत महिलाएं गैर-उत्पादक गतिविधियों में लगी हुई हैं, जिसका अर्थ है कि महिलाएं घरेलू काम में अपील कर रही हैं जिसकी गणना नहीं की जाती है देश के आर्थिक विकास के लिए आय-सृजन गतिविधियों के रूप में। आर्थिक विकास में महिला सशक्तिकरण में प्रमुख मुद्दा

समस्या यह नहीं है कि महिलाओं को इन अवसरों तक पुरुषों के समान पहुंच सुनिश्चित करने के लिए तैयार किया गया है। लेकिन एक बार जब महिलाएं प्रवेश करती हैं और उन्हें अपना कौशल और ज्ञान दिखाने का मौका मिलता है, तो महिलाओं के सशक्तिकरण से आर्थिक विकास तक पहुंच का प्रभाव स्पष्ट है। महिलाएं कम सक्षम व्यक्ति नहीं हैं, यह प्रदर्शित करने के लिए तैयार हैं कि उन्हें कुछ और अतिरिक्त प्रोत्साहन की आवश्यकता है और परिवारों और समाजों से अवसर नीचे सुचीबद्ध हैं:

- 1. आर्थिक पिछड़ापन
- 2. कार्यान्वयन अंतराल
- 3. राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी
- 4. निर्वाह कृषि में महिला अवैतनिक पारिवारिक कार्यकर्ता
- 5. प्रौद्योगिकी का निम्न स्तर और आदिम बनाने की प्रथाएं
- 6. क्रेडिट और मार्केटिंग नेटवर्क तक खराब पहुंच
- 7. सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएं जैसे घरेलू काम के लिए कार्यकारी क्षमता

गतिशीलता आदि पर प्रतिबंध। इन बाधाओं पर काबू पाने पर, अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की भूमिका को प्रोत्साहित करने के अधिनियम के माध्यम से देश की अर्थव्यवस्था और वैश्विक आर्थिक विकास समृद्ध होगा।

सुझाव

- 1. समाज द्वारा पुरुषों और महिलाओं दोनों के साथ समान व्यवहार किया जाना चाहिए।
- 2. हमें हर मां की तरह महिला उत्पीड़न और हिंसा को रोकने के लिए कदम उठाना चाहिए
- 3. अपने बेटे को बचपन से ही महिलाओं का सम्मान करना सिखाना चाहिए।
- 4. हर कार्यस्थल पर पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए समान भुगतान को प्रोत्साहित करने के कारण
- 5. समान कार्य के लिए आय की असमानता।
- 6. वर्तमान में महिला शिक्षा को बेहतर तरीके से प्रोत्साहित करें।
- 7. लड़कियों और उनके माता-पिता की आकांक्षाओं को ऊपर उठाएं।
- 8. महिलाओं को राजनीतिक भागीदारी में प्रोत्साहित करें।
- 9. महिलाओं को अपने विकास के लिए हर कदम पर होने वाली प्रतिक्रिया से अवगत होना चाहिए।

निष्कर्ष

सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और कानूनी रूप से महिलाओं का सशक्तिकरण एक अभूतपूर्व कार्य होने जा रहा है। महिलाओं के प्रति अनादर के लिए संस्कृति को बदलना आसान काम नहीं है। एक ही क्रांति एक दिन में बदलाव ला सकती है, लेकिन सुधारों में समय लगता है। अर्थव्यवस्था में महिलाओं का विशिष्ट स्थान है। अगर महिलाओं को आर्थिक मजबूती मिलती है, तो उन्हें दृश्यता और आवाज मिलती है। निर्णय लेने की क्षमता में महिलाओं की प्रत्यक्ष भागीदारी भी आय सृजन गतिविधियों में महिला सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। उद्यमिता और परिवार के आय अर्जित व्यक्ति के रूप में काम करने से महिलाओं को आर्थिक रूप से सिक्रय होने में मदद मिल सकती है, जिससे उन्हें अपनी सामाजिक स्थिति में सुधार करने में मदद मिल सकती है।

References

- 1. Government of India. Annual Report to the People on Employment, Ministry of Labour and Employment, New Delhi, 2010.
- 2. Gupta, R and Gupta, BK. "Role of Women in Economic Development." Yojana, vol. 31, no. 18, 1987, pp. 28-32.
- 3. http://mospi.nic.in/NSSOa

DAAR C

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Vol.2 Issue.15 May-June-2022

Peer Reviewed Bi-Monthly

एक नए युग की महिला उद्यमिता

सुनिल कुमार

गव्हर्मेंट कॉलेज, सिवानी, भिवानी (हरियाणा) Email Id. – sfandanjrf2010@gmail.com

संशोधन सारांश:

प्रौद्योगिकी में हालिया प्रगति और इसलिए आधुनिक स्वचालन दुनिया शिक्षित महिला वर्ग और गतिशील महिला उद्यमियों से प्रभावी नेतृत्व और पहल की मांग करती है, जो देशों की आर्थिक प्रक्रिया के अनुकूल होने की पृष्टि करती हैं। यह उस दिन का क्रम है जहां बाजार की विफलताओं का पता लगाने के लिए अभिनव महिला उद्यमिता कार्यक्रम की अवधारणा को तैयार करने की आवश्यकता है और साथ ही साथ सभी एसएमई और विकास नीतियों के लिए महिला उद्यमिता के प्रतिस्थापन आयाम को जोड़कर ज्वलंत सामाजिक समूह के मुद्दों से निपटने के लिए तैयार किया जाना चाहिए। . अब समय आ गया है कि सरकार को महिलाओं की श्रम शक्ति में भाग लेने के लचीलेपन को बढ़ाने के लिए नीतिगत सुधार करने चाहिए, महिलाओं के व्यवसाय के स्वामित्व का निर्माण करना चाहिए, प्रभावी महिला उद्यमिता को सुविधाजनक बनाने के लिए उल्लेखनीय और वैकल्पिक मूल्यवान इंटरनेट आधारित और सामाजिक समृह विकास के लिए सहकारी उपकरण विकसित करना चाहिए। और नेतृत्व गुणों को बढ़ावा देना। महिला उद्यमिता वर्ग द्वारा चुनी गई रोजमर्रा की जगह खुदरा व्यापार, रेस्तरां, होटल, शिक्षा, सांस्कृतिक, सौंदर्य प्रसाधन, स्वास्थ्य, बीमा और उत्पादन को मापती है। यह पत्र उत्पादक महिला उद्यमियों द्वारा आर्थिक प्रक्रिया और सामाजिक जीवन के अत्यधिक विकास के लिए अनुकूल भूमिका पर प्रकाश डालता है। महिला उद्यमियों की सफलता की कहानियां निश्चित रूप से एक विस्तारित स्थायी प्रभाव छोड़ सकती हैं और निष्क्रिय परिवारों / व्यक्तियों के नेटवर्क को फिर से तैयार कर सकती हैं ताकि जीवन स्तर को ऊपर उठाने और स्वस्थ परिचालन उद्यम बनाने के लिए ईमानदारी से प्रयास किया जा सके। यह एक अच्छी तरह से स्थापित निर्विवाद तथ्य है कि उद्यमी महिलाओं में आर्थिक रूप से स्वस्थ और स्वस्थ समाज के निर्माण की दिशा में थकाऊ काम करने और नवीन अवधारणाओं को विकसित करने की शानदार क्षमता है। अमेरिका में 6.4 मिलियन स्व-उपयोगी महिलाएं 9.2 मिलियन लोगों को रोजगार प्रदान करती हैं और महत्वपूर्ण बिक्री करती हैं। इस पत्र के दौरान उन महिलाओं को प्रोत्साहित करने के लिए एक ईमानदार प्रयास किया गया है जो किसी भी व्यवसाय के बारे में सोचती हैं और जो इस समकालीन दुनिया के दौरान एक स्वस्थ, गतिशील और उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने के लिए आम तौर पर समाज में योगदान देना चाहती हैं।

मुख्य शब्द : अभिनव, गतिशील, चुनौती, सशक्तिकरण, प्रेरक कारक।

प्रस्ताविक:

महिला उद्यमियों को एक महिला या महिलाओं के समूह के रूप में भी रेखांकित किया जाता है जो एक व्यावसायिक उद्यम की शुरुआत, आयोजन और संचालन करती हैं। नवोन्मेषी उद्यमियों की शुम्पेटेरियन अवधारणा के संदर्भ में, जो महिलाएं किसी व्यावसायिक गतिविधि का नवाचार करती हैं, आरंभ करती हैं या उसे अपनाती हैं, उन्हें व्यावसायिक उद्यमी के रूप में जाना जाता है। महिला उद्यमी वह हो सकती है जो अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं को पूरा करने और आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनने के लिए कठिन भूमिका को स्वीकार करती है। एक सकारात्मक काम करने की

एक शक्तिशाली आवश्यकता उद्यमी महिलाओं की एक अंतर्निहित गुणवत्ता है, जो प्रत्येक परिवार और सामाजिक जीवन में योगदान देने में सक्षम है।

उद्यमिता केवल किसी के लिंग तक ही सीमित नहीं है, बल्कि बहुआयामी आर्थिक दबावों के कारण महिलाएं सामने आई हैं और यह पूरा किया है कि उनके परिवारों का अस्तित्व और उनकी अपनी क्षमता पूरी तरह से पुरुषों के साथ-साथ परिचालन पहलू में निहित है (एस. मार्लो, 2002). उद्यमिता को विश्व स्तर पर व्यापार जगत के लिए एक विकासात्मक और प्रगतिशील योजना के रूप में महसूस किया गया है (सी.ई. स्कॉट, 1986)। इस प्रकार उद्यमिता को न केवल वैश्वीकरण के लिए बल्कि भविष्य के संभावित कलाकारों के लिए विभिन्न अवसर बनाने के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटक के रूप में माना जाता है (आर मित्रा, 2002)। पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम के शब्दों में एक ईमानदार राष्ट्र बनाने के लिए महिलाओं को सशक्त बनाना एक आवश्यकता हो सकती है, जब महिलाएं सशक्त होती हैं, स्थिरता वाला समाज सुनिश्चित होता है। महिलाओं का प्रबंधन महत्वपूर्ण है क्योंकि उनके विचार और उनकी मूल्य प्रणाली का परिणाम एक सभ्य परिवार, स्मार्ट समाज और अंततः एक सभ्य राष्ट्र की स्थिति में होता है।

भारत सरकार ने महिला उद्यमियों को एक वाणिज्यिक उद्यम की इक्विटी और रोजगार में महिलाओं की भागीदारी का समर्थन किया है। नतीजतन, एक महिला उद्यमी को एक उद्यम के रूप में रेखांकित किया जाता है, जिसका स्वामित्व और नियंत्रण एक महिला द्वारा किया जाता है, जिसमें पूंजी के इक्यावन का न्यूनतम मौद्रिक हित होता है और उद्यम के भीतर उत्पन्न रोजगार का न्यूनतम इक्यावन एक महिला को दिया जाता है (मीनू गोयल, 2011)

महिलाएं दुनिया की लगभग आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करती हैं। इसलिए भारत में भी उन्हें समाज का उच्च वर्ग माना जाता है। प्राचीन समाजों में वे घरों की चार दीवारों तक सीमित थे, जो घरेलू गतिविधियों को अंजाम देते थे। आधुनिक समाज में उन्होंने सभी प्रकार की गतिविधियों में भाग लेने के लिए चार दीवारों की शुरुआत की है। भारतीय महिलाएं भी वैश्वीकरण का लाभ उठा रही हैं, जिसका घरेलू और अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र पर प्रभाव पड़ा है। उन्होंने पुरुष प्रधान दुनिया के भीतर अपने लिए एक अलग खंड तैयार किया है। भारतीय महिलाएं पारिवारिक मोर्चे पर काम के हर बोझ को अच्छी तरह से संभालती हैं और कार्यस्थल पर समय सीमा को पूरा करती हैं। हाल के एक सर्वेक्षण के दौरान यह खुलासा हुआ है कि भारत की महिला उद्यमी दुनिया के किसी भी हिस्से में महिलाओं की तुलना में बहुत अधिक संपत्ति पैदा कर रही हैं। आर्थिक उदारीकरण और वैश्वीकरण के मद्देनजर भारत में महिला उद्यमिता का महत्व बढ़ रहा है। उद्यमिता कौशल विकसित करने, व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए नीति और संस्थागत ढांचे ने महिलाओं के आर्थिक प्रबंधन के लिए क्षितिज का विस्तार किया है। हालांकि, महिलाएं केवल एक तिहाई आर्थिक उद्यमों का प्रतिनिधित्व करती हैं। भारत में सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में प्रत्येक में प्रख्यात व्यावसायिक महिला उद्यमियों की एक अतिरेक मौजूद है

महिलाओं द्वारा शुरू किए गए उद्यम अब महिला उद्यमियों की स्थिति को देखने पर नहीं हैं, यह पाया गया है कि उन महिलाओं में से लगभग चार-सौवें हिस्से ने गैर-पारंपिरक क्षेत्रों जैसे इलेक्ट्रॉनिक, इंजीनियरिंग, अभ्यास आदि में उद्यम किया है। महिला उद्यमियों का विकास न केवल महानगरों और शहरों तक ही सीमित है बिल्क गांवों तक भी अपना स्कोर बढ़ाता है। वैश्वीकृत दुनिया में, महिला उद्यमी खुदरा, जनसंपर्क या शिक्षा सेवाओं जैसे सेवा से जुड़े क्षेत्रों में व्यवसाय शुरू कर रही हैं। महिलाओं के स्वामित्व वाले कारोबार में शुद्ध कमाई सबसे कम है। अफ्रीकी-अमेरिकियों द्वारा व्यवसायों में महिला उद्यमियों की भागीदारी दर दूसरी सबसे बड़ी है, लेकिन सबसे तेजी से बढ़ रही है और हिस्पैनिक्स द्वारा महिलाओं की उद्यमिता एशियाई लोगों की सर्वोत्तम दर है।

एक महिला उद्यमिता में विशेषता भूमिकाएँ:

कल्पनीय: यह प्रतिस्पर्धी बाजार के साथ कल्पनाशील दृष्टिकोण या मूल विचारों को संदर्भित करता है। मौजूदा स्थिति की जांच करने और उद्यमशीलता के अवसरों की पहचान करने के लिए सुनियोजित दृष्टिकोण की आवश्यकता है। इसका आगे तात्पर्य यह है कि महिला उद्यमियों का जानकार लोगों के साथ जुड़ाव होता है और समर्थन और सेवाओं की पेशकश करने वाले सही संगठन का अनुबंध होता है

कड़ी मेहनत करने का गुण: उद्यमी महिलाओं में अधिक मेहनत करने की क्षमता होती है। कल्पनाशील विचारों को एक निष्पक्ष खेल में आना होगा। उद्यम बनाने के लिए कड़ी मेहनत की जरूरत है।

दृढ़ता: महिला उद्यमियों का अपने सपनों को पूरा करने का इरादा होना चाहिए। उन्हें एक सपने को एक विचार उद्यम में स्थानांतरित करना होगा; अध्ययनों से पता चलता है कि सफल महिलाएं कड़ी मेहनत करती हैं। जोखिम लेने की क्षमता और इच्छा: इच्छा जोखिम लेने की इच्छा और उसके लिए क्षमता को संदर्भित करती है भारत में महिला उद्यमी दुर्लभ क्यों हैं और उन्हें किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है:

विश्व स्तर पर महिलाओं को शारीरिक और भावनात्मक रूप से कमजोर लिंग के रूप में माना जाता है, इसलिए उनके लिए व्यावसायिक पेशेवरों के रूप में विकसित होने की संभावनाएं अभी भी काफी अस्पष्ट हैं और इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है (एस.वेनेकर्स, 1999)। अधिकांश महिलाओं को बचपन से ही सिखाया जाता है कि व्यापार करने में किठनाइयाँ पुरुषों का अधिकार क्षेत्र है। महिलाओं द्वारा संचालित कई सहकारी समितियों और स्टार्ट अप के पास अपने उत्पादों के विपणन के लिए संसाधन नहीं हैं। अंत में बिचौलियों द्वारा उनका शोषण किया जाता है। ग्रामीण महिलाओं और शहरी गरीबों के पास व्यवसाय करने के लिए खुद को प्रशिक्षित करने का कोई साधन नहीं है। फिर भी अपने सीमित संसाधनों के भीतर, वे सबसे अधिक उद्यमी बन जाते हैं। संघ के नेता एक साथ दबाव की रणनीति का उपयोग करते हैं, पुलिस व्यवसाय से संबंधित उत्पीड़न की शिकायतों को गंभीरता से नहीं लेती है, बैंकर नवोदित महिला उद्यमियों को कम गंभीरता से लेते हैं। एक्सपोजर के लिए धन्यवाद, उदाहरण के लिए, पुरुष स्वाभाविक रूप से रिश्वत देने और बिजली कनेक्शन प्राप्त करने में सहज हैं। महिलाओं को रिश्वत चाहने वालों से निपटने में समस्या होती है। महिलाओं को उद्यमी स्कूलों के रूप में प्रशिक्षित करने के लिए पर्याप्त योजनाएँ नहीं हैं जहाँ वे अपने ज्ञान को अद्यतन कर सकें।

उच्च आय वाले देशों में विकास का मुद्दा विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जहां महिलाएं तेजी से प्रौद्योगिकी आधारित व्यावसायिक उद्यमों में प्रवेश कर रही हैं। पुरुषों की तुलना में महिलाओं के स्वामित्व वाली फर्में दर्शाती हैं कि महिलाओं के नेतृत्व वाले व्यवसाय छोटे होते हैं और पुरुषों की तुलना में अधिक धीरे-धीरे बढ़ते हैं। आम तौर पर, आकार में छोटा और धीमी विकास दर को समस्याओं के रूप में माना जाता है (शेन और वेंकटरमन, 2000)। वास्तव में महिलाओं को व्यापार मालिकों और प्रबंधकों के रूप में बाहरी वित्तपोषण और विश्वसनीयता जैसी बहुआयामी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अतिरिक्त बाधाओं में सामाजिककरण नेटवर्क और प्रथाएं, पारिवारिक भूमिकाएं और व्यावसायिक संपर्कों की संभावित कमी शामिल हैं। इन सभी क्षेत्रों में महिलाओं द्वारा अनुभव की गई हानियों को व्यापक रूप से उच्च विफलता दर और महिलाओं के स्वामित्व वाले व्यवसायों के लिए कम विकास दर के रूप में माना जाता है (बोवेन, और हिसरिक, 1986)।

जो महिलाएं खुद को आवश्यक कौशल और ज्ञान के रूप में समझती हैं, उनकी व्यवसाय मालिक होने की प्राथमिकताएं इन कौशलों की कमी वाली महिलाओं की तुलना में अधिक होती हैं। परिणामस्वरूप व्यक्तिगत जागरूकता और धारणा प्रक्रियाओं पर अधिक जोर दिया जाता है जो परिणामस्वरूप स्थानीय सामाजिक मानदंडों (एच। लिटुनन, 2000) के महत्व को इंगित करता है। यह बाजार की मांग और आपूर्ति पक्ष पर निर्भर करता है जो

उद्यमशीलता के माहौल को निर्धारित करता है जिसके भीतर महिलाओं को उद्यमिता के बारे में उचित निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहन मिलता है। (ओरहान और स्कॉट, 2001)। इन निष्कर्षों का तात्पर्य है कि अच्छी तरह से परिभाषित नीतियों को तैयार करने की आवश्यकता है जो लगातार आधार पर उद्यमशीलता गतिविधि को बढ़ावा देने के लिए अनुकूल परिस्थितियों को उत्पन्न कर सके।

आम तौर पर विश्व स्तर पर महिला उद्यमियों को एक संगठित व्यावसायिक उद्यम की सफलतापूर्वक योजना बनाने के लिए पूर्व-उद्यमी प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। दूसरी ओर महिला उद्यमिता में भविष्य की बाधाओं से बचने के लिए स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर छात्राओं को सार्थक और सकारात्मक उद्यमिता शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए।

महिला उद्यमियों को प्रोत्साहित करने और उनका मार्गदर्शन करने के लिए व्यापक रोल मॉडलिंग अवसरों को पेश करने की आवश्यकता है। महिला उद्यमी की सफलता की कहानियों को इस उद्देश्य के लिए एक उपयोगी और प्रेरक संसाधन के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है (बोवेन, 1986)। आधुनिक तकनीकी युग में ऐसे रोल मॉडलिंग कार्यक्रमों को बढ़ावा देने के लिए ऐसे कई उपयोगी उपकरण हैं जैसे वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, सफल उद्यमी के वीडियो सफल महिला उद्यमियों के साथ एक से एक सत्र और आर्थिक असमानता को दूर करने के लिए एक जीवंत विधि के रूप में उद्यमिता। दिलीपकुमार (2006) ने उद्यमी महिलाओं के सामने आने वाले कुछ मुद्दों पर विस्तार से बताया है, जैसे कि वित्त की कमी, पुरुष प्रभुत्व, सीमित गतिशीलता, शिक्षा की कमी, मातृ कर्तव्यों की आवश्यकता और उपलब्धि प्रेरणा की कमी। रिजवी और गुप्ता (2009) के अनुसार, सरकार द्वारा प्रायोजित विकास गतिविधियों से महिलाओं के केवल एक छोटे वर्ग को लाभ हुआ है, अर्थात् शहरी मध्यम वर्ग। यह मुख्य रूप से उनकी शिक्षा के स्तर, सूचना तक पहुंच और परिवार के समर्थन के कारण हो सकता है।

महिला उद्यमियों को अपना व्यवसाय स्थापित करने में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उनके प्रयासों ने समाज को इस हद तक एक साथ बांधे रखने में मदद की है। दरअसल, शिक्षा को अक्सर एक लड़की को एक अच्छा पित और परिवार प्राप्त करने में बाधा माना जाता था, जिसे जीवन में उसका मुख्य लक्ष्य माना जाता था। आधुनिक दुनिया में, शिक्षा मुख्य साधन है जिसके द्वारा अधिक से अधिक महिलाएं उद्यमी बनने में सक्षम हो सकती हैं और इसलिए रोजगार सुजन और गरीबी उन्मूलन में मदद करती हैं।

महिला उद्यमिता:

उद्यमिता एक विचार या दृष्टि है जिसे एक महिला तलाशने और अनुकूलित करने के लिए रखती है जो उसे अपने साथियों के बीच नई नौकरियां और आर्थिक सशक्तिकरण बनाने में मदद कर सकती है। दुनिया भर में, बहुत अलग पृष्ठभूमि की महिलाओं की पीढ़ियां उद्यमी भावना के बहुत उत्साहजनक संकेत दिखाती हैं। यह आशा की जानी चाहिए कि सभी स्तरों पर सरकारें ऐसा वातावरण प्रदान करने के लिए कार्य करेंगी जिसमें यह भावना पनप सके (डेलमार, 2000)। सभी उद्योग क्षेत्रों में 200 मिलियन से अधिक महिलाएं कार्यरत हैं, जिनमें से आधी संख्या विकासशील देशों में है (जेम रिपोर्ट, 2007)। दुनिया भर में महिला उद्यमिता का विस्तार हो रहा है। अध्ययनों से पता चला है कि महिलाओं के स्वामित्व वाले व्यवसाय औपचारिक अर्थव्यवस्था में एक-चौथाई और एक-तिहाई व्यवसायों के बीच होते हैं और अनौपचारिक क्षेत्रों में और भी अधिक भूमिका निभाने की संभावना है (जेम रिपोर्ट, 2007)।

आज की महिलाएं बाजार की जरूरतों का सामना करने के लिए अधिक से अधिक पेशेवर और तकनीकी डिग्री ले रही हैं और डिजाइनर, आंतरिक सज्जाकार, निर्यातक, प्रकाशक, परिधान निर्माता के रूप में फल-फूल रही हैं और अभी भी आर्थिक भागीदारी के नए रास्ते तलाश रही हैं। शायद यही कारण है कि सरकारी निकायों, गैर सरकारी संगठनों, सामाजिक वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों ने भारत में महिलाओं के बीच उद्यमिता से संबंधित मुद्दों में रुचि दिखाना शुरू कर दिया है। महिला उद्यमी एक नया उद्यम शुरू करने की संभावनाओं का पता लगाती हैं; जोखिम उठाना, नए नवाचारों की शुरूआत, प्रशासन और व्यवसाय के नियंत्रण का समन्वय करना और व्यवसाय के सभी पहलुओं में प्रभावी नेतृत्व प्रदान करना और पुरुष प्रधान व्यवसाय क्षेत्र में अपने फुटेज को साबित करना है।

अधिकांश महिला उद्यमी नेतृत्व, शैली प्रबंधन में गतिशील हैं, बहुत अधिक योगदान करने में सक्षम हैं और वे उद्योग और प्रबंधन के अपने ज्ञान को अद्यतन रखने के लिए इच्छुक हैं।

संयुक्त राष्ट्र की एक हालिया रिपोर्ट ने निष्कर्ष निकाला है कि आर्थिक विकास महिलाओं की उन्नति से निकटता से संबंधित है। जिन देशों में महिलाएं आगे बढ़ी हैं, वहां की अर्थव्यवस्था आमतौर पर स्थिर रही है। इसके विपरीत, जिन देशों में महिलाओं को प्रतिबंधित किया गया है, वहां की अर्थव्यवस्था स्थिर रही है। महिला उद्यमिता कोई आसान काम नहीं है। एक उद्यमी बनना राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों से उत्पन्न अनुभवों, स्थितियों और घटनाओं की एक श्रृंखला का सामना करने, मुल्यांकन करने और प्रतिक्रिया करने का एक विकास है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, 1990 के दशक को महिला नेतृत्व के दशक के रूप में नामित किया गया था (नैशिट और अब्रडवे, 2000)। यह नई नेतृत्व स्थिति महिलाओं की उद्यमशीलता की गतिविधियों में सबसे उल्लेखनीय रही है। महिलाएं कॉरपोरेट जगत में सफलता की सीढ़ियां चढ़ने के बजाय अपने खुद के निगम बना रही हैं। भारत में महिलाओं की बहुत उपेक्षा की गई है। वे जनसंख्या और श्रम शक्ति के समान अनुपात का प्रतिनिधित्व करने के बावजूद विकास की मुख्य धारा में सक्रिय रूप से शामिल नहीं हुए हैं। जैसे-जैसे तकनीक जीवन को गति देती है, महिलाएं उभरती हुई आर्थिक शक्ति के रूप में होती हैं, जिसे नीति निर्माता द्वारा उपेक्षित नहीं किया जा सकता है। विश्व की आधुनिक लोकतांत्रिक अर्थव्यवस्था दोनों लिंगों की भागीदारी पर निर्भर करती है। आज महिलाएं अग्रिम बाजार अर्थव्यवस्थाएं हैं जो सभी व्यवसायों के 25% से अधिक की मालिक हैं और अफ्रीका, एशिया, पूर्वी यूरोप और लैटिन अमेरिका में महिलाओं के स्वामित्व वाले व्यवसाय तेजी से बढ़ रहे हैं। एक स्वतंत्र लक्ष्य समृह के रूप में महिलाएं 495.74 मिलियन हैं और 2001 की जनगणना के अनुसार देश की आबादी का 48.5% प्रतिनिधित्व करती हैं। कोई भी देश पर्याप्त रूप से निवेश किए बिना और महिलाओं की क्षमताओं को विकसित किए बिना अपनी क्षमता को प्राप्त नहीं कर सकता है। दीर्घकालीन विकास के हित में उनके सशक्तिकरण को सुगम बनाना आवश्यक है।

भारत में दस प्रमुख महिला उद्यमी:

- 1. चित्रराजन | संस्थापक, रेडिक्स लाइफस्पेस
- 2. स्नेहा रॉय, सानंद मिश्रा | संस्थापक, Toptomato.in
- 3. पल्लवी गुप्ता | सह-संस्थापक, मस्त कलंदरी
- 4. जयलक्ष्मी वेंकटनारायणन | संस्थापक, युनिवर्स पावर सिस्टम्स
- 5. अंजना विवेक | संस्थापक, वेंचरबीन कंसल्टिंग
- 6. विनीता अनंत | संस्थापक, गिटग्रो
- 7. ऋचाकर | संस्थापक, जिवामे
- 8. रश्मि वल्लभजोस्युला | संस्थापक, AltiusCnsulting
- 9. इंधुराधाकृष्णन | सह-संस्थापक, भारत सिंडिकेट
- 10. श्रीलक्ष्मी देसिराजू | संस्थापक, ट्राइफेज फार्मास्यूटिकल्स

सुश्री प्रिया पॉल एपीजे सुरेंद्र समूह की निदेशक और समूह प्रबंधन सिमित की सदस्य हैं, जो चाय, नौवहन, आतिथ्य, रियल एस्टेट और रिटेल में फैले संचालन के साथ एक औद्योगिक और सेवा समूह है। उनके परिवार द्वारा 1910 में स्थापित, समूह ने 2010 में 100 साल पूरे किए। सुश्री पॉल एपीजे सुरेंद्र पार्क होटल लिमिटेड की अध्यक्ष के रूप में हॉस्पिटैलिटी व्यवसाय की अगुवाई करती हैं और अपने परिवार के साथ एपीजे ट्रस्ट की छत्रछाया में कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी की पहल करती हैं। सुश्री पॉल को व्यापक रूप से भारत में बुटीक होटल अवधारणा के अग्रणी के रूप में पहचाना जाता है और उनके नेतृत्व ने एपीजे सुरेंद्र पार्क होटल लिमिटेड को भारत के समकालीन लक्जरी बुटीक होटलों के पहले और एकमात्र संग्रह के रूप में स्थापित किया है। पेशे से चार्टर्ड अकाउंटेंट नैनालाल किदवई एक भारतीय बैंकर और बिजनेस एक्जीक्यूटिव हैं। जानी-मानी महिला बैंकर नैनालाल किदवई को भारत में HSBC समूह की कंपनियों का कंट्री हेड नियुक्त किया गया है। वह पिछले पांच वर्षों से एचएसबीसी में सीईओ और डिप्टी सीईओ के रूप में हैं।

निष्कर्ष:

महिला उद्यमी वे महिलाएं हैं जो एक व्यावसायिक उद्यम के बारे में सोचती हैं, इसे शुरू करती हैं और उत्पादन के कारकों को जोड़ती हैं, उद्यम संचालित करती हैं, जोखिम उठाती हैं और व्यावसायिक उद्यम चलाने में शामिल आर्थिक अनिश्चितताओं को संभालती हैं। अंत में यह पाया गया है कि महिला उद्यमिता का अर्थव्यवस्था पर एक निश्चित प्रभाव पड़ता है, दोनों में खुद के लिए रोजगार पैदा करने और दूसरों के लिए रोजगार पैदा करने की क्षमता। वृद्धि की अपार संभावनाएं मौजूद हैं। विभिन्न नेटवर्क और महिला उद्यमिता संघ अब सहायता, सलाह और सूचना प्रदान करने और महिला उद्यमियों को अपनी प्रोफ़ाइल बढ़ाने और अपने व्यवसाय का विस्तार करने के लिए आए हैं। एक सफल उद्यमी बनने की कला मौजूदा अत्याधुनिक तकनीकी उपकरणों से परिचित होने और उपलब्ध व्यावसायिक नेटवर्क तक पहुंच प्राप्त करने में निहित है। उद्यमिता के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी काफी दर से बढ़ रही है, उद्यम क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए अर्थव्यवस्था के साथ-साथ वैश्विक स्तर पर भी प्रयास किए जा रहे हैं। शिक्षित महिलाएं सामाजिक परिवर्तन में काफी हद तक योगदान दे रही हैं और भविष्य में यह देखा जाएगा कि पारंपरिक रूप से परुषों के वर्चस्व वाले क्षेत्रों में अधिक महिलाएं उद्यम करती हैं।

References:

- 1. Bowan, D. Donald, D. Robert, Hisrich (1986). The female entrepreneur: a career development perspective, academy of management review. 11(2), 393-407.
- 2. C.E. Scott, (1986). Why women are becoming entrepreneurs, Journal of small business management 24 (4), 37-45.
- 3. Global entrepreneurship monitor (gem), 2004, report on women entrepreneurship, 2007.
- 4. H. Littunen, (2000). Entrepreneurship and the characteristics of the entrepreneurial personality, International Journal of entrepreneurial Behaviour and Research 6(6), 295-310.
- 5. M. Dileep Kumar, (2006), Problems of Women Entrepreneurs in India. Retrieved 3 December 2010, fromhttp://www.indianmba.com/Faculty_column/FC293/fc293.html.
- 6. MeenuGoyal, Jai Parkash (2011), Women Entrepreneurship in India-problems and prospects, International Journal of Multidisciplinary Research, 1(5).
- 7. R. Mitra, (2002). The growth patterns of women run enterprises: an empirical study in India, Journal of developmental entrepreneurship 7(2), 217-237.
- 8. S. Marlow, (2002), Women and self-employment; a part of or a part from theoretical construct? International entrepreneurship and management journal, 3 (2), 83-91.

Juan 3

ISSN - 2347-7075 Impact Factor -7.328

Peer Reviewed Bi-Monthly Vol.2 Issue.15 May-June-2022

लिंगभाव आणि संस्कृती

अविनाश चंद्रकांत फुके

अर्थशास्त्र विभाग, डॉ बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ, औरंगाबाद

ईमेल-avinashfuke212@gmail.com

सारांश

समाजात स्त्री एक टीकेचे आणि कामाचे पात्र म्हणून गणले जाते खुपदा तर दुय्यम स्थानाची निवड तिच्या मधे होऊन जाते आणि हे आपल्या संस्कृतीत कधी आजवर बसलेले नाही त्यामुळे जर आपल्या संस्कृतीत बदलाव पाहिजे असेल तर स्त्रीला स्त्रीत्वाची जाणीव कदापि व्हायला नाही पाहिजे.

प्रस्तावना:-

एकविसाव्या शतकात मानव पावले स्थिरावत असतानाही,आज स्त्री खांद्याला खांदा लावून वावरताना देखील पुरुषसत्ताक वर्चस्वाचा डोलारा कुठेतरी स्त्रीत्वाच्या राहणीमानावर आणि भारतीय संस्कृती वर परिणाम करताना दिसून येत असतो.गल्लीपासून गावापर्यंत आणि गावापासून शहरापर्यंत बदललेली माणसाची विचारशैली कुठेतरी संस्कृतीवर आघात करताना दिसून येत आहे.

स्त्रिया आणि पुरुष यांच्या शरीररचनांमध्ये फरक आहे, पण समाजामध्ये स्त्रिया आणि पुरुषांबाबत जे भेदभाव केले जातात, त्या सर्वांचे कारण आपल्याला त्यांच्या शारीरिक फरकांमध्ये सापडेलच असे नाही. लिंग हे शारीरिक आहे तर लिंगभाव समाजात घडवला जातो. स्त्रिया आणि पुरुषांना विशिष्ट प्रकारे वाढवले जाते; यात स्त्रियांनी व पुरुषांनी कसे वागावे हे शिकवले जाते. ह्याच स्त्रीत्व आणि पुरुषत्व ह्या कल्पना होत. ह्या कल्पना माणसांच्या वागणुकीवर खोलवर प्रभाव टाकतात. आणि इथेच संस्कृती चा डामडौल दिसून यायला लागतो. स्त्रीत्व आणि पुरुषत्वाच्या रूढ कल्पना ह्या स्त्रिया आणि पुरुषांना साचेबद्ध करून एकमेकांविरुद्ध उभे करतात. उदा. स्त्रीने सहनशील, नम्र असावे, आज्ञाधारक असावे, सर्वांशी जुळवून घ्यावे अशी अपेक्षा असते. तर पुरुषांना आक्रमक बनायला मुभा असते. ह्या कल्पना स्त्री-पुरूषांवर अवास्तव ओझे लादतात. उदा. पुरुषांना रडायची मोकळीक नसते. एखादा पुरुष रडायला लागला तर, काय मुलीसारखा मुळुमुळू रडतोस म्हणून हिणवले जाते.

एखादी स्त्री जोरजोरात बोलली, हसली तर तिच्याकडे पुरुषी म्हणून बिघतले जाते. घरकाम, चूल-मूल ही बाईची जबाबदारी तर घराबाहेरच्या जबाबदाऱ्या पुरुषाच्या मानल्या जातात. किती दिवस या चूल आणि मुलीत आपण तिला अडकवून ठेवायचे आहे? ही आपली संस्कृती नव्हे..! मुलींना लहानपणी खेळायला बाहुली, भातुकली तर मुलांना सायकल, कार, बंदूक अशी खेळणी दिली जातात. प्रौढ वयात येणाऱ्या जबाबदारीचे प्रशिक्षण लहान वयातच सुरू होते. स्त्री-पुरुषामधला शारीरिक फरक हा प्रामुख्याने त्यांच्या पुनरुत्पादनासंदर्भातील भिन्न जबाबदाऱ्या हा आहे. पुरुषाकडे रेतन तर स्त्रीकडे गर्भारपण, बाळंतपण आणि स्तनपान अशा प्राकृतिक जबाबदाऱ्या आहेत मात्र या पलीकडे कोणतीही कामे स्त्री/पुरुष कोणीही करू शकतात. उदा. स्वयंपाक, घरसफाई, शिवण-टिपण, शेतातले काम, डॉक्टर, नर्स, इंजिनिअर, शिक्षक इ.इ. मात्र घरकाम आणि बालसंगोपन ह्या आजही स्त्रीच्याच प्राथमिक जबाबदाऱ्या मानल्या जातात. इतक्या की बाहेरच्या जगातही स्त्रियांना बहुतेकदा घरकामाची विस्तारीत कामे मिळतात उदा. शिक्षिका, नर्स, स्वागतिका अशा प्रकारच्या कामात स्त्रियांचा अधिक भरणा असतो. अगदी शेतीकामातही स्त्रियांना पुरुषाच्या तुलनेत कमी मजुरी देण्याची मानसिकता आढळते. अर्थात काळानुसार आणि समाज परिवर्तनाच्या

प्रयत्नांमुळे लिंगभावाच्या कल्पना आता बदलत चालल्याचे/खुल्या होऊ लागल्याचेही दिसते. या लिंग भावाचा उल्लेख जेंडर असाही केला जातो.

तसेच चित्रपटातील जाहिरातीतील व सौंदर्य स्पर्धांमधील जी स्त्रीप्रतिमा घडवली जाते ती अधिक धोकादायक आहे.कारण माध्यमांमधील स्त्री प्रतिमेच्या विकृत चित्रणाचे स्त्रियांवर नकळत पण खोलवर परिणाम होतात. या प्रतिमा आपापल्या परीने स्त्रिया व पुरुष आत्मसात करतात आणि निदान मानसिक पातळीवर तरी त्यात अंतर्भृत आदर्श व ध्येये जगण्याचा नकळत प्रयत्न करतात.

हा कुठेतरी लिंगभेद दिसून येतो आणि त्यातून संस्कृतीवर परिणाम व्हायला लागतो.बऱ्याचदा आपण समाजात वावरत असताना निरीक्षणातून छबी टिपत जातो आणि त्यावर चर्चात्मक बाबी समोर येत जातात अशा वेळी स्त्रीने जर पुरुषांचा पेहराव परिधान केला तर समाजात कुत्सित नजरेने पाहणार्यांची संख्या आजकाल वाढताना दिसून येत आहे. आपली संस्कृती साडीचोळी च्याही पल्याड नेऊन ठेवण्याचा विचार अति उत्तमच....! पण याउत्तर समाजात वाढत गेलेले पडसाद आपण वारंवार पाहतच आलो आहोत.

अगदी प्राचीन काळापासून स्त्रीला दुय्यम स्थान मिळत गेले.(अपवाद राणी महाराणी) पण त्या उपर स्त्री आजही कित्येक ठिकाणी चूल आणि मूल एवढेच दिसून येते. तिचा तोच साचा आजही आपण किती दिवस पहाणार आहोत. भारतीय संस्कृती ही नव्हे ती तेव्हाही नव्हती आणि आजही नाही. त्यामुळे लिंगभेद कदापि नसावा आणि हे चित्र जेव्हा पालटेल तेव्हा खरी तीच आपली संस्कृती असेल. हा मुद्दा महत्त्वाचा आहे.

लिंगभेद आणि संस्कृती का आवश्यक आहे

- 1)स्त्रीला दिलेले दुय्यम स्थान हे नाहीसे व्हायला पाहिजे.
- 2) स्त्रीचा वाटा हा पुरुषांच्या बरोबरीने गणला गेला पाहिजे.
- 3) संस्कृतीला एक वेगळी दिशा ही तेव्हाच मिळेल जेव्हा लिंग भेद नाहीसा होत जाईल.

संदर्भ

- 1)गांधी,शहा 1994 पृष्ठ 35
- 2)कमला भसीन भाषांतर श्रुती तांबे,लिंगभेद समजून घेताना
- 3)विकिपीडिया

Chief Editor P. R. Talekar

Secretary, Young Researcher Association, Kolhapur (M.S), India

Editor Prof. Dr. Deepak M. Bharti

Principal

Arts, Commerce and Science College, Kille Dharur, Dist. Beed [M.S.]

Co- Editor Mr. G. D. Bavaskar